विद्यालय के उप कुलपति बने । पाकिस्तान से यह नाता तोड़कर अपने बंगला देश मिशन के साथ लन्दन और राष्ट्रसंघ गये थे और रविवार को ही लौटे थे । न्यायाधीश श्री ए० एम० सईद को बंगला देश हाईकोर्ट का प्रथम जस्टिस बनाया गया ।

बंगला देश को मान्यता

भारत और भूतान के बाद आज पूर्वी जर्मनी ने बंगला देश को मान्यता देने की घोषणा की । उसके बाद शाम को बल्गारिया ने भी मान्यता देने की घोषणा की । इस मान्यता पर बंगबंधु ने कहा—और भी कुछ देश शीघ्र ही हमारे देश को मान्यता देंगे ।

पाकिस्तान में

उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त में आज विद्रोह भड़का और भीड़ ने गवर्नर को घायल कर दिया । पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री भुट्टो अचानक काबुल पहुँच गए और वहाँ उन्होंने शाह तथा प्रधानमन्त्री से बातचीत की ।

याहिया खां के साथ ही पाक सेनापति और उसके बाद याहिया खां के सैनिक सलाहकार जनरल अब्दुल हमीदखाँ, लेफ्टिनेंट जनरल हबीबुल्ला खां, लेफ्टिनेंट जनरल अरशाद अहमद और लेफ्टिनेंट जनरल बहादुर खाँ भी नजरबन्द कर दिये गए । साथ ही पाकिस्तानी जनता और समाचार-पत्रों ने भू०पू० राष्ट्रपति याहिया खां पर मुकदमा चलाने की माँग की ।

१२ जनवरी—बंगला देश में प्रथम १२ सदस्यीय मन्त्री-मण्डल

१२ जनवरी १९७२ ई० को बंगला देश में नया मन्त्रिमण्डल बनाया गया र राष्ट्रपति मुजीबुर्रहमान राष्ट्रपति पद छोड़कर प्रधानमन्त्री बन गए । जस्टिस अबू सईद चौधरी को राष्ट्रपति बनाया गया । दोनों नेताओं ने आज ही अपने- की शपथ ग्रहण की । शेख के शपथ ग्रहण करने से पूर्व ताजुद्दीन मन्त्रिमण्डल ना त्याग-पत्र दे दिया था ।

इस १२ सदस्यीय मन्त्रिमण्डल में ताजुद्दीन सरकार के सभी सदस्य शामिल ए थे । कार्यवाहक राष्ट्रपति श्री नजरुल इस्लाम और संवैधानिक सलाहकार माल हुसैन को भी मन्त्रिमण्डल में लिया गया । इसके अतिरिक्त श्री ताजुद्दीन मुहम्मद मन्सूर अली, मुश्ताक अहमद, अब्दुस्समद आजाद, श्री ए०एच०एम० गां, शेख अब्दुल अजीज, प्रो० यूसुफ अली, श्री अलइज जक
हिन्दू फणी भूषण मजूमदार

सोनार बांगला देश

चिरंजीलाल पाराशर

राकेश प्रकाशन, गाजियाबाद

प्रकाशक : राकेश प्रकाशन,
२६४, जटवाड़ा, गाजियाबाद उ०प्र०)
मूल्य : १६.०० रुपये मात्र
मुद्रक : राजधानी मुद्रणशाला,
तुर्कमान गेट, दिल्ली-६

भूमिका

त्याग और बलिदान के स्तंभों पर निर्मित भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि उसके द्वारा न तो किसी देश की संस्कृति का अपहरण किया गया और न ही इतर संस्कृति के मूलोच्छेदन का प्रयास ही भारतीय संस्कृति ने किया।

कालांतर में भी भारतीय संस्कृति का जितना भी प्रसार पूर्वी एशिया में हुआ था, उसके मूल में भी भारतीय संस्कृति के अमर तत्व—त्याग, बलिदान और सम—समानता ही थे। भारतीय संस्कृति के इन तत्वों को अनेकों बार परीक्षा की अग्नि से गुजरना पड़ा है और उनमें वह खरे उतरे हैं। यह ठीक है कि इन महान् तत्वों के कारण देश को कभी-कभी क्षति भी उठानी पड़ी है; लेकिन वह क्षति उन तत्वों में संशोधन करने में कभी समर्थ नहीं हुई।

त्रेता युग में लंका के आततायी नरेश की सैन्य शक्ति को क्षीण कर और युद्ध में उस दम्भी सहित उसके स्वेच्छाचारी सेनानायकों को समरभूमि में हरा कर जिस प्रकार लंका का राज्य राक्षसों से मुक्त कर श्री रामचन्द्र ने उस राज्य को रावण के तपस्वी भाई विभीषण को लौटा दिया था, उसी प्रकार वर्तमान कलियुग में वर्तमान बंगला देश को हत्यारे पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहिया खाँ और उसके खूंखार सेनानायकों के चंगुल से छुटकारा दिलाकर भारतीय प्रधानमन्त्री श्रीमति गाँधी ने वहीं के सम-समानतावाद के प्रवर्तक श्री मुजीबुर्रहमान को सौंप दिया।

बांगला देश जो १४ अगस्त १९४७ तक भारत का ही एक भाग था और उपरोक्त तिथि की आधी रात को देश के बटवारे के बाद पाकिस्तान का, पूर्वी बंगाल के नाम से एक भाग बन गया था, लगातार २५ वर्षों तक पाकिस्तानी शासन के कठोर पंजों के भीतर दबा कराहता रहा। २५ मार्च १९७१ को उसकी जनता ने स्वतन्त्रता का बिगुल बजाया था और उस जनता का समर्थन भारत ने—समूचे भारत ने किया था। भारत को उसी समर्थन के कारण बंगला देश के १ करोड़ शरणार्थियों का नौ महीने तक भार वहन करना पड़ा और अन्त में ३ दिसम्बर १९७१ से १७ दिसम्बर

१९७१ तक पाकिस्तानी आक्रमण से टक्कर भी लेनी पड़ी।

पाकिस्तान के साथ हुए इस युद्ध में भारत को अपने मित्रों को कसौटी पर कसने का समय भी मिला। ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत यूनियन तथा पोलैंड को छोड़कर १०४ देशों ने राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद में पाकिस्तान का साथ दिया। अमेरिका अन्त तक पाकिस्तान को सैनिक सहायता देता रहा। अपनी सहायता में निक्सन प्रशासन इतने नंगेपन तक पर उतर आया कि १४ दिसम्बर १९७१ को उसने अपने सातवें बेड़े तक को बंगाल की खाड़ी में भेज दिया।

आश्चर्य की बात यह थी कि अमेरिकी जनता, प्रेस और जान कैनेडी जैसे कई सिनेटर तक बंगला देश के स्वतन्त्रता-संघर्ष के प्रबल समर्थक थे और अपनी सरकार की पाकिस्तान समर्थक नीतियों के कड़े आलोचक थे; लेकिन उनकी आलोचनाओं का प्रभाव प्रशासन पर रत्ती भर भी नहीं हुआ।

अमेरिका के अतिरिक्त, पाकिश्तान के दूसरे समर्थक थे मुस्लिम देश जो धर्म के नाम पर पाकिस्तान को हथियारों, हवाई जहाजों और गोलाबारूद तक की सहायता दे रहे थे। इनमें प्रमुख थे—ईरान, सऊदी अरब, जोर्डन और वह मिस्र भी जिसकी हिमायत भारत सदा करता रहा है मित्र के रूप में।

संसार का कोई भी देश यह नहीं चाहता था कि पाकिस्तान विभाजित हो जाय। यदि इसके लिए तीस लाख जनता के साथ-साथ पाकिस्तानी सैनिक और भी ३० लाख लोगों की हत्याएं कर देते तब भी चीन सहित यह सभी देश उस विशाल हत्याकांड को पहले की तरह ही पाकिस्तान का अन्दरूनी मामला ही कहते।

संसार के इतने प्रबल विरोध का मुकाबला भारत की प्रधानमन्त्री ने किस साहस और शांति से किया और लगातार अमेरिका की चुनौती को स्वीकार किया उसका प्रथम कारण देश की जन-शक्ति थी। देश की ५५ करोड़ जनता अपनी प्रधान मन्त्री के पीछे खड़ी थी। देश की सभी राजनैतिक पार्टियों के नेताओं ने उस काल में अपने सभी मतभेद भुलाकर एक मात्र—प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी को अपना नेता मान लिया था।

पाकिस्तान का आक्रमण होते ही देश के दूसरे बड़े दल—जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटल विहारी वाजपेयी ने खुले शब्दों में कहा था—अब देश में एक नेता, प्रधान मन्त्री—इन्दिरा गांधी हैं और एक झण्डा है और उस झंडे के पीछे हमारा सारा देश खड़ा है।

वस्तुतः सारा देश पाकिस्तानी अत्याचारों के विरुद्ध तो था ही, चीनी धमकी ौर अमेरिकी गुर्राहट के विरुद्ध भी था । अमेरिकी सरकार की गुर्राहट युद्ध की ामप्ति तक जारी रही ।

१ अप्रैल १९७१ ई० को अमेरिका के प्रसिद्ध समाचार-पत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' । अपने अग्रलेख में लिखा था—"राष्ट्रसंघ को चाहिए कि वह पाकिस्तान के राष्ट्र- ति याहिया खां पर दवाव डालकर पूर्वी बंगाल के कत्लेआम को बन्द कराये और ानता के चुने हुए नेता शेख मुजीवुर्रहमान को नेता के रूप में स्वीकार करे ।

अपनी सरकार से मांग करते हुए पत्र ने [आगे लिखा था—पाकिस्तान को ।मेरिकी शस्त्रों की की सप्लाई तुरन्त बन्द कर देनी चाहिए और आर्थिक सहायता ो इस शर्त पर देनी चाहिये कि उसका सदुपयोग पूर्वी बंगाल की आर्थिक स्थिति धारने पर किया जायेगा ।

उक्त पत्र ने अपने कथन के समर्थन में लिखा था—"हमारे राजदूत ने वताया कि पूर्वी वंगाल में नागरिकों का कत्लेआम किया जा रहा है। यह कत्लेआम पाकि- ान की घरेलू समस्या नहीं हैं। वहाँ छापामार लड़ाई जारी है और यदि यह लड़ाई ारी रही तो उसके भयंकर परिणाम निकल सकते हैं।" पत्र ने ढाका में रह रहे १०० अमेरिकी नागरिकों को भी वहां से निकालने की मांग की थी । साथ ही यह । भविष्यवाणी की थी कि पूर्वी वंगाल की जनता अधिक दिनों तक गुलाम नहीं ; सकती ।

इसके विपरीत इसी तारीख को अमेरिकी सरकार के एक प्रवक्ता ने कहा— ं यह पता नहीं कि हमारे शस्त्रों का प्रयोग पूर्वी पाकिस्तान की जनता के दमन के ाये किया जा रहा है ।

बंगला देश की घटनाओं के प्रति अमेरिकी सीनेट में सबसे पहले आवाज अमे- रिकी सिनेटर श्री जान कैनेडी ने १ अप्रैल १९७१ ई० को उठाई थी । उन्होंने बंगला देश की घटनाओं की ओर सिनेटरों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा था—"पूर्वी बंगाल में विरोधी दल के नेताओं व विद्वानों की भारी संख्या में हत्या की गई है । अमे- रिकन सरक-र को इन हत्याओं की निन्दा करनी चाहिये और इस चालू हत्याकाण्ड को अपने प्रभाव से बन्द करवाना चाहिये ।

"इन घटनाओं के कारण वहाँ पर भुखमरी और बीमारियों के फैलने की भी आशंका है । अतः अमेरिका का विशेष उत्तरदायित्व है कि वह इन घटनाओं को रोके । हमारी तोपों, मशीनगनों, टैंकों और वायुयानों का उपयोग पूर्वी बंगाल की

जनता के उन्मूलन के लिये हो रहा है और यह सैनिक सहायता सभी समझौतों की अवहेलना है।

सिनेटर जान श्री केनेडी ने अपना यह भाषण शरणार्थियों से सम्बन्धित जुडीशरी सब कमेठी के अध्यक्ष की हैसियत से किया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि अमेरिकी प्रशासन इस्लामाबाद की रक्षा और समर्थन को उत्सुक है और ढाका से प्राप्त होने वाले रोमांचक समाचारों पर चुप्पी सांधे बैठा है।

श्री केनेडी का यह भाषण उस समय हुआ था जब इस्लामाबाद ने अन्तर्राष्ट्रीय विमानों पर पूर्वी बंगाल में सहायता सामग्री ले जाने पर पाबन्दी लगा दी थी। अमेरिकी सरकार के इस रुख को देख कर दूसरे ही दिन श्रीलंका सरकार ने घोषणा की—हम पूर्वी बंगाल जाने वाले पाकिस्तानी वायुयानों को अपने अड्डों पर तेल इसलिये देते हैं ताकि पाकिस्तान सरकार और अधिक मुसीबतों में न पड़े।

६ अप्रैल १९७१ ई० को श्री कैनेडी ने अपनी सरकार के प्रवक्ता के इस कथन का कि १९५४ ई० में पाक सरकार से हुए समझौते के अनुसार, पाकिस्तान अमेरिकी शस्त्रों का प्रयोग अपने देश के आंतरिक विद्रोह को दबाने में कर सकता है, आलोचना करते हुए कहा—"इसका मतलब यह है कि अमेरिकी सरकार ने पाकिस्तान सरकार को मानव-हत्या करने का लायसेंस दे दिया है।"

१३ अप्रैल १९७१ ई० को अमेरिकी परराष्ट्र-विभाग के प्रवक्ता श्री चार्ल्स ब्रे ने रहस्योद्घाटन किया कि पाकिस्तान को अस्त्र, पुर्जे और बारूद वेचने सम्बन्धी १९६७ के निर्णय पर विचार किया जा रहा है और पुर्जे तथा शस्त्रास्त्र लेकर जो जहाज पाकिस्तान जा रहे हैं, उनके बारे में सोचा जा रहा है कि क्या हो सकता है। १९६७ का पाक से समझौता कोई बड़ी सप्लाई योजना नहीं थी; बल्कि नकद भुगतान के अन्तर्गत एक छोटा-सा व्यापारिक समझौता था। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान से कोई सैनिक समझौता भी हुआ है, इसका मुझे ज्ञान नहीं है।

२० अप्रैल को अमेरिकी सरकार ने अपने सब राजनयिकों को आज्ञा दी कि वह पूर्वी बंगाल की घटनाओं पर कोई वक्तव्य न दें। अमेरिकी सरकार ने यह पाबन्दी पाक की इस शिकायत पर लगाई थी कि भारत स्थित अमेरिकी राजदूत ने पाकिस्तान विरोधी वक्तव्य दिया है।

१७ जुलाई १९७१ ई० को अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन बे-नकाब हो गये लास ऐन्जेल्स में उन्होंने चीन का यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया जो उनके सलाहकार किसिंजर पेकिंग से उनके लिये लाये थे। यह हजरत पहले बंगला देश की समस्या पर बातचीत करने नयी दिल्ली आये थे। बाद में पाकिस्तान गये और वहां

से चुपचाप छद्म वेश में पेकिंग गये और पाकिस्तान रेडियो कहता रहा—वे श्री मुजीव से मिलने गये हैं। वाद में कहा—ईरान गये हैं। और उसके वाद कहा—अस्वस्थ होकर एक पहाड़ी पर आराम करने गये हैं; लेकिन यह नहीं वताया था कि वह पहाड़ी जहां किसिंजर आराम करने गये हैं पाकिस्तान में है या चीन में है। ९ जुलाई से ११ जुलाई तक किसिंजर चीन में श्री चाऊ एन लाई और श्री माओत्से तुंग से वातचीत करते रहे। यह वातचीत जहाँ उनकी अपने लिए थी, वहाँ वंगला देश के विरोध में भी थी।

इस सारे संघर्ष के समय में अमेरिकी सरकार की यह इच्छा रही कि वंगला देश किसी प्रकार स्वतन्त्र न हो।

वास्तव में भारत द्वारा किये गये एकतरफा युद्ध विराम की आशा संसार में किसी को भी नहीं थी। विश्व की शक्तियों का ख्याल था कि युद्ध लम्वा खिंचेगा; लेकिन स्वयं पाकिस्तानी जनता का विचार था कि एक सप्ताह में पाकिस्तान ही समाप्त हो जायेगा; क्योंकि पूर्वी पाकिस्तान वंगला देश के नाम से स्वतन्त्र हो चुका था। पश्चिमी मोर्चे पर भारतीय सेना ६०० वर्गमील भूमि पाकिस्तान से छीन चुकी थी। अतः पाकिस्तानियों के दिल में सन्देह होना स्वाभाविक ही था।

युद्ध विराम के वाद भारत ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि पाकिस्तानी सैनिक सरकार का शीराजा भी तत्काल ही विखर जायेगा और पाकिस्तान का सैनिक राष्ट्रपति याहिया खां श्री भुट्टो को सत्ता सौंपकर अलग हो जायेगा।

पाकिस्तान में सत्ता श्री भुट्टो को मिल गयी। उसी भुट्टो को जिसने १९६५ के युद्ध में राष्ट्रसंघ में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल को 'कुत्ते' कहा था और एक हजार साल तक युद्ध करते रहने की घोषणा भी की थी। अतः भारत के हृदय में श्री भुट्टो के प्रति सन्देह होना स्वाभाविक था। श्री भुट्टो के नये कदम की भारत सरकार को प्रतीक्षा करनी थी।

अपने प्रारम्भिक भाषणों में भुट्टो भारत को धमकाते भी रहे और समझौते के नारे भी लगाते रहे और पाकिस्तान के टूटने के दोष याहिया खाँ और अय्यूव खाँ के साथ-साथ कायदे आजम पर भी मढ़ते रहे। उसके पश्चात् उन्होंने चीन की सलाह लेने के लिये पेकिंग का चक्कर लगाया और मास्को भी गये। शाह ईरान से दिन में तीन वार वे टेलीफोन पर वातचीत करते थे। साथ ही एक न एक भाषण भी वह पाकिस्तान में जरूर देते थे। अपने भाषण में वंगला देश को वे अव भी पूर्वी पाकिस्तान ही कहते थे; लेकिन भारत के युद्ध-विराम के वाद विदेशों ने वंगला देश को मान्यता जव देनी शुरू की तव भुट्टो अवश्य परेशान हुए। प्रारम्भ में उन्होंने सभी

विदेशी राजदूतों को अपने घर बुलाया। उन्हें दावत दी और साथ ही यह अपील की कि उनकी सरकारें बंगला देश को मान्यता न दें। साथ ही धमकी भी दी कि यदि किसी देश की सरकार बंगला देश को मान्यता देगी, तब वे उससे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेंगे।

अपनी उस घुड़की को श्री भुट्टो ने प्रारम्भ में कार्यरूप में परिणित भी किया और यहाँ तक किया कि उन्होंने ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल तक से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया; लेकिन जिस तेजी से विदेशों ने बंगला देश को मान्यता देनी शुरू की, उससे श्री भुट्टो का उत्साह शिथिल हो गया। ब्रिटेन ही नहीं अमेरिका तक ने मान्यता दे दी। दूसरे शब्दों में अरब देशों और चीन को छोड़कर लगभग सभी देशों ने बंगला देश को मान्यता दे दी।

इन घटनाओं के पश्चात् २ जुलाई को शिमला में पाकिस्तान के साथ संधि हुई। भारत सरकार ने पाकिस्तान की सारी जीती हुई भूमि उसे वापस करने की घोषणा की। इस घोषणा का अन्य राजनैतिक दलों ने समर्थन किया, लेकिन जनसंघ ने इसे 'ताशकन्द समझौते' से भी बदतर बताते हुए इसके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया।

प्रश्न यह है कि यदि भारत पाकिस्तान की जमीन न लौटाता तब क्या करता, कुछ भारतीयों का विचार यह है कि उसे इजरायल की तरह जमीन नहीं लौटानी चाहिए थी। यदि लौटानी थी तो १६४८ ई० में आक्रमण करके कश्मीर की जमीन जो पाकिस्तान ने दबा रखी है और जिसको वह आजकल आजाद कश्मीर के नाम से पुकारता है, वह वापस लेनी चाहिये थी।

बात उनकी ठीक है, लेकिन भारत के सामने स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह इन दोनों बातों पर पाकिस्तान को विवश कर देता। भारत के बारे में अमेरिका का रुख पूर्ववत् था जबकि इजरायल के बारे में वह अभी तक भी चुप है। उसने एक बार भी उसे मिस्र की भूमि छोड़ने के लिये विवश नहीं किया। अतः वह पाकिस्तान को फिर युद्ध जारी रखने की सलाह दे सकता था और उस समय भारत दूसरा वियतनाम भी बन सकता था।

यह स्थिति और भी आगे बढ़ सकती थी। बंगला देश की पाकिस्तान से पृथक्ता को भी चुनौती दी जाती। उस दशा में युद्ध कब तक चलता—कोई नहीं जानता।

अब रहा कश्मीर की जमीन का मामला। यह मामला राष्ट्रसंघ में भारत

स्वयं लेकर गया था। राष्ट्रसंघ का निर्णय भी उस जमीन को लौटाना था; लेकिन पाकिस्तान ने नहीं लौटायी बल्कि उसकी कुछ जमीन चीन को भी दे दी। उस जमीन से अदला-बदली करने से तब सहूलियत अधिक थी, जब १९६६ में ताशकन्द समझौता के अन्तर्गत हाजीपीर को वापस न किया जाता। दूसरे भारत सरकार के सामने एक प्रश्न यह भी था कि यदि भुट्टो से समझौता नहीं हो सका तो पुनः पाकिस्तानी सैनिक जुन्ता शासन छीन लेगी। और भारत-पाक में पुनः विगत वर्षों की स्थिति आ जायेगी। इसलिए भुट्टो की जनतंत्री सरकार को मौका मिलना चाहिए।

मैं यहां शिमला समझौते की वकालत नहीं कर रहा हूँ। मैं स्वयं मानता हूँ पाकिस्तान के साथ जितने भी समझौते हमारे देश के हुए उसने एक पर भी अमल न करके बार-बार हमारे देश पर आक्रमण किये और निश्चय ही हमारे वीरों के बलिदानों का लाभ देश को जितना मिलना चाहिये था, नहीं मिला। वह समझौतों के कारण हल्का पड़ता गया।

फिर भी इन बलिदानों से दो लाभ हुए—१. भारत की सैनिक शक्ति की जितनी छिछालेदर हुयी थी, उसका रूप शौर्य में बदल गया। २. भारत की सीमांत पर बंगला देश नाम का एक मित्र मिल गया। जिसकी सीमा के सामने भारत को अपनी सेनाएं नहीं खड़ी रखनी होंगी।

शिमला समझौते का आगे परिणाम क्या निकलेगा—यह तो अतीत की बातें हैं, लेकिन भारतीय बलिदानियों के रक्त से बंगला देश नाम के जिस नये नक्शे का निर्माण होकर भूगोल में जुड़ा है—वह शाश्वत—सत्य है और 'बंगला देश' नामक इस शोध पुस्तक को लिखने का अभिप्राय: भी यही है कि आने वाली दोनों देशों की पीढ़ियां इस सत्य से सदा अवगत रहें कि इस देश के निर्माण में केवल मानवता और मित्रता के नाम पर बंगला देश के निवासियों के रक्त में भारतीयों ने अपना रक्त मिलाया था। जय हिन्द।

गाजियाबाद अगस्त १९७२ ई०

चिरंजीलाल पाराशर

सोनार बाँगला

[बंगला देश का राष्ट्रगीत]

आमार सोनार बांगला
आमि तोमाय भोला वासी
चिर दिन तोमार आकाश तोमार वाताश
आमार प्राणे ओ माँ आमार प्राणे
वाजाय बाँसी ॥

ओ फागुने तोर आमेर वोने
ज्ञाने पागल करे
मोर हाथ हाय रे ॥
ओ माँ अज्ञाने तोर भराखेते
की देखेचि की देखेचि
मधुर हांसी ॥

की शोभा की छाता गो
की स्नेहों की माया गो
आँचल विछाएचे वटेर मूले
नदिर कूले-कूले
माँ तोर मुखेर वानी आमार काने
लागे सुधार मत
मारि हाथ हाय रे ॥
माँ तोर वदन खानि मलिन हले
आमि ओ आमि
नयन जले भासी ॥

सोनार वंगला
आमि ओ माँ आमि
चिरदिन तोमार आकाश तोमार वाताश
आमार प्राणे ओ माँ आमार प्राणे
वाजाय वाँसी ॥

विषय-सूची

भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी

"मैंने भारत और बंगला देश की जनता से तीन वायदे किये थे—१. शेख मुजीबुर्रहमान को आजाद कराना, २. बंगला देश को स्वतंत्र कराना और ३. बंगला देश के शरणार्थियों को स्वतंत्र बंगला देश में वापस भेजना—वह वायदे पूरे हुए।"

—श्रीमती गांधी, नयी दिल्ली, १० जनवरी १९७२
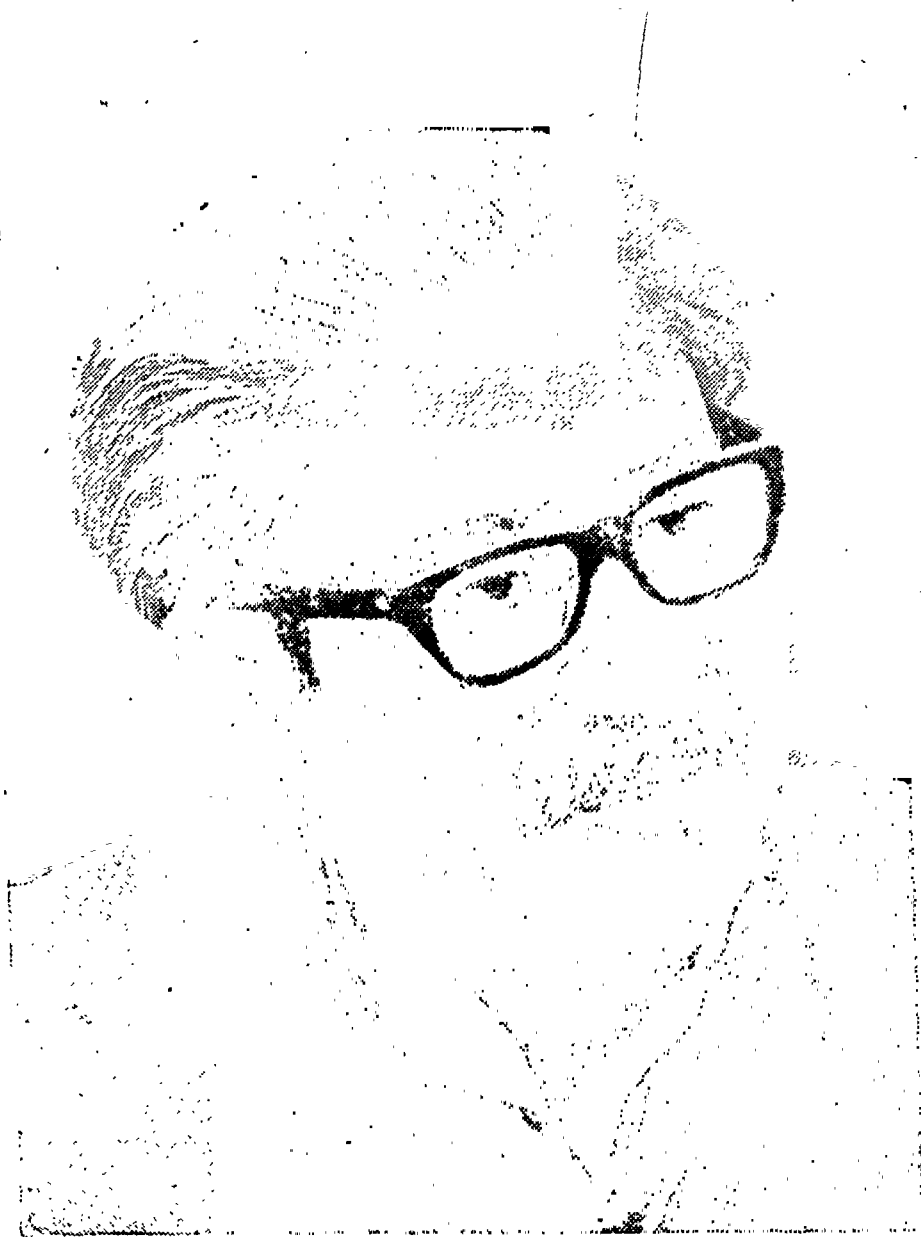
"अपनी काल कोठरी में मैंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि फांसी से बचकर अपने देश लौट सकता हूं । अतः अपनी और अपने देश की मुक्ति के लिए मैं भारतीय जनता, भारतीय सेना और भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं । —शेख मुजीबुर्रहमान, १० जनवरी १९७२, नयी दिल्ली

थल सेनाध्यक्ष जनरल श्री मानिकशाह

"वास्तव में पाकिस्तानी सेना खूब वहादुरी से लड़ी; लेकिन विना अमेरिकी ७वें बेड़े की परवाह किये, यदि पाकिस्तानी सेना हथियार न डालती तो हम सारी सेना को यमपुर भी भेज देते।"

—जरनल मानिकशाह, कलकत्ता, १६ दिसम्बर १९७१

वायुसेनाध्यक्ष श्री पी. सी. लाल

पाकिस्तानी हमले के लिए हम सचेत थे । अतः उसके हमले का उत्तर केवल दो घण्टे बाद ही हमने पाकिस्तान के सारे हवाई अड्डों पर एक साथ हमला करके दिया और दूसरे दिन पाकिस्तानी बचाव की लड़ाई पर आ गये थे ।

—वायुसेनाध्यक्ष श्री लाल, नई दिल्ली १२ जनवरी ७२

जल सेनाध्यक्ष श्री नन्दा

युद्ध के तीसरे ही दिन हमने कराची से अरब सागर तक की नाकाबन्दी कर पाकिस्तान के कराची बन्दरगाह को धूल में मिला कर विश्व को यह दिखा दिया था कि भारत की जलसेना कितनी शक्तिशाली है और १० दिसम्बर तक पाक की जल सेना लगभग समाप्त ही कर दी थी। —जल सेनापति श्री नन्दा, कलकत्ता

पूर्वी कमान के सेनापति श्री जगजीतसिंह अरोड़ा

संसार के इतिहास में यह पहला अवसर है कि इतनी बड़ी सेना से हमने इतने थोड़े समय में हथियार रखवा लिए; लेकिन सेना में बड़े लोगों के या उच्च वर्गों के बच्चे नहीं आ रहे, यह बहुत अखरने वाली घटना है।

—श्री अरोड़ा, कलकत्ता १७ दिसम्बर १९७१

पश्चिमी कमान के सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल श्री कैंडेथ

"काश, यदि लड़ाई दो दिन और चल जाती, तब शकरगढ़ पर अधिकार करके ४० हजार पाक सेना को दिल्ली हांक लाता।"

—जनरल कैंडेथ, नयी दिल्ली, २० दिसम्बर १९७१ ई०

मेजर कपिल मोहन
(डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर मोहन नगर)

शकरगढ़ युद्ध-क्षेत्र से लौटने पर अपने स्वागत के उत्तर में आपने कहा—देश नहीं तो कुछ भी नहीं, इसी हृदय की भावना के कारण मैं हर युद्ध में लड़ने जाता हूँ। मैं उद्योगपति मोहन नगर में हूँ। रणक्षेत्र में, मैं सैनिक हूँ।

—मेजर कपिल मोहन, मोहननगर

विषय-प्रवेश

६ दिसम्बर का दिन विश्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा; क्योंकि इस दिन परिस्थितियों के सर्वथा विपरीत होते हुए भी वंगला देश का उदय हुआ। स्वतन्त्र वंगला देश की घोषणा हुई और स्वतन्त्र वंगला देश की प्रथम सरकार वनी। इससे पहले दिन तक संसार का यह देश १४ अगस्त १६४७ ई० से पाकिस्तान का एक भाग था और पूर्वी पाकिस्तान के नाम से विश्व में विख्यात था। इसी दिन भारत सरकार ने इसे मान्यता दे दी। वंगला देशवासी अपनी कामचलाऊ सरकार इससे तीन महीने पहिले ही वना चुके थे।

अंग्रेजी सरकार ने भारत की स्वतन्त्रता के समय भारत के पूर्वी पश्चिमी भाग को काट कर दो अलग-अलग टुकड़ों का एक देश—पाकिस्तान इस आधार का सहारा लेकर वनाया था कि इन दोनों क्षेत्रों में मुसलमानों की संख्या अधिक है और उनकी संस्कृति हिन्दुओं की संस्कृति से मेल नहीं खाती, अतः मुस्लिम लीग के नेता मियां मुहम्मद अली जिन्ना की वात मानते हुए मुसलमानों का अलग देश वनाया जाता है। अन्ततः अंग्रेजों की इस दलील को कांग्रेस के नेता पं० जवाहरलाल नेहरू सहित महात्मा गांधी ने भी अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी थी। यह वर्तमान वंगला देश, उसी पाकिस्तान का एक टुकड़ा था, दूसरे टुकड़े से एक हजार मील अलग और अलग वेश-भूषा और भाषा वाला क्षेत्र पूर्वी वंगाल। जिसकी भाषा वंगाली और रहन-सहन वंगाली था। उस समय इसकी आवादी ७॥ करोड़ थी जिनमें दो करोड़ से कुछ कम हिन्दू थे।

विगत वीस-पच्चीस वर्षों में एशिया और अफ्रीका के पचासों देशों ने स्वतन्त्रता प्राप्त की है, किन्तु उन देशों की स्वतन्त्रता का विरोध प्रायः कहीं नहीं हुआ। लेकिन वंगला देश की स्वतन्त्रता का विरोध इतिहास की एक नवीनतम घटना है। संसार के १०४ देशों ने संयुक्त राष्ट्र संघ में वंगला देश की स्वतन्त्रता का घोर विरोध किया। आश्चर्य की वात यह है कि विरोधियों में भी सवसे वड़ी संख्या मुस्लिम देशों की थी। प्रायः सारे ही अरव देश वंगला देश की स्वतन्त्रता के विरोधी

ही नहीं, अपितु वहाँ चल रहे नर-संहार के लिये पाकिस्तान को धन और हथियार श्रीलंका के रास्ते भारी मात्रा में पहुँचा रहे थे। इन देशों के साथ ही इसी रास्ते से अपने को गरीबों को मसीहा और छोटे देशों की स्वतन्त्रता का हामी बताने वाला चीन भी हथियार दे रहा था और संसार में प्रजातन्त्र का रक्षक कहलाये जाने वाला अमेरिका भी हथियार दे रहा था।

हथियार देने वालों में ईरान, टर्की और सऊदी अरब धन और वायुयान भी दे रहे थे। भारतीय सेना ने ढाका से इतने हथियार इकट्ठे किये कि उनसे ५० हजार आदमियों की एक नयी फौज खड़ी की जा सकती है।

श्रीलंका के रास्ते यह हथियार इसलिए भेजे जा रहे थे; क्योंकि ३० जनवरी १९७१ ई० को कश्मीर से दिल्ली आते हुए एक भारतीय यात्री डकोटा विमान को दो पाकिस्तानी जासूसों ने चालक की कमर पर पिस्तौल रख कर लाहौर के हवाई अड्डे पर उतरने के लिए मजबूर किया और लाहौर के हवाई अड्डे पर उतरने के बाद उसमें आग लगा दी। पाकिस्तान सरकार तमाशा देखती रही और पाकिस्तानी जनता ने उनका शानदार जलूस निकाला। इसके प्रतिकारस्वरूप भारत ने पाकिस्तान के सभी जहाजों की उड़ान भारत के आकाश पर रोक दी और बाद में अर्थात् सात और आठ दिसम्बर १९७१ को तो पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) की वायु सेना को ही भारतीय वायुसेना ने समाप्त कर दिया था। लेकिन तब तक बंगला देश के ३० लाख आदमियों का कत्ल पाकिस्तानी सेना कर चुकी थी। १० लाख स्त्रियों और लड़कियों से बलात्कार करके २० लाख पुरुषों को कत्ल कर दिया गया था।

यह सोच कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि यदि भारतीय सेना पाकिस्तानी सेना को पूर्वी पाकिस्तान में बुरी तरह न कुचल देती और पाकिस्तान की एक लाख सेना को हथियार डालने के लिए विवश न करती तो कुछ महीनों में ही यह क्रूर सैनिक और अफसर इस सोनार बाँगला देश से बंगालियों का नामोनिशान ही मिटा देते। बंगला देश की मुक्तिवाहिनी बिना हथियारों की मदद के आखिर कब तक लड़ती रहती, विशेषकर उस दशा में जबकि संसार की दो बड़ी ताकतें उसे कुचलने के लिए पाकिस्तान को हथियार और धन तथा अन्न मुफ्त दे रही थीं।

अवामी लीग के उस समय के अध्यक्ष और वर्तमान में बंगला देश के प्रधानमंत्री शेख मुजीबुर्रहमान को २५ मार्च १९७१ ई० रात को ढाका में उनके धान मण्डी के मकान से गिरफ्तार करके पश्चिमी पाकिस्तान भेज दिया गया था और दूसरी ओर पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति याहिया खां भी अपनी सेना को कत्लेआम का आर्डर देकर इस्लामाबाद चले गये थे।

उससे एक दिन पहिले याहिया खां के अफसरों ने पूर्वी बंगला रेजीमेंट से हथियार ले लिये थे और सीमाओं पर ड्यूटी पर तैनात पूर्वी बंगाल रायफल्स सेना के स्थान पर पश्चिम पाकिस्तान से लायी गई बलूच सेना तैनात कर दी गयी थी ताकि भारत से बंगालियों को कोई मदद न मिल सके।

कत्लेआम शुरू हुआ। जवान लड़कियों और बहुओं को पाकिस्तानी सैनिकों ने उनके घर वालों के सामने बेइज्जत करना शुरू किया। अपनी पसन्द की औरतों को अपने साथ ले गये। छोटे-छोटे बच्चों को संगीनों से छेद कर फुटबालें बनाई गयीं। जवान औरतों की कतारें निर्वस्त्रा बाजारों में व्यभिचार के लिए खड़ी की गयीं। जिनसे ड्यूटी पर जाते सैनिक खुले रूप से अपनी पैशाचिक हविश पूरी करते थे।

अवामी लीग के समर्थक मुसलमानों और हिन्दुओं के घरों का पता बताने वालों को बख्श दिया गया। उन्हें 'रजाकारों' और 'जिहादियों' की सेना में भर्ती कर लिया गया। कई लाख जिहादी और रजाकार लुटाई, कत्ल और लड़कियों से व्यभिचार करने के लिए पश्चिमी पाकिस्तान से लाये गये। शेष वहीं बसे बिहारी मुसलमान थे।

ढाका विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों को कत्ल कर दिया गया। वहाँ के वैज्ञानिक और तीनसौ बुद्धि-जीवियों को एक लाईन में खड़ा करके गोली से उड़ा दिया गया। बाकी को घरों में जाकर 'अलबदर' वालों ने मारा।

छात्रावास में रहने वाली अधिकतर हिन्दू कन्याओं ने छात्रावास की चौथी मंजिल पर चढ़कर नीचे छलांग लगाकर अपनी जान दे दी।

सारे बंगला देश में भगदड़ मच गयी। पूरे एक करोड़ बंगला देशवासी शरण लेने के लिए भारत भाग आए।

इनके रहने-सहने के लिए भारत सरकार ने जगह-जगह कैंप बनाये। लगभग ३ करोड़ रुपया रोजाना इन पर भारत सरकार का खर्च होना शुरू हुआ। सारे देश में इनके लिए चन्दा होना भी शुरू हो गया। भारत के स्कूलों के बच्चों ने अपना जेब खर्च चन्दे में दिया। श्रमिकों ने व शिक्षकों ने वेतन दिया। उद्योगपतियों ने एकमुश्त धन दिया।

भारत सरकार ने संसार के सब देशों से अपील की कि इस समस्या का राजनैतिक हल निकाला जाय। भारत सरकार इस भारी बोझ को उठाने में असमर्थ है। अतः कोई ऐसा राजनैतिक हल खोजा जाय जिससे यह शरणार्थी अपने देश लौट सकें और फिर इनका कत्लेआम न हो।

भारत की इस अपील पर सोवियत यूनियन के अलावा किसी भी देश ने ध्यान नहीं दिया। सभी देशों ने इस नर-संहार को पाकिस्तान का अन्दरूनी मामला बता

कर उपेक्षा की। यहाँ तक कि राष्ट्र संघ के महासचिव श्री ऊथांत ने भी इसे पाकिस्तान का अन्दरूनी मामला कह कर उपेक्षा कर दी। अलबत्ता मानवता के नाम पर कुछ देशों ने थोड़ी-सी आर्थिक सहायता अवश्य दी। उनमें भी अमेरिका एक ऐसा देश था जिसने शरणार्थी सहायता को भी भारत न भेजकर पाकिस्तान भेजा।

विश्व जनमत को वास्तविकता से परिचित कराने के लिए भारत सरकार ने सभी देशों के राजनयिकों और पत्रकारों को भारत आने के लिए आमंत्रित किया कि वे स्थिति की भयानकता को स्वयं आकर देख जायें।

इसका प्रभाव केवल इतना पड़ा कि अमेरिका से सिनेटर जान कैनेडी आये, जर्मनी, कनाडा, फ्रांस आदि बड़े-बड़े देशों के राजनयिकों ने बंगला नागरिकों के भारत स्थित कैम्पों में जाकर उनकी स्थिति को देखा और उनसे बातचीत भी की।

अपने देश लौटकर उन्होंने अपनी सरकारों को तो स्थिति की जानकारी दी ही, समाचारपत्रों और टेलिवीजनों में भेंटें दीं और सही स्थिति संसार के सामने रखते हुए मांग की कि इस समस्या का कोई राजनैतिक हल निकालना जरूरी है, तभी शरणार्थी वापस जा सकते हैं, अन्यथा इस उप-महाद्वीप में युद्ध अवश्यम्भावी है।

इन राजनयिकों की अपील को ब्रिटेन ने समझा और सोवियत रूस पहले ही समझ चुका था। न समझने वालों में थे अरब देश, जो धर्म के नारे के साथ पाकिस्तान के साथ थे। चीन, जो यह समझ रहा था कि बंगला देश बन गया तो भारत का एक झंझट—सीमायी झंझट तो समाप्त हो ही जायेगा। मिजो और नागाओं के भड़काने के रास्ते बन्द हो जायेंगे, इसलिए वह भी विरोधी था। इनमें सबसे बड़ी विरोधी थी अमेरिकन सरकार और उसमें भी राष्ट्रपति निक्सन और उनके सलाहकार श्री किसिंगर थे। यह लोग अपने प्रेस और अपनी जनता के विरोध की परवाह किए बिना भी पाकिस्तान को दबादब हथियार और हवाई जहाज दिए जा रहे थे। भारत को हरवाने के लिए। और इन्हीं की सलाह से ३ दिसम्बर १९७१ ई० को पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहिया खाँ ने रात के लगभग १० बजे भारत के १२ शहरों के हवाई अड्डों पर, एक साथ इजरायली ढंग का आक्रमण करके युद्ध का श्रीगणेश भी किया था। उसी दिन सवेरे अमेरिकी दूतावास की महिलाएँ और बच्चे अमेरिका वापस भेज दिए गए थे। याहिया ने दस दिन के अन्दर स्वयं को युद्ध क्षेत्र में जाने के लिए कहा था। यानी दस दिन में उसे युद्ध छेड़ना था; लेकिन उसने दो दिन पहले ही अपना आक्रमण शुरू कर दिया।

जब संसार के राजनयिक भी अपनी-अपनी सरकारों को वस्तु स्थिति से अवगत कराकर भी असफल हो गये तब भारत के सामने एक अद्भुत संकट आ खड़ा

हुआ। एक ओर शरणार्थियों का प्रवाह जारी था। दूसरी ओर चीन और अमेरिका के उकसाने पर पाकिस्तान का राष्ट्रपति याहिया खां रोजाना युद्ध की धमकियाँ दे रहा था और भारतीय सीमाओं पर उसने छेड़छाड़ शुरू कर दी थी। एक तरह से भारत सरकार दुश्मन और उसके मित्रों तथा बंगला देश से आये शरणार्थियों के बोझ से दब चली थी। देश में स्वयं अशान्ति महसूस होने लगी थी। यह अशान्ति इसलिए और बढ़ने का अन्देशा था कि इसी मसले पर पाकिस्तान से वार्तालाप करने के लिए श्री निक्सन के सलाहकार श्री कीसिंगर चुपचाप रावलपिंडी से पेकिंग चीनियों से अपना समझौता करने छद्मवेश में गये थे।

इन्हीं सारी बातों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने विशेषकर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने तीन कदम उठाये। पहले उन्होंने तथा रक्षा मन्त्री श्री जगजीवनराम ने शरणार्थी कैम्पों का दौरा किया और उन्हें विश्वास दिलाया कि आपको वापस भेजा जायेगा; लेकिन तब जब आपकी जान को कोई खतरा नहीं होगा और आपकी बहू-बेटियों की इज्जत सुरक्षित होगी। वह देश, तब पाकिस्तान न होकर आपका प्रिय बंगला देश हो सकता है—मुजीबुर्रहमान का बंगला देश।

इसके बाद श्रीमती गांधी को जब यह महसूस हुआ कि देश अपने को एकाकी अकेला अनुभव करता है और संसद में भी विरोधी दल के नेताओं ने उन्हें यही अनुभव कराया कि भारत मित्रविहीन हो गया है, तब प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने सोवियत यूनियन से परस्पर सहयोग की एक संधि की जिसकी ९वीं धारा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उसके अनुसार दोनों देश संकट के समय एक-दूसरे से विचार-विमर्श कर सकते हैं। इससे अधिक सुरक्षा-संधि हम करते तो वह देश के लिए अत्यन्त हानिकर हो सकती थी; क्योंकि पाकिस्तान सी०ए०टो० सैनिक संगठन का सदस्य राष्ट्र है; जिसके विधान के अनुसार इस सन्धि के सदस्य किसी भी देश पर यदि कोई कम्यूनिस्ट देश आक्रमण करता है तो सभी देश उसे अपने ऊपर आक्रमण मानेंगे। इसी की आड़ लेकर अमेरिका पाकिस्तान की तरफ से खुले रूप से युद्ध में आ सकता था। इसी बात का विश्लेषण युद्ध के दौरान भी अपनी १२ दिसम्बर १९७१ ई० की रामलीला मैदान की विशाल सभा में प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने किया भी था कि मुझे मालूम नहीं पाकिस्तान और अमेरिका में कोई सैनिक-संधि भी है। मुझे केवल इतना पता है कि कम्युनिज्म को रोकने के लिए अमेरिका ने सी० ए० टो० नामक एक सैनिक संगठन का निर्माण किया था जिसका सदस्य पाकिस्तान है। अतः सोवियत मित्रता भारत के लिये बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई, सुरक्षा-परिषद् में भारत-पाक युद्ध के दौरान पेकिंग-पिंडी वाशिंगटन धुरी और उनके साथ

अरब देशों के गठजोड़ ने दो वार भारत को नीचा दिखाने के लिये आक्रमणकारी कह कर अपनी सेनाएं हटाने के प्रस्ताव प्रस्तुत किये उन्हें सोवियत रूस ने अपने वीटो से पीट कर समाप्त किया।

ढाका आपरेशन के समय जव भारतीय सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शाह वार-वार ढाका में १ लाख सेना के पाकिस्तानी सेनापति जनरल नियाजी से हथियार डालने का आग्रह कर रहे थे, तव इस्लामावाद से उसे सलाह दी जा रही थी कि हथियार मत डालना कुछ अजीब घटनाएँ घटने वाली हैं। नियाजी ने चुप्पी साधी, उसके वाद भारतीय कमाण्डर श्री जगजीतसिंह अरोड़ा ने ढाई सौ हवाई जहाजों और इतने ही हैलीकोप्टरों से ढाका के चारों ओर सेनाएँ छतरियों से उतार दीं। जैसोर छावनी को समाप्त कर भारतीय सेनाओं की बटालियनें भी ढाका की ओर वढ़ रही थीं। चटगांव वन्दरगाह पर भारतीय वायुसेना ने इतने राकेट वरसाये थे कि वह तहस-नहस हो चुका था।

याहिया की सलाह का भेद दूसरे ही दिन खुल गया। पहले चीन का एक विरोध-पत्र भारत सरकार को मिला। भारत ने तीन बार सिक्किम की ओर से हमारे क्षेत्र में घुसपैठ की है। इसे चीन सरकार बर्दाश्त नहीं करेगी।

इसके साथ ही भारत सरकार को सूचना मिली कि अमेरिका का सातवां वेड़ा वंगाल की खाड़ी की ओर आ रहा है। इस वेड़े में आठ जंगी जहाज हैं और इनकी कमान परमाणु-चालित विध्वसंक जहाज इन्टरप्राइज कर रहा है।

चीन की ओर से हमारी सरकार निश्चिन्त थी। वह जानती थी कि चीन की ओर के हमारे सीमान्त सुरक्षित हैं। युद्ध के समय भी हमारी सरकार ने उधर से एक वटालियन तक नहीं हटाई थी। दूसरी वात यह है कि चीनी लोग भारतीयों के बरावर न तो मौसमों के प्रहार को सह सकते हैं और न ही भारतीयों से ज्यादा वीर या लड़ाका हैं। अतः मौसम के लिहाज से भी वे मार्च के आखिर और अप्रैल के प्रारम्भ तक तो हमारी ओर वढ़ने का साहस ही नही कर सकते थे। अतः इस तरफ से सरकार निश्चिन्त थी, जवाव भेज दिया गया। अव अमेरिकी वेड़े का ख्याल था जिसका आना भारतीय जनता के मस्तिष्कों पर प्रभाव डाल रहा था।

उस समय सोवियत यूनियन के उप-प्रधानमन्त्री अपने उच्चाधिकारियों के साथ भारत की राजधानी दिल्ली में थे और अगले दिन उन्हें वापस लौटना था। उनकी वापसी रुक गई और दूसरे दिन लोगों ने समाचार-पत्रों में पढ़ा कि अमेरिकी वेड़े का पीछा रूसी वेड़ा कर रहा है। इसमें २० युद्ध पोत हैं और उसमें शामिल होने के लिए दो युद्ध पोत और तेजी से आ रहे हैं। जनता में साहस का संचार हुआ,

मित्रता के लाभों का पता चला। सोवियत मैत्री का समर्थन ही नहीं, सोवियत संघ की सच्ची मित्रता की प्रशंसा विरोधी दल—जनसंघ के अध्यक्ष अटलबिहारी वाजपेयी तक ने मुक्तकंठ से की।

भारत सरकार ने बंगला देश की मुक्तिवाहिनी को हर संभव सहायता देनी शुरू की ताकि पाकिस्तानी सेनाएँ कम-से-कम बंगला देश के गांवों में तो अत्याचार न कर सकें। जनता के हौसले ज्यादा न टूटें, क्योंकि बंगला देश के सेनापति कर्नल उस्मानी ने स्वयं यह कहा था कि पाकिस्तानी कत्लेग्राम के कारण लोग काफी डर गये हैं और उनके भेदिये बनते जा रहे हैं। यदि हमें और हथियार मिलें तो जनता का मनोबल दृढ़ बना रह सकता है। इसलिए मुक्तिवाहिनी को चोरी-छिपे जितने शस्त्र दिये जा सकते थे, दिये और उनके जवानों के लिये अपने यहाँ ट्रेनिंग सेंटर भी कायम किए। पन्द्रह दिन की ट्रेनिंग के बाद बंगला देश के जवानों को मुक्तिवाहिनी के पास भेज दिया जाता था, बिना वर्दी भारतीय सैनिक भी उनकी सहायता करते थे।

प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी जब अमेरिका गई थीं, तब उन्होंने स्वयं साफ-साफ यह कह दिया था कि मुक्तिवाहिनी के सैनिकों को ट्रेनिंग हमारे यहाँ दी जाती है।

अस्तु, अन्य कोई उपाय न देखकर प्रधानमन्त्री गांधी ने स्वयं बड़े-बड़े देशों की चौदह दिन की यात्रा करने का निश्चय किया ताकि उन देशों के राष्ट्राध्यक्षों और प्रधान-मन्त्रियों से वे सीधी और साफ बातें करके उन्हें वस्तुस्थिति समझा सकें और कोई राजनैतिक हल निकालने के लिए विवश कर सकें।

इस समय प्रधानमन्त्री की यात्रा का उद्देश्य था कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान को रिहा करके उनसे समझौता वार्ता करें, सभी शरणार्थी वापस लिये जायें और कत्लेग्राम बन्द हो। इससे पहले भारत के विदेश मन्त्री सभी बड़े देशों की यात्रा कर चुके थे; लेकिन कोई ठोस परिणाम नहीं निकला था। इसीलिए प्रधानमन्त्री ने स्वयं यात्रा का निश्चय किया।

अमेरिका को छोड़ कर प्रधानमन्त्री की यह यात्रा कहीं निष्फल नहीं रही। अमेरिका में भी जनता और अमेरिकी प्रेस पर उनके भाषणों का अच्छा प्रभाव पड़ा। उनकी यात्रा के ही कारण ब्रिटेन और फ्रांस सुरक्षा परिषद् में तटस्थ रहे। पोलैंड और सोवियत यूनियन बराबर हमारे साथ रहे। उस समय अमेरिकी प्रतिनिधि का भाषण ऐसा था, मानो वह अमेरिका का प्रतिनिधि न होकर, पाकिस्तान का प्रतिनिधि हो।

वस्तुत: अमेरिका का दृष्टिकोण किसी तरह पाकिस्तान की ओर से इस युद्ध में चीन को धकेलने का था; लेकिन जब चीन को हिम्मत तोड़ते देखा तब उसने स्वयं ही इस युद्ध में हिस्सा लेने का निश्चय कर लिया था। पहले वह ईरान और टर्की को तथा लीबिया और सऊदी अरब को युद्ध की आग में अपने हथियार देकर फेंकना चाहता था। इनसे भी यदि कुछ न होता तो निक्सन सरकार स्वयं युद्ध में कूदने के लिये तैयार थी।

निक्सन को भारत का शक्तिशाली होना तो कतई पसन्द था ही नहीं, वह सोवियत यूनियन का प्रभाव भी दक्षिण-पूर्वी एशिया से मिटाना चाहता था। अरबों को इजरायल से पिटवाकर अरब देशों से सोवियत प्रभाव को हल्का करने में अमेरिका सफल हो गया था। अब भारत को पाकिस्तान से परास्त करा कर दक्षिण-पूर्वी एशिया से सोवियत प्रभाव समाप्त करना चाहता था ताकि हिन्द महासागर में उसकी आसानी से धाक जम जाय, लेकिन युद्ध में पाक पिट गया।

१७ दिसम्बर १९७१ ई० को भारत सरकार ने अपनी ओर से युद्ध विराम की घोषणा कर दी। २० दिसम्बर १९७१ को याहिया खां ने राष्ट्रसंघ से भुट्टो को बुलाकर अपना इस्तीफा दे दिया और भुट्टो को राष्ट्रपति बना दिया। ८ जनवरी १९७१ ई० की रात के ४॥ बजे, (कलेण्डर की तारीख के हिसाब से) भुट्टो ने श्री मुजीबुर्रहमान को रिहा करके लन्दन भेज दिया। १० जनवरी १९७२ ई० को शेख मुजीबुर्रहमान ढाका जाने से पहले नयी दिल्ली आये।

नयी दिल्ली में भारत के राष्ट्रपति श्री गिरि और प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने उनका स्वागत किया। २१ तोपों की सलामी दी गई। विशाल संख्या में दिल्ली की जनता ने उनका स्वागत किया।

दिल्ली की जनता के सामने अपने स्वागत भाषण का उन्होंने उत्तर दिया। बाद में श्री मुजीब राष्ट्रपति भवन गये। प्रधानमन्त्री से बातचीत की और उसी दिन अर्थात् १० जनवरी १९७२ को ही शाम के ३-५० बजे वे सीधे कलकत्ता आदि कहीं न जाकर ब्रिटिश इण्टर नेशनल एयरवेज के विमान से, जिससे वे लन्दन से आये थे, ढाका के लिये रवाना हो गये।

ढाका में उन्होंने उसी शाम को अपना प्रथम ऐतिहासिक भाषण विशाल संख्या में आये हुए अपने बंगला देश-वासियों के सामने दिया। उनके भाषण और अपने देश को मान्यता दिये जाने की अपील का प्रभाव यह हुआ कि दूसरे ही दिन पूर्वी जर्मनी सरकार और बल्गारिया सरकार ने उनके देश को मान्यता दे दी। भारत और भूटान पहले ही मान्यता दे चुके थे।

क्रांति के कारण

वस्तुतः बंगला देश की क्रांति का कारण आर्थिक था। पश्चिमी पाकिस्तान की किसी भी सरकार ने अपने इस पूर्वी भाग की आर्थिक स्थिति पर कभी भी ध्यान नहीं दिया। उनका ध्यान केवल पूर्वी भाग से कमाना था। उस पर खर्च करना उन्होंने नहीं सीखा था। इसके अतिरिक्त बंगला देश की जनता के साथ उनका व्यवहार सदा यदि गुलामों जैसा भी नहीं तो कम-से-कम 'पराजितों' जैसा अवश्य रहा।

तीसरी बात यह है कि पश्चिमी पाकिस्तानी जानते थे कि किसी न किसी दिन बंगाली अलग हो सकते हैं। अतः इस अलगाव को रोकने के लिए पहले तो उन्होंने वहां पर बिहारी मुसलमानों को बड़ी तादाद में बसाया। उनका दृष्टिकोण था कि बिहार का और उत्तर प्रदेश का मुसलमान ही पक्का लीगी है। अतः वह उत्तर प्रदेश वालों को तो बसा नहीं सके, बिहारियों को बसा दिया। दूसरे बंगालियों की संस्कृति का हनन करके वहाँ पर उर्दू भाषा लादना शुरू किया और बंगालियों को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने में कभी सहयोग नहीं दिया। अतः राष्ट्रपति अय्यूब के समय १९६४ ई० के अक्तूबर मास में ही वहाँ छात्रों ने रेल की पटरियाँ उखाड़नी शुरू कर दी थीं। उस समय पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान की स्थिति किस प्रकार थी—उसे पाकिस्तान 'रेवेन्यू' बजट स्वयं प्रकट कर देता है कि सुरक्षा के नाम पर यह सरकार पूर्वी पाकिस्तान को किस कदर लूट रही थी। वहां का 'रेवेन्यू बजट' हर साल करीब १५० करोड़ रु० का रहता था, जो सामान्य प्रशासन, सुरक्षा, विदेशी कार्यों, स्वास्थ्य, औषधि, सेवाओं, शिक्षा आदि पर खर्च किया जाता था। इसके लिये सरकारी आमदनी के साधन टैक्स, अन्य सरकारी व्यवसायों जैसे रेल, पोस्ट, टेलीग्राफ तथा अमरीका से प्राप्त सुरक्षा सहायता होती थी। इस कुल आमदनी में यह पक्का अन्दाज लगाना तो बहुत मुश्किल होगा कि इसमें कितना हिस्सा पूर्वी पाकिस्तान का होता था। फिर भी टैक्स वसूली एवं अन्य नियमों के अनुसार यह अन्दाज लगाया गया है कि इसमें पूर्वी पाकिस्तान ३० से ४० फीसदी तक रकम जुटाता था।

अमरीकी सहायता के १२ करोड़ रु० को अलग कर दें, तो १३८ करोड़ रु० पाकिस्तान में इकट्ठे किये जाते थे। इनमें से यदि हम पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा केवल ३० फीसदी ही मान लें, तो भी वहां की जनता द्वारा हर साल करीब ४१.४ करोड़ रु० इकट्ठा किया जाता था। अब हम यह देखें कि वहां खर्च किस प्रकार किया जाता था। कुल १५० करोड़ रु० में से करीब १०० करोड़ रु० सुरक्षा पर तथा ५० करोड़ रु० दूसरे सामान्य नागरिक कार्यों पर खर्च किया जाता था।

सन् १९४७ से १९५७ तक के १० वर्षों में पूर्वी पाकिस्तान की सुरक्षा पर कुल ३७.९६ करोड़ रुपये खर्च किया गया। इसका मतलव यह हुआ कि औसतन ३.८ करोड़ रु० हर साल पूर्वी पाकिस्तान की सुरक्षा पर खर्च किया गया। इन्हीं १० वर्षों में ८८ करोड़ रु० औसतन हर साल पाकिस्तान की सुरक्षा पर खर्च हुआ है। इनमें से करीव ४ करोड़ रु० पूर्वी पाकिस्तान पर और ८४ करोड़ रु० पश्चिमी पाकिस्तान की सुरक्षा पर। सुरक्षा हो पश्चिमी पाकिस्तान की और रुपया वसूल किया जाये पूर्वी पाकिस्तान से।

शेष ५० करोड़ रु० जो सामान्य नागरिक कार्यों पर खर्च किया जाता था। उसका भी लगभग दो तिहाई पश्चिमी पाकिस्तान में और एक तिहाई अर्थात् करीव १६ करोड़ रु० पूर्वी पाकिस्तान में। इस प्रकार पूर्वी पाकिस्तान की जनता से सरकार वसूल करती थी करीव ४१ करोड़ रु० और उस पर खर्च करती रही केवल २१ करोड़ रु०।

पश्चिमी पाकिस्तान के शासक इस वात से नहीं मुकर सकते कि सेनाओं में लगभग ९५ फीसदी पश्चिमी पाकिस्तान के ही नागरिक होते थे और आखिर में तनख्वाह तथा अन्य सभी सुविधाओं का वहुत सा हिस्सा पश्चिमी पाकिस्तान स्वयं हड़प लेता था। इसके अलावा पश्चिमी भाग में सुरक्षा से सम्बन्धित सभी कारखाने हैं, जिससे वहाँ न केवल वेकारी में ही कमी हुई है, बल्कि वहाँ का औद्योगिक विकास भी, पूर्वी पाकिस्तान की तुलना में वहुत ज्यादा हो गया है।

यह तो हुई सुरक्षा; अव आइये देखें कि विदेशी व्यापार के नाम पर भी पूर्वी पाकिस्तान को किस तरह अय्यूवशाही ने लूटा था। सन् १९४७-४८ से १९६०-६१ के १४ वर्षों में पाकिस्तान के विदेशी व्यापार को देखने पर एक वात साफ तौर पर जाहिर हो जाती है कि कुल विदेशी मुद्रा का करीव ६० प्रतिशत पूर्वी पाकिस्तान के विदेशी व्यापार से पाकिस्तान सरकार को मिलता था। एक दूसरी वात जो मालूम होती है, वह यह है कि इन १४ वर्षों के दौरान प्रायः हर वर्ष पूर्वी पाकिस्तान से जितने मूल्य का माल विदेशों को भेजा जाता है, उसकी तुलना में वहां विदेशों से वहुत कम माल जाता था। इसके विपरीत पश्चिमी पाकिस्तान से जितने मूल्य का माल विदेशों को भेजा जाता था, उसकी तुलना में वहां आने वाले माल का मूल्य अधिक होता था। दूसरे शब्दों में पूर्वी पाकिस्तान विदेशी मुद्रा कमाता था, और पश्चिमी पाकिस्तान उसे खर्च करता था।

सन् १९४७-४८ से १९६०-६१ के १४ वर्षों में पूर्वी पाकिस्तान ने आयात की तुलना में ४७३ करोड़ रु० का अधिक माल विदेशों में वेचा। यह रुपया विदेशी

मुद्रा में मिला, पूर्वी पाकिस्तान के माल पर। पर इसे काम में कहां लाया गया, पश्चिमी पाकिस्तान में आने वाले अधिक औद्योगिक माल का मूल्य चुकाने में।

अभी आपने विदेशों से व्यापार के तरीके से आर्थिक शोषण की स्थिति जानी थी, अब पाकिस्तान के अन्दरूनी व्यापार और उद्योगों के जरिये शोषण का नमूना देखिए—वह तरीका है पूर्वी पाकिस्तान के निजी उद्योगों में पश्चिमी पाकिस्तान की पूंजी का अधिकाधिक लगाया जाना। वैसे यह बात जानना बहुत मुश्किल है कि पूर्वी पाकिस्तान की कुल निजी पूंजी में पश्चिमी पाकिस्तान की ठीक-ठीक निजी पूंजी का कितना हिस्सा है, फिर भी पश्चिमी पाकिस्तानी निजी पूंजी के बारे में दो महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखने योग्य हैं—पहली बात यह है कि इन फर्मों में से अधिकतर के मुख्य कार्यालय कराची में हैं, जहां वे फर्में अन्तिम रूप से अपना लाभ भेज देती थीं। दूसरी बात यह है कि इन फर्मों में ऊंचे पदों पर काम करने वाले अधिकारी ज्यादातर पश्चिमी पाकिस्तान के थे और इस प्रकार वे भी अपने वेतन का काफी हिस्सा पश्चिमी पाकिस्तान भेजते थे। यद्यपि आमदनी पूर्वी पाकिस्तान में होती थी, पर सारा मुनाफा पश्चिमी पाकिस्तान में चला जाता था।

पश्चिमी पाकिस्तान से जिन चीजों का आयात पूर्वी पाकिस्तान में किया जाता था, उनमें विशेष रूप से कारखानों में बनी वस्तुएं जैसे वस्त्र, रूई, ऊनी कपड़े, सिल्क, रसायन, सिमेण्ट इस्पात आदि थे। इसके विपरीत पूर्वी पाकिस्तान से पश्चिमी पाकिस्तान को भेजी जाने वाली वस्तुओं में फल, अन्य कच्चा माल, मछली आदि थे। एक तरह से यह कहा जा सकता है कि पूर्वी पाकिस्तान कच्चा माल भेजता था और पश्चिमी पाकिस्तान कारखानों में बनाता था पक्का माल।

पश्चिमी पाकिस्तान में बने हुए माल का मूल्य, उन्हीं वस्तुओं के जापानी, ब्रिटेन तथा भारतीय मूल्यों से बहुत अधिक होता है। चूंकि दूसरे देशों से आयात पर पश्चिमी पाकिस्तान ने कई कठोर प्रतिबन्ध लगा रखे हैं, अतः वह पूर्वी पाकिस्तान को अपना माल ऊंचे-से-ऊंचे मूल्य पर बेचता था। और फल यह हो रहा था कि बेचारे पूर्वी पाकिस्तानी उपभोक्ताओं की कमाई का अधिकांश हिस्सा पश्चिमी पाकिस्तान के पूंजीपति प्राप्त कर रहे थे।

पूर्वी पाकिस्तान की जनता अपनी आर्थिक निर्धनता और राजनीतिक गुलामी से बहुत तंग आ चुकी थी। इसी आर्थिक शोषण का परिणाम था कि पूर्वी पाकिस्तान में 'फ्री ईस्ट बंगाल मूवमेण्ट' (स्वाधीन पूर्व बंगाल आन्दोलन) शुरू किया गया। जिसके रेडियो ब्राडकास्ट में कहा गया था कि पूर्वी पाकिस्तान की जनता ने इस 'मूर्खतापूर्ण आशा' के साथ पाकिस्तान के निर्माण का समर्थन किया था, जिससे पूर्वी

पाकिस्तान धन-दौलत और जनसंख्या में आधिक्य की शक्ति के साथ उन्नति कर सके। पर अब पूर्वी पाकिस्तान की जनता अपनी उस भूल को जान चुकी है और वह अब पाकिस्तान की इस आर्थिक और राजनीतिक दासता से छुटकारा पाने के लिए विद्रोह की पूरी तैयारियां कर रही है।

जहां तक शस्त्रों का सम्वन्ध है उनके प्राप्त करने में तो पाकिस्तान सदा से सौभाग्यशाली रहा है । १९७० ई० में ही पाकिस्तानी नेताओं की आलोचनाओं के वावजूद अमेरिकी सरकार पर्याप्त मात्रा में पाकिस्तान को हथियार दिये जा रही थी। उस समय अवामी पार्टी के नेता श्री महमूद-उल-हक उस्मानी ने कहा था—अब अमेरिकी हथियारों से पाकिस्तानी जन-आन्दोलन कुचले जायेंगे ; क्योंकि जनता सैनिक जुन्टा से छुटकारा चाहती है।

इसके अतिरिक्त तभी नेशनल प्रोग्रेसिव यूनियनों के नेता श्री अताउर्रहमान खां ने कहा था—अमेरिकी सहायता से अब भाई-भाई में जंग छिड़ेगी।

उस समय १९७० ई० के चुनावों का प्रचार गर्म था, तव इन्टर विंग के सम्पादक (वंगला देश के) श्री शम्सुदोहा ने लिखा था—वक्त आ गया है पाकिस्तान और भारत को नये सिरे से अपने रिश्ते वनाने चाहिए । यह वात कुछ भी मुश्किल नहीं है। लेकिन तत्कालीन राष्ट्रपति याहिया खां को यह वातें कैसे पसन्द आ सकती थीं । उन्हें तो हथियारों की भूख थी और उनकी वह भूख शान्त करने वाले देश उनकी सेवा में हाजिर थे । उन्हीं दिनों वे कह रहे थे कि वे हर देश से हथियार लेने का प्रयत्न करेंगे। परन्तु याहिया खां की इस घोषणा में नया कुछ नहीं था, पिछले कुछ वर्षों से पाकिस्तान को अपनी व्लैक मेल की कूटनीति के कारण एक साथ रूस, चीन तथा कतिपय पश्चिमी देशों से निरन्तर शस्त्रास्त्रों की सहायता मिलती रही है। अब तक पाकिस्तान को विभिन्न देशों से कुल कितनी और कैसी शस्त्र सहायता मिली इसका अनुमान नीचे दिए गये कुछ तथ्यों से लग सकता है।

१९६५ के युद्ध तक पाकिस्तान को अमरिका से करीव डेढ़ सौ करोड़ डालर (भारतीय रुपयों में १०२५ करोड़ रुपयों) से लेकर दो सौ करोड़ डालर (भारतीय रुपयों में १५०० करोड़ रुपयों) तक की भारी शस्त्र सहायता मिली थी । इसमें वे दुर्भेद्य समझे जाने वाले पैटनटैंक भी शामिल थे, जो युद्ध क्षेत्र में वेकार सावित हुए।

१९६२ के भारत-चीन संघर्ष के वाद से ही चीन और पाकिस्तान की दोस्ती निरन्तर गाढ़ी होती गयी और १९६५ तक तो इसने भारत के विरुद्ध सुनिश्चित पेकिंग-पिंडी धुरी का रूप ले लिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार पाकिस्तान को चीन से २ पदाति डिवीजनों के लिए पूरा साज-सामान, करीव २५० टैंक, १४८ मिग विमान,

आई. एल.–२८ बमवर्षकों के दो स्क्वाड्रन और बड़े पैमाने पर तोपखाने के लिये वाहन, टैंकों और विमानों के फुटकर पुर्जे तक प्राप्त हुए हैं। चीन ने जोयदपुर और पेशावर में गोला-बारूद के कारखाने खोलने में भी मदद की है।

राजनीति का विचित्र व्यंग्य यह रहा कि सोवियत रूस ने भी पिछले वर्षों में पाकिस्तान को काफी सामरिक सहायता दी थी। इसमें टी–५४/टी-५५ टैंक, तोपखाने के लिए १३० एम एम तोपें, मिग विमानों के फुटकर पुर्जे तथा दूसरा सामरिक साज-सामान है।

१९७१ ई० की इस लड़ाई में इनमें से काफी हथियार हमारी बहादुर सेनाओं ने बटोर लिये हैं।

अध्याय १

स्वतन्त्रता संघर्ष का प्रारम्भ

बांगला देश की स्वतंत्रता का संघर्ष तो कायदे आजम जिन्ना के समय तभी शुरू हो गया था जब उन्होंने बंगला देश की भाषा के स्थान पर यहाँ उर्दू भाषा लादने का प्रयत्न किया था। उसके बाद जिन्ना के इसी मिशन को अय्यूब खाँ ने आगे बढ़ाया और बंगला देश की भाषा—उर्दू बनाने की घोषणा कर दी। उनकी इसी घोषणा पर ढाका विश्वविद्यालय कालेज के छात्र उत्तेजित हो उठे; उन्होंने कड़ा विरोध किया और पुलिस ने उन पर गोली चलाकर दो छात्र मार दिये। मुजीब तब भी गिरफ्तार किये गये और उन पर ढाका षड्यंत्र केस, के नाम से एक मुकदमा चलाया गया।

मुकदमे में पाक सरकारी इस्तगासे में उन्हें भारत का एजेण्ट, पाक सरकार के विरुद्ध षड्यंत्र रचने वाला और राष्ट्रपति अय्यूब की हत्या के षड्यँत्र का अपराधी बताया लेकिन मुकदमे में श्री मुजीब जीत गये।

जबसे पाकिस्तान बना, तभी से पश्चिमी पाकिस्तानी नेता यह जानते थे कि अपने से १ हजार मील दूर, वेश-भूषा और संस्कृति से भिन्न पूर्वी बंगाल अधिक दिन तक पाकिस्तान में मिला नहीं रह सकता। वह या तो स्वतंत्र हो जायेगा या पुन: भारत में जा मिलेगा।

इस बात को जिन्ना पाकिस्तान बनने से भी पहले समझते थे। इसीलिये १९४६ ई० में अपने डायरेक्ट ऐक्शन, के दौरान वहां नोआखाली और टिपरा में हिन्दुओं का कत्ले आम भयानक रूप से कराया था। इतने भयानक रूप से कि उस हत्याकाण्ड को देख कर गांधीजी पूर्वी बंगाल में उसी तरह रोये थे, जिस तरह आज श्री मुजीब।

उस समय तक देश का बंटवारा नहीं हुआ था। हसन शहीद सुहरावर्दी की सरकार थी और उस समय न बिहारी मुसलमान वहाँ अधिक थे, न पंजाबी थे और न पठान। केवल बंगला मुसलमान थे—लीगी—जिन्ना के कट्टर अनुयायी। हिन्दुओं का यह हत्याकाण्ड उन्हीं लीगी बंगाली मुसलमानों ने किया था और उनमें से कितने ही शायद आज शेख मुजीब की अवामी लीग में भी आ घुसे होंगे।

उस समय दो मुट्ठी हड्डी वाले, नंगे खाली हाथ साधू—गाँधीजी की बात कोई सुनने के लिये तैयार नहीं था। यदि उस दिन बंगाली मुसलमान विवेक से काम लेते तो शायद अलग होना भी पसन्द न करते।

जिन्ना का उद्देश्य साफ था, वह बंगाली मुसलमानों से हिन्दुओं का कत्ल करा कर दोनों धर्मावलम्बियों में ही नहीं सारे बंगाली मुसलमानों के प्रति हिन्दू बहुल भारत के दिल में भी घृणा पैदा कराना चाहता था, ताकि यदि कभी बंगाली मुसलमान पाकिस्तान से अलग होने की बात सोचें भी तब इन्हें भारत से कोई सहायता न मिले और विवश होकर इन्हें पाकिस्तान के साथ ही रहना पड़े। इस कारण कभी यह भारत में मिलने का स्वप्न भी न लें।

जिन्ना का मिशन पूरा हुआ। नोआखली और टिपरा भी हिन्दुओं के कत्ले-आम और गांधीजी के वहां दो बार जाकर डेरा डालने और उपवास करने के कारण इतिहास में उसी तरह अंकित हो गये, जिस तरह पाकिस्तानी कत्ले आम के कारण आज जैसोर, ढाका, रंगपुर और कुश्तिया जिला।

जिन्ना का चढ़ाया यह धर्मान्ध उन्मादी नशा अय्यूब के आने के समय तक बांगला देश के मुसलमानों के दिमागों में बराबर जारी रहा। उनकी यह खुमारी तब उतरी जब बंगला देश के बुद्धिजीवी—नयी पीढ़ी के बुद्धिजीवी—नये नेता और नयी पीढ़ी के छात्र-वर्ग के मस्तिष्कों पर ठेस लगी और उनके मस्तिष्कों ने उन्हें अपनी—अपने देश की हालत पर विचार करने के लिये विवश किया।

खोखला बंगला देश

अय्यूब के सत्ता में आने तक पश्चिम पाकिस्तान के शासकों ने अपने इस पूर्वी भाग को बिल्कुल खोखला कर दिया। बंगाली मुसलमान की कीमत उनकी दृष्टि में एक घृणित-पतित आदमी जैसी हो गयी जिसका जन्म ही पश्चिम पाकिस्तान के मुसलमानों की खिदमत करने के लिये हुआ था—उनको कमा कर खिलाने के लिये संसार में हुआ हो।

इस भाग के ८० प्रतिशत उद्योगों पर पश्चिम पाकिस्तान के मुसलमानों का अधिकार था। ८० प्रतिशत शासक पंजाबी या पठान थे। जूट उगाता बंगाली मुसलमान था और उसको बेचने वाला या उसका टाट और बोरे बना कर बेचने वाला पंजाबी या बिहारी मुसलमान था। अधिकांश जूट उद्योग का संचालन बिहारी और पंजाबी मुसलमानों के हाथ में था। जितना अमेरिका आदि से अनुदान या कर्जा मिलता था, उसका तो २० प्रतिशत भाग भी पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) के हिस्से में नहीं आता था।

बंगालियों के मनोविनोद के लिये साल में एक दो बार हिन्दुओं की लूटमार, कन्याओं का अपहरण आदि जैसे कार्य यह अवश्य करा दिया करते थे।

पुरानी पीढ़ी ने तो नहीं, इसको समझा नयी पीढ़ी ने—युवा पीढ़ी ने कि हमारा देश खोखला कर दिया गया। शरीर खोखले और दिमाग खोखले किये जा रहे हैं। यदि मैं यह कहूँ कि इस बात को अय्यूब शासन के केवल अंतिम दिनों में ही समझा गया तो अत्युक्ति न होगी। मेरे पास प्रमाण के लिये छापामार छात्र और मुक्ति सेना के छात्रों की सूचियाँ हैं। कितनी कम आयु के संघर्षरत थे यह बालक। इनको संघर्षशील स्वतंत्र विचारों ने बनाया, परिस्थितियों ने बनाया और यह परिस्थितियाँ पैदा कीं पश्चिमी पाकिस्तान ने।

१९६५ के भारत-पाक युद्ध में भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान को बुरी तरह पीटा था। उस समय उसने पूर्वी भाग पर लड़ाई इसीलिये नहीं छेड़ी थी कि ऐसा न हो वहां भी भारतीय सेना पूर्वी पाकिस्तान में घुस जाय और बंगला देशवासी उनसे मिल जायें या भारतीय नेता ही उन्हें आजाद करा दें। प्रत्येक समझदार बंगला देशवासी तभी चौंक गया था कि इधर युद्ध क्यों नहीं छिड़ा। केवल दो कारण हैं। एक या तो पाकिस्तान की सुरक्षा-व्यवस्था यहां इतनी मजबूत नहीं है कि वह भारत की सेना की टक्कर को संभाल ले। अथवा वह हम पर विश्वास तक नहीं करता।

युद्ध हुआ, पाकिस्तान हारा भारतीय सेना ने उसकी कमर तोड़ दी। अय्यूब का चढ़ता सितारा छात्रों, भुट्टो पीपुल्स पार्टी तथा भूतपूर्व एयर मार्शल असगर खां की पार्टी के आन्दोलनों के कारण धूल में मिल गया और पाकिस्तानी सेना के कमाण्डर याहिया खां ने एक दिन पिस्तौल अय्यूब के सीने पर रख कर सत्ता हथिया ली।

याहिया खां ने सत्ता संभालने के बाद अपने प्रथम रेडियो भाषण में जनता को आश्वासन दिया था कि मैं इस सत्ता को देश में आम चुनाव करा कर शीघ्र ही जनता के नेताओं के सुपुर्द कर दूँगा। साथ ही एक प्रेस कांफ्रेंस में उसने यह भी कह दिया था कि यदि राजनैतिक दल संविधान बनाने में असफल रहे तो सैनिक शासन ही रहेगा।

याहिया को आशा थी कि पाकिस्तान की राजनीति की जो मौजूदा हालत है, उस हालत में किसी भी पार्टी का बहुमत में आना अनिश्चित है। अतः सभी राजनैतिक दलों को फिर धता बताई जा सकती है। इसके विपरीत यदि कोई दल आ भी गया तब भी राष्ट्रपति का चुनाव वे स्वयं लड़ लेंगे। फिर भी याहिया बार-बार चुनाव की तारीखों को बदलते रहे। इस बीच में नये-नये दल खड़े करते रहे। कुछ की जोड़तोड़ कराते रहे और कुछ की जोड़-तोड़ में खुद नत्थी होते रहे।

बड़ी मुश्किल से ७ दिसम्बर १९७० ई० को उन्होंने आम चुनाव कराये। यह चुनाव असेम्बली की ३०० सीटों के लिये हुआ। इस चुनाव का परिणाम यह निकला कि इन तीनसौ सीटों में से शेख मुजीबुर्रहमान की पार्टी ने १६० सीटें जीतीं। ८५ सीटों पर जुल्फिकार अली भुट्टो की पीपुल्स पार्टी ने कब्जा किया। शेष पार्टियों को दो-दो चार-चार सीटें ही मिल सकीं।

इस चुनाव परिणाम ने याहिया खाँ का सर घुमा दिया। उसके एक ओर कुंआ और दूसरी ओर खाई जैसी स्थिति पैदा हो गई। भुट्टो पर तो उसे विश्वास था ही नहीं, वह शेख मुजीब से और भी ज्यादा घबराता था। प्रकट में अपने एक भाषण में उसने श्री मुजीब को पाकिस्तान का भावी प्रधान-मन्त्री तक अवश्य कह दिया था।

याहिया खाँ ने घोषणा यह की थी कि चुनावों के बाद संविधान सभा का पहला काम संविधान बनाना होगा; क्योंकि अभी तक पाकिस्तान में कोई विधान नहीं है। बंगालियों को सन्तुष्ट करने के लिये उसने यह भी कहा था कि राष्ट्रीय असेम्बली की आधी बैठकें ढाका में हुआ करेंगी और आधी इस्लामाबाद में।

चुनावों से पहले याहिया खाँ ने यह भी घोषणा की थी कि पाकिस्तान की एक ईकाई समाप्त की जाती है। अतः सूबों में भी विधानसभाओं की स्थापना की जायेगी। इसलिए चार सूबे भी बना दिये गये थे।

पूर्वी पाकिस्तान (अब बांगला देश) में शेख मुजीबुर्रहमान की अवामी लीग ने जो चुनाव-घोषणा-पत्र जारी किया था, उसमें पूर्वी पाकिस्तान को स्वतन्त्रता दिलाने की बात कही थी और चुनाव के बाद शेख मुजीबुर्रहमान ने जो भाषण किया था, उसमें उन्होंने अपना छः सूत्री कार्यक्रम पेश किया था। इसके अनुसार सुरक्षा, वैदेशिक नीति को छोड़कर हर प्रकार से स्वायत्तता मांगी गयी थी। शेख का कहना था कि पूर्वी पाकिस्तान की आय का अधिकांश पैसा उसी पर खर्च होना चाहिये, क्योंकि यह क्षेत्र हर दृष्टि से बहुत पिछड़ कर गरीब हो चुका है। शेख की इस मांग ने भुट्टो और याहिया दोनों को चौंका दिया।

असेम्बली का अधिवेशन स्थगित

नव-निर्वाचित असेम्बली का अधिवेशन याहिया खाँ ने ३ मार्च १९७१ ई० को बुलाया था; लेकिन १ मार्च को ही उसने असेम्बली का अधिवेशन अनिश्चित काल के लिये स्थगित करने की घोषणा कर दी।

वस्तुतः इसके स्थगित करने में भुट्टो का भी विशेष हाथ था। भुट्टो ने धमकी दी थी कि यदि असेम्बली का अधिवेशन बुलाया गया तो मैं सारे पश्चिमी पाकिस्तान में हड़तालें करा दूंगा और यह हड़तालें खैबर से कराची तक लगातार चलेंगी।

साथ ही भारतीय विमान-कांड के कारण भी भुट्टो ने अधिवेशन बुलाना उपयोगी नहीं बताया।

याहिया खां ने अधिवेशन स्थगित करने का कारण यह बताया था कि असेम्बली का अधिवेशन बुलाने से देश को गम्भीर राजनैतिक संकटों का सामना इसलिये करना पड़ेगा; क्योंकि पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान के नेता आपस में मिलकर किसी एक नतीजे पर नहीं पहुँच रहे हैं। इसके अतिरिक्त मुझे भारत की ओर से भी खतरा नजर आ रहा है।

याहिया खां ने अपने इसी भाषण में ऐलान किया था कि मैं देश का संविधान बनाने के लिये एक समिति बनाऊंगा। जब वह समिति संविधान तैयार कर लेगी, तभी असेम्बली का अधिवेशन बुलाया जा सकता है। याहिया का आशय स्पष्ट था कि तब देश के संविधान के अनुसार ही या तो असेम्बली चलेगी, अथवा भंग कर दी जायेगी।

बंगला देश पर प्रभाव

याहिया खाँ द्वारा असेम्बली के स्थगित करने की घोषणा का प्रभाव बंगला देश के लोगों पर भयानक रूप में पड़ा। ढाका का विद्यार्थी वर्ग उत्तेजित हो उठा। शासकों ने जल्दी ही टेलीविजन केन्द्रों और ढाका रेडियो स्टेशन पर सेना का पहरा लगादि या।

उसी दिन ढाका विश्वविद्यालय के प्रांगण में अवामी पार्टी के नेता शेख मुजीबुर्रहमान ने घोषणा की कि याहिया खां का यह निर्णय जनतंत्र की प्रक्रिया के प्रवेश पर भारी प्रहार है। उसी भाषण में बंगला देंश में आम हड़ताल की घोषणा की गयी।

घोषणा के परिणामस्वरूप हड़ताल हुई और पूरी तरह सफल हुई। सारी संचार व्यवस्था ठप्प पड़ गयी। बाजार और सरकारी दफ्तर बन्द रहे। आमतौर से एकाध वारदात को छोड़कर हड़ताल प्रायः शांत रही।

खुला संघर्ष शुरू

२ मार्च १९७१ ई० की सफल हड़ताल के बाद पाक शासकों और बंगला देश के नेताओं तथा जनता में खुला संघर्ष शुरू हो गया। पाकिस्तान के शासकों ने सारे पाकिस्तान पर कठोर सैनिक शासन लागू कर दिया। सारे समाचारपत्रों पर धारा २५ के अन्तर्गत सेंसर लगा दिया गया। प्रांतीय गवर्नरों के स्थान पर सैनिक प्रशासक नियुक्त किये गये।

अपने सैनिक शासन को कड़ा करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति याहिया खां ने घोषणा की कि पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान के अमिट मतभेदों को

दृष्टि में रखते हुए ही मैं संविधान सभा की बैठक स्थगित करने के लिये विवश हुआ हूं। बंगला देश की जनता ने इसे अपने प्रति विश्वासघात और चुनौती माना और वह संघर्ष के लिये तैयार हो गयी। सरकार ने कर्फ्यू लगा दिया।

मुजीबुर्रहमान की ऐतिहासिक घोषणा

पाकिस्तान सरकार के इस कठोर कदम ने बंगला देश में उत्तेजना बढ़ा दी। ढाका विश्वविद्यालय के प्रांगण में १० हजार से भी ज्यादा लोग इकट्ठे हो गये और वहां से उन्होंने पाकिस्तान के विरोध में एक विशाल जलूस निकाला। उत्तेजित वर्ग में सभी श्रेणियों के व्यक्ति स्वतन्त्र बंगला देश के मांग पट्ट लिये हुए थे।

मांग पट्ट लिये व्यक्तियों में छात्रों के अतिरिक्त वकील, सरकारी कर्मचारी, बुद्धिजीवी वर्ग के लोग तथा श्रमिक यूनियनें—सभी शामिल थे। इस उत्तेजित जलूस ने पाकिस्तान के झंडे को आग लगा दी, एक फैशनेबुल सिनेमाघर भी जला दिया और एक आईसक्रीम फैक्टरी भी फूंक दी। फुटबाल स्टेडियम में जहां क्रिकेट मैच हो रहा था, सारे फर्नीचर को तोड़ डाला। दो व्यक्ति भी हिंसक घटनाओं में मरे। इसके पश्चात् जलूस एक सभा के रूप में बदल गया। सभा में शेख मुजीबुर्रहमान ने जनता से अहिंसक और शान्त रह कर आंदोलन चलाने की अपील की।

शेख मुजीबुर्रहमान ने घोषणा की कि हमारा यह आंदोलन तब तक जारी रहेगा, जब तक हमें लोकतांत्रिक अधिकार नहीं मिल जाते। शेख ने कहा—७ दिसम्बर १९७१ ई० के आम चुनावों में जनता ने मेरी पार्टी नेशनल अवामी लीग का भारी मतों से समर्थन किया है, उसे दबाया नहीं जा सकता।

शेख ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि पूर्वी पाकिस्तान की जनता की आवाज को अब कोई भी ताकत नहीं दबा सकती।

शेख मुजीब ने घोषणा की कि अब हड़ताल लगातार चार दिन तक चलेगी। यह हड़ताल सवेरे ६ बजे से दोपहर २ बजे तक जारी रहेगी। इस बीच किसी भी कार्यालय, उद्योग अथवा दूकान आदि में कहीं भी काम नहीं होगा। यदि सरकार चार दिन तक हमारी मांगों का उचित उत्तर नहीं देगी तो मैं असहयोग-आन्दोलन शुरू कर दूंगा और सरकार को किसी भी प्रकार का कर नहीं दिया जायेगा। अन्त में शेख ने एक बार फिर अपने अनुयायियों से आगजनी, लूटपाट और हिंसा से दूर रहने की अपील की।

जिस समय शेख का भाषण चल रहा था, पाकिस्तानी सैनिक मशीनगनें लिये गश्त लगा रहे थे और भारी संख्या में लोग उनका भाषण सुनने जा रहे थे। शेख ने रेडियो पाकिस्तान—विशेषकर ढाका केन्द्र से भी यह अपील की कि वह हमारे आंदोलन के समाचारों को दबाये नहीं।

अत्याचारों का दौर शुरू

ढाका के इस आन्दोलन का प्रभाव पाकिस्तानी शासकों पर यह पड़ा कि उन्होंने सादा वेष में पाकिस्तानी सैनिकों को पाकिस्तान इण्टर नेशनल के जहाजों से भेजना शुरू कर दिया; क्योंकि विमान-काण्ड के कारण भारत ने अपने आकाश पर से पाक विमानों की उड़ानें बन्द कर दी थीं, इसलिये पाकिस्तानी विमान श्रीलंका होकर ढाका जाते थे। श्रीलंका सरकार कह देती थी कि यह असैनिक विमान हैं, इन पर पाबन्दी नहीं लगायी जा जकती।

दूसरी ओर पाकिस्तानी सेना ने अत्याचारों का प्रारम्भ कर दिया। तीन मार्च को रंगपुर में एक शाँतिपूर्ण जलूस निकाला गया। इस जलूस का नेतृत्व बाँगला देश की उल्मा लीग के सदर मौलाना खैरुलइस्लाम जेसौरी कर रहे थे। अभी थोड़ी दूर ही जलूस गया था कि पाकिस्तानी सैनिकों ने जलूस पर बिना कोई चेतावनी दिये अंधाधुन्ध गोलियां चलानी शुरू कर दीं।

उनकी गोलीवर्षा से २१ व्यक्ति वहीं पर मर गये। तीन बच्चों को उन्होंने किरचों से गोद कर मार डाला। हत्याकाँड के बाद पाक दरिन्दों के लिए रंगपुर उनके अत्याचार का विशेष केन्द्र बन गया।

एक ओर याहिया खां बंगला देश में सैनिकों से अत्याचार करा रहा था, दूसरी ओर याहिया ने घोषणा की कि राजनैतिक नेता अपने मतभेद १० मार्च तक दूर करके संविधान बना लें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। १० मार्च को ढाका में सम्मेलन कर लिया जाय और उसके दो सप्ताह बाद असेम्बली का अधिवेशन बुलाया जा सकता है। इस सम्मेलन के लिये याहिया ने अवामी लीग और भुट्टो की पीपुल्स पार्टी के अलावा, खान अब्दुल कय्यूमखां कौंसिल गुट के मुमताज दौलताना, जमीयत उल उल्मा इस्लाम के मुफ्ती मुहम्मद और जमीयत पाकिस्तान के गफ़ूर अहमद को भी आमन्त्रित किया।

दूसरी ओर भुट्टो ने घोषणा की कि मैंने अधिवेशन को स्थगित करने का विरोध तो केवल इसलिये किया था कि बड़ी-बड़ी पार्टियों के नेताओं को आपस में बातचीत करने का मौका मिल जाय।

उस समय इन दोनों नेताओं की चालबाजियों पर टिप्पणी करते हुए 'न्यूयार्क टाइम्स' ने लिखा था कि इनकी चालबाजियां अब नहीं चल सकतीं। पाक का यह एक हजार मील दूर वाला भाग विभिन्न वेश-भूषा और संस्कृति की दृष्टि से पृथक् होते हुए, एक साथ अब नहीं रह सकता।

अध्याय २

सड़कों पर संघर्ष

हड़ताल चलने के बावजूद ४ मार्च १९७१ ई० को जनता विशेषकर ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों का पाकिस्तानी बर्बर सेनाओं से सड़कों पर संघर्ष शुरू हो गया। इस संघर्ष में सौ से अधिक आदमी मारे गये। कई सौ घायल हुए। अवामी लीग को बंगला देश की अन्य पार्टियों ने भी अपना समर्थन देना शुरू कर दिया। वर्तमान प्रधान मन्त्री शेख मुजीबुर्रहमान ने संघर्ष के दौरान ही पाकिस्तान से पूर्वी पाकिस्तान को स्वायत्तता देने की मांग की। उन्होंने कहा कि कोई भी दमनात्मक कदम जनता का मुँह बन्द नहीं कर सकता। साथ ही श्री मुजीब ने सेनाओं की वापसी की भी माँग की। १० मार्च के राजनैतिक सम्मेलन का निमन्त्रण श्री मुजीब ने, उसे 'एक क्रूर मजाक' बताते हुए कह कर वापस कर दिया।

इसी संघर्ष के दौरान ढाका और उसके आसपास आगजनी और लूटमार की घटनाएँ भी घटीं। खुलना और रंगपुर में सेना और जनता की टक्कर हुई। पाकिस्तान सरकार ने फिर कर्फ्यू लगा दिया। हड़ताल जारी रही। सारा कारोबार ठप्प हो गया। ४ मार्च को पाकिस्तान एयरलाइन्स या पाकिस्तानी सेना का कोई भी हवाई जहाज ढाका के अड्डे पर नहीं आ सका। इस तारीख के संघर्ष में सेना की पिटाई से अवामी लीग की राष्ट्रीय असेम्बली के सचेतक एम. ए. कल्लन भी घायल हो गये। ढाका रेडियो ने घायलों को रक्त देने के लिये जनता से अपील की। स्थिति यह हो गई कि दिनभर ढाका पर जनता का अधिकार रहता और रातको कर्फ्यू लगते ही सेना का हो जाता। दूसरे दिन शेख मुजीबुर्रहमान से रायटर का सम्वाददाता मिला और उसने संघर्ष की जानकारी श्री शेख से माँगी। श्री मुजीब ने बताया कि कल चार जनवरी को पाकिस्तानी सेना के जवानों ने ३०० सौ से अधिक आदमियों को मशीनगनों की गोलियों से मार डाला है। इन निहत्थे लोगों पर कर्फ्यू आर्डर तोड़ने का इल्जाम लगाया गया, जबकि सचाई यह है कि इन बे-गुनाह लोगों को घरों से निकालकर मारा गया। श्री मुजीब ने कुछ लाशें भी संवाददाता को ले जाकर गलियों में पड़ी हुई दिखायीं। शेख ने बताया कि रात को दो बार तोपों की आवाज भी सुनाई दी।

उसी रात को ढाका विश्वविद्यालय में घुसकर सेना ने गोलियाँ बरसाईं। कुछ लाशें पाकिस्तानी सेना अपने साथ ले गयी और ८ लाशें उनसे छात्रों ने छीन

लीं, जिनका पहरा वह बाकी रात देते रहे। इन लाशों को छात्रों ने इकबाल हाल में रख लिया था। इसी दिन १३ आदमी अस्पताल में मरे और ६० घायलों की हालत नाजुक थी।

शेख मुजीब ने ५ जनवरी को पाकिस्तान से मांग की कि प० पाकिस्तानी यहाँ से चले जायें और हमें अपने हाल पर छोड़ दें। यह हम बाद में सोचेंगे कि पाकिस्तान के साथ हमारा रहना अब भी संभव है या नहीं।

५ जनवरी को १५ लाख ढाकावासी हड़ताल पर रहे। शहर से पुलिस भाग खड़ी हुई और बाजारों की दूकानों की रक्षा का भार अवामी लीग के स्वयंसेवकों ने संभाल लिया। इसी दिन श्री शेख ने रविवार से पूर्ण असहयोग आन्दोलन चलाने की घोषणा की और श्री भुट्टो से मिलना निरर्थक बताया।

सबसे आश्चर्यजनक बात यह और हुई कि पाकिस्तानी सैनिक अधिकारियों ने घोषणा की कि कर्फ्यू के समय कोई दुर्घटना नहीं हुई है, शेख मुजीब की शांत रहने की अपील का जनता पर काफी प्रभाव पड़ा है। अतः सेना को शहर से हटाकर बैरकों में वापस भेज दिया जायेगा। दूसरी ओर जनता बड़ी उत्सुकता से रविवार के आने की बाट जोह रही थी। उनकी धारणा थी कि रविवार के भाषण में शेख निश्चय ही पूर्वी पाक की स्वतन्त्रता की घोषणा करेंगे। साथ ही इसी दिन पाकिस्तान रेडियो ने बताया कि शीघ्र ही राष्ट्रपति याहिया खां राष्ट्र के नाम एक भाषण ब्राडकास्ट करेंगे। कर्फ्यू में भी ढील कर दी गयी, लेकिन राजशाही में कुछ गड़बड़ हो गयी। वहाँ फिर कर्फ्यू लगा दिया गया। सेना ने बैरकों में जाने के बजाय सड़कों पर अपनी मोर्चाबन्दी कर ली। सेना की मदद के लिये रावलपिण्डी से १२० हवाई जहाज और भेज दिये गये। इसी ५ मार्च को प्रदर्शनकारियों ने एक नया ध्वज लेकर शेख मुजीब का स्वागत बंगला देश के संस्थापक के रूप में किया।

६ जनवरी को पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति याहिया खाँ ने कराची में राष्ट्र के नाम अपने भाषण में कहा कि असेम्बली की जिस बैठक को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था अब वह बैठक २५ मार्च को बुलायी जायेगी।

याहिया खां ने एक ओर प्रदर्शन में मरने वालों के प्रति सहानुभूति दिखायी और पुलिस और सेना की ज्यादती की निन्दा की, वहां साथ ही यह भी कहा कि देश में पृथकता की भावना बढ़ चली है। इसलिए लेफ्टिनेंट जनरल टिक्का खाँ को पूर्वी पाकिस्तान का गवर्नर बनाया जा रहा है। स्मरण रहे कि विगत ५ दिन से यह स्थान खाली पड़ा था और पहले इस पद पर वाइस एडमिरल एस० एम० अहसान-अली थे।

यह टिक्का खां वही व्यक्ति था जो भारतीय सेना से १९६५ में लड़ा था। छम्ब-जोरिया के बख्तरबन्द दस्तों का कमांडर भी यही था। इसी ने रावलपिंडी में

उस समय वड़े गर्व के साथ यह कहा था कि मैं भारतीय सेना को बम्बई तक पीट सकता हूँ।

याहिया ने अपने इस भाषण में बंगला देशवासियों को धमकी भी दी। उसने कहा—जब तक मैं सेना का प्रमुख सेनापति हूँ, मुझे इस बात की परवाह नहीं कि आगे क्या होगा; लेकिन मैं हर कीमत पर पाक की अखंडता बनाये रखूंगा। मैं पाकिस्तान में न दर्शक के रूप में रह सकता हूँ और न थोड़े से लोगों के नारों से ही बदलने वाला हूँ।

याहिया की इस धमकी के दो परिणाम निकले। पहला यह कि पाकिस्तानी सेना के अत्याचार बंगला देश में बढ़ गये। ढाका में उसने और २० आदमियों को मार डाला। उसका साहस यहाँ तक बढ़ गया कि हैलीकाप्टरों से उसने जनता पर गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया।

दूसरी ओर याहिया की धमकी का पश्चिमी पाकिस्तान में स्वागत हुआ। श्री भुट्टो ने भाषण का स्वागत करते हुए कहा कि यह और भी वेहतर होगा, यदि २५ मार्च को असेम्बली की बैठक बुलाने से पहले ही यह भी तय हो जाय कि संविधान की रूपरेखा क्या रहेगी। बाद में आपने कहा कि यदि यह तय नहीं भी हुआ तब भी कोई बात नहीं। मेरी पार्टी बैठक में भाग जरूर लेगी। पश्चिमी पाकिस्तान की अन्य पार्टियों ने भी भाग लेना मंजूर कर लिया। सभी ने याहिया की तारीफ की। यह तारीफ वास्तव में बैठक बुलाने के लिये नहीं थी, बल्कि बंगला देशवालों को दी गई धमकी के लिये थी।

चार शर्तें

याहिया के भाषण पर विचार करने के लिए अवामी लीग की बैठक बुलायी गयी। कई घण्टे के विचार-विमर्श के बाद तय किया गया कि जब तक याहिया हमारी चार शर्तें नहीं मान लेता, तब तक बैठक में भाग न लिया जाय।

इन शर्तों में पहली शर्त यह थी कि पाकिस्तानी सेना बाजारों से हट कर बैरकों में वापस चली जाय; (२) सेना और पुलिस द्वारा की गई हत्याओं की जाँच कराई जाय; (३) सत्ता निर्वाचित प्रतिनिधियों को सौंप दी जाय और (४) मार्शल-ला को तत्काल समाप्त किया जाय।

श्री शेख का भाषण

आज रविवार था। आज ही शेख मुजीबुर्रहमान को जनता के सामने भाषण भी देना था जिसकी वह कई दिन से प्रतीक्षा कर रही थी। श्री मुजीबुर्रहमान का भाषण सुनने के लिये लाखों आदमी इकट्ठे हो चुके थे। शेख मुजीबुर्रहमान ने पहले

तो अपनी उपर्युक्त चार वातों को दुहराया उसके वाद उन्होंने कहा कि एक आश्चर्य की वात है कि मैं वहुमत दल का नेता हूँ, असेम्वली का अधिवेशन वुलाने के वारे में याहिया खां ने मुझ से पूछा तक नहीं ।

याहिया खां ने मेरी वजाय हमारे छः सूत्री कार्यक्रम के आलोचक श्री भुट्टो से ही सलाह-मशविरा किया। मैंने उससे पहले ही कहा था कि १५ फरवरी को असेम्वली की वैठक वुला ली जाय, लेकिन याहिया खां ३ मार्च पर आये। मैंने वह भी मान लिया। उसके वाद उन्होंने वैठक अनिश्चित काल तक के लिये स्थगित कर दी। उन्हें मालूम होना चाहिये कि मैं प्रधान मन्त्री पद का लालची नहीं हूँ और न ही उसके पीछे भटकना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि जनता के निर्णय का स्वागत किया जाय ।

वास्तव में श्री मुजीवुर्रहमान का आशय याहिया की उन शर्तों में संशोधन कराना था जो उन्होंने चुनाव से पहले लगायी थीं[३]। याहिया ने घोषणा की थी कि जव तक संविधान सभा १२० दिन में संविधान नहीं वना लेती, तव तक देश पर सेना का कव्जा रहेगा। यदि इतने समय में संविधान तैयार नहीं होता है, तव असेम्वली भंग कर दी जायेगी।

इसके अतिरिक्त याहियाँ खां ने यह भी घोषणा की थी कि उस विधान पर मेरी मुहर लगनी जरूरी है । यदि मेरी मुहर नहीं लगती है, तव भी संविधान सभा भंग मानी जायेगी। उनकी स्वीकृति के वाद ही विधान देश में लागू हो सकेगा और सत्ता जनता के प्रतिनिधियों को सौंप दी जायेगी।

शेख की इन शर्तों को नहीं माना गया। परिणामस्वरूप फिर हड़तालें शुरू हो गयीं। प्रशासन ठप्प पड़ गया। कर न देने की घोषणा की गयी। रंगपुर, दीनाजपुर, पार्वतीपुर में जलूस निकले। उन पर गोलियाँ चलीं। ढाका सेंट्रल जेल में कैदियों और पहरेदारों में लड़ाई हुई और वाजार में सेना और जनता में। इस भिड़न्त में सैनिक टुकड़ियों ने ४ हजार घायल किये और ६० व्यक्ति मार दिये। आन्दोलन की लहर सारे वंगला देश में फैल गयी और दमन की लहर भी सारे देश में फैला दी गयी।

अध्याय ३

मुजीब का २२ दिन का शासन और याहिया का नाटक

याहिया की असेम्बली स्थगित करने की घोषणा के बाद ३ मार्च १९७१ ई० से २५ मार्च १९७१ ई० तक जिस रात को उन्हें गिरफ्तार किया गया था, तब तक बंगला देश और उसकी राजधानी ढाका पर श्री मुजीब और उनकी पार्टी अवामी लीग का ही शासन रहा।

प्रारम्भ में पूरे एक सप्ताह तक सारे बंगला देश में हड़ताल रही और ६ मार्च को राष्ट्रपति याहिया द्वारा सैनिक शासन की नयी व्यवस्था के विरोध स्वरूप सारे बंगला देश में पाकिस्तान की सत्ता ही लगभग अस्वीकार कर दी गई। देश के प्रांतीय अधिकारियों ने याहिया के बजाय श्री मुजीब के आदेशों का पालन करना प्रारम्भ कर दिया।

पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) के मुख्य न्यायाधीश सहित सभी जजों ने ७ मार्च को नये सैनिक गर्वनर टिक्का खां को शपथ दिलाने से इन्कार कर दिया। परिणामत: टिक्का खां केवल मार्शल-ला प्रशासक भर रह गये।

इसी दिन ढाका रेडियो (उन दिनों ढाका बेतार केन्द्र) से देशभक्ति गीत प्रसारित होने प्रारम्भ हुए। बंगला-भाषा में गाये जाने वाले उन गीतों का आशय यह था—मेरा यह दिल देश के लिये है। और जनता की आकांक्षाएं पूरी होकर ही रहेंगी।

इन गीतों में से कुछ का आशय यह था—सात आकाशों के प्रकाश से हमने सूर्य तोरण निर्मित किया है। स्वप्नों से रंग भरे भोर के आकाश में नये सूर्य का उदय हुआ है। टूट गया है तोड़ डालो अंधकार की कारा। आमार-सोनार-बांगला। आमी तोमार भालोबाली। अर्थात् मेरे सोने का बंगला मैं तुझे प्यार करता हूँ।

पाक शासन समाप्त हुआ। शेख मुजीबुर्रहमान ने अपनी स्थिति मजबूत करनी प्रारम्भ कर दी और अपने स्टाफ के सदस्यों को सरकारी दायित्व सौंप दिये और इसी दिन रेडियो पाकिस्तान ने घोषणा की कि राष्ट्रपति याहिया खां शेख मुजीबुर्रहमान से बातचीत करने के लिये ढाका जाने वाले हैं।

उसी दिन मौलाना भाशानी ने और भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री अताउर्रहमान ने एक विशाल सभा में घोषणा की कि हम देश की ७॥ करोड़ जनता के आन्दोलन के साथ हैं। उसी सभा में श्री मुजीव ने घोषणा की कि यदि याहिया खां हमारी शर्तें नहीं मानेंगे तो हम २५ मार्च को बुलाये गये अधिवेशन में भाग नहीं लेंगे। साथ ही उस दिन अर्थात् ७ मार्च को पुनः यह घोषणा की गयी कि कोई आदमी काम पर नहीं जायेगा और हड़ताल अभी चालू रहेगी। इस दौरान जो आदेश श्री मुजीव देंगे, केवल उन्हीं का पालन किया जायेगा। थोड़ा कामकाज चलाने के लिए शेख मुजीव ने सरकार के रूप में एक काम चलाऊ समिति का गठन किया।

पाकिस्तान सरकार की हड़ताल समाप्त करके काम पर आने की अपील वेकार गयी। सारे देश में यातायात ठप्प हो गया। यहाँ तक कि डाक-तार विभाग और समस्त संचार और यातायात व्यवस्था तक ठप्प हो गयी। श्री मुजीब के आदेश से केवल मनीआर्डरों के लेने और वितरित करने का कार्य जारी रहा। इसके साथ ही पाकिस्तान के अन्य नगरों में पाकिस्तानी सेना अत्याचार भी करती रही और ढाका के छात्रों के दलों से उनकी टक्कर होती रही।

वस्तुतः शेख मुजीव और उनकी पार्टी—अवामी लीग अभी तक भी यह नहीं समझ सके थे कि बंगला देश की जनता को अपनी आजादी की प्राप्ति के लिए अथवा पाकिस्तानी सैनिकों के अत्याचारों का प्रतिरोध करने के लिए शस्त्र भी उठाने पड़ सकते हैं। उनका आन्दोलन भारत में चलाये गये महात्मा गाँधी के सविनय अवज्ञा-आँदोलन की भाँति अहिंसक था। अतः शेख की पार्टी ने न तो कहीं से हथियारों के संग्रह का प्रयत्न किया था और न उनको चलाने की ट्रेनिंग ही किसी को दी थी। उनके पास जितने भी स्वयं-सेवक थे वे केवल अहिंसक थे। इनके विपरीत बंगला-छात्र दल कई वर्ष पहले से यह अनुभव करता था कि स्वतन्त्रता के संघर्ष को उन्होंने शस्त्रों के बल पर ही चलाना होगा। इसलिए छात्रों के दल के बहुत से सदस्य चोरी-छिपे शस्त्रों के संचालन और हथगोले बनाने में दक्ष हो चुके थे।

यह छात्र-दल भी शायद अपने इस अल्पज्ञान और अपने अल्पसंख्यक बल के कारण सफल न हो पाते यदि पाकिस्तानी बंगाल राइफल्स और बंगाली सशस्त्र सेना के हथियार लेकर उनका वध न शुरू कर देती। इस पाकिस्तानी मूर्खता का परिणाम ही यह निकला कि जितने भी बंगाल राइफल और बंगाल सशस्त्र पुलिस के जवान अपनी जान बचाकर और अपने हथियार लेकर भागने में सफल हुए, वही इस छात्र-दल और अवामी लीग के स्वयं-सेवकों के शस्त्र चलाने के शिक्षक बने या कुछ वह बंगाली सैनिक अधिकारी थे जो पाकिस्तानी सेना से रिटायर्ड हो चुके थे। उन्होंने क्रांति की बागडोर अपने हाथ में संभाली। यह भी बंगला क्रांतिकारियों का सौभाग्य

था कि बुढ़ापे की इस आयु में भी उन्हें कर्नल उस्मानी जैसा वीर और देश-भक्त सेनापति प्राप्त हुआ।

कर्नल उस्मानी ने अपने अल्प साधनों को लेकर ही पाकिस्तानी सशस्त्र सेनाओं का कितना बड़ा प्रतिरोध किया ऐसी मिसाल कहीं दूसरी नहीं मिलती।

३ मार्च से पहले भारत तो चोरी-छिपे भैंसा गाड़ियों से ही हथियार पहुँचाता था अथवा अपने यहाँ ट्रेनिंग देकर युवकों को श्री मुजीब के पास भेजता था अथवा बिना वर्दी कुछ भारतीय सैनिक आफीसर मोर्चों की देखभाल करते थे; लेकिन इतने अल्प साधनों से नये चमचमाते स्वचालित शस्त्रों से सुसज्जित पाकिस्तानी सैनिकों का जगह-जगह प्रतिरोध करना, उनके संचार साधनों को काट देना वास्तव में कर्नल श्री उस्मानी के रण-कौशल, अटूट देश-भक्ति और साहस का ही कार्य था। अतः ७ जनवरी तक पाकिस्तानी सेनाओं का जो प्रतिरोध हो रहा था, वह नाममात्र के लिये था। अर्थात् उनके रास्तों में खाइयां खोद देना, लक्कड़ और ड्रम या तारें गाड़ देना भर था। यह नहीं था कि गोली का जवाव उन्हें गोली से दिया जा सके।

यही कारण था कि ८ मार्च १९७१ ई० को बंगला देश के छात्रों और पाक-अमरीकन लीग के सदस्यों ने राष्ट्रसंघ के महासचिव श्री ऊ थांत से अपील की कि वे बांगला देश में पाकिस्तानी सेनाओं द्वारा किये जा रहे नर-संहार को रुकवायें और वहां की स्थिति की जानकारी के लिये राष्ट्रसंघ से प्रेक्षक भेजे जायें। इस अपील का परिणाम यह हुआ कि ऊ थांत ने इस जांच या हत्याकाण्ड को रुकवाने का प्रयत्न करने के बजाय बंगला देश में संयुक्त राष्ट्रसंघ की ओर से काम करने वाले राष्ट्रसंघ के कर्मचारियों और अधिकारियों को वापस लौट आने को लिख दिया। ऊ थांत की कार्रवाई और पाक-हत्याकाण्ड को देखकर बहुत से विदेशी भी बँगला देश से चले गये। अगर रह गये तो एक हजार अमेरिकी, उन्हें वहीं रुकने के लिये अमेरिकी सरकार ने लिखा था। उसके लिखने के बावजूद दो दिन बाद यह लोग भी काफी संख्या में चले गये।

आज ८ मार्च को करीमगंज में बंगाली पुलिस और पाकिस्तानी सेना में खुल कर गोली चली। इस पहली लड़ाई में पाक सैनिक कुछ ही देर बाद भाग गये।

इसका बदला १३ मार्च को पाक पुलिस अधिकारियों से लिया और पूर्वी पाक राइफल्स के जवानों से हथियार लेकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इनमें से कुछ को अपना सहायक और मुस्लिम लीगी मानकर लाठीधारी बना दिया गया। पाक अधिकारियों ने पूर्वी पाक सशस्त्र पुलिस की भी यही दशा की। हथियार लेते समय इन जवानों की पाक सेना से टक्कर भी हो गई; क्योंकि बंगला देश के जवानों ने 'जय बंगला' के नारे लगाये और झड़प में काफी बंगला जवान शहीद भी हो गये।

आज १३ मार्च को ढाका रेडियो से फिर धमकी दी गयी कि कर्मचारी अपने काम पर आ जायें, वरना उन पर सख्ती की जायेगी और मुकद्दमे चलाये जायेंगे। यह धमकी ढाका की आर्डिनेन्स फैक्ट्री के कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से दी गयी थी। बताया गया था कि सरकार को मालूम है कुछ शरारती लोगों ने झगड़े करने के लिये 'संग्राम-परिषद्' बनाई है।

१५ मार्च १९७१ ई० को श्री मुजीब ने सत्ता अपने हाथ में संभालने की घोषणा कर दी। जनता को आशा थी कि श्री शेख मुजीब आज पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा करेंगे; क्योंकि स्वायत्तता का कार्य तो उन्होंने पूरा कर ही लिया है; लेकिन श्री मुजीब ने ऐसा नहीं किया, इसके विपरीत श्री मुजीब ने २५ निर्देश जनता के नाम जारी किये। अपने निर्देशों में श्री मुजीब ने कहा—आज से सब सरकारी, अर्द्ध-सरकारी संस्थान कार्यालय और अदालतें बन्द रहेंगी। देश भर में हड़ताल जारी रहेगी और जनता हर बलिदान के लिये तैयार रहे।

आपने अपने इस कार्य का समर्थन करते हुए कहा—पूर्वी क्षेत्र में मेरे दल का बहुमत है। अतः मैं सत्ता हाथ में लेने का अधिकारी हूँ। श्री मुजीब ने जिलों के डिप्टी कमिश्नरों और जिला अधिकारियों को आदेश दिया कि वे इस तरह से कार्य करें कि कार्यालय भी न खोलने पड़ें और कार्य भी पूरा हो जाय।

कानून और व्यवस्था बनाये रखने के लिए श्री शेख मुजीब ने पुलिस अधिकारियों को सलाह दी कि वे अवामी लीग के स्वयं-सेवकों की मदद से कार्य करें। गोदी कर्मचारियों को निर्देश देते हुए श्री मुजीब ने उन्हें आज्ञा दी कि वे लोग बंगला देश के लिए हथियार लाने वाले जहाजों और पाकिस्तानी सेना लेकर आने वाले जहाजों का कतई बहिष्कार करें। माल लाने वाले जहाजों पर कार्य करने की उन्हें छूट है।

श्री मुजीब ने खाद्य वितरण कार्य को प्राथमिकता देने के लिये भी कई आदेश जारी किये। श्री शेख ने आय कर की वसूली को रुकवा दिया जब तक नया आदेश लागू न कर दिया जाय। लेकिन लगान की वसूली कर बंगला देश के खाते में जमा करने की आज्ञा दे दी गई। सभी व्यापारियों से सामान्य रूप से कार्य करने के लिये कहा गया। लेकिन बैंकों को तीन घण्टे से अधिक कार्य करने की आज्ञा नहीं दी गई। शेख मुजीब ने सारे स्कूल और कालिजों को बन्द करने की आज्ञा दे दी और सारी जनता को अपने मकानों पर काले झण्डे लगाने का निर्देश दिया।

आज ही के दिन ढाका, कोमिल्ला और जैसोर छावनियों के बंगाली जवानों को निरस्त्र कर दिया गया।

१५ मार्च ११७१ ई० को पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति याहिया खां ढाका पहुँचे। हवाई अड्डे पर टिक्का खां ने उनका स्वागत किया। जिस समय वे

राष्ट्रपति भवन को जा रहे थे उस समय फौजों से भरे सौ ट्रक मशीनगनों के मुँह बंगला जनता की ओर किये दोनों ओर चल रहे थे। राष्ट्रपति निवास के चारों ओर सैनिकों की दुहरी पंक्तियाँ खड़ी थीं।

आज ही अर्थात् १५ मार्च १९७१ ई० को भारत सरकार ने भारतीय आकाश पर उड़ान के लिये विदेशी जहाजों पर भी पावन्दी की घोषणा कर दी। अपनी घोषणा में सरकार ने स्पष्ट किया कि भारतीय आकाश मार्ग से कोई भी जहाज पूर्वी या पश्चिमी पाकिस्तान को किसी भी प्रकार के शस्त्र लेकर नहीं जा सकता। प्रत्येक जहाज को अपनी तलाशी देने के वाद ही आगे जाने की आज्ञा दी जायेगी। दूसरी विशेष घटना आज यह हुई कि जहाँ एक ओर मुजीव ने यह घोषणा की कि मैं याहिया खां से मिलने के लिए तैयार हूँ लेकिन अपनी माँगें नहीं छोड़ूँगा, वहाँ ढाका के अखवारों ने पहली वार आज श्री मुजीव की माँगों का समर्थन किया और ढाका रेडियो से गीता का पाठ किया गया।

याहिया का समझौता नाटक शुरू

पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहिया खां जो निश्चय करके आये थे उन्होंने उस निश्चय की झलक अपने चेहरे पर चौदह दिन तक नहीं आने दी। इसके वजाय याहिया खाँ ने श्री मुजीव से वड़े प्रेम के साथ समझौते का नाटक शुरू कर दिया। १६ मार्च १९७१ ई० को याहिया खां और श्री मुजीव की महत्वपूर्ण वार्ता ढाका के राष्ट्रपति भवन में विल्कुल एकान्त कमरे में हुई। जिसमें कोई तीसरा व्यक्ति शामिल नहीं किया गया। अलवत्ता पाक राष्ट्रपति से वातचीत करने के लिये जव श्री शेख मुजीव अपनी सफेद रंग की मोटर पर सवार होकर गये थे, तव उस मोटर पर असहयोग आन्दोलन का लाल झण्डा लगा हुआ था।

आज श्री शेख मुजीव और याहिया खां की पहली वातचीत थी। इस वातचीत को इतना गुप्त रखा गया था कि फोटोग्राफरों तक को भी राष्ट्रपति भवन से दूर रहने की ही आज्ञा दी गई। शेख मुजीव के आन्दोलन का भी आज पन्द्रहवाँ दिन था। बंगलादेश में हड़ताल पूर्ववत् जारी थी। पाक सरकार की वार-वार चेतावनियों के वावजूद भी कोई कर्मचारी काम पर नहीं लौटा।

वातचीत के समय ढाका विश्वविद्यालय के छात्र राष्ट्रपति भवन के वाहर जोरदार प्रदर्शन कर रहे थे। वे नारे लगा रहे थे—'वंगला देश जिन्दावाद', 'याहिया खां सावधान।'

वातचीत के वाद वाहर निकल कर श्री मुजीव ने कुछ भी वताने से इन्कार कर दिया। इतना अवश्य कहा कि यदि मैं न रहूँ तो जनता मेरे सहयोगियों के निर्देश

पर कार्य करे। सम्भवतः श्री शेख ने ऐसा इसलिये भी कहा हो कि चन्द दिन पहले एक सभा में उनकी हत्या करने की चेष्टा की गई थी।

टिक्का खाँ का विरोध

१७ मार्च १९६१ ई० को श्री मुजीव और याहिया खां की राष्ट्रपति भवन में फिर बातचीत शुरू हुई। इस बातचीत के बाद टिक्का खां ने घोषणा की कि जिन लोगों ने शेख मुजीव की हत्या की चेष्टा की है, उनकी जांच की जायेगी और उस जाँच आयोग का अध्यक्ष हाईकोर्ट का कोई जज होगा। आज की बातचीत में एक विशेष बात यह हुई कि याहिया खां ने यह निश्चय किया कि बातचीत को अच्छी तरह से चलाने के लिये पीपुल्स पार्टी के नेता श्री जुल्फिकार अली भुट्टो और पाकिस्तान के चीफ जस्टिस को भी बुलवा लिया जाय। जबकि इससे पहले श्री भुट्टो ने कराची में यह घोषणा की थी कि चुनाव के परिणामों के अनुसार पश्चिमी पाकिस्तान का शासन मुझे सौंप दिया जाय।

बातचीत के बाद बाहर निकलने पर श्री मुजीव ने बातचीत के बारे में आज फिर कुछ नहीं बताया। बल्कि आज श्री मुजीव कल की अपेक्षा अधिक गम्भीर थे। बातचीत पहले दोनों नेताओं में एक घण्टे तक अकेले में हुई थी। लेकिन उसके पश्चात् भूतपूर्व चीफ जस्टिस ए० आर० कारनियल तथा राष्ट्रीय रक्षा परिषद् के सचिव भी शामिल हो गये थे। बाहर आकर श्री मुजीव ने कहा था कि जब तक हमारी मांगें नहीं मानी जातीं हमारा आन्दोलन जारी रहेगा। टिक्का खां की जाँच कराये जाने की घोषणा का श्री मुजीव ने विरोध किया। उन्होंने कहा कि जब तक मार्शल-ला लगा हुआ है तब तक यह कार्य ईमानदारी से पूरा नहीं हो सकता। टिक्का खां की यह घोषणा केवल पर्दा डालने के लिये है। हमारा आन्दोलन अभी और भी तेज होगा।

शाम को एक सार्वजनिक सभा में पाकिस्तान सरकार से सैनिक शासन समाप्त करने की मांग की और पाक सेनाओं द्वारा किये गये हत्याकांड की जांच करने के लिये तीन आदमियों की एक समिति बनाई। उसी सभा में अवामी लीग के एक नेता ने याहिया खां से अपील की कि वे हमें अपने हाल पर छोड़ दें और अपनी फौज को अपने साथ वापस ले जायें।

१८ मार्च १९७१ ई० को राष्ट्रपति भवन में याहिया खां और श्री मुजीव की फिर बातचीत शुरू हुई। आज की बातचीत में दोनों ओर के सलाहकार भी शामिल थे। श्री मुजीव के साथ उनके सहायक श्री ताजुद्दीन अहमद, श्री कमरुज्जमाँ, श्री मुश्ताक अहमद, श्री सैयद नजरुल इस्लाम और श्री मंसूर अली शामिल थे। बातचीत

डेढ़ घण्टे हुई । वातचीत के बारे ने आज भी संवाददाताओं को कुछ नहीं बताया गया ।

आज ही के दिन दोपहर पश्चात् फिर बातचीत शुरू हुई और यह बातचीत दो घण्टे चली । वास्तव में यह बातचीत दोनों ओर के सलाहकारों के बीच ही थी । आज ही लाहौर में श्री भुट्टो ने फिर यह धमकी दी कि यदि पश्चिमी पाकिस्तान की सत्ता मुझे न सौंपी गई तो मैं आन्दोलन छेड़ दूंगा ।

आज १८ मार्च को टिक्का खां ने ढाका में कर्फ्यू आर्डर जारी कर दिया । रात को पहली बार पाकिस्तानी सेना और बंगला देश की जनता में खुला संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में वहां काफी संख्या में आदमी मारे गये । हथियारों की दो दुकानें लूट ली गयीं । उस समय श्री शेख के घर पर अवामी लीग के दो सौ सशस्त्र वालंटियर पहरा दे रहे थे ।

बातचीत के नाटक का दूसरा दौर

१८ और १६ मार्च को दोनों नेताओं में कोई बातचीत नहीं हुई । १६ मार्च को ढाका के पास जयदेवपुर में सेना ने ५० आदमियों को गोलियों से भून दिया था । इस कारण तनाव और बढ़ गया । श्री मुजीब ने आज की सभा में ही यह घोषणा की थी कि पाक सेना ने वन्दी बनाकर जिन पचास आदमियों को मारा है, उनकी जाँच की मांग मैं राष्ट्रपति श्री याहिया खाँ से करूँगा ।

२० मार्च को बातचीत फिर शुरू हुई । इस बातचीत में दोनों ओर के सलाहकार भी शमिल हुए । आज भी बातचीत दो घण्टे चली । बातचीत के बाद शेख मुजीब ने बताया कि आज की बातचीत से कुछ आशा बंधी है; लेकिन बातचीत आगे चलेगी । उन्होंने कहा राष्ट्रपति याहियाखाँ पश्चिमी प्रान्तों के नेताओं से बातचीत करेंगे । इसका मतलब यह है कि वे भुट्टो को विशेष महत्व नहीं दे रहे । यह महत्व इतना नहीं जितना कि भुट्टो जोर शोर से दावा कर रहा है ।

दूसरी ओर श्री भुट्टो ने कराची में घोषणा करते हुए कहा कि मुझे राष्ट्रपति याहिया खाँ का फिर निमंत्रण मिला है । अतः मैं अपनी पार्टी के नेताओं के साथ ढाका जा रहा हूँ ।

वास्तव में पाकिस्तान में यह खबर फैल गई थी कि मुस्लिम लीग के लाहौर प्रस्ताव के अनुसार पूर्वी और पश्चिमी पाक का संघ बनाया जायेगा और स्वतन्त्र बंगला देश इस संघ की एक ईकाई होगा । संघ की सत्ता श्री मुजीब को सौंपी जायगी । श्री भुट्टो के बौखलाने और ढाका जाने का विशेष कारण भी यही था ।

आज की वातचीत में कल के हत्याकाँड की भी चर्चा हुई । श्री मुजीव ने याहिया खाँ को यह भी वताया कि टिक्का खां ने मुझे वताया था कि सेना को वैरकों में वापस बुला लिया गया है; लेकिन वह जगह-जगह हत्याकाँड करती फिर रही है।

आज शाम को ही ढाका में दो विशेष घटनायें घटीं । एक रेलवे क्रासिंग पर बंगला जनता और पाक सैनिकों में भिड़न्त हुई। इस भिड़न्त में तीस नागरिक मारे गये। आज ही श्री मुजीव से नेशनल अवामी पार्टी (वली गुट) के वाइस प्रेसीडेन्ट खान अब्दुल वली खां और कौन्सिल मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मियाँ मुमताज दोलताना ने वातचीत की । पश्चिमी पाक की यह छोटी पार्टियाँ अन्तरिम सरकार बनाने में अवामी लीग की साझेदार वताई जाती थीं ।

बातचीत का सिलसिला और सेना का बुलावा

एक ओर ढाका में वैठ कर याहिया खाँ बंगला देश के नेता श्री मुजीव से वातचीत का नाटक रच रहे थे, दूसरी ओर मालदीव और श्रीलंका के वंडारनायक हवाई अड्डे से तेजी से सेना और हथियार मंगवा रहे थे।

अपने वातचीत के नाटक पर और गहरा पर्दा डालते हुये २२ मार्च १९७१ को पाकिस्तान सरकार की ओर से एक सूचना में वताया गया कि श्री याहिया खां ने पूर्वी पाक की अवामी लीग के नेताओं को सत्ता सौंपने का निश्चय कर लिया है । जिसके द्वारा पूर्वी पाक की अवामी लीग को अन्तरिम सरकार बनाने का अधिकार मिल जायेगा। सत्ता हस्तांतरण की योजना श्री मुजीब के छः सूत्रीय कार्यक्रम पर आधारित होगी।

इस योजना के अनुसार रक्षा तथा विदेशी मामलों को छोड़ कर पूर्वी पाकिस्तान को स्वशासन प्राप्त होगा।

आज ही याहिया खां ने २५ मार्च को बुलाये जाने वाले असेम्वली के अधिवेशन को फिर स्थगित करने की घोषणा कर दी। अपनी घोषणा में याहिया खाँ ने बताया कि पूर्वी और पश्चिमी नेताओं से बातचीत तथा समझौते का दायरा बढ़ाने के लिये ऐसा किया जा रहा है। असेम्वली का अधिवेशन बुलाने की तिथि की घोषणा बाद में की जायगी।

वस्तुतः यह घोषणा श्री मुजीव, श्री भुट्टो और याहिया खाँ की पचहत्तर मिनट की बातचीत के पश्चात् की गई थी। इससे पहले याहिया खाँ उक्त दोनों नेताओं से अलग-अलग कई बार मिल चुके थे । साथ ही यह भी वताया गया कि सत्ता के कागजात आज याहिया खाँ तैयार करा रहे हैं। मार्शल-ला समाप्त कर दिया जायगा। संविधान बनने तक काम चलाऊ सरकार बनाई जायेगी। पश्चात्

अन्तरिम सरकार बनाई जायेगी। सिंध और पख्तूनिस्तान में भी अन्तरिम सरकारें बनेंगी।

श्री भुट्टो ने आज ढाका में प्रेस कांफ्रेंस की। उन्होंने यह घोषणा की कि पाकिस्तान का राजनैतिक संकट समाप्त करने के लिये मेरा और श्री मुजीब का राष्ट्रपति याहिया खाँ से समझौता हो गया है।

विरोध दिवस

२३ मार्च को बंगला देश में पाकिस्तान दिवस को विरोध दिवस के रूप में मनाया गया। मकानों पर काले झंडे फहराये गये। उनके साथ बंगला देश के झंडे भी लगे थे। इसका आह्वान छात्र-परिषद् ने किया था। छात्र परिषद् के वालंटियरों ने पहले परेड मैदान में परेड करके शेख मुजीब को सलामी दी। इसके पश्चात् श्री शेख ने बंगला देश का झण्डा फहराया। ढाका रेडियो से बताया गया था कि बंगला देश की सभी इमारतों के साथ-साथ मोटरों पर भी यही झण्डे लगे हुये हैं। झण्डों पर जय बंगला नारा अंकित है।

अध्याय ४

मुजीब की गिरफ्तारी

और

स्वतन्त्र बंगला देश का उदय

२५ मार्च १९७१ ई० को श्री मुजीव ने अपने वहुत से साथियों को ढाका छोड़कर अन्यत्र चले जाने की सलाह दी और वहीं से मुक्ति संग्राम चलाने का परामर्श दिया। अव श्री मुजीव को यह आभास होने लगा था कि उन्हें किसी भी क्षण गिरफ्तार किया जा सकता है। कहीं भागने की अपेक्षा उन्होंने अपने को गिरफ्तार कराना इसलिए उचित समझा कि उनके ऐसा न करने से सरकार अपने हत्याकाण्डों में और वृद्धि कर देगी। अतः शेख के परामर्श से श्री ताजुद्दीन अहमद, श्री नजरूल इस्लाम, श्री कमरूज्जमां तथा श्री अब्दुल समद आदि ने ढाका छोड़ दिया।

आज छात्रों की संग्राम परिषद् ने छावनी से सेना के नगर में प्रवेश को रोकने के लिए जगह-जगह सड़कों पर भारी रुकावटें खड़ी कर दी थीं, कई जगह कांटेदार तारों की वाड़ें थीं। खन्दकें थीं। ड्रम और पेड़ काट कर सड़कों पर डाल दिये गये थे।

श्री मुजीव ने अपने गुप्तचरों से पता लगा लिया था कि आधी रात के वाद, लगभग १ वजे सेना उन्हें गिरफ्तार करने के लिए आयेगी। अतः १ वजकर २० मिनट पर श्री शेख के मकान पर चारों ओर से धांय-धाँय गोलियाँ वरसनी शुरू हो गयीं। उन गोलियों से उनका छोटा लड़का रसल वाल-वाल वचा। तव मुजीव ने खिड़की खोल कर कहा—मैं गिरफ्तारी के लिए तैयार हूँ और वे वाहर निकल आये।

वाहर आने पर उन पर लात-घूँसों की वौछार ही शुरू हो गयी। तभी एक हवलदार ने कहा—मुजीव को मारो मत। उनके घर को लूट लिया गया। सारा सामान और फर्नीचर तोड़ दिया और उनके परिवार को उनके धानमण्डी के पुराने मकान से हटा कर दूसरी जगह पहुँचा दिया। वाहर और छत पर पाकिस्तानी सेना का कड़ा पहरा लगा दिया गया।

श्री मुजीव को वहाँ से गिरफ्तार कर ढाका छावनी ले जाया गया और तीसरे दिन उन्हें पश्चिमी पाकिस्तान में मियाँवाली जेल की काल कोठरी में वन्द कर दिया गया जिसमें वह ९ महीने के लगभग वन्द रहे।

उनकी गिरफ्तारी की घोषणा २६ जुलाई को पाकिस्तान रेडियो ने की थी; लेकिन तब तक भारतवासी यह समझे हुए थे कि श्री मुजीब भूमिगत होकर मुक्ति-आन्दोलन चला रहे हैं।

जनता पर और भी बुरा प्रभाव पड़ा। इस दृष्टि से मुक्ति बेतार केन्द्र से उनकी गिरफ्तारी की घोषणा तो की ही नहीं गयी, अपितु उनके नाम से कई दिन तक जनता और मुक्ति-सैनिकों को सन्देश दिये जाते रहे।

याहिया का नादिरशाही फर्मान

श्री मुजीब को गिरफ्तार कराने से पहले याहिया खां ने टिक्काखां को बुलाकर अपना फर्मान सुना दिया—इस आन्दोलन को हर तरह कुचल दो। किसी हिन्दू को तो किसी भी तरह मत बख्शो।

कुछ देर बाद ही पाकिस्तानी सेना टैंक, मशीनगनें और बख्तरबन्द गाड़ियां लेकर शहर में घुस गयी। गलियों के कोनों पर मशीनगनें लगा दी गयीं। बड़े-बड़े मुहल्लों पर तोपखाना फिट किया गया और टैंक खड़े किये गए। आम सैनिक लूटमार और बलात्कार में जुट गये।

उस समय ढाका में चारों तरफ हाय-हाय—खुदा के वास्ते रहम करो—जां बख्श दो—हम तुम्हारे गुलाम हैं—की आवाजें आ रही थीं या तड़-तड़ चलती मशीन-गनों अथवा धम-धम फटते तोप के गोलों की। १७वीं सदी में नादिरशाह के सैनिकों ने जो कत्लेआम दिल्ली में किया था, वह इस कत्लेआम के मुकाबले कुछ भी न था।

बच्चों के पेट पर पाकिस्तानी फौजी खड़े होकर फोड़ रहे थे। औरतों की छातियों को नोंचकर काटकर हंस रहे थे, कहीं कोई किसी नंगी औरत को अपने शरीर से चिपटा रहा था और दूसरी ओर कराची रेडियो से कहा जा रहा था—'इन्शा-अल्ला पूर्वी पाकिस्तान में अब अमन कायम हो चुका है। कुछ शरारती बंगाली लोगों ने बिहारी हिन्दु और मुसलमानों को जरूर लूटा था, उन्हें पकड़ लिया गया।'

इसके साथ ही लाहौर रेडियो से कहा जा रहा था—अल्लाह के फजल से अब पूर्वी पाकिस्तान में अम्नोअमान कायम हो गया है। और इसी भाषा में दूसरे दिन जुल्फिकार अली भुट्टो ने लाहौर रेडियो से घोषणा की—अल्लाह के फजल से पाकि-स्तान बच गया।

२६ मार्च को बंगला देश में कई विशेष घटनाएँ हुयीं। ढाका रेडियो पर बोलते हुए याहिया खाँ ने मुजीब को देश-द्रोही कहा और मुकद्दमा चलाकर सजा देने की घोषणा भी की।

याहिया खाँ ने श्री मुजीव पर राष्ट्रीय झण्डे का अपमान करने और देश-द्रोही कार्रवाइयाँ करने के आरोप लगाते हुए कहा—उसके अनुयायी देश के दुश्मन हैं। वे देश से सम्बन्ध-विच्छेद करना चाहते हैं। उन सबको दण्ड अवश्य दिया जायेगा। अपने भाषण में ही याहिया ने अवामी लीग पर प्रतिबन्ध लगा कर उसे गैर-कानूनी घोषित कर दिया।

याहिया ने आगे कहा—स्थिति के काबू में आते ही मैं निर्वाचित प्रतिनिधियों को सत्ता सौंप दूंगा। मेरा लक्ष्य भी यही है। याहिया ने यह भी बताया कि देश की अखंडता बनाये रखने के लिये सेना को कार्रवाई करने का आदेश दे दिया गया है। जबकि यह आदेश वह पिछली रात को ही दे चुका था।

बंगला देश-स्वतंत्र घोषित

आज शेख मुजीबुर्रहमान के नाम से स्वतंत्र बंगला देश की घोषणा बंगला बेतार केन्द्र से की गयी। स्वतंत्रता की इस इकतरफा घोषणा की प्रतीक्षा वास्तव में बहुत दिनों से की जा रही थी। यह घोषणा उस समय की गयी जब अपना भाषण देकर याहिया खाँ ढाका से रवाना हो चुका था। इस घोषणा के साथ ही ७॥ करोड़ बंगला देशवासी स्वतन्त्र नागरिक बन गये।

साथ ही श्री मुजीब के नाम से जनता के नाम यह अपील भी की गयी कि दुश्मन का हर प्रकार से हर हथियार से मुकाबला किया जाय।

इस घोषणा के बाद सारे बंगला देश पर पाकिस्तानी सेना टूट पड़ी। जनता और पाक सैनिकों के मध्य भयंकर युद्ध छिड़ गया। ढाका और चटगांव की सड़कें इस भयंकर युद्ध का विशेष केन्द्र बन गयीं।

चटगांव, कोमिल्ला, सिलहट, जैसोर, बारीसाल और खुलना में पूर्वी बंगाल रेजिमेंट, पूर्वी पाक रायफल्स तथा पूर्वी पाक पुलिस और पश्चिमी पाकिस्तानी सैनिकों के मध्य जम कर भिड़न्त शुरू हो गयी। उक्त सेनाओं के लोगों ने श्री मुजीव के आन्दोलन का साथ देने का निश्चय किया और पाकिस्तानी सेना को घेर लिया। इस युद्ध में दोनों पक्षों के लोग भारी संख्या में हताहत हुए।

रात को बेतार केन्द्र से फिर जनता से स्वाधीनता आन्दोलन को और तेज करने की अपील की गयी। परिणामस्वरूप सारे मकानों पर स्वतन्त्र बंगला देश के झण्डे लगा दिये गये। मार्शल-ला आदेशों को मानने से इन्कार कर दिया और जिस के हाथ लाठी, डंडा, भाला, बन्दूक जो भी हथियार हाथ लगा—लेकर पाकिस्तानी सैनिकों पर टूट पड़ा। सेना ढाका रेडियो पर कब्जा कर ही चुकी थी। मार्शल-ला

प्रशासक टिक्का खां ने सारे देश में कर्फ्यू की घोषणा करते हुए किसी भी प्रकार के जल्से, जलूसों पर पाबन्दी लगा दी और कारखानों में तालाबन्दी गैर-कानूनी करार दे दी। सभी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियाँ भी गैर-कानूनी करार दे दी गयीं। बैंकों के खाते और लॉकर खोल कर सील कर दिये गए। समाचारों पर सेंसर लगा दिया गया और सभी हड़ताली कर्मचारियों को २४ घण्टे के अन्दर काम पर लौटने का आदेश दिया गया। सेना में जितने भी बंगाली सैनिक और अधिकारी थे, उन्हें निरस्त्र कर दिया गया।

ढाका रेडियो से बोलते हुए टिक्का खाँ ने कहा—ऐसी स्थिति पैदा हो गयी है कि इसके बिना किसी भी तरह कानून और व्यवस्था बनाये रखना संभव नहीं था। अतः देश की अखंडता की रक्षा के लिए मुझे यह कदम उठाने पड़े हैं।

आज ढाका रेडियो ने रात को फिर १६ मार्शल-ला आदेश सुनाये। इनका उल्लंघन करने वालों को १० साल तक की सजा की भी घोषणा की। सभाओं के अतिरिक्त बाहर या भीतर वक्तव्य देने पर भी पाबन्दी लगा दी गयी। समाचार-पत्रों के साथ-साथ पोस्टरों को भी सेंसर कराने का आदेश दे दिया गया और जिन व्यक्तियों के पास कानूनी या गैर-कानूनी हथियार हैं, उन्हें २४ घंटे के अन्दर जमा कराने का आदेश भी दिया गया।

आगामी आदेश तक सभी बैंकों को बन्द करने की आज्ञा दी गयी। साथ ही यह भी बताया गया कि सेना हथियारों की तलाश के लिये किसी भी स्थान या मकान की तलाशी ले सकेगी। साइक्लोस्टाइल और मुद्रण मशीनें भी मार्शल-ला अधिकारियों को सौंपने का आदेश दिया गया।

पत्रकारों का निष्कासन

२६ मार्च को ही होटल ग्रेनलेडले से पाकिस्तान सरकार के अधिकारियों ने सभी विदेशी पत्रकारों को भगा दिया। उन्होंने हत्याकाण्डों, जल्से, जलूसों की जो रीलें ली थीं, वह उनसे छीन ली गयीं। उसके बाद उनके कमरों और सामान की तलाशी भी ली गयी। इन लोगों को अपना बोरिया-बिस्तर बाँधने के लिए केवल ४० मिनिट का समय दिया गया और बाद में एक बन्द गाड़ी में इन पत्रकारों को हवाई अड्डे ले जाकर कराची के लिये लाद दिया गया। यह विदेशी पत्रकार संख्या में ३० थे।

एक अमेरिकी और आस्ट्रेलियाई पत्रकार अपना पत्रकार धर्म निभाते हुए तभी मर गए थे और कितने मरे इसका पता नहीं चला। इनके साथ जो हवलदार

था, वह कहता जा रहा था—दफना दिया साले बंगला देश मांगने वालों को और साथ में बंगला देश को भी। गुलमटे कहीं के चले थे आजादी लेने।

कुछ ने दिल्ली में और शेष ने अपने-अपने देश जाकर बताया कि रात भर धांय-धांय और तोपों की आवाजों तथा गोले फटने और हाय-हाय के सिवा कुछ सुनाई नहीं देता। बड़े-बड़े भवनों को बमों और राकेटों से उड़ा दिया गया है। हवाई अड्डे तक जब भी देखने का मौका मिला, लाशें-ही-लाशें पड़ी दिखायी दीं। जगह-जगह आग लगे मकानों से लपटें और धुंआ उठ रहा था।

ढाका में जहाँ कुछ देर पहले 'जय बंगला देश' के घोष सुनाई देते थे, वहाँ सन्नाटा छा गया। हमारी गाड़ी को देखकर एक सन्तरी बोला—बंगला देश दफना दिया गया है।

इस पत्रकार दल को पहले तो भूखा रखा गया ही था फिर कराची तक रोटी तो अलग चाय तक नहीं दी। कराची पहुँच कर फिर इनकी तलाशी ली गयी।

वाशिंगटन में अमेरिकी पत्रकारों ने बताया कि ढाका कालेज के छात्रों को पाकिस्तानी सेना ने लाईन में खड़ा करके कालेज के बाहर ही गोली मार दी। उसके अवामी लीग के समर्थक अखबार अंग्रेजी दैनिक 'पिपिल' के दफ्तर को आग लगा दी। हमने ऐसा हत्याकाण्ड न कभी देखा और न सुना।

इन पत्रकारों ने बर्मा और श्रीलंका की सरकारों की नीतियों की निन्दा करते हुए कहा—बौद्ध मतावलम्बी होते हुए भी यह सरकारें बंगला देश में पाकिस्तानी हत्यारों की मदद कर रही हैं।

आज टिक्का खां के मारे जाने की भी अफवाह उड़ी और दिल्ली स्थित पाकिस्तानी हाई कमिश्नर श्री सज्जाद हैदर ने भारत सरकार को एक विरोध पत्र दिया। जिसमें भारत पर पाकिस्तान के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप का आरोप लगाया गया था।

पाकिस्तान का दूसरा आरोप था कि हुगली नदी में एक जहाज पर अवामी लीग वालों का गुप्त रेडियो स्टेशन है। इसका भी खंडन किया गया।

सज्जाद हैदर ने यह भी कहा—आकाशवाणी और भारत के समाचार-पत्रों के समाचार शरारतपूर्ण होते हैं, टिक्का खां जीवित हैं, उनके मरने का समाचार भी गलत है। पाक सरकार इसे बर्दाश्त नहीं करेगी।

परराष्ट्र मंत्रालय में उनसे पूछा गया—क्या तुम्हारे कथन को धमकी माना जाय? इस पर सज्जाद हैदर ने कहा—मुझे मालूम नहीं इस्लामाबाद का आशय क्या है?

बाद में भारतीय प्रवक्ता ने कहा—हमारे देश में समाचारपत्र स्वतन्त्र हैं। तुम्हारे यहां सेंसर है। पता ही नहीं चलता, कहाँ क्या हो रहा है। जहाँ से उन्हें समाचार मिलता है, लेते हैं।

दूसरे दिन सज्जाद हैदर फिर आये थे। फिर विरोध-पत्र देने। यह विरोध-पत्र था भारतीय संसद में बहस पर उन्होंने फिर वही राग-अलापा कि आपकी संसद की कार्रवाई और नेताओं के भाषण मेरे देश के मामले में हस्तक्षेप, है। उन्हें फिर वही जवाब मिला—संयत भाषा में हमारे देश के सदस्यों पर बोलने में कोई पाबन्दी नहीं है। एक निमन्त्रण-पत्र भी सज्जाद ने दिया और वह यह था कि पाक विमान-काण्ड पर वार्ता को तैयार है। इसका उत्तर भी उन्हें तत्काल दे दिया गया—पहले हर्जाना भरा जाय।

भारत में प्रतिक्रिया का प्रारम्भ

बंगला देश के इस हत्याकाण्ड की भारत में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। भारतीय संसद में विरोधी दल के सदस्यों ने बंगला देश हत्याकाण्ड पर सरकार से वक्तव्य देने की माँग के साथ-साथ इस मामले को राष्ट्रसंघ में भी उठाने की माँग की।

श्री समरगुह (प्रसोपा), श्री एम. एस. बनर्जी (कम्युनिस्ट), श्री ज्योतिबसु (मार्क्स०) तथा श्री इशाक सांभली (कम्यु०) ने भी यही मांग दुहराई।

श्री समरगुह ने संसद में बताया—याहिया खां ने ३० हजार सेना बंगला देश में पहुँचाने के बाद फिर मार्शल-ला लगा दिया है और देखते ही गोली मारो के आदेश दे दिए हैं। अब तक कई हजार आदमी मारे जा चुके हैं।

उन्होंने श्रीलंका सरकार से भी अनुरोध किया कि वह पाकिस्तानी जहाजों को सेनाएं ले जाने की छूट को वापस ले ले। श्री गुह ने कहा—मुजीब आदि नेता गिरफ्तार कर लिए गये हैं, उन्हें कभी भी गोली से मार डाला जा सकता है। भारत वहाँ की जनता के प्रति सहानुभूति प्रकट करे। उत्तर में संसदीय मामलों के मन्त्री श्री राजबहादुर ने कहा—सरकार बंगला देश की घटनाओं के प्रति अत्यन्त चिन्तित है। वह सारी स्थिति पर विचार के बाद वक्तव्य देगी। और २६ मार्च १९७० ई० को मन्त्रिमण्डल की बैठक में बंगला देश की क्रांति तथा भारतीय सीमाओं की रक्षा के मामले पर विचार हुआ।

राष्ट्रसंघ में

२६ मार्च को राष्ट्रसंघ में भी आवाज उठाने का प्रयत्न किया गया। पूर्वी पाक की लीग ने राष्ट्रसंघ को बताया कि बंगला देश में हत्याकाण्ड के लिए चीन से

हथियार भेजे जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्रसघ की धारा ६६ के अधीन सारी स्थिति पर बंगला देश का ध्यान रखते हुए सुरक्षा परिषद् विचार करे।

इस पर तत्कालीन महासचिव ऊथांत ने रूखा जवाब देते हुए कहा—यदि सुरक्षा परिषद् के अधिकांश सदस्य इस बात के पक्ष में हों, तभी विचार हो सकता है।

राष्ट्रसंघ के सदस्य कुछ चिन्तित जरूर थे, लेकिन आगे बढ़कर आवाज उठाने को कोई तैयार नहीं था। उसकी अफ्रीकी गुट को भी सक्रिय करने की कोशिश बेकार गयी। अन्त में पूर्वी पाक प्रतिनिधि मण्डल भारतीय राजदूत से मिला। वाशिंगटन का अनुमान था कि पाक के पास बहुत बढ़िया हथियार हैं, वह जल्दी ही बंगला क्रांति को दबा देगा। यही धारणा और देशों की भी थी।

नयी दिल्ली में आज पाकिस्तानी दूतावास पर संसद सदस्यों ने प्रदर्शन किया और मुक्ति-संग्राम का समर्थन किया। देश के दो बड़े राजनैतिक दल कांग्रेस और जनसंघ ने इस हत्याकाण्ड के विरोध में दिल्ली में हड़ताल रखने की घोषणा की। आज अमेरिकी और ब्रिटिश समाचार-पत्रों ने याहिया की करतूतों की निन्दा की।

२७ मार्च की रोमांचक घटनाएं

२७ मार्च १९७१ का दिन बंगला देश में अत्यंत रोमांचक था। एक ओर बंगला देश पर पाकिस्तानी वायुसेना ना पाम बम बरसा रही थी। टैंक भीड़ की भीड़ को कुचल रहे थे और दूसरी ओर सर हथेली पर रखे मुक्ति सैनिक जम कर युद्ध कर रहे थे। यह घटना इतनी भयंकर थी कि त्रिपुरा की सीमा पर ३० हजार भारतीय लड़ने के लिये बढ़ गये। उनके पास भी जो हथियार थे, वही लेकर बंगला देशवासियों की मदद को चले; लेकिन उन्हें भारतीय सेना ने रोक दिया।

२७ मार्च को बंगला देश में १ लाख से अधिक व्यक्ति मारे गये। यह आँकड़े मुक्ति सेना ने भी मान लिये। लेकिन चटगाँव रेडियो स्टेशन पर मुक्तिवाहिनी ने कब्जा कर लिया। पाकिस्तान ने यहाँ भी टैंकों का प्रयोग किया था और १० हजार बंगवासियों को भून दिया था। ढाका के चारों ओर बख्तरबन्द दस्ते और टैंक फैले हुए थे।

भारत में फिर प्रतिक्रिया

भारत में २७ मार्च को फिर प्रतिक्रिया हुई। राष्ट्रीय लोक सेना के ४ हजार स्वयंसेवकों ने बम्बई में पाक के उप-उच्चायुक्त के कार्यालय के सामने विशाल प्रदर्शन किया। बाद में बंगला देश एकता समिति की स्थापना की। पाकिस्तान रेडियो ने भी आज ही शेख मुजीब के २५ मार्च को ही पकड़े जाने की घोषणा की।

भारत के स्थल सेनापति श्री मानेकशाह अपनी यात्रा अधूरी छोड़ कर राजधानी लौट आये।

लोकसभा में विरोधी दल के सदस्यों ने पाकिस्तान सरकार की कार्यवाही की निन्दा की। राज्य सभा में बहस के दौरान हस्तक्षेप करते हुए प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने कहा—मैं भी बंगला देश की घटनाओं से चिंतित हूँ और आप लोगों की ही तरह दुखी हूँ। समय आने पर अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अन्तर्गत उचित कार्यवाही की जायगी। साथ ही प्रधानमन्त्री ने पाकिस्तानी विमानों को भारतीय आकाश पर उड़ने की अनुमति देने से इन्कार किया।

प्रधानमन्त्री के बाद परराष्ट्रमंत्री श्री स्वर्णसिंह ने भी बंगला देशवासियों से सहानुभूति प्रकट की और अपील की कि हम अन्तर्राष्ट्रीय पीड़ितों के मामले में हर देश से बातचीत को तैयार हैं।

प्रधानमन्त्री ने बाद में विरोधी दलों के सदस्यों से भी बातचीत की तथा सीमा सुरक्षा दल को तैयार रहने का आदेश दिया और अधिवेशन २ अप्रैल तक के लिये स्थगित कर दिया गया।

सदस्यों ने माँग की कि जब श्री मुजीब अपने देश की सरकार को मान्यता देने के लिये मांग करें तब मान्यता अवश्य देनी चाहिये।

श्री जयप्रकाश नारायण की अपील

आज सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने विश्व की सरकारों से अपील की कि कोई देश पाकिस्तान को सैनिक सामान की सहायता न दे। साथ ही अपनी सरकार से भी अनुरोध किया कि भारत सरकार देखे कि कोई देश पाकिस्तान का हाथ तो नहीं बटा रहा है। प्रधानमन्त्री और परराष्ट्रमन्त्री को अपने पड़ोस में चल रहे इस नर-संहार के लिये शीघ्र कदम उठाने चाहियें।

भारत में जगह-जगह प्रदर्शन

भारत में आज जगह-जगह प्रदर्शन हुए। राजनैतिक दलों के सभी नेताओं और संसद सदस्यों में एक ओर सरकार से बंगला देश के 'काम-चलाऊ' मंत्रिमंडल को मान्यता देने की माँग की और दूसरी ओर मुक्ति-युद्ध में सहायता देने के लिये स्वयंसेवक भेजने की भी माँग की।

कम्युनिस्ट पार्टी की आंध्र शाखा ने बंगला देश को सहायता देने की मांग की और लुधियाना तथा हैदराबाद के जलूसों में सहायता के साथ-साथ अपने देश की सुरक्षा को भी मजबूत करने की मांग की। बंगाल में हड़ताल हुई। फारवर्ड ब्लाक ने बंगला सरकार को मान्यता देने की मांग की।

दिल्ली की जनता ने पाकिस्तानी हाई कमिश्नर के कार्यालय पर प्रदर्शन किया और याहिया विरोधी नारे लगाये।

बम्बई में पत्रकार संघ ने प्रदर्शन किया और नारे लगाये। इसी प्रदर्शन में विदेशी पत्रकार भी सम्मिलित थे उन्होंने प्रे. ट्र. के बंगाली जनता के हत्याकाण्डों के समाचारों को सही ही नहीं बल्कि बहुत कम बताया।

आज बंगला देश की घटनाओं पर कुवैत के विदेश-मंत्री बहुत दुखी हुए। ब्रिटेन में बंगला देश की संघर्ष समिति ने प्रधानमंत्री श्री हीथ से अपने देश की सरकार को मान्यता और सहायता देने की अपील की।

बंगला देश के युद्ध की स्थिति

२७ मार्च की शाम को ही स्वतन्त्र बंगला रेडियो से मेजर जिया ने बंगला देश में अस्थायी सरकार की घोषणा कर दी थी अतः अगले दिन २८ मार्च से पाकिस्तानी सेना और भी पाश्विकता पर उतर आयी।

ढाका में पाकिस्तानी सेना और मुक्तिवाहिनी में आमने-सामने का युद्ध हुआ जिसमें पाकिस्तान के चार जर्नल मारे गये।

आज ही मेजर जिया ने मुक्तिवाहिनी की कमान संभालने की घोषणा की और आशा व्यक्त की कि आगामी दो-तीन दिन में बंगला देश को पाकिस्तानियों से मुक्त करा लिया जायेगा। यदि इन पंजाबी सैनिकों ने आत्म-समर्पण नहीं किया तो इनका सफाया कर दिया जायेगा।

उन्होंने जनता से अपील की कि जिसे जो भी हथियार मिले वह पाकिस्तानी सेना पर लेकर टूट पड़े। परिणाम यह हुआ कि लड़ाई में कई जगह पाकिस्तानी सेना हार कर पीछे हटी और कहीं-कहीं उसके सैनिकों को आत्म-समर्पण भी करना पड़ा; लेकिन पाकिस्तानी सेना जहाँ से हटती थी, वहां पूर्ण विनाश और आगजनी के बाद ही हटती थी।

एक ओर मुक्तिवाहिनी पाकिस्तानी चौकियों पर हमला कर रही थी और दूसरी ओर पाकिस्तानी सेना बस्तियों और कारखानों को फूंक रही थी। कोमिल्ला पर बमबारी जारी थी। अन्त में इस पर मुक्ति सेना ने कब्जा कर लिया। यहां के शस्त्रागार से मुक्तिवाहिनी को बहुत से हथियार हाथ लगे जिसे उन्होंने आपस में बांट लिया। यहाँ युद्ध पूर्वी पाक रायफल्स और पाकिस्तानी सेना में दो घण्टे तक जमकर हुआ। बहुत भारी संख्या में आदमी मारे गये। दो घण्टे के बाद पाकिस्तानी सैनिक हट गये।

आज पाकिस्तानी वायुसेना ने ढाका शहर के सिविल अस्पताल पर भी बम बरसाये।

कोमिल्ला से निपट कर मुक्ति सैनिक ढाका की ओर बढ़े। टिक्का खाँ ने इस्लामाबाद से सैनिक कुमुक और वायुयान भेजने की माँग की और विमानों से भारी संख्या में चटगाँव में सैनिक पहुँचाये। इतना होने पर भी ढाका रेडियो से पाकिस्तानी प्रवक्ता ने कहा कि केवल खुलना में थोड़ी गड़बड़ी को छोड़कर पूर्वी पाकिस्तान में शांति है और सभी जगह उपद्रव दबा दिया गया है। सभी शहरों पर टैंक और पाकिस्तानी तोपखाना गोले बरसा रहा था; लेकिन कोमिल्ला और चटगाँव पर मुक्ति सेना डटी हुई थी और राजशाही पर भी उसने अधिकार कर लिया था।

ढाका विश्वविद्यायल को नष्ट कर दिया गया था। मौलाना भाशानी ने अपने समर्थकों को मुक्तिवाहिनी में मिल जाने का आदेश दिया। इस समय बंगला देश में ८० हजार पाकिस्तानी सेना थी और श्री जिया के नेतृत्व में मुक्ति सैनिकों की संख्या ५० हजार तक पहुँच गई थी।

पाकिस्तानी कर्नल इमजाद खां ने इस्लामाबाद को लिखा कि ढाका को बचाना कठिन हो गया है जल्दी से जल्दी हर प्रकार की सैनिक सहायता भेजी जाय। अभी खबर मिली है कि गद्दारों का एक भारी जलूस चटगाँव से ढाका की ओर आ रहा है। इसी बीच बंगला रेजिमेंट ने कई बेतार केन्द्रों पर अधिकार कर लिया। ब्राह्मणबेरा पर भी उसने कब्जा कर लिया और रंगपुर जिले का सैदपुर भी उसके अधिकार में आ गया।

विनोवा भावे की बधाई

२८ मार्च १९७० ई० को सर्वोदयी नेता श्री विनोवा भावे ने श्री मुजीब को बधाई का संदेश भेजा। सर्वोदय मण्डल की बैठक में भाषण करते हुए श्री विनोवा ने बंगला आन्दोलन की तुलना गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन से की। उन्होंने कहा कि मैं पूर्वी बंगाल की घटनाओं से बहुत दुःखी हूँ।

२९ मार्च और ३० मार्च की स्थिति—ढाका पर कब्जा

आज २९ मार्च को ढाका के अधिकांश भाग पर मुक्तिवाहिनी ने कब्जा कर लिया। ढाका पर कब्जा करते हुए लगभग २ लाख आदमी मारे गये। घमासान लड़ाई के बाद ढाका रेडियो पर भी मुक्तिवाहिनी ने कब्जा कर लिया और हवाई अड्डे तथा छावनी के लिये युद्ध शुरू हो गया।

आज पाकिस्तानी जनरल इरशाद अली ने पहली बार ढाका में छाता सैनिक उतारे ताकि ढाका रेडियो स्टेशन द्वारा चालित ५ ट्रांसमीटरों पर कब्जा किया जा सके।

मुक्ति सेना ने ढाका के निकट गाजीपुर ग्रार्डिनेन्स फैक्टरी पर कब्जा करके डायरेक्टर ब्रिगेडियर हमीदुल्ला खाँ को मार दिया। मुजीब का धानमण्डी का मकान फिर लूटा गया । पाकिस्तान से टैंक और युद्धपोत आये। कई जहाजों में चीनी टैंक भेजे गये।

मुक्तिवाहिनी ने जैसोर और कोमिल्ला छावनियों पर कब्जा कर लिया। १४ जिलों के लिये लड़ाई चल रही थी और चटगांव में संघर्ष फिर तेज हो गया था। रंगपुर में चलने वाले युद्ध में मार्शल-ला प्रशासकों ने और मदद भेज दी थी । कुश्तिया जिले से पाक सेना भगा दी गयी। उसकी दो टुकड़ियां घिर गयी थीं। यहाँ युद्ध में १०० जवान मारे जा चुके थे। पाकिस्तान ने यहाँ मुजाहिदों की कुमुक भेज कर नर-संहार करा दिया। खुलना में कत्लेग्राम तेज हुआ और राजशाही में सामूहिक वध रजाकारों ने कर डाला । ढाका में आज एक अमेरिकी संवाददाता और कई अमेरिकी नागरिक मारे गये। एक आस्ट्रेलियन पत्रकार सख्त घायल हुआ। आस्ट्रेलिया सरकार ने अपने नागरिकों को ढाका से निकाल लिया।

भारत में

सकड़ों व्यक्ति देश से भाग कर अगरतल्ला पहुँचे । पाकिस्तान में चारों ओर भगदड़ मच गयी थी । अवामी लीग के कई कार्यकर्ताओं ने भारतीय सीमा सुरक्षा दल के सामने आत्म समर्पण कर दिया। मौलाना भाशानी भी तभी आये थे।

आज हबीबगंज क्षेत्र में हजारों पूर्व पाकिस्तान की नारियों ने नदी के किनारे आकर विलाप शुरू कर दिया और नदी के इस पार खड़ी भारतीय जनता से अपने प्राण बचाने की प्रार्थना की।

भीड़ नदी में घुस गयी और उन्हें सही-सलामत पाकिस्तानी दरिन्दों के चंगुल में आने से पहले ही अपनी सीमा में ले आयी।

आज नयी काँग्रेस की कार्यसमिति की बैठक के बाद बंगला देश को यथा सम्भव मदद देने की घोषणा कर दी गयी । बैठक में पाक सरकार द्वारा कराये गये हत्याकाण्डों की निन्दा की । काँग्रेस कार्यसमिति की यह बैठक श्री संजीवैया की अध्यक्षता में हुई । इसमें प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी भाग लिया। बैठक के प्रारम्भ में ही श्री बहुगुणा ने घोषणा कर दी थी कि आज की बैठक में बंगला देश की सहातता पर विचार किया जायेगा। हम हर प्रकार की सहायता बंगला देश की सरकार को देंगे और मान्यता देने पर भी विचार करेंगे।

आज पंजाब, उ० प्र०, राजस्थान तथा गुजरात आदि की विधान सभाओं ने केन्द्रीय सरकार से मुजीब सरकार को मान्यता देने की अपील की। रूस के समाचारपत्र 'प्रावदा' ने भी आज याहिया को लताड़ा।

अध्याय ५

३१ मार्च—बंगला देश का महत्वपूर्ण दिन

बंगला देश के इतिहास में ३१ मार्च का दिन कई ऐतिहासिक घटनाओं के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण था। आज बंगला देश सरकार के मनोनीत अध्यक्ष श्री जिया ने विश्व के समस्त राष्ट्रों से पाकिस्तान सरकार द्वारा किये जा रहे कत्लेआम को बन्द कराने की अपील की।

कुश्तिया में इसी दिन मुक्ति सेना ने पाक सेना के दो हेलीकोप्टर मार गिराये। तेजगांव हवाई अड्डे के लिये पाकिस्तानी सेना ने भयानक आक्रमण किया था; लेकिन मुक्ति सेना ने उन्हें पीछे धकेल दिया और एक दस्ता बन्दी बना लिया।

श्री ताजुद्दीन ने इसी दिन बंगला बेतार रेडियो से मुक्ति सेना के गठन का ऐलान किया।

भारत सरकार ने राष्ट्रसंघ से प्रार्थना की थी कि भारत सरकार बंगला देश के पीड़ितों की मदद करना चाहती है। उसका उत्तर भी राष्ट्रसंघ के तत्कालीन महासचिव श्री ऊ थांत ने इसी तारीख को दिया कि भारत सरकार यदि मदद करना ही चाहती है तो वह जेनेवा से रेडक्रास की मार्फत मदद करे।

इसी तारीख को ढाका महिला कालेज की एक वीरांगना ने अद्‌भुत वीरता दिखाई। कालेज की यह छात्रा अपने सीने पर सुरंग रखकर एक पाकिस्तानी टैंक के आगे लेट गयी और सुरंग फटते ही पैटन टैंक भी फट गया। छात्रा देश पर बलिदान हो गयी।

इसी तारीख को बेरुत के एक व्यापारी ने नयी दिल्ली में ढाका का आँखों देखा हाल बताते हुए कहा—ढाका में लाशों के ढेर लगे हैं। लोग डरकर झोंपड़ियों तक पर मुस्लिम लीग और पाकिस्तान के झंडे लगा रहे हैं।

इसी दिन अवामी लीग के प्रधान मंत्री ने भारत सरकार से हस्तक्षेप की अपील की और बंगला देश के मामले को राष्ट्रसंघ में उठाने की भी प्रार्थना की थी।

भारत में प्रतिक्रिया

वंगला देश की घटनाओं की आज नयी दिल्ली में और भी तेज प्रतिक्रिया हुई। पाकिस्तानी बर्बरता के विरोध में दिल्ली में हड़ताल रही और शाम को एक सभा में पाक सरकार की निन्दा की गयी।

भारतीय संसद के दोनों सदनों में आज एक प्रस्ताव पास किया गया जिसके अनुसार वंगला देश की स्वतंत्रता की लड़ाई का समर्थन किया गया और यथोचित सहायता देने का आश्वासन भी दिया गया। साथ ही विश्व की जनता से वंगला देश में हो रहे नर-संहार को रोकने की अपील की गयी।

यह प्रस्ताव प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी ने पेश करते हुए कहा कि हम सब आज वंगला देश की घटनाओं के कारण अत्यन्त दुखी हैं। वंगालियों की आकांक्षाओं को कुचलने के लिये पाकिस्तानी सेनाओं ने उन पर धावा वोल दिया है। उन पर जो अत्याचार किये जा रहे हैं, देश के कोने-कोने में उनकी निन्दा की जानी चाहिये।

इसी दिन भारत सरकार ने सोवियत रूस से आग्रह किया कि वह अपनी सद्-भावना के प्रभाव का उपयोग कर पाकिस्तान सरकार से इस हत्यकांड को रुकवाये। यह पत्र मास्को स्थित भारत के तत्कालीन राजदूत श्री डी०पी० धर ने रूस के पर-राष्ट्रमंत्री को दिया। वस्तुतः भारत का यह प्रयास उस दमन के विरुद्ध संसार का जनमत तैयार करना था।

ब्रिटेन का दृष्टकोण

३१ मार्च १९७१ को ब्रिटेन के रुख का स्पष्टीकरण लन्दन के प्रसिद्ध पत्र 'गार्जियन' ने अपने अग्रलेख में कर दिया। 'गार्जियन' ने अपने अग्रलेख में लिखा— 'संसार के किसी भी देश को वंगला देश की स्थिति को देखते हुए अपना मुंह वन्द करके नहीं बैठ जाना चाहिये।'

इसके साथ ही रही-सही कमी लन्दन के दूसरे पत्र 'डेली टेलीग्राफ' ने पूरी कर दी। उसने लिखा—संसार को यह पहले ही आशंका थी कि संसार का यह सबसे-वड़ा मुस्लिम राष्ट्र कभी न कभी अवश्य विभाजित हो जायेगा और शंका सच ही निकली। वस्तुतः पाकिस्तान का निर्माण ही घृणा और पृथक्ककरण की भावना को लेकर हुआ था। भला कहां अलग संस्कृति और भाषा का एक टुकड़ा जो दूसरे से एक हजार मील दूर है, महज मजहब के नाम पर कब तक उससे चिपका रह सकता था या उसे चिपकाये रखा जा सकता था।

वंगला देश में १ अप्रेल का दिन

वंगला देश में १ अप्रैल १९७१ ई० को पाकिस्तानी सेना ने अपनी वर्बरता का दायरा और विस्तृत कर दिया। इस दिन चटगांव, ढाका रंगपुर, दीनाजपुर, ब्राह्मण-वेरिया कुश्तिया, राजशाही, चौडंगा पर एक साथ वायुयानों से जनता पर हमले किये और मशीनगनों से गोलियों की वौछारें कीं। वायुनानों की यह कार्रवाई ढाका के हवाई अड्डे से की गयी और लगभग ५० हजार आदमी गोलियों और गोलों से भून दिये। कई शहरों पर वायुयानों से नापाम वम गिराये गये।

इसी दिन पाकिस्तानी सैनिकों ने जैसोर में २०० स्वयंसेविकाओं से वलात्कार किया और वाद में उनकी हत्या कर दी। इस हत्याकांड के समय ढाका से मोर्टार वाली कुछ कम्पनियाँ हत्यारों की मदद के लिए और भेजी गयीं।

इस दिन १० जूट मिल भी पाक सेना ने नष्ट कर दिये। मैंकरा की प्रसिद्ध आदम जूट मिल, जयदेवपुर की आर्डिनेन्स फैक्ट्री, चटगांव का शाहजहां होटल, खुलना की पेपर मिल, चटगाँव की स्टील फैक्ट्री तथा खुलना का मेडिकल कालेज भी फूंक दिया।

पाकिस्तान ने दूसरी धूर्तता यह की कि गेहूँ से भरे चार जहाज जो वंगला देश के लिये मंगाये गये थे, उन्हें वापिस कराची वन्दरगाह को भेज दिया।

पाकिस्तानी सेना ने आज हमले पूरी ताकत से किये थे। गाँवों तक को भूनना उन्होंने शुरू कर रखा था। पाकिस्तान नेशनल असेम्वली के सदस्य अवु अह-मद अव्दुल रशीद ने चौडंगा में वताया कि पाकिस्तानी सेना गांवों को समाप्त करने पर तुल गयी है। उन्होंने पश्चिमी वंगाल के नेता श्री अजय मुखर्जी से अपील की कि इस मौके पर वे हमारी हर तरह से सहायता करें। आज के हमले मुक्ति सेना के लिये भारी अवश्य पड़ रहे थे; लेकिन मुक्ति सेना ने हवीवगंज और सुनाम में पाक सेनाओं का आगे वढ़ना रोक दिया। इन हमलों में पाकिस्तानी सेना जीपों पर मशीनगनें चढ़ाये हुए थी।

आज सिलहट जिले के जोनीगंज नामक स्थान पर एक 'विजय-दिवस' भी मनाया गया और 'जय वांगला' के नारे भी लगाये गये; लेकिन स्वाधीन वंगला केन्द्र रेडियो कल की तरह आज भी ठंडा रहा। जापान सरकार अपने ढाका स्थित राजदूत से भी सम्पर्क कायम नहीं कर पायी। आज ही चटगाँव वन्दरगाह पर एक चीनी जहाज से गोला वारूद उतारा गया।

बंगला देश की घटनाओं के संदर्भ में भारत

बंगला देश के तीन प्रतिनिधि कलकत्ता आये और उन्होंने विश्व के देशों से पाकिस्तान को हथियार न देने की प्रार्थना की। साथ ही बताया कि उसे अमेरिका और चीन से जो हथियार मिले हैं उनका प्रयोग वह हमारी जनता के संहार के लिये कर रहा है।

इस प्रतिनिधिमण्डल ने बर्मा और श्रीलंका की सरकारों से भी अनुरोध किया कि वे पाकिस्तानी सैनिक जहाजों और सेना लाने वाले जहाजों को अपने अड्डों पर तेल न दें और उन्हें आने की आज्ञा वापस ले लें।

अपने आन्दोलन की रूपरेखा पत्रकारों को बताते हुए उन्होंने भारत सरकार से भोजन, वस्त्र और हथियारों की मांग की। इस प्रतिनिधिमण्डल में नेशनल अवामी लीग, अवामी पार्टी, छात्र लीग और ढाका विश्वविद्यालय के छात्र सम्मिलित थे।

मण्डल ने बताया कि हमने यातायात के साधन तथा काफी मात्रा में पुलों को उड़ाया है, ताकि पाकिस्तानी सेना गाँवों में न घुस सके। उन्होंने कहा कि डिप्टी कमिश्नर लोग हमारे साथ हो गये हैं या हमारी सहायता कर रहे हैं, इसलिये हमारे सामने कठिनाई तो है; लेकिन रुकावट नहीं है। यह रुकावट भी बंगला रेजिमेंट के सहयोग के कारण और काफी हद तक कम हो गयी है। अतः हम चाहते हैं पाक सेना परास्त हो जाय और संचार साधनों के अभाव में भूखों मरे।

अपने कार्यकलापों के बारे में उन्होंने कहा कि दीनाजपुर पर पाकिस्तानी भयानक बमवर्षा कर रहे हैं। फिर भी हमने पंजाब रेजीमेंट को घेर रखा है। इन नापाकियों ने मन्दिर मस्जिद कुछ नहीं छोड़ा। मस्जिदें खास तौर से इनके व्यभिचार का केन्द्र बनी हुई हैं।

भारतीय सेना ने आज ही १७ पाक सैनिकों को निरस्त्र करके गिरफ्तार किया और कुश्तिया से १०० परिवार भाग कर भारतीय सीमा में आये।

भारत सरकार ने इसी दिन संयुक्त राष्ट्रसंघ में एक नोट वितरित कराया और माँग की कि बंगला देश का नर-संहार पाकिस्तान का अन्दरूनी मामला नहीं है। अतः सभी देशों को इसे रोकने के लिये उचित कदम उठाना चाहिये।

पाकिस्तान में हुए चुनाव और उसके परिणामों से उत्पन्न आकाँक्षाओं की चर्चा करते हुए नोट में कहा गया कि २५ मार्च से बंगला देश की स्थिति बिगड़ती जा रही है।

भारत को और विश्व को आशा थी कि सारा ही मामला शांतिपूर्ण ढंग से सुलझ जायेगा। लेकिन ऐसा न होकर कत्ले-आम शुरू हो गया, मार्शल-ला ठोक दिया गया, शिक्षा-संस्थायें बन्द कर दी गयीं, बैंकों के खाते ज़ब्त कर लिये गये। वायु-सेना, जल-सेना, टैंक, मोर्टार से युक्त दो डिवीजन सेना और भेज दी गयी और सेना को कठोर कार्रवाई करने का निदेश याहिया खां ने दे दिया।

भारत सरकार अब तक संयम से काम लेती रही है, जबकि भारतीय जनता अत्यन्त उद्विग्न है। पश्चिमी बंगाल में भारी शोक छाया हुआ है। अतः विश्व जन-मत को चाहिये कि वह बंगाल की जनता से सहानुभूति प्रकट करे।

इस नोट के उत्तर में पाकिस्तानी प्रतिनिधि ने आरोप लगाया कि बंगला देश में लोगों को तोड़फोड़ के लिये भारत सरकार उकसा रही है। उसी दिन इस्लामाबाद में भारतीय राजदूत को परराष्ट्र मंत्रालय में बुलाकर कहा गया—आपकी संसद की कार्रवाई की पाकिस्तान सरकार निन्दा करती है।

ब्रिटेन का रवैया और पाक घुड़की

ब्रिटिश पत्रों ने अपना रवैया आज भी निष्पक्ष रखा। आज प्रातःकाल लन्दन में उग्र छात्र नेता श्री तारिक अली ने अपने साथियों सहित बंगला संघर्ष के समर्थन की घोषणा की और ब्रिटिश प्रधान मंत्री श्री हीथ से विशेष राष्ट्रमंडलीय सम्मेलन बुलाने की माँग की ताकि पाकिस्तान सरकार पर कत्लेआम बन्द करने के लिये दबाव डाला जा सके।

आज ही ब्रिटेन की लिबरल पार्टी ने भी श्री हीथ से राष्ट्रमंडलीय सम्मेलन बुलाने का आग्रह किया। ताकि पाक संयम से काम ले और पूर्वी पाकिस्तान के मसले को बातचीत से हल करे।

उक्त पार्टी के विदेशी मामलों के प्रवक्ता श्री रसेल ने प्रधान मंत्री को बताया कि असहनीय अत्याचार हो रहे हैं और स्थिति बद से बदतर हो चुकी है। सेंसर के कारण वहाँ से सच्चे समाचार नहीं मिल पा रहे और हम दुःख के साथ इस सारे नाटक को देख रहे हैं। ऐसा दमन और नर-संहार किसी सदी में कहीं नहीं हुआ। ब्रिटेन को इस समस्या के हल के लिए प्रयत्न करना ही चाहिये।

बी०बी०सी० ने पाकिस्तान के इस कथन का खंडन किया कि भारत अपने सशस्त्र सैनिकों को बिना वर्दी बंगला देश में लड़ने के लिये भेज रहा है।

इस्लामाबाद में आज ब्रिटिश उच्चायुक्त श्री साइरिल पिकार्ड को परराष्ट्र मंत्रालय में बुलाकर धमकाया गया और कहा गया कि ब्रिटेन या तो बंगला देश के

प्रकरण में पाकिस्तान सरकार का साथ दे वरना पाकिस्तान में लगी उसकी १०० करोड़ रुपये की पूँजी जब्त कर ली जायेगी। घुड़की का कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा। बी०बी०सी० कई दिन तक भारत विरोधी प्रचार करता रहा।

२ अप्रैल का ऐतिहासिक दिन

२ अप्रैल को पाकिस्तानी सेना ने आते-जाते लोगों को भी मारना शुरू किया कुष्तिया में १३ हजार विभिन्न चीनी हथियार मुक्ति सेना ने पकड़े। ढाका से ब्रिटिश वायुयान अपने नागरिकों को लेकर सिंगापुर पहुँचा और दूसरी ओर पाक सैनिकों ने ४० छात्रों को अपने ट्रकों से कुचल दिया। खजाँची बाजार की लड़ाई में पाकिस्तानियों ने हत्या के नये तरीके अपनाये।

सोवियत रूस की प्रथम प्रक्रिया

२ अप्रैल १९७१ ई० को सोवियत यूनियन की प्रथम प्रक्रिया बंगला देश मुक्ति संघर्ष के बारे में हुई। प्रावदा ने आज पहली बार पाकिस्तानी सेना द्वारा किये जा रहे हत्याकांड की निन्दा की। इससे पहले भारत सरकार की ओर से सोवियत सरकार से कहा गया था कि वह अपने प्रभाव का प्रयोग करके बंगला देश में पाक द्वारा कराये जा रहे नर-संहार को रुकवाये। मास्को में कम्यूनिस्ट पार्टी के २४ वें सम्मेलन में प्रतिनिधियों ने भी पाक सरकार को बाज आने की चेतावनी दी।

ब्रिटेन

आज बी०बी०सी० के प्रवक्ता ने कहा—यदि बंगला देश में यही हालत रही तो भारत को कार्रवाई के लिये मजबूर होना पड़ेगा। बी०बी०सी० ने यह स्वीकार किया कि बंगला देश में कई जगह पाकिस्तानी सेना का कब्जा भी नहीं है। ढाका से समस्त ब्रिटिश नागरिक सिंगापुर चले गये। उनकी रिपोर्टों के आधार पर आज बी०बी०सी० ने बंगला देश में जहाँ भयानक कत्लेआम का वर्णन किया, वहाँ साथ ही याहिया के हार जाने की भविष्यवाणी भी की।

भारत

भारत में आज विभिन्न राजनैतिक दलों ने जलूस निकाले और बंगला देश को मान्यता देने की माँग की। कानपुर नगरपालिका ने २५ हजार रुपया मुक्ति-सेनानियों को भेजा।

मुक्ति-संघर्ष और राजनीतिक संघर्ष

३ अप्रैल का दिन बंगला देश में तो संघर्ष का था ही, लेकिन संसार में राजनैतिक संघर्ष का दिन था। ढाका से गयी ब्रिटेन की महिलाओं ने बताया कि ढाका

पूरी तरह फौज के कब्जे में है। चारों तरफ लाशें दिखाई देती हैं। बच्चों को पाकिस्तानी इसलिये मार रहे हैं कि बड़े होकर वह भी पृथकता की माँग करेंगे। उनके कथन से ऐसा लगता था कि ढाका पर से २ अप्रैल को ही मुक्ति-सेना का नियंत्रण या प्रभाव समाप्त हो गया था।

● बंगला सरकार ने राष्ट्रसंघ के तत्कालीन महासचिव श्री ऊ थाँत को आज बंगला देश की स्थिति देखने के लिये निमंत्रित किया।

● सोवियत प्रधानमन्त्री से भारतीय राजदूत ने बंगला देश की घटनाओं पर चिन्ता प्रकट की। दोनों की यह बातचीत हंगरी के दूतावास में हुई।

● तुर्की के नौ और वायुसेनाध्यक्ष याहिया खाँ को सहायता देने के मसले पर बातचीत करने के लिये इस्लामाबाद पहुँचे।

● सोशलिस्ट इण्टर नेशनल काँग्रेस ने राष्ट्रसँघ के तत्कालीन महासचिव ऊ थांत से बंगला देश के हत्याकाँड में हस्तक्षेप करने की अपील की।

४ अप्रैल का गर्म दिन

३ अप्रैल से भी अधिक ४ अप्रैल का दिन राजनैतिक और सामरिक—दोनों दृष्टियों से अधिक संघर्षपूर्ण रहा। आज बंगला देश की स्थिति पर कनाडा ने भी चिन्ता व्यक्त की और चीन ने भी अपना मौन भंग कर दिया।

चीनी सरकार ने प्रधान मंत्री श्रीमती गाँधी के पत्र का कोई उत्तर न देकर उल्टे भारत पर आरोप लगाया कि वह पाकिस्तान के अन्दरूनी मामले में हस्तक्षेप कर रहा है। यही आरोप पाकिस्तान रेडियो लगातार लगा रहा था और आज के बाद चीनी रेडियो और चीनी समाचार एजेंसी तानजुग ने भी उसकी हाँ में हाँ मिलाना शुरू कर दिया।

● मलेशिया के प्रधानमन्त्री श्री तुन्कू अब्दुल रज्जाक ने भी बंगला देश हत्याकांड को पाकिस्तान का अन्दरूनी मामला बताया। वे अपने देश से जद्दा जा रहे थे और कलकत्ता के हवाई अड्डे पर उन्होंने पत्रकारों से बातचीत की थी। श्री रज्जाक ने कहा कि इस मामले में किसी देश का हस्तक्षेप करना ठीक नहीं।

सोवियत राष्ट्रपति का पत्र

सोवियत राष्ट्रपति श्री पोदगोर्नी ने आज ही पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति याहिया खाँ को पत्र लिखा—बंगला देश का मामला समझौते से हल किया

जाय, कत्लेआम वन्द किया जाय। बंगला देश की घटनाओं से सोवियत सरकार और सोवियत जनता बहुत परेशान है ।

भारतीय नेताओं की चेतावनी

आज भारतीय नेताओं—विशेषकर प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने पाकिस्तानी शासकों को स्पष्ट चेतावनी दी कि पूर्वीबंगाल की घटनाओं पर भारत चुप नहीं रहेगा। हम इस हत्याकाँड को ैर लगातार शरणार्थियों के आगमन को दर्शक की भांति नहीं देख सकते । श्रीमती गाँधी द्वारा यह चेतावनी कांग्रेस महासमिति की बैठक में दी गई थी ।

उसी बैठक में विदेश-मन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने घोषणा की कि बंगला देश को मान्यता के प्रश्न पर भी सरकार विचार कर रही है और उचित समय पर उचित कार्यवाही की जायेगी ।

आज तामिलनाडु विधानसभा में एक प्रस्ताव पास करके बंगला देश में चल रही क्राँति का समर्थन किया गया और नयी दिल्ली में बंगला देश को सहायता और मान्यता देने के लिये दो विशाल जलूस निकले । एक जलूस बुद्धिजीवियों का था और दूसरा अकालियों का। जलूसों ने पाकिस्तानी उच्चायुक्त के कार्यालय के बाहर नारे लगाये और प्रदर्शन किया ।

विनोबा भावे की अपील

सर्वोदयी नेता आचार्य श्री विनोबा भावे ने भारत सरकार को सलाह दी कि वह बंगला देश के मामले को संयुक्त राष्ट्रसंघ में उठाये। श्री विनोबा ने शेख अब्दुल्ला के इस मामले पर चुप्पी साधने पर भी आश्चर्य व्यक्त किया।

युद्ध की स्थिति

युद्ध की स्थिति की दृष्टि से पाकिस्तानियों ने अपना नर-संहार जारी रखा। अगरतल्ला में आज कई सौ युवकों का वध किया गया। इन्हें लाईन में खड़ा करके गोलियाँ मारी गयीं ।

कोमिल्ला में पाकिस्तानी सेना और मुक्तिवाहिनी की जोरदार टक्कर में एक पाक कमाण्डर मारा गया। दीनाजपुर पर मुक्तिवाहिनी ने कब्जा कर लिया।

भारतीय वायुसीमा का उल्लंघन

कोमिल्ला पर बमवर्षा करते हुए आज चार पाकिस्तानी वायुयान भारतीय सीमा में घुस आये। अतः भारत सरकार ने अपनी वायुसेना को सतर्क कर दिया।

अपने हमले के दौरान इन्होंने भारतीय नागरिकों पर भी गोलियाँ छोड़ीं ।

फ्राँस से पाकिस्तान को लाई जा रही पनडुब्बी के १३ बंगाली चालकों ने विद्रोह कर दिया और फ्राँस की सरकार से शरण मांग ली ।

महत्वपूर्ण ५ अप्रैल

५ अप्रैल का दिन संसार के इतिहास में एक अनोखा दिन लिखा जायेगा । इसी दिन जनवादी चीन ने पाकिस्तान की हत्यारी सरकार का समर्थन किया और पूरी तरह से हर प्रकार की सहायता देने का वचन भी दिया ।

भूतपूर्व विदेश मन्त्री श्री करीमभाई चागला ने भारत सरकार से बंगला देश को मान्यता देने की अपील करते हुए कहा कि भारत को इस मामले में पहल करनी चाहिये । अन्तर्राष्ट्रीय कानून मान्यता देने के मामले में कतई बाधक नहीं होता । किसी अन्य देश की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है ।

अकाली दल ने और बुद्धिजीवियों ने आज फिर जलूस निकाले और याहिया के पुतले जलाये । संसोपा के श्री कर्पूरी ठाकुर ने भी अपनी पार्टी की ओर से मान्यता देने की अपील की । बंगला देश में भारतीय रुपये का चलना शुरू हो गया । पाकिस्तान ने भारतीय प्रसारण सुनने पर आज पाबन्दी लगा दी । १०९ पाक अफसरों और सैनिकों ने, जिनमें ६ बड़े और ७ छोटे अफसर थे सीमा-सुरक्षा दल के सामने आत्म-समर्पण किया । भारतीय दल ने उन्हें निरस्त्र कर दिया ।

❁ ब्रिटेन के विदेश मन्त्री श्री डगलस ह्यूम ने आज कहा कि यदि पाकिस्तान चाहे तो ब्रिटेन पूर्वी पाकिस्तान और बंगला देश की बातचीत में मदद के लिये तैयार है ।

❁ रेडक्रास के उपाध्यक्ष श्री जाक्श ने बंगला देश की घटनाओं के प्रति राष्ट्रसंघ की चुप्पी से खिन्न होकर इस्तीफा दे दिया ।

मुक्तिसेना की सफलता

आज युद्ध में मुक्तिसेना को पर्याप्त सफलता मिली । शमशेर नगर के पास उसने पाक दस्तों को साफ कर दिया और रंगपुर पर अपना दबाव बढ़ा दिया ।

लाल मुनीरहाट का हवाई अड्डा तोड़ दिया गया । तीस्तापुल भी नष्ट कर दिया गया । मेमनसिंह और तंगेल पर अधिकार करके बंगला देश के अधिकाँश पूर्वी भाग पर कब्जा कर लिया और इस क्षेत्र का प्रशासन बंगला रेजीमेंट के तीन असैनिक मेजर अधिकारियों द्वारा चलना प्रारंभ हो गया ।

अपनी सेना की ठोस कार्रवाई की दृष्टि से सिलहट क्षेत्र की कमान मेजर खलीद मुशर्रफ, मेमनसिंह की मेजर शफी उल्ला और चटगाँव की मेजर जियाउर्रहमान ने संभाली । श्री जियाउर्रहमान वही व्यक्ति हैं जिन्होंने अस्थायी सरकार की घोषणा 'जिया' के नाम से की थी ।

अध्याय ६

६ अप्रैल तक ६ लाख की हत्या

पुष्ट प्रमाणों के आधार पर पाकिस्तानी हत्यारी सेना ६ अप्रैल १९७१ ई० तक बंगला देश में ६ लाख से अधिक व्यक्तियों की हत्या कर चुकी थी। और इस हत्यारी सेना को और प्रोत्साहन देने के लिये कथित जनवादी चीन के नेता श्री माओत्से तुंग ने ६ अप्रैल को पाकिस्तान की पीठ थपथपाते हुए फिर घोषणा की कि चीन की ७० करोड़ जनता पाकिस्तान के साथ है।

पाकिस्तानी सेना द्वारा बमबारी और हत्याकांड जारी रहा; लेकिन फिर भी पंजाब रेजीमेंट के ४०० जवानों को मुक्ति-सेना के सामने आत्मसमर्पण कर देना पड़ा और राजशाही के पास एक पाकिस्तानी हैलीकोप्टर को भी मुक्ति सैनिकों ने मार गिराया।

पाकिस्तानी सेना सिलहट से भाग कर खादिमनगर पहुँच गयी। चटगांव से असम की उत्तरी सीमा तक का क्षेत्र, जिसमें सिलहट भी शामिल है मुक्ति-सेना के अधिकार में आ गया।

पाकिस्तान की बौखलाहट

६ अप्रैल को पाकिस्तान सरकार बुरी तरह से बौखला गयी और उसने भारत पर आरोप लगाया कि पूर्वी बंगाल की सीमा पर भारतीय सेनाओं की गतिविधियाँ बढ़ गयी हैं। भारत सरकार ने इस पाकिस्तानी आरोप का तुरन्त खंडन किया।

दूसरी ओर पाकिस्तान सरकार ने अवामी लीग के टिकिट पर चुने गये २६१ सदस्यों को पकड़ कर लाने, पकड़वाने या मार कर लाने वाले व्यक्तियों को १० हजार रुपये प्रत्येक सदस्य इनाम देने की घोषणा की।

दिल्ली में बंगला देश के राजनयिकों की मुक्ति

आज नयी दिल्ली स्थित पाकिस्तान हाई कमीशन के दो बंगला देश के राजनयिक पाकिस्तानी दूतावास से बाहर आ गये और आधी रात को उन्होंने एक प्रेस कॉंफ्रेंस बुलाकर बंगला देश के प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा की।

दूतावास से बाहर आकर पहले उन्होंने भारत सरकार से शरण मांगी थी। उनकी प्रार्थना को तत्काल स्वीकार कर लिया गया था। यह राजनयिक थे श्री शहाबुद्दीन और सहायक प्रेस अधिकारी श्री अमजदुलहक।

श्री शहाबुद्दीन पाक विदेश सेवा में १९६६ ई० आये थे। इससे पहले कुछ दिन नेपाली दूतावास में रहे और वहां से दिल्ली आये थे। इससे भी पहले ढाका रेडियो स्टेशन पर सहायक क्षेत्रीय निदेशक के रूप में कार्य कर चुके थे। दोनोंने पत्र-कार सम्मेलन में घोषणा की थी कि पाकिस्तान को हम एक विदेशी सत्ता मानते हैं। अब हम अपने बंगला देश की सेवा करेंगे और दूसरे ही दिन श्री शहाबुद्दीन ने बंगला देश की सेवा के लिये अपना कार्यालय भी नयी दिल्ली में खोल दिया।

भारत में प्रतिक्रियाओं का दौर

भारत में आज भी प्रतिक्रियाओं का दौर-दौरा रहा। बंगला देश के लिये दो भजन मंडलियों ने ट्रकों में सवार होकर नयी दिल्ली आदि से धन-संग्रह किया। इंडियन मेडिकल एसोसियेशन कलकत्ता को बंगला देश के विस्थापितों के लिये १५ हजार रुपये दिये।

आज ही बंगला देश की मुक्ति सेना के पूर्वी भाग की कमान के सेनापति मेजर खालिद मुशर्रफ से 'नवभारत टाइम्स' दिल्ली के संवाददाता ने अगरतला में भेंट की। श्री खालिद ने अपना हैडक्वाटर एक उजड़े हुए चाय के बगीचे में बनाया हुआ था। श्री खालिद ने कहा—हमें हथियार--विशेषकर मशीनगनों की सख्त जरूरत है। हम पाकिस्तानी सेना पर निर्णायक हमला करना चाहते हैं।

आज ब्रिटिश संसद के १८० सदस्यों ने अपनी सरकार से मांग की कि वह पूर्वी पाकिस्तान में युद्ध-विराम कराकर समझौता कराये। इन सदस्यों ने कहा कि पूर्वी बंगाल में १५ लाख व्यक्ति भूख के चँगुल में फँसे हुए हैं।

आज ब्रिटेन में एक प्रवक्ता ने कहा कि याहिया का इरादा बंगला देश को दो भागों में बांटने का था जिसे भारत नहीं होने दे रहा। याहिया चाहता था कि एक भाग पर पाकिस्तानी सेना का अधिकार रहे और दूसरे पर मुक्ति-सेना का। बाद में इस भाग को भी लड़कर मिला लिया जायेगा।

पाकिस्तानी हलचल

पाकिस्तान सरकार ने आज स्थिति को हाथ से जाते देखकर ४५ जहाजों में भर कर सेना पूर्वी बंगाल भेजी। इन जहाजों में कई जहाज मालवाही थे। दूसरी ओर दो दिन से दिन-रात खुलना के पास गन-बोटों से पाकिस्तानी सैनिक जनता पर गोलियाँ चलाते रहे। उनका उद्देश्य खुलना में घिरी पाकिस्तानी सेना को निकालना था। अपनी सेना का हौसला बढ़ाने के लिये उसे रेडियो से बराबर सहायता भेजने के सन्देश दिये जा रहे थे।

बंगला देश की अर्थ-व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये सारा खजाना स्वर्ण-कोष और विदेशी मुद्रा का स्टाक हटाकर पाकिस्तान भेज दिया गया।

❁ चीन ने आज भारत को फिर विरोध पत्र दिया और २९ मार्च को दिल्ली-स्थित चीनी दूतावास पर हुए प्रदर्शन को भड़काने वाली कार्यवाही बताया।

बंगला देश में मुक्ति सेना को सफलता

बंगला देश में मुक्ति सेना को आज और सफलता मिली। सिलहट के एक बड़े शस्त्रागार पर मुक्ति सेना ने अधिकार कर लिया। यह शस्त्रागार आधुनिक युद्ध-सामग्री से भरा हुआ था। ढाका और चटगाँव के बीच गंगा सागर का रेल का पुल भी मुक्ति सेना ने तोड़ दिया और सिलहट से हटते हुए पाकिस्तानी सेना सिलहट रेडियो स्टेशन को नष्ट-भ्रष्ट कर गयी।

❁ आज ही चीन ने पाकिस्तानी सेना को बंगला देश जाने के लिये अपने युन्नान प्रांत के अड्डों पर उतरने और तेल लेने की सहूलियत प्रदान कर दी।

भारत की राज्यसभा में मान्यता की मांग

नयी दिल्ली में आज देश की राज्य सभा में सभी दलों के सदस्यों ने बंगला देश को मान्यता और सहायता देने की जोरदार माँग की। सदस्यों ने माँग कीकि सरकारी नीति असन्तोषजनक है। हमें मान्यता के लिये एक क्षण का भी विलम्ब नहीं करना चाहिये।

राज्यसभा में उप-सभापति श्री खोबरगड़े ने सभी दलों के प्रतिनिधियों द्वारा समान भावना व्यक्त किये जाने पर सरकार से अपेक्षा की कि वह उचित कदम उठायेगी।

संसदीय कार्य के राज्य मंत्री श्री ओम मेहता ने इस भावना को सरकार तक पहुँचाने का आश्वासन दिया।

सबसे पहले निर्दलीय सदस्य श्री ए०डी० मणि ने पूर्वी बंगाल में तीन भारतीय पत्रकारों की गिरफ्तारी पर सरकार का ध्यान आकर्षित किया। बाद में संसोपा के गौड़ मुराहरि ने तथा एक अन्य निर्दलीय सदस्य श्री जितेंद्रलाल सेन गुप्ता ने मान्यता की मांग की।

जनसंघ दल के सदस्य श्री जगदम्बी प्रसाद यादव का कहना था कि बंगला देश को मान्यता देने और मुक्ति सेना को सहायता देने की हम लगातार मांग कर रहे हैं और सरकार चुप बैठी है। क्या कोई देश हम पर दबाव डाल रहा है। श्री राजनारायण ने कहा कि जो लोग स्वयंसेवक बन कर वहाँ जाकर लड़ना चाहें, उन्हें जाने दिया जाय। श्री भूपेश गुप्त और श्री नारायण गोरे ने कहा—यह उपयुक्त समय है। सारा सदन एक स्वर से मान्यता की मांग कर रहा है।

८ अप्रैल की गतिविधियाँ

बर्मा के राष्ट्रपति और भूतान नरेश आज नयी दिल्ली आये और भारत सरकार से बंगला देश की समस्या पर बातचीत की। साथ ही भारत सरकार ने त्रिपुरा की सीमा पर सीमा-रक्षक दल को सतर्क किया।

आज ही भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार के इस प्रचार का खंडन किया कि भारत से बहुत से स्वयंसेवक बंगला देश में लड़ने के लिये प्रवेश कर रहे हैं और शरणार्थी शिविरों से गोलाबारूद पूर्वी बंगाल भेजा जा रहा है। यही आरोप इस्लामाबाद स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारी श्री बी०के० आचार्य को पाकिस्तान के परराष्ट्र मंत्रालय में बुलाकर सुनाये गये।

वास्तव में पाकिस्तान सरकार ने १९६५ के युद्ध में भारतीय सेनाओं के कुछ हथियारों को ढाका में सबूत के तौर पर भेजा था। ताकि लोगों को दिखा सकें कि भारत हथियार भेज रहा है।

बंगला देश से आज कई हजार शरणार्थी भारत आये। इनमें ३०० बंगाली मुसलमान परिवार भी थे। काफी शरणार्थी असम और त्रिपुरा भी पहुँचे। कई सौ मुसलमान परिवार पश्चिमी पाकिस्तान से भागकर राजस्थान के बाड़मेर क्षेत्र में पहुँचे।

विदेशों में

ढाका से ब्रिटेन लौटकर गये एक इंजीनियर ने लन्दन में पत्रकारों को बताया कि पूर्वी बंगाल में भयानक कत्लेआम हो रहा है। पाकिस्तानी सेना युवकों की कतारें लगाकर गोली मार देती है।

जूट मिल के एक अंग्रेज मैनेजर ने लन्दन में बताया कि हमारे सारे कर्म-

चारियों को पाकिस्तानी सेना ने मिल में आकर ही भून दिया। उसने कहा कि हिन्दुओं का कत्लेआम विशेष रूप से इसलिये हो रहा है कि पाकिस्तानी यह समझते हैं कि मुक्ति आन्दोलन के लिये हिन्दू ही जिम्मेदार हैं। पाकिस्तानी सेना से भी अधिक हत्याएं वहां मुजाहिद कर रहे हैं।

दूसरी ओर आज संयुक्त राष्ट्रसंघ में पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री आगा शाही ने राष्ट्रसंघ के तत्कालीन महासचिव श्री ऊ थांत से भेंट की और उन्हें बताया कि पूर्वी बंगाल में पीड़ितों के नाम पर किसी भी प्रकार की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं है। न ही पाकिस्तान को किसी प्रकार की मानवीय अन्तर्राष्ट्रीय सहायता का प्रस्ताव स्वीकार होगा।

आगा शाही ने थांत को बताया कि पूर्वी बंगाल में कुछ भी नहीं हो रहा है। भारत का कथन बिल्कुल झूठ है। न ही वहाँ किसी छात्र नेता या किसी बुद्धिजीवी की हत्या हुई है। वस्तुतः भारत पाक की अखंडता समाप्त करना चाहता है। हमें देश का विघटन रोकने के लिये कुछ पुलिस कार्रवाई इसलिये करनी पड़ी कि उसके अलावा हमारे पास और कोई चारा ही नहीं था।

आज 'न्यूयार्क टाइम्स' ने आरोप लगाया कि पूर्वी पाकिस्तान में बुद्धिजीवी वर्ग का भयानक रूप से कत्लेआम हुआ है। इसके समर्थन में बंगला देश के छात्र नेता शाहजहाँ ए राजा ने कहा कि केवल ढाका में ही १ लाख व्यक्तियों को कत्ल किया गया है।

श्री मुजीब के छोटे भाई शेख नासीरुद्दीन ने खुलना पर अधिकार करने के लिये आज मुक्ति सेना की कमान संभाली।

कोमिल्ला पर पाकिस्तानी सेना ने नापाम बमों से हमला करके अधिकार कर लिया। इस हमले में पाक वायुयानों ने धूलपाड़ा अड्डे से उड़ानें भरी थीं। जैसोर के निकट एक पाक टुकड़ी ने मुक्ति सेना के सामने आत्म-समर्पण किया। सईदपुर और खादिमपुर पर मुक्ति सेना ने अधिकार कर लिया।

९ अप्रैल को भारत में

आज नयी दिल्ली में प्रमुख विद्वानों और न्यायाधीशों ने कहा कि यदि हमने बंगला देश को शीघ्र मान्यता न दी तो इतिहास हमें कभी क्षमा नहीं करेगा। यह मत आज संसदीय एवं संवैधानिक अध्ययन संस्थान की एक सभा में व्यक्त किया गया।

इसी सभा में श्री छागला ने कहा कि बंगला देश हमारा एक अच्छा पड़ौसी मित्र साबित होगा। उसी की जीत में हमारा हित है। भू०पू० केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री वी० के कृष्ण मेनन ने कहा—बंगला देश की मान्यता के लिये यह अत्यन्त उपयुक्त समय है।

श्री दफ्तरी ने कहा—भारत सरकार को मान्यता के अलावा बंगला देश की सहायता के लिए ठोस कदम भी उठाने चाहियें।

श्री रशीदउद्दीन ने कहा—बँगला देश पाकिस्तान का अभिन्न अंग नहीं रह सकता। हमें अब चुप नहीं बैठना चाहिये।

सर्वोदयी नेता श्री विनोबा ने कहा—बंगला देश के शोषण से ही वहाँ असंतोष भड़का है। भारत को उधर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इन्सानी बिरादरी से पँजाब के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री भीमसेन सच्चर ने इस्तीफा आज इसलिये दे दिया कि शेख अब्दुल्ला पाकिस्तान सरकार के विरुद्ध निन्दा का प्रस्ताव पास करने के लिये तैयार नहीं हुए। इस संस्था का निर्माण खान अब्दुल गफ्फारखाँ के भारत आगमन पर किया गया था।

आज नयी दिल्ली में बंगला देश के पीड़ितों को सहायता पहुँचाने के लिये एक बंगला देश मदद समिति कायम की गयी। इसके अध्यक्ष एम.सी. सीतलवाड़ और उपाध्यक्ष कुमारी पद्मजा नायडू बनायी गयीं। समिति ने भारत के हर नागरिक से मदद भेजने की अपील की।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में आज भारत सरकार ने पाकिस्तान विमान-कांड संबंधी सभी आरोपों को रद्द कर दिया। सुरक्षा परिषद् में भारतीय प्रतिनिधि श्री समरसेन ने कहा कि यह मामला परस्पर बातचीत से ही हल हो सकता है। पाकिस्तान ने न तो उन दोनों जासूसों को गिरफ्तार किया न हमारे यात्रियों का सामान लौटाया और न जहाज को जलने से बचाया।

बंगला देश में

रंगपुर में आज पाकिस्तानी सेना ने चार डाक्टरों की हत्या कर दी। सिलहट जिला में पाकिस्तानी सेना ने आज १४०० कैदियों को बमों से भून दिया। पाकिस्तानी वायुसेना ने आज कोमिल्ला जिले के गाँवों पर नापाम बम बरसाये।

पाकिस्तानी सेना से लड़ाई में आज मुक्तिवाहिनी ने तीन टैंक छीन लिये और ५ गनबोटों पर भी कब्जा कर लिया। अगरतल्ला के पास आज एक पाकिस्तानी मेजर और कर्नल ने आत्मसमर्पण कर दिया।

१० अप्रैल की स्थिति

इस दिन नोआखली के पास मुक्ति-वाहिनी ने दो पाकिस्तानी हवाई जहाज मार गिराए और राजशाही से ५०० पाक सैनिक खदेड़े गये। आज ही पाकिस्तान ने मैनावाटी में घिरी अपनी सेना के बचाव के लिए कुमुक भेज कर यहाँ कब्जा कर लिया और आस-पास के गांवों में आग लगा दी।

भारत में

आज अगरतल्ला पर हमला करने वाली पाक सेना के गोले भारतीय सीमा में भी गिरे। पाकिस्तान की यह सेनायें चीनी हथियारों से लैस थीं। गोले गिरने के बावजूद भारतीय सीमा सुरक्षा दल शांत रहा।

आज ही भूतान नरेश ने भारतीय नीति का समर्थन किया।

आज ही पाकिस्तान रेडियो ने भारत पर आरोप लगाया कि बंगला देश वालों के प्रचार के लिए भारतीय दूतावास में एक रेडियो स्टेशन चलाया जा रहा है। वस्तुत: पाकिस्तान के इस आरोप का उल्लेख ढाका के भारतीय उच्चायुक्त कार्यालय को बन्द कराना था।

यूरोप में

आज ब्रिटेन के भूतपूर्व विदेशमन्त्री ने बी०बी०सी० पर घोषणा की कि दोनों पाकिस्तानों (पूर्वी पश्चिमी) में समझौता होना असम्भव है। राष्ट्रसंघ में ब्रिटेन और श्रीलंका के कार्यालयों पर बंगाली स्त्री-बच्चों और उनके समर्थकों ने प्रदर्शन किया और पाकिस्तान को किसी प्रकार की सहायता न देने की अपील की।

११ अप्रैल का विशिष्ट दिन

बंगला देश में ११ अप्रैल का दिन विशेष संघर्ष का था। भयंकर युद्ध के बाद मुक्ति सेना ने लाल मुनीर हाट पर फिर अधिकार कर लिया और १३० ट्रकों के पकिस्तानी काफले से हथियार और गोला बारूद लूटा लेकिन पावना मुक्तिवाहिनी के हाथ से निकल गया। यहाँ पर पाकिस्तानी सेना ढाका से आयी और पावना पर कब्जा करती हुई राजशाही की ओर बढ़ गई।

आज सिलहट के हवाई अड्डे और नदियों के पुल के लिए जम कर लड़ाई हुई और पाकिस्तानी वायुसेना ने धुंआधार बमवर्षा की। उसी दिन लछमन रेलवे स्टेशन (ढाका, कोमिल्ला, चाँदपुर क्षेत्र) भी मुक्ति सेना के हाथ से पाकिस्तानी सेना ने छीन लिया। साथ ही सिलहट, जैसोर, कोमिल्ला और बोगरा पर पाकिस्तानियों ने नापाम बम बरसाये तथा चाँदपुर और फेनी में पाकिस्तानियों ने अपने

ट्रकों के आगे बंगला देश की नंगी महिलाओं का जलूस निकाला। इस जलूस को देखकर कई बंगाली युवक पाकिस्तानी सेना के आगे आ खड़े हुए कि पहले हमें गोली मार दो—हम अपनी माँ बहनों की इस बेइज्जती को नहीं देख सकते। उनको गोलियों से उड़ा दिया गया।

आज के युद्ध में पाकिस्तानी कम मरे। मुक्ति सेना के अधिक मरे। पाकिस्तानी जहाजों ने जनता पर राकेट बरसाये और दीनाजपुर तथा रंगपुर में लगभग ५० हजार आदमियों और बच्चों की हत्या की।

भारत में प्रतिक्रिया

भारत में आज पाक पनडुब्बी के ७ नाविकों को सरकारी शरण दी गई। इन्होंने मैड्रिड स्थित भारतीय दूतावास में शरण ली हुई थी और भारत जाने की मांग की थी।

कलकत्ता के शहीद मैदान में आज एक विशाल सभा में श्री अजय मुखर्जी और श्री विजयसिंह नाहर ने भारत सरकार से मांग की कि वह बंगला देश की सरकार को मदद और मान्यता दे।

चण्डीगढ़ में एक पत्रकार कॉंफ्रेंस में विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने पाकिस्तान के इस आरोप का खण्डन किया कि भारत बंगला देश में घुसपैठिये भेज रहा है। श्री स्वर्णसिंह ने कहा—पाकिस्तान बौखला गया है और भारत से युद्ध छेड़ना चाहता है। श्री स्वर्णसिंह ने बताया कि भारत विस्थापितों की देखभाल के लिए उचित कदम उठाएगा। उन्होंने कहा—जब मैं एक बार ढाका गया था, तब वहां गृहमन्त्री एक सैनिक थे। उन्होंने मुझे शाम को जब खाने पर बुलाया तब पंजाबी सैनिकों की पत्नियों ने कहा था, यहां हम अपनापन महसूस नहीं करतीं। इसका मतलब यह है कि यह दोनों भाग साथ-साथ नहीं रह सकते।

श्री सिंह ने बताया कि पाकिस्तान अपनी करतूतों का भेद खुल जाने के भय से अन्तर्राष्ट्रीय सहायता तक नहीं आने देता।

आज साबरमती आश्रम में बंगला देश के शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। इस सभा में श्री मन्नारायण अग्रवाल, श्री हितेन्द्र देसाई तथा राज्यपाल श्री धर्मवीर आदि ने भाग लिया। सभा में राष्ट्रसंघ की आलोचना की गयी कि उसने बंगला देश के नर-संहार के विरुद्ध चूं तक नहीं की।

१२ अप्रैल का दिन

मुक्ति सेना के अनुसार बंगला देश में अब तक १० लाख लोगों की हत्या की जा चुकी है। दीनाजपुर जिले के ठाकुर गांव में मुक्ति सेना ने ४ पेज के 'बंगला देश की आवाज' नामक पत्र का प्रारम्भ किया। पाकिस्तानियों ने लूट के माल से भरे एक

जहाज को आज कराची भेजा। राजशाही में आज ६ हजार व्यक्तियों का कत्ल पाकिस्तानी सैनिकों ने किया।

आज बंगला देश में छः सदस्यीय युद्ध-कालीन सरकार की घोषणा की गयी। इसका काम मुक्ति संग्राम को जारी रखना बताया गया। सरकार में श्री मुजीब के स्थान पर कार्यवाहक राष्ट्रपति श्री नजरूल इस्लाम और प्रधान मन्त्री श्री शहाबुद्दीन चुने गये।

अवामी लीग की २४ घंटे तक लगातार चलने वाली मीटिंग के बाद उक्त निर्णय किया गया।

मुक्ति सेना ने पुनः राजशाही पर कब्जा कर लिया। मुक्ति सेना के कमांडर श्री काजी अब्दुल रहमान ने कहा—'हमने यहां से कुत्तों को बाहर निकाल दिया। हमारे ७० और उनके ५०० मरे। २२ अप्रैल को अधिकारियों की निश्चित तिथि समाप्त होने पर भी कोई बंगाली कर्मचारी काम पर नहीं गया।

भारतीय प्रतिक्रिया

आज भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार को कड़ा विरोधपत्र दिया और मांग की कि सीमा सुरक्षा दल के गश्त लगाते हुए जो तीन जवान पाकिस्तानी सैनिक पकड़ ले गए हैं, उन्हें तुरन्त वापस कर दिया जाय, अन्यथा उसका परिणाम बुरा होगा। पाकिस्तान का कहना था कि यह जवान हमें मुक्ति सेना के साथ मिले थे। इन जवानों का अपहरण ९ अप्रैल को किया गया था।

आज केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की राजनैतिक समिति में बंगला देश सरकार के गठन और उसे मान्यता देने पर विचार किया गया।

आज 'नवभारत टाइम्स' दिल्ली के सहायक सम्पादक श्री रवीन्द्रप्रसाद सक्सेना ने बताया कि ब्रिटिश जनता में बंगला देश के प्रति पूरी सहानुभूति है और बी०बी०सी० अधिकतर भारतीय समाचारों को प्रसार का आधार बनाता है। अतः यह कहना कि ब्रिटेन बंगला देश का विरोधी है, एकदम गलत है। यदि ऐसा होता तब बी०बी०सी० और टेलिविजनों पर बंगला देश के नर संहार और बंगला देश की लाठी-धारी सेना के चित्र न दिखाये जाते। इससे पाकिस्तान का उक्त आरोप भी झूठा हो जाता है कि बंगला देश को भारत शस्त्रों की सहायता दे रहा है। श्री सक्सेना ब्रिटेन से पत्रकारिता का प्रशिक्षण लेकर कल ही दिल्ली लौटे थे।

आज पाकिस्तान ने अन्तर्राष्ट्रीय उड्डयन संघ से फिर अपील की कि हमें भारत के आकाश से अपने जहाज ले जाने की सुविधा दिलाई जाय।

अमेरिका की २५ सदस्यीय टेबिल टेनिस टीम, जिसके साथ कोलम्बिया की

भी एक टीम थी और तीन पत्रकार थे आज पेकिंग पहुँची। तीसरे दिन चाऊ एन लाई भी इस टीम से मिले। अमेरिकी-चीन गठवन्धन की आधार-शिला यहीं से रखी गयी।। १९४९ के बाद किसी पत्रकार या किसी खिलाड़ी टीम की यह पहली चीन-यात्रा थी।

आज याहिया खाँ को चाऊ एन लाई का सन्देश मिला। सन्देश में कहा गया था कि चीन पूर्वी-पश्चिमी पाकिस्तान के विवाद को उसका आंतरिक मामला मानता है। चीन सरकार और चीनी जनता पाकिस्तान का पुरजोर समर्थन करती है। इस मामले में किसी भी देश को दखल देने की जरूरत नहीं।

मास्को में सोवियत यूनियन की २४वीं वर्षगांठ पर जिन देशों के कम्युनिस्ट नेता एकत्र हुए थे उन्होंने चीनी प्रधानमन्त्री के इस सन्देश की कड़ी आलोचना की और आश्चर्य व्यक्त किया।

आज ही श्री कोसीगिन ने मास्को स्थित भारत और पाकिस्तान के राज-दूतों से अलग-अलग बंगला देश पर वार्ता की।

आज पाकिस्तान में सिन्ध के मार्शल-ला प्रशासक ने हिन्दुओं की जायदाद जब्त कर लेने की घोषणा की और पाकिस्तान के अखबारों ने याहिया खां की प्रशंसा करते हुए लिखा—२३ अक्टूबर १९७० ई० को याहिया खाँ ने न्यूयार्क में जो यह कहा था कि वह ईरान के भूतपूर्व बादशाह नादिरशाह के वंशज हैं, वह बात बिलकुल सच है। बंगला देश में जिस कठोरता से श्री याहिया खां ने दमन किया है उसे देख कर उनकी नादिरशाह के वंशज वाली बात आज याद आती है।

१३ अप्रैल का इतिहास

आज पाकिस्तान ने जैसोर में साम्प्रदायिक दंगा कराने की कोशिश की और बाद में बिहारियों को हथियार बाँटे। इससे पहले सिलहट में भयानक कत्लेआम किया था। उसके लिए विदेशी संवाददाताओं ने लिखा था— सिलहट की दुर्गन्ध कई-कई मील तक जा रही है।

ठाकुर गाँव की हवाई पट्टी पर आज मुक्ति सेना ने अधिकार करते हुए एक पाकिस्तानी हेलीकोप्टर पर भी कब्जा कर लिया। उस समय ठाकुर गाँव में पाक सैनिकों ने लूटमार और बलात्कार का बाजार गर्म कर रखा था। गांवों से पकड़कर जवान लड़कियां और औरतें ला रहे थे।

आज राजशाही पर पाक सेना ने कब्जे का यत्न किया और आधा कोमिल्ला मुक्तिवाहिनी से छीन लिया। लहर मुनीरहाट और दीनाजपुर पर पाकिस्तानी सेना का

कब्जा हो गया। दीनाजपुर जिले में लगभग ८० हजार आदमियों का कत्ल पाकिस्तानियों ने किया और १० हजार महिलाओं से बलात्कार किया या कत्ल किया अथवा काफी को अपने साथ ले गए।

राजशाही से तीन मील दूर सपेरा में पाकिस्तानी सेना डटी रही और मुक्ति वाहिनी का मुकाबला करती रही। रंगपुर सईदपुर रोड पर भी दिन भर लड़ाई चलती रही। सिलहट सुतार कण्डी रोड पर पाकिस्तानी हवाई बेड़े ने आज भयानक बमवर्षा की, लेकिन मुक्ति वाहिनी के सैनिकों ने ग्वालमण्डी क्षेत्र से पाकिस्तानी छाता सैनिक खदेड़ दिए और सिलहट पर कब्जा भी कर लिया।

पाकिस्तानी सैनिकों ने आज कराची से बंगला देश पहुँचाने के लिये तुर्की और इटली की नावों का प्रयोग किया। इन दोनों को यह नावें अमेरिका से मिली थीं।

भारतीय प्रतिक्रिया

आज लखनऊ में भाषण करते हुए प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने कहा—पू० बंगाल का मामला भारत पाकिस्तान का अन्दरूनी मामला नहीं मानता। अतः हम पूर्व बंगाल की घटनाओं के बारे में दर्शक बने नहीं रह सकते। हम इस मामले में हस्तक्षेप भी नहीं करना चाहते और चुप भी नहीं रह सकते; क्योंकि बंगाल की घटनाओं का प्रभाव हमारे देश पर सीधा पड़ रहा है। हमारा बंगालियों के साथ खून का रिश्ता है। इसलिए हमारी सहानुभूति उनके साथ है।

पाकिस्तान में चुनाव के बाद काफी लाभ हो सकता था; लेकिन वह नहीं हुआ और पाकिस्तानी नेताओं ने अब सारी तस्वीर ही बदल दी है। हम चीन से डर कर बंगला देश के बारे में अपना रुख नहीं बदलेंगे। हमारा दृष्टिकोण दूसरे देशों से बंधा हुआ नहीं है। हम जानते हैं कि चीन अब पाकिस्तान का खुला समर्थन कर रहा है।

श्री मुजीब ने एक बार कहा था—मैं भारत और बंगला देश के बीच अलगाव कम करना चाहता हूँ। यह व्यापार आदि के सम्पर्क से हो सकता था। वह कुछ नहीं हुआ। मैं जानती हूँ जो कुछ ईरान में हो रहा है और लंका में हो रहा है। फिर भी हमें और धैर्य रखने की आवश्यकता है और सतर्क हम हैं ही।

आज जयपुर में मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने १० लाख रुपया और एक चलता-फिरता अस्पताल बंगला सहायता कार्यक्रम चलाने के लिए दिया।

बंगला विप्लवी बेतार केन्द्र ने भारत से आज मान्यता का आग्रह किया और भारतीय जनता से अपील की कि वह आवश्यक वस्तुओं का बाजार अपनी सीमा पर

लगाये जिससे बंगला देशवासी आवश्यक वस्तुओं का क्रय-विक्रय कर सकें तथा भारत हमारे घायलों को अपने अस्पतालों में चिकित्सा कराने के लिए आने दे। बेतार में यह भी बताया गया कि बंगला सरकार अपना एक प्रतिनिधिमण्डल नयी दिल्ली इस आशा से भेज रही है ताकि संसार के राजनयिकों से वह मान्यता आदि की बात कर सके।

संसद सदस्य समरगुह ने भी आज बंगला देश को मान्यता की मांग की और चीन की हरकतों की निन्दा की। उन्होंने सोवियत उप-दूत से भी इस बारे में बातचीत की।

आज २० हजार शरणार्थी भी भारत आये तथा बंगला देश सहायता समिति ने शणार्थियों के लिये सीमा पर पांच चलते-फिरते अस्पताल जारी किये। इनकी देख-रेख इण्डियन रेडक्रास सोसायटी तथा सेंट जान एम्बुलेंस को सपौं दी गयी। इनके लिये दिल्ली से आज ५ वेन भेजे गये।

१४ अप्रैल की स्थिति

आज हालैंड में रहने वाले छात्रों, नागरिकों आदि ने यूरोप के किसी देश से २० लाख रुपये के हथियार इकट्ठे करके बंगला देश भेजे।

बंगला देश से तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री ताजुद्दीन ने विदेशी पत्रकारों और कूटनीतिज्ञों का आज आव्हान किया कि बंगला देश के कत्लेआम को वह स्वयं आकर देख लें और यह भी देख लें कि सिलहट-कोमिल्ला क्षेत्र में मेजर मुशर्रफ ने पाकिस्तानी सेनाओं को उनकी छावनियों में घुसेड़ दिया है। अब हमें हथियारों की सख्त जरूरत है। दीनाजपुर से पाक सेना भगा दी गयी है और उनके छोड़े हथियार हमारे हाथ लगे हैं।

मौलाना भापानी ने भी आज भारत से सहायता और बंगला देश को मान्यता की अपील की।

ब्राह्मणवाड़ी पर जब वायुयानों और तोपखानों से पाकिस्तानी सेना आक्रमण कर रही थी, तब उसके गोले भारतीय सीमा में आकर गिर रहे थे। उस समय सोनपुरा (त्रिपुरा सब-डिवीजन) का तहसीलदार अपने घर के ही आंगन में खड़ा एक ऐसे गोले से घायल हो गया।

आज की कस्बा पर पाकिस्तानी कारंवाई से भारतीय सीमा को खतरा पैदा हो गया; क्योंकि एक पाक टुकड़ी त्रिपुरा के कमला सागौर नगर में घुस आयी।

आज बंगला देश से एक प्रतिनिधि-मण्डल नयी दिल्ली पहुँचा।

१५ अप्रैल का इतिहास

आज लाहौर में जुल्फिकार अली भुट्टो ने चीन की मित्रता का राग अलापा और सोवियत यूनियन की आलोचना की। सोवियत राष्ट्रपति श्री पोदगोर्नी के पत्र

का उत्तर देते हुए श्री भुट्टो ने कहा—हमें किसी को सलाह देने की जरूरत नहीं है। हमें क्या करना चाहिए या क्या नहीं, यह सोचना हमारा काम है। भारत पर भुट्टो ने आरोप लगाया कि वह हमारे अन्दरूनी मामले में हस्तक्षेप कर रहा है।

आज ढाका की स्थिति के वारे में पत्रकार श्री डेनिस नील्ड ने लिखा कि मैं और फोटोग्राफर माइकेल लारेंट चोरी-छिपे ढाका पहुँचे, जहाँ जगह-जगह लाशें-ही-लाशें पड़ी हैं। जबसे विदेशी संवाददाता ढाका से निकाले गये हैं, तब से हम दोनों ही एक नदी के रास्ते चोरी-छिपे ढाका में घुसे थे। यहाँ गैर-बंगाली लोग सेना के इशारे से लूट-पाट और कत्ल का बाजार गर्म किये हुए हैं। हिन्दुओं को यहाँ चुन-चुन कर मारा जा रहा है। उनके बाद अवामी लीग के समर्थकों की खोज की जाती है। कितने आदमी मारे गये हैं, इसका पता नहीं, लेकिन कत्लेआम अब भी जारी है।

राजशाही पर आज पाकिस्तानी सेना ने फिर कब्जा कर लिया और अखौरा पर बमबारी की। सिलहट के उत्तरी भाग पर भी पाक का कब्जा हो गया। कुस्टिया पर मुक्ति सेना काकब्जा बना रहा और मुक्ति सेना ने तीता सा नदी के पुल सेपाकिस्तानियों को धकेल दिया।

आज गंगा सागर पर मुक्ति सेना और पाकिस्तानी सेना में तोप-युद्ध हुआ।

चुआडांगा में बंगला देश सरकार का जो शपथ-समारोह होना था, वह स्थगित कर दिया गया।

भारत में

आज भारत सरकार ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि वह भारतीय सीमा में गोलियां चलाना बन्द करे वरना भारत की जवाबी कार्रवाई के लिये वही जिम्मेदार होगा। पाकिस्तान को यह चेतावनी विरोध पत्र के रूप में उसके राजदूत को नयी दिल्ली में दी गयी। उसे बताया गया कि वह जल्दी से जल्दी तीनों भारतीय सिपाहियों को जो सीमा से उड़ा लिये गये हैं, लौटाये।

१६ अप्रैल—शेख पर मुकदमे की घोषणा

१६ अप्रैल १९७१ ई० को पाकिस्तान सरकार ने शेख मुजीबुर्रहमान पर देश द्रोह का मुकदमा चलाने की घोषणा की। पाकिस्तान ने यह भी बताया कि २५ मार्च को रात के १॥ बजे के लगभग (कलैण्डर के हिसाब से २६ मार्च,) हमने मुजीब को गिरफ्तार किया था; क्योंकि शेख ने भारत के साथ मिल कर स्वतन्त्र बंगला देश बनाने का षड्यन्त्र रचा था। पाकिस्तान की खुफिया पुलिस के पास इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं। साथ ही यह भी बताया गया कि पिछले 'ढाका षड्यन्त्र केस' को भी इसी मुकदमे के साथ चलाया जायेगा। उसमें यह मुख्य अपराधी हैं।

आज पाकिस्तान ने भारतीय रेडियो सुनने पर पावन्दी लगा दी। ब्राह्मणवाड़ी में पाकिस्तानी सेना घुस गयी। दीनाजपुर और ठाकुर गाँव पर भी पाकिस्तानी सेना ने कब्जा कर लिया। पाकिस्तानी घोंकरगाथा पर गोलाबारी करते हुए राजशाही की ओर बढ़ गये। पवना और मैमनसिंह में घमासान युद्ध जारी रहा। कुष्टिया और वोगरा को मुक्ति सेना ने पाकिस्तानियों से छीन लिया। आज यूनाइटेड प्रेस ने बताया कि पूर्व क्षेत्र में दक्षिण में वारीसाल से लेकर उत्तर में दीनाजपुर तक प्रायः सभी बड़े नगरों पर पाकिस्तानी सेना का कब्जा है। आज ही चाऊडांगा पर डेढ़ घण्टे तक पाकिस्तानी वायुयानों और हैलीकोप्टरों ने मशीनगनों से हमला किया। अखौरा में ३०० पाक सैनिक मारे गये। चाऊडांगा से बंगला देश सरकार ने अपना कार्यालय कहीं अन्यन्त्र हटा लिया। राजशाही पर पाकिस्तान ने फिर कब्जा कर लिया; लेकिन शकुतीकर चौकी मुक्ति सेना ने छीन ली।

आज बंगला देश सरकार के दूत श्री ज़कारिया लन्दन पहुंचे और वहाँ उन्होंने एक प्रेस कांफ्रेंस की तथा ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन की ओर से श्री डेविड डिम्बलेवी से मुलाकात करते हुए यह स्वीकार किया कि गांवों पर बंगला देश सरकार का कब्जा है और नगरों पर पाकिस्तानी सेना का। यह कहना गलत है कि पाकिस्तानी सेना का मुकाबला मुक्ति सेना अब नहीं कर रही। जकारिया ने यह भी बताया कि हम पुराने हथियारों से लड़ रहे हैं और उन देशों से हथियार चाहते हैं जो हमारे मुक्ति आन्दोलन को उचित समझते हैं। यदि कोई देश हमारा साथ नहीं देगा, तब भी हम अपनी लड़ाई जारी रखेंगे।

विदेशी पत्रकारों ने बताया कि पाक का उद्देश्य आधी बंगला आबादी को साफ करना है। दूसरी ओर मुक्ति वेतार केन्द्र ने बताया, हमें आंतरिक दुश्मनों से सावधान रहना चाहिए। लीगी लोग पाकिस्तान के ऐजेंट बन गये हैं। पाकिस्तान ने एक कप्तान सहित पठान सैनिक इसलिये मार दिये कि उन्होंने जनता पर गोलियाँ चलाने से मना किया था।

भारत में

आज डेढ़ लाख शरणार्थी बंगला देश से कलकत्ता पहुँचे। जल्दी में बुलायी गयी एक प्रेस कांफ्रेंस में भारतीय प्रवक्ता ने पाकिस्तान के इस आरोप का खंडन किया कि भारत पाक को हथियार दे रहा है। प्रवक्ता ने कहा—हम पाक का हर तरह से मुकाबला करने को तैयार हैं। वास्तव में पाकिस्तान बंगला देश के हत्याकाण्ड पर पर्दा डालने के लिये भारत पर मनघड़न्त आरोप लगा रहा है।

१७ अप्रैल—भाषानी की मांग

१७ अप्रैल को चीन समर्थक नेता मौलाना भाषानी ने विश्व के सभी देशों से अपील की कि वे हमारे देश की जनता के होने वाले कत्लेआम को तमाशायी बनकर

न देखते रहें। श्री भाषानी ने भारत के औद्योगिक विकास मंत्री श्री मुइनुलहक चौधरी को एक पत्र स्वयं गोहाटी में भारत सरकार को देने के लिये भी दिया। उस दिन भाषानी गोहाटी में ही थे।

आज ठाकुर गाँव पाकिस्तान नेशनल बैंक से मुक्ति सेना ने ढाई करोड़ रुपया लूट लिया और प्रतिरोध करने वाले छ; कर्मचारियों को गिरफ्तार कर लिया और इतनों को ही गोली से उड़ा दिया।

आज बंगला देश के सेनानायक कर्नल उस्मानी ने मुजीवनगर से संसार के नाम अपील की कि यदि हमें हथियार और दूसरी सहायता न मिली तो हमारी यह लड़ाई लम्बी चली जायेगी जो कई पीढ़ियों तक चल सकती है।

आज ही पाकिस्तान सरकार ने मौलाना भाषानी को जिन्दा या मुर्दा पकड़ कर लाने के लिये १० हजार रुपये के इनाम की घोषणा की।

आज ही मेहरपुर में श्री कादर और आवामी लीग के अन्य सदस्यों ने भारत द्वारा बंगला देश की सरकार को मान्यता न देने के लिये दुख प्रकट किया। उन्होंने कहा—हमें आशा थी कि हमारी सरकार बन जाने पर भारत सरकार २४ घन्टे के अन्दर मान्यता दे देगी; लेकिन १२ दिन बाद भी हमें मान्यता नहीं मिली। इसका कारण हमारी समझ में नहीं आता।

कुष्टिया जिले के मेहरपुर सबडिवीजन में स्थित वैद्यनाथ तल्ला नामक प्राचीन नगर का नाम कार्यवाहक राष्ट्रपति श्री नजरूल इस्लाम ने मुजीबनगर रखा। यहां के आम्र कुञ्ज में गगनभेदी नारों के साथ सार्वभौम सत्ता सम्पन्न बंगला देश गणराज्य की घोषणा की गयी। यह स्थान भारतीय सीमा से केवल दो मील दूर है।

गणराज्य की स्थापना की घोषणा बंगला देश के झंडे के नीचे खड़े होकर श्री नजरुल इस्लाम ने की। इस समारोह में प्रधानमंत्री ताजुद्दीन अहमद, उनके मंत्री-मण्डलीय सदस्य भारत सहित अन्य कई देशों के एक सौ से अधिक पत्रकार तथा फोटोग्राफर उस समय यहां मौजूद थे।

आम्र कुंज पहुंचने पर भूतपूर्व पाक राईफल्स की एक टुकड़ी ने श्री इस्लाम को सलामी दी।

श्री ताजुद्दीन ने आज झकेरपाड़ा में कहा कि देश के क्षेत्रफल का ९० प्रतिशत भाग हमारे अधिकार में है। पाकिस्तानी सेना केवल शहरी छावनियों में है और और वहीं से तोपों और वायुयानों से सारे देश पर हमले कर रही है। उन्होंने आज यह भी वताया कि श्री मुजीव से मेरी भेंट २५ अप्रैल के बाद नहीं हुई। उन्होंने कहा कि अपने देश को मान्यता देने के लिये मैं चीन सहित कई देशों को अपने प्रतिनिधि-मण्डल भेजूंगा।

श्री इस्लाम ने अपने भाषण में कहा—मैं संसार से पूछना चाहता हूँ कि आखिर हमारा अपराध क्या है ? हमारे देशवासियों को पाकिस्तान क्यों कत्ल कर रहा है और क्यों हमारी बहन-बेटियों की इज्जत पाकिस्तानी सैनिक लूट रहे हैं। आपने कहा—वास्तव में पाक मर चुका है। वह मुर्दों के अम्बार के नीचे दफन हो चुका है। लाखों लोगों का हत्या-कांड बंगला देश और पाकिस्तान के बीच एक सीधी दीवार बन गया है जो कभी न तोड़ी जा सकेगी और न लांघी जा सकेगी। याहिया को मालूम होना चाहिये कि उसका कराया नियोजित कत्लेआम उसी की कब्र खोद रहा है। वह अपना दुखद इतिहास बंगला देश की जनता के खून से लिख रहा है। समारोह से प्रथम कुरान का पाठ हुआ और श्री रविन्द्रनाथ टैगोरी का गीत—आमार सोनार बांगला गाया था।

आपने इस आम्रकुंज में लड़े गये प्लासी के ऐतिहासिक युद्ध का स्मरण कराते हुए कहा—सिराजुद्दौला ने एक दिन क्लाइव से हार कर बंगला देश की स्वतन्त्रता खोई थी। हमने उसी आम्रकुंज में बैठ कर स्वतन्त्रता की घोषणा की है।

भारत

एक स्वदेशी जहाज के २५ बंगाली कर्मचारियों ने जहाज से भाग कर भारत में शरण मांगी। यह जहाज गेहूं लाद कर चटगांव जा रहा था। बाद में बजबज ले जाया गया।

१८ अप्रैल का विशेष दिन

आज पाकिस्तानी सेना ने कुष्टिया के खजाने से ५० करोड़ रुपये लूट लिये। मेहरपुर, चौडंगा और पावना के खजानों को मुक्तिवाहिनी ने पहले ही हटाकर बंगला देश सरकार के कोष में जमा करा दिया था।

आज ही मौलाना भाषानी दिल्ली आये और रंगपुर में दो बंगाली विमान चालक अपने हवाई जहाज लेकर मुक्तिवाहिनी में आ मिले।

अरब राष्ट्रों ने आज बंगला देश में पाकिस्तानी कत्लेआम का समर्थन किया।

भारत में

भारत के राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने लुधियाना से १५ मील दूर गुरु हरगोबिन्दसिंह खालसा कालेज के स्नातकोत्तर ब्लाक का उद्‌घाटन करते हुए कहा कि भारतीय जनता की सहानुभूति बंगला देश के साथ है और भारत सरकार बंगलादेश को मान्यता देने के प्रश्न पर विचार कर रही है। आपने कहा—हर एकड़ खेत हो, हर घर कारखाना बने।

नयी दिल्ली में संसद सदस्य श्री शिब्बनलाल सक्सेना ने कहा—बंगला देश

में हो रहे, कत्लेआम का चीन ने जो समर्थन किया है, वह एक हैरत में डालने वाली घटना है और जिस तरह निहत्थी बंगला देश की जनता हत्यारों का मुकाबला कर रही है, वह भी आश्चर्यजनक घटना है। मुझे विश्वास है अन्तिम विजय बंगला जनता की होगी।

आज कलकत्ता में पाकिस्तान के डिप्टी हाई कमीशन के कार्यालय से बंगाली कर्मचारियों ने अपना सम्बन्ध तोड़ लिया और नवोदित बंगला देश के प्रति अपनी वफादारी की घोषणा कर दी और कार्यालय पर बंगला देश का झंडा लहरा दिया तथा कार्यालय का नाम बंगला देश मिशन कार्यालय, रख दिया।

कार्यालय कर्मचारियों की हर्षध्वनि के बीच डिप्टी हाईकमीश्नर श्री हुसैन अली ने झंडा लहराया और घोषणा की कि हम चूँकि बंगला देश की नयी सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, इसलिये भारत सरकार से शरण माँगने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। हम बंगला देश सरकार के आदेशों का पालन करेंगे। हमारे सौ कर्मचारियों में से तीस कर्मचारी पश्चिमी पाकिस्तान के हैं, वे चाहें तो पाकिस्तान जा सकते हैं, उन्हें पाकिस्तान भेजने का प्रबन्ध भारत सरकार करेगी। मैं अलग होने का फैसला बहुत पहले कर चुका था। मुझे केवल बंगला देश में सरकार बन जाने की इन्तजार थी।

श्री हुसैनअली ने कहा—एक भी पाकिस्तानी नागरिक ने हमारे देश के नर-संहार की निन्दा नहीं की। इसका मतलब साफ है कि हमारा देश और हमारी संस्कृति अलग है। पाकिस्तानी अपना दुश्मन भारत को बताते रहे हैं; लेकिन अब जान बचाने के लिये भी यहीं भाग रहे हैं। वही भारत और भारतीय जनता जिसे दुश्मन नम्बर एक बताया जाता था हमारी मदद कर रही है, राहत दे रही है और सहानुभूति प्रकट कर रही है। पाक हमारे देश को वैश्याओं और नौकरों का देश बनाना चाहता है। लन्दन में भी आज दो सौ बंगला देश वालों ने प्रदर्शन किया और ब्रिटिश सरकार से मान्यता की माँग की।

चीनी रुख

चीन के राष्ट्रपति माओत्से तुंग ने आज पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री याहिया खाँ को एक पत्र भेज कर बंगला देश के कत्लेआम की प्रशंसा की और आश्वासन दिया कि पाकिस्तानी सेना के आधुनिकीकरण में चीन हर प्रकार के हथियारों की सहायता देगा। इनके साथ ही चीन के प्रधान मंत्री चाऊएन लाई ने भी याहिया की दमन नीति का समर्थन किया।

१९ अप्रैल की स्थिति

आज पाकिस्तान ने ढाका और चटगांव पर कब्जा बनाये रखने में सफलता प्राप्त कर ली, जिससे हथियारों की सप्लाई में बाधा न पड़े, लेकिन सिलहट के महत्वपूर्ण शालूतीकर हवाई अड्डे पर एक सप्ताह के संघर्ष के बाद मुक्तिवाहिनी ने कब्जा कर लिया और कस्बा पर भी मुक्तिवाहिनी का अधिकार हो गया। यहाँ मुक्तिवाहिनी को दो ट्रक भरे हुए स्वचालित हथियार हाथ लगे। इसी दिन चुआडांगा और दर्शना के महत्वपूर्ण सड़क व रेल जंक्शन पर पाकिस्तानी सेना छः ट्रक भरकर सैनिक लाई और कब्जा करके मकानों को आग लगा दी तथा हिन्दुओं और अवामी लीग वालों को लूटा। १५० आदमी कत्ल किये तथा दर्शना डिस्टलरी के कर्मचारियों की १५ लड़कियों को पकड़कर ले गये।

भारत में

समाचार पत्र 'नवभारत टाइम्स' के संवाददाता ने बंगला देश से लौट कर नयी दिल्ली में बताया कि पाकिस्तानी हत्याकाण्ड बढ़ता जा रहा है, संघर्ष लम्बा खिंच सकता है। चटगांव और ढाका में भारी शस्त्र ले जाने में पाकिस्तान को सफलता मिल गयी है। पाकिस्तानी उनका कत्ल करना चाहते हैं और कुछ को भारत में धकेल कर दोनों भागों की आबादी बराबर करना चाहते हैं। अतः भारत को बंगला सरकार को मान्यता देनी चाहिये और मुक्तिवाहिनी को सहायता भी देनी चाहिये। इसके साथ ही जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भी मान्यता की मांग करते हुए कहा– भारत सरकार का यह भय निराधार है कि मान्यता के सवाल पर पाकिस्तान से युद्ध छिड़ सकता है। संयुक्त समाजवादी नेता जार्ज फर्नानडीज ने भी बंगला सरकार को मान्यता की माँग की।

आज परराष्ट्रमंत्रालय ने पाकिस्तान सरकार के इस आरोप का खंडन किया कि बंगला देश नाम की सरकार भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही है और उसका 'कथित शपथ-समारोह' भी भारत सरकार ने ही कराया था। प्रवक्ता ने कहा—बंगला देश सरकार के शपथ समारोह को एक नहीं, सैंकड़ों विदेशी पत्रकारों ने बंगला देश जाकर स्वयं देखा है। प्रवक्ता ने यह भी बताया कि अब तक किसी भी देश की सरकार ने शरणार्थियों को किसी भी प्रकार की सहायता भेजने की पेशकश नहीं की है। सारा खर्चा केवल भारत ही बर्दाश्त कर रहा है।

केन्द्रीय सरकार का एक दल शरणार्थी समस्या पर विचार करने के लिये पश्चिमी बंगाल गया। इस दल में भारतीय स्थल सेना के सेनाध्यक्ष जनरल मानिकशाह भी थे। स्वराष्ट्र मंत्रालय के सचिव श्री गोविन्दनारायण और श्री मानिकशाह व पश्चिम-

बंगाल के मुख्यमंत्री ने इस समस्या पर विचार-विमर्श किया। शरणार्थियों के साथ पाक एजेंटों के भी शरणार्थी बनकर आ घुसने से समस्या जटिल हो गयी थी। कई सौ पाक एजेंट पकड़ भी लिये गये थे, क्योंकि शरणार्थी शिविर सीमा के पास इसलिये रखवाये गये थे कि उन्हें लौटने में सहूलियत रहे, इसलिये यह समस्या और विकट हो गई थी। पश्चिमी बंगाल के जिलों में अब तक २ लाख शरणार्थी आ चुके थे। जैसौर से सरक कर एक पाक टुकड़ी भारतीय सीमा पर आई।

बंगला सरकार ने आज भारत सरकार से अपील की कि वह शरणार्थियों की मुद्रा-विनिमय की व्यवस्था करा दे ताकि उनके पास जो पाकिस्तानी मुद्रा है, उसे भारतीय मुद्रा में बदलकर अपना कष्ट कम कर सकें।

बंगला देश

आज बंगला देश में मुक्ति सेना के कप्तान श्री गफ्फार ने १५० पाक सैनिकों को सोते समय भून दिया और साथ ही भूतपूर्व मुस्लिम लीगी मंत्री तज्जफुल अली के मकान को आग लगादी। इस मकान को पाकिस्तानी सैनिकों ने अपनी छावनी बना रखा था।

वितासा नदी पर एक बंगला नाविक ने २१ पाकिस्तानी सैनिकों को नदी पार कराते समय नाव उलट कर डुबा दिया तथा कोमिल्ला से १५ मील दक्षिण में १५० पाक सैनिकों को मुक्तिवाहिनी ने घात लगाकर मौत के घाट उतार दिया। जखौरा पर चार दिन के युद्ध के बाद मुक्तिवाहिनी ने उसे छोड़ दिया और अपनी युद्ध-नीति बदल ली। आज ही जखौरा पर कब्जे के साथ ब्राह्मणवारी पर भी पाक सेनाओं ने कब्जा कर लिया और कब्जे के बाद कत्लेआम करके आग लगा दी। प्रायः अवामी लीगी और हिन्दुओं के घर फूंके गये और उन्हीं का कत्ल किया गया। महेशपुर में जो लोग इकट्ठे होकर पाकिस्तानी सेना का स्वागत करने आये थे, उन्हें अवामी लीग के आदमी समझकर पाकिस्तानियों ने गोलियों से उड़ा दिया और अपने जनरल मिट्ठू को गाँवों पर हमले के विरोध में गिरफ्तार करके हैलीकोप्टर पर बिठा कर कस्बे से कोमिल्ला लाकर गोली मार दी।

अध्याय ७

गुरिल्ला-युद्ध शुरू
और
विदेशी प्रतिक्रिया

वंगला देश की मुक्तिवाहिनी सेना ने पाकिस्तानी सेना से सीधी टक्कर लेने की वजाय अपनी रण-नीति गुरिल्ला-युद्ध—नीति अपनाने का निश्चय १६ अप्रैल को ही कर लिया था, जवकि उसने अखौरा को छोड़ा था, उसके वाद प्रायः अधिकांश मोर्चों पर यही स्थिति अपनायी जाने लगी; क्योंकि पाकिस्तानी सेना की संख्या और उसके आधुनिक स्वचालित हथियारों के सामने सीधा मुकावला करने पर जन-हानि अधिक हो रही थी और लाभ कम।

२० अप्रैल की महत्वपूर्ण घटनाएँ

आज पाकिस्तान द्वारा वंगला देश के दमन को और तेज करने के लिये पाकिस्तानी के साथी सैंटो देशों ने तीन जहाजों में हथियार भर कर पाकिस्तान को भेजे यह जहाज टर्की और ईरान से आये और कराची वन्दरगाह पर इन्होंने हथियार उतारे। यह जहाज थे—मेहान, मिस्सकी और एक व्रिटिश जहाज स्पैलंडर।

मैंमनसिंह पर कब्जे के लिये आज पाकिस्तानी सेना दो ओर से वढ़ी। एक दस्ता ढाका से उत्तर की ओर और दूसरा जयदेव वाजार से वढ़ रहा था। पाकिस्तानी रंगोल में छावनी डालना चाहते थे जहाँ मुक्ति सेना जवावी हमले लगातार कर रही थी। पाकिस्तानी मौसम की खरावी के कारण अपनी सेना को हवाई मदद नहीं पहुंचा सके।

आज जखौरा में पाकिस्तानी सेना दुम दवाये वैठी रही, शायद रसद और गोला वारूद की कमी पड़ गई थी। सिलहट की स्थिति स्पष्ट नहीं थी, हवाई अड्डा वेकार पड़ा था; लेकिन लगता था, आसपास पाकिस्तानी सेना मोर्चा लगाये वैठी है।

त्रिपुरा सीमा के पास और ब्राह्मणबेरिया में भी लड़ाई रुकी हुई थी। नीचे दक्षिण में चटगांव पहाड़ी क्षेत्र से भारी संख्या में लोगों का निष्क्रमण जारी था, इससे लगता था कि वहाँ युद्ध भड़क उठा है। पश्चिमी क्षेत्र के मेहरपुर के पास लड़ाई जारी थी। पाक सेना शहर से ५ मील दूर थी। वहां उसे मुक्ति सेना ने आगे बढ़ने से रोक रखा था।

दूसरी ओर मुक्ति सेना चुआडांगा से हार कर कुष्टिया की ओर बढ़ी। यहाँ कब्जा करके वह हार्डिंग ब्रिज के रास्ते उत्तरी जिलों की ओर बढ़ना चाहती थी। साथ ही राजशाही क्षेत्र में नवाबगंज में भीषण लड़ाई होती रही।

आज एक अमेरिकी पत्रकार ने जिसे ३१ मार्च को ढाका से निकाला गया था। ढाका के कत्लेआम का आँखों देखा हाल कलकत्ता में बताया कि किस प्रकार ५०० सोते हुए विद्यार्थियों की और ५० हजार आदमियों की ढाका में पाकिस्तानियों ने हत्या की थी।

आज बंगला देश की सरकार की बैठक में सरकार ने सेनापति श्री कर्नल उस्मानी को निर्देश दिया कि पाक सेना के कुछ खास मोर्चों पर कब्जा किया जाय, ताकि आगे बढ़ने में आसानी हो और जनता का मनोबल भी न गिरे। वर्षा ऋतु शुरू होने के कारण पाकिस्तानी वायु सेना अब हमले भी नहीं कर सकती। इसी बैठक में कलकत्ता के डिप्टी हाई कमिश्नर श्री हुसैन अली की प्रशंसा भी की गई। कमी वाले क्षेत्रों को अन्न की सप्लाई जारी करने पर भी विचार हुआ।

भारतीय प्रतिक्रिया

पाकिस्तान ने दिल्ली के पाकिस्तानी दूतावास से भागे हुए पाक राजनयिकों—श्री शहाबुद्दीन और श्री अजमदउलहक को वापस मांगा था। भारत सरकार ने यह माँग ठुकरा दी। दूसरी माँग उसकी यह थी कि उसके कलकत्ता कार्यालय को बंगालियों से खाली कराया जाय। भारत सरकार ने आज यह माँग भी ठुकरा दी। सरकारी प्रवक्ता ने कहा—हम पाकिस्तानी कार्यालय पर शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकते। यह पाकिस्तान का घरेलू मामला है। प्रवक्ता ने यह विचार पाक हाई कमिश्नर श्री सज्जाद हैदर को बुलाकर सुनाये। साथ ही यह भी बताया कि पाक का यह आरोप निराधार है कि भारत ने उन दोनों राजनयिकों को स्थानान्तरित किया है। यह आरोप ७ अप्रैल को पाकिस्तान ने लगाया था।

भारत सरकार ने ढाका से अपने दूतावास के कुछ कर्मचारियों और उनके बाल-बच्चों को वापस लाने का निश्चय किया। उस समय भारतीय कार्यालय में १५० कर्मचारी थे। भारत सरकार ने बताया कि ढाका में उनकी सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं है और कई दिन से दूतावास से कोई सम्पर्क नहीं हो पा रहा।

स्थल सेनाध्यक्ष जनरल श्री मानिकशाह ने आज त्रिपुरा की सीमा का निरीक्षण किया जहाँ कि कई स्थानों पर पाक सैनिक कुछ सौ गज की दूरी पर जमे हुए थे।

ब्रिटिश प्रतिक्रिया

ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री हीथ ने आज कामन्स सभा में बताया कि हम बंगला देश के संघर्ष का राजनैतिक हल चाहते हैं। उनसे लिबर संसद सदस्य श्री विलियम हैमिल्टन ने यह अनुरोध किया था कि बंगला देश के नर-सँहार के लिये वे पाकिस्तान सरकार की निन्दा करें। उसी समय प्रतिपक्ष के नेता श्री हैरल्ड विल्सन ने पूछा—क्या प्रधानमंत्री पाकिस्तान पर हत्याकाण्ड के जो आरोप लगाये जा रहे हैं, उसकी सच्ची रिपोर्ट जानने के लिये निष्पक्ष पर्यवेक्षक भेजने को पाक सरकार को लिख रहे हैं जवाब में श्री हीथ ने कहा—श्री याहिया खाँ से जो मेरी बातचीत हुई है, उसका विवरण देने के लिये मुझे विवश न किया जाय।

आज हार्वर्ड विश्वविद्यालय की रिपन सोसायटी ने पूर्वी बंगाल में पाकिस्तान के शासकों को, एक देश की दूसरे देश पर हमला करने की कार्रवाई बताते हुए कहा—उसका उद्देश्य एक जनता की चुनी हुई सरकार को उखाड़ना है और जनता को दास बनाना है। बुद्धिजीवियों और विद्वानों की इस संस्था ने घोषणा की कि वहाँ की जनता ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी है। अब यह समय बतायेगा कि उनको सफलता मिलने तक वहाँ कितना विनाश होता है और कितनी मौतें और होती हैं। अमेरिका के बारे में कहा गया कि वह इस संघर्ष में तटस्थ नहीं है। यदि वह तटस्थ है तो पाकिस्तान को हथियार भेजना बन्द करे और आर्थिक सहायता में कटौती करे।

आज जापान के प्रसिद्ध पत्र 'असाही शिम्बून ने बंगला नर-संहार पर दुःख प्रकट करते हुए लिखा—दुख प्रकट करना पाकिस्तान के घरेलू मामले में हस्तक्षेप नहीं है। वहाँ सारा मामला बातचीत द्वारा तय हो जाना चाहिये।

पाकिस्तान में

पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष श्री भुट्टो ने माँग की कि मुझे पाक का प्रधान मंत्री बनाना चाहिये और बंगला देश में शान्ति कायम होने तक गवर्नरी राज रखा जाय। श्री भुट्टो ने दलील दी कि अवामी लीग गैर कानूनी करार दी जा चुकी है और उसके बाद बहुमत मेरी पार्टी को मिला था। अतः मैं ही प्रधानमंत्री पद का असली हकदार हूँ।

२१ अप्रैल का दिन

आज रेडियो पाकिस्तान ने बंगला देश के स्थानापन्न राष्ट्रपति श्री नजरुल

इस्लाम और प्रधान मंत्री श्री ताजुद्दीन के खिलाफ विभिन्न आरोप लगाते हुए समन जारी किये कि पूर्वी पाकिस्तान सरकार के सामने उपस्थित हों। पूर्वी पाकिस्तान के सैनिक प्रशासक श्री टिक्का खाँ ने कहा—यदि वे उपस्थित नहीं हुए तो उनकी गैर हाजिरी में फैसला किया जायेगा।

कोमिल्ला में अपने २० घायलों को पाकिस्तानी सेना ने गोली मार दी। चुआडांगा में आज जीप में सवार चीनी आफिसर पाकिस्तानी सेना के साथ देखे गये।

बंगला छापामारों ने आज जगह-जगह अपने हमले तेज किये और मैमनसिंह में घिरी अपनी एक कम्पनी को बचाने के लिये तीन ओर से बढ़ती हुई पाकिस्तानी सेना को रोक दिया। इनमें जयदेवपुर से बढ़ने वाला दस्ता भी रोका गया और भैरव बाजार से बढ़ने वाले दस्ते को भी किशोरगंज में रोका। तीसरा दस्ता मेघुपुर में रुका।

पाकिस्तानियों ने आज कुष्टिया के आसपास गाँव जलाये और ५ हजार स्त्री-पुरुषों की हत्या की। साथ ही वायरलैस से मुक्ति सेना के कमांडर मुशर्रफ को चेतावनी दी कि पाकिस्तानी सेना से छेड़छाड़ का नतीजा भुगतना पड़ेगा। आज ही कस्बा की लड़ाई में चार पाकिस्तानी टैंक तोड़े गये।

पाकिस्तान ने चटगाँव के नजरबन्दी शिविर में आज तक २५ हजार लोग इकट्ठे किये। इस यातना शिविर में हिन्दू और अवामी लीग समर्थक लोग तथा वे परिवार शामिल थे, जिन्हें लीगी मुजीब समर्थक बताते थे। पहले इनके घरों को लूटा गया और बाद में आग लगा दी गयी।

पाकिस्तानियों ने काम करने से इन्कार करने पर कस्बे के पास २० मल्लाहों को भी गोली मारी। आज दो कस्बे मुक्तिवाहिनी के हाथ से निकल गये। एक दीनाजपुर जिले का पाचागढ़ और दूसरा राजशाही जिले का नवाबगंज।

सिलहट मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल को घर से निकाल कर गोली मारी गयी।

बंगला देश नेशनल असेम्बली के सदस्य श्री रऊफ ने भारत से हथियारों की माँग की। उन्होंने बताया कि पाकिस्तानी मोर्टरार छः मील तक मार करते हैं। हमारे पास बहुत पुराने हथियार हैं, हम मुकाबला कब तक कर सकते हैं। सुतार कण्डी में ५०० लड़कियों ने 'रोशनारा दल' नाम से एक छापामार दल का गठन किया।

पाकिस्तान ने आज विगत जनवरी में भारतीय हवाई जहाज का अपहरण करने वाले अशरफ कुरेशी और हाशम कुरेशी को गिरफ्तार कर लिया और उनके विरुद्ध जाँच करने की घोषणा की।

भारत में

कलकत्ता में पाकिस्तान की ओर से नियुक्त नये हाई कमिश्नर श्री मेंहदी मसूद दिल्ली से कलकत्ता पहुंचे।

बंगला देश के बारे में पाँच दिन तक भारतीय अधिकारियों से बातचीत करने के बाद सोवियत राजदूत श्री निकोलाई अपनी सरकार से सलाह-मशवरा करने मास्को गये।

इस्लामाबाद स्थित भारतीय हाई कमिश्नर श्री पी० के० आचार्य को पाकिस्तान सरकार ने एक नोट दिया जिसमें लिखा था—भारतीय सेना हेली नामक स्थान पर भारी तोपों से गोलाबारी कर रही है।

भारत ने सौ पाक सैनिक आज अपनी सीमा पर पकड़े।

ढाका से भारतीय दूतावास के कर्मचारियों को निकालने के लिये जाने वाले नैपाली वायुयान को पाकिस्तान ने इजाजत देने से इन्कार कर दिया। पाकिस्तान ने कहा—निकासी केवल पाकिस्तान इन्टर नेशनल लाईन के वायुयानों द्वारा कराची के रास्ते ही हो सकती है। जबकि तीन नैपाली कर्मचारियों को नैपाल का विमान दो दिन पहले ही लाया था।

आज पश्चिमी बंगाल मुस्लिम लीग ने बंगला देश के आन्दोलन का समर्थन करने से इन्कार कर दिया।

बंगला देश के हाई कमिश्नर श्री हुसैन अली ने भारत सरकार और पश्चिमी बंगाल की सरकार से अपने दूतावास को सहूलियतें देने की मांग की।

नैपाल छात्र संघ ने आज बंगला देश में कत्लेआम की निन्दा की।

आज पश्चिमी बंगाल सरकार ने शरणार्थी समस्या पर विचार करने के लिये तीन व्यक्तियों की एक समिति बनाई। इस समिति में पुनर्वास मंत्री श्री आनन्द मोहन विश्वास, स्वास्थ्य मंत्री डा० जैनुल आब्दीन और तीसरे व्यक्ति थे लोक कर्म मंत्री श्री सन्तोष रे।

कलकत्ता में क्रांतिकारी सोशलिस्ट पार्टी के महासचिव श्री त्रिदिव चौधरी ने श्रीमती गाँधी को तार भेजकर कहा कि मैंने सीमा की जो स्थिति देखी उससे लगता है जल्दी ही १० लाख शरणार्थी और आयेंगे। अतः सरकार को सहायता का बोझ बांटने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास, मित्र देशों और राष्ट्रसंघ पर जोर डालना चाहिये। श्री जैनुल आब्दीन ने बताया कि मुर्शिदाबाद में पाकिस्तानियों द्वारा घायल किये बंगला लोग आ रहे हैं, जिन्हें बैरामपुर अस्पताल में भर्ती किया जा रहा है। इस समय दीनाजपुर में दो लाख और मेघालय में १० हजार शरणार्थी हैं।

ब्रिटेन में

लन्दन में श्रमिक नेता लार्ड ब्रोकवे ने बंगला देश हत्याकाण्ड की निन्दा की और उसे विश्व में सबसे क्रूर वहशियाना कत्लेआम बताया जिसके आगे हिटलर का हत्याकाण्ड और वियतनाम में अत्याचार भी फीके पड़ गये हैं।

२२ अप्रैल की स्थिति

आज मौलाना भाषानी ने श्री निक्सन-चाऊ और श्री माओ से बंगला देश में हो रहे कत्लेआम को रोकने की अपील की और यह भी बताया कि बंगला क्रांति में भारत का कोई हाथ नहीं है। वहां बे मिसाल जुल्म हो रहे हैं। खुला कत्लेआम हो रहा है और बंगला जनता विगत २३ वर्षों से अपनी आजादी का संघर्ष करती आ रही है। याहिया अपने को मुसलमान कहता है, लेकिन नमाज पढ़ते मुसलमानों की हत्या करा रहा है। *मस्जिदों को वेश्यालय बना दिया गया है, जिनमें हिन्दू और मुस्लिम—दोनों* ही धर्मों की महिलाओं से बलात्कार होता है।

आज कोमिल्ला छावनी में खाने के सवाल पर २० पाक सैनिक आपस में ही लड़ मरे।

खुलना की अवामी लीग के अध्यक्ष श्री सिद्दीकी कुरमुन्शी के परिवार के सभी १३ व्यक्तियों को पाकिस्तानियों ने संगीनें भोंककर मार दिया। मरने वालों में उनकी दो भतीजियाँ भी थीं।

आज मुक्ति सेना के सामने अखौरा क्षेत्र में गंगा सागर के पास ५० पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया जिन्हें पूछताछ के लिये अन्यत्र ले जाया गया।

भारत में

कलकत्ता में पाक के नये डिप्टी हाई कमिश्नर श्री मेंहदी मसूद के होटल के सामने विशाल प्रदर्शन हुआ। सरकार ने उन्हें वहाँ से दूसरे होटल पहुँचाया। बाद में पश्चिमी बंगाल के मुख्य सचिव श्री एन० सी० गुप्ता से उन्होंने लगातार ५ घण्टे तक बातचीत की और बाद में बाहर आकर पत्रकारों से बताया—मैं यहाँ रहने आया हूँ—जाऊँगा नहीं।

श्री मेंहदी मसूद को श्री गुप्ता ने बताया—हमारे देश का किराया कानून कुछ ऐसा है कि किरायेदार से मकान खाली कराया ही नहीं जा सकता। अतः पाकिस्तान दूतावास को बंगला अधिकारियों से खाली कराना मुश्किल है, आप चाहें तो कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं।

भारत सरकार को आज पाकिस्तान सरकार ने धमकी दी कि यदि उसने

कलकत्ता दूतावास से विद्रोही बंगाली अधिकारियों को नहीं निकाला तो इसके परिणाम भयंकर होंगे।

ब्रिटेन के मजदूर दल के संसद सदस्यों, जान स्टोन हाउस और श्री डगलस मान ने सीमा शिविरों का निरीक्षण करने के बाद अपने बयानों में कहा—इस अभूतपूर्व नर-संहार की निन्दा सारा संसार करेगा। हम लोग समस्या के हल का यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। बंगला देश में भयानक हत्याकाण्ड हुआ है, यह कोई प्रचार की बात नहीं है, असलियत है। वस्तुतः पूर्वी बंगाल अब पाकिस्तान का अंग नहीं रहा।

आज आस्ट्रेलिया रेडियो ने भी पाकिस्तान को गम्भीर परिणामों की चेतावनी दी।

२३ अप्रैल का दिन

आज ठाकुर गांव में रंगपुर के पास ६०० पाक सैनिक मारे गये और १ जीप तथा ट्रक मुक्ति सैनिकों ने छीन लिया। "इन्टोलाजिकल" ज्योतिष पत्रिका ने भविष्यवाणी की कि पाक के बंगला देश में अब गिने चुने दिन हैं।

बंगला देश सरकार ने आज अपने देश के मीर जाफरों को कड़ी चेतावनी दी कि साम्प्रदायिकता फैलाने, लूटमार कत्ल करने और पाकिस्तानी सैनिकों को सहायता देने पर कड़ी सजा दी जायेगी।

आज खुलनातगर क्षेत्र के खालिदपुर के अखबारी कागज के कारखाने के ५०० मजदूरों को पाक सेना ने गोली मार दी। गोलियाँ कतार में खड़ा करके मशीनगनों से मारी गयीं।

पठान कर्नल शाम्स ने अपना एक नया हत्या शिविर चालू किया। अवामी लीग के सब-डिवीजन सचिव सैयद कमाल बख्त का घर फूंका गया।

आज बंगला छापामारों ने सिलहट से चटगांव तक जगह-जगह हमले किये और पाकिस्तानी वायु सेना ने फेनी पर बमबारी की।

विदेशी प्रतिक्रिया

आज सोवियत प्रधान मंत्री श्री कोसिगिन का पत्र याहिया खां को मिला।

ब्रिटेन के भूतपूर्व परराष्ट्र तथा राष्ट्रमण्डल मंत्री श्री माईकेल स्टुअर्ट ने बंगला देश में नर-संहार रोकने के लिये तुरन्त राष्ट्रमंडलीय कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा—बंगला देश तथा बायफ्रा की स्थितियों में समानता नहीं है। बंगला देश की जनता पाकिस्तान की कुल जनता की संख्या से आधे से अधिक है। जनता आजादी का झंडा लेकर उठ खड़ी हुई है और सेना की कार्रवाई अंधाधुंध हिंसात्मक है।

ब्रिटेन के राजनीतिक श्री वुडरो ने ब्रिटिश सरकार से मौन तोड़ने की माँग की। उन्होंने कहा—बंगला देश एक राष्ट्र है और एक राष्ट्र का दमन घरेलू मामला नहीं कहा जा सकता।

भारत में

कलकत्ता में नये पाकिस्तानी डिप्टी हाई-कमिश्नर श्री मेंहदी मसूद के विरुद्ध आज फिर उग्र प्रदर्शन हुए। शाम के प्रदर्शन के बाद उन्हें स्मरण पत्र भेज कर माँग की कि आपवापस चले जाओ।

आज बंगला देश सीमा पर दस किलोमीटर क्षेत्र भारत सरकार ने नागरिकों के लिये निषिद्ध घोषित कर दिया। यह कदम पाक तोपों की मार से बचने के लिये उठाया गया था।

आज पाक सैनिकों की गोलाबारी से पश्चिमी दीनाजपुर जिले की एक चावल मिल नष्ट हो गयी और एक भारतीय मजदूर मारा गया।

पुरानी कांग्रेस के अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा ने आज सरकार से बंगला देश को मान्यता देने की माँग की।

शरणार्थियों की लगातार बाढ़ को देखते हुए असम सरकार ने केन्द्र सरकार से अधिक सहायता देने की माँग की।

२४ अप्रैल की राजनैतिक स्थिति

पाकिस्तान ने आज कलकत्ता में अपना और ढाका में भारत का उच्चायुक्त का कार्यालय बन्द करने का फैसला कर लिया। अब भारत का राजनैतिक सहबन्ध केवल पश्चिमी पाकिस्तान से रह गया। भारत सरकार ने पाकिस्तान की इस घोषणा पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी और दोनों स्थानों के कर्मचारियों की पापसी पर बातचीत शुरू हो गयी।

पाकिस्तान के नये डिप्टी हाई कमिश्नर श्री मेंहदी मसूद ने कलकत्ता से काठमांडो जाने का प्रयत्न किया; लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय सेवा के विमान ने उन्हें सीट देने से इन्कार कर दिया।

भारत सरकार ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि यदि उसने सीमा पर छेड़-खानी जारी रखी तो उसका परिणाम भुगतने के खिये तैयार रहे।

आज पंजापोल के पास भारतीय ग्रामों पर ५ मील तक पाकिस्तानी तोपखाने ने एक घण्टा गोलावारी की।

लन्दन में आज बंगला देश की स्थायी सरकार के दूत श्री जकारिया चौधरी ने बताया कि पाकिस्तान सरकार मेरे देश को भूखा मार कर घुटने टिकवाना चाहती

है। जितनों का उसने कत्ल किया है उससे अधिक भूखे मर जायेंगे। उन्होंने कहा—जो सहायता राष्ट्रसंघ आदि दे वह पाकिस्तान के हाथों में न सौंपे। उन्होंने पत्रकारों से कहा—अब तक हम असंगठित होकर लड़ रहे थे, अब संगठित होकर लड़ेंगे।

उन्होंने कहा—यह गृह-युद्ध नहीं है, एक शक्ति के विरुद्ध औपनिवेशिक युद्ध है जिसे हम विगत २३ वर्ष से चला रहे हैं। भारत हमारा पड़ौसी है; लेकिन न हमें उससे माल खरीदने दिया जाता है और न उसे बेचने दिया जाता है। बंगला देश की धरती से जब पाकिस्तानी सेना खदेड़ दी जायेगी तब भारत से हमारे सम्बन्ध गहरे हो जायेंगे। हम सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा भौगोलिक सभी दृष्टियों से भारत के साथ हैं। उन्होंने कहा—पाकिस्तान का यह कहना कोरी बकवास है कि भारत हमें नचा रहा है।

२५ अप्रैल का तनावपूर्ण दिन

आज भारत सरकार ने पाकिस्तान को अल्टीमेटम दिया कि वियना समझौते के अनुसार ढाका में अपने उप-उच्चायुक्त कार्यालय को बन्द करने तथा उसके कर्मचारियों को स्वदेश लौटने की हर सहूलियत दी जाय। भारत ने दूसरे दिन साढ़े ग्यारह बजे तक स्पष्ट उत्तर देने की पाकिस्तान से मांग की और बताया कि सन्तोषजनक उत्तर के बाद ही पाकिस्तान के कलकत्ता स्थित दूतावास को उसी तरह की सहूलियतें देंगे और रात को १२ बजे दोनों ओर के कार्यालय बन्द हो जायेंगे।

पाकिस्तान के भूतपूर्व राष्ट्रपति अय्यूब खाँ हृदय रोग का इलाज कराने अमेरिका चले गये।

कलकत्ता से बंगला देश छात्र संघ (जो पहले पूर्व पाकिस्तान छात्र संघ था) ने बंगला देश सरकार से अपील की कि पाकिस्तानी हमलावरों के मुकाबले के लिये मजबूत राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा कायम किया जाय।

गेहूँ से लदा यूनानी जहाज 'तल्पा' चटगांव से वापस कराची लौटा दिया गया।

आज काठमांडू में पाक विरोधी प्रदर्शन हुए।

लन्दन के डाक्टर मजूमदार ने ब्रिटेन में लगभग ६०० बंगाली डाक्टरों की एक एसोसियेशन बनाई जिसने बाद में बंगाली डाक्टरों को सहायता भेजनी शुरू की।

कलकत्ता विश्वविद्यालय ने बंगला देश से आने वाले कालिज अध्यापकों को राज्य में अतिथि अध्यापकों के रूप में नियुक्त करने का फैसला किया।

बंगला देश में

अखौरा में स्वतन्त्रता सेनानियों ने ६० पाकिस्तानी सैनिक मारे। पूर्वी क्षेत्र में खोवाई और सुतांग नदियों के पुल उड़ा दिये; लेकिन जैसोर जिले में कोट चाँदपुर

पर पाकिस्तानी सेना ने पुनः कब्जा कर लिया और फरीदपुर को लूटा। कोमिल्ला में कर्फ्यू उठाने की घोषणा के बाद लोगों को घरों से निकलते ही मशीनगनों से भून दिया गया।

वोगरा स्कूल के शिक्षक असलुज्जक के दसवीं कक्षा के छात्र ने चार मुक्ति सैनिकों के साथ मिलकर पाकिस्तानी सैनिकों का मुकाबला किया और प्राणों की बलि दे दी। इसके बाद २३ छात्रों ने मुकाबला करके अपने प्राण दिये।

२६ अप्रैल की विशेष घटनाएँ

राज्य सभा में विरोधी दल के नेता श्री एम० एस० गुरुपाद स्वामी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव श्री ऊ थांट से बंगला देश में प्रेक्षक भेजने की माँग की।

भारत सरकार ने आज सभी पाकिस्तानी राजनयिक अधिकारियों तथा उनके परिवारों पर यह प्रतिबन्ध लगा दिया कि वे भारत सरकार से अनुमति लिये बिना पाकिस्तान नही जा सकते। यह प्रतिबन्ध आज छः बजे से लागू हो गया। भारत सरकार ने बताया कि यह प्रतिबन्ध इस्लामाबाद के शरारतपूर्ण रुख का उत्तर है। वह ऐसा प्रतिबन्ध पहले ही बिना भारत सरकार को सूचना दिये, भारतीय राजनयिक पर लगा चुकी है।

पाकिस्तान द्वारा लगाये इस प्रतिबन्ध का पता तब चला, जब ढाका स्थित भारतीय उप-उच्चायुक्त की पत्नी श्रीमती सेन गुप्ता तथा भारतीय डाक हरकारे को कराची हवाई अड्डे पर रोकने का यत्न किया गया। भारत सरकार ने इस पर कड़ा विरोध प्रकट किया तथा दोषी अधिकारियों को सजा देने और उनसे माफी मंगवाने की माँग की।

पाकिस्तानी सेना ने आज चिलावाटी सीमा के सामने भारतीय क्षेत्र में डेढ़ मील भीतर अन्दर एक भारतीय नागरिक को उसके घर में गोली मार दी।

आज भारत सरकार ने स्पष्ट शब्दों में पाकिस्तान की इस माँग को रद्द कर दिया कि कलकत्ता स्थित उप-उच्चायुक्त कार्यालय के सभी कर्मचारियों और अधिकारियों को पाकिस्तान लौटाया जाये।

विदेशों में

संयुक्त राष्ट्रसंघ में पाकिस्तान के उप-वाणिज्य दूत श्री ए० एच० महमूद अली ने आज अपने पद से इस्तीफा दे दिया और बंगला देश की सरकार के प्रति निष्ठा व्यक्त की।

याहिया के एक विशेष दूत श्री अरशाद हुसैन ने आज मास्को में श्री कोसीगिन

ब्रिटिश और न्यूजीलैंड के संसद सदस्य श्री ब्रून डगलस मैन और श्री यंग ने अपने-अपने देश की सरकारों से बंगला देश को मान्यता की मांग की ।

बंगला देश में

सितारन नदी पर मुक्ति सैनिकों ने ५० पाक सैनिक मारे । बाद में पाक सेना ने मैमनसिंह और तोंगल पर कब्जा कर लिया । कोमिल्ला क्षेत्र में लक्ष्मण स्टेशन के पास बढ़ती पाक सेना को बंगला गुरिल्लों ने खदेड़ दिया । मुक्ति सैनिकों ने खुलना के रेडियो स्टेशन पर धावा बोला जिस पर पाकिस्तानी फौज का कब्जा था ।

पंचगढ़ में आज पाकिस्तानियों ने १०० निरीह व्यक्तियों को भून दिया ।

२७ अप्रैल—भारत का ३६ घंटे का अल्टीमेटम

पाकिस्तानी सैनिक शासकों द्वारा ढाका स्थित भारतीय उप-उच्चायुक्त तथा सभी कर्मचारियों को घरों में नजरबन्द किये जाने पर भारत सरकार ने ३६ घंटे के अन्दर पाकिस्तान से जवाब माँगा कि वह भारतीय कर्मचारियों को लौटाना चाहता है या नहीं ।

भारत सरकार ने साथ ही पाकिस्तानी उप-उच्चायुक्त और उसके साथियों पर पुलिस का पहरा बिठा दिया ।

आज इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायुक्त श्री आचार्य ने प्रधानमंत्री को वहाँ की स्थिति बताई और उनकी वापसी रुक गयो ।

आज पूर्वी सीमा पर पाकिस्तानी सैनिकों और भारतीय सीमा सुरक्षा दल में गोली चली । पाकिस्तानी सेना ने चौबीस परगना के गांव लक्ष्मीपुर पर गोली चलानी शुरू कर दी थी ।

पाकिस्तान में

कराची, सिन्ध, हैदराबाद और मीरपुर से बंगला देश की महिलाओं की बिक्री के समाचार मिले ।

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष श्री भुट्टो रावलपिंडी में श्री याहिया खां से मिले ।

पाकिस्तान रेडियो ने आज फिर यह घोषणा की कि पूर्वी पाकिस्तान में भारतीय लोग लड़ रहे हैं ।

बंगला देश में

श्री ए० एच० एम० कमरुजमां ने आज मुजीब नगर में पत्रकारों से कहा—हमारा संघर्ष पाकिस्तान से मुक्ति के बाद ही समाप्त होगा । उन्होंने अपने देश की

मुस्लिम लीग की गद्दारी और राष्ट्रसंघ की निन्दा की।

आज अपनी छापामार कार्यवाही में मुक्ति सेना ने ५० पाक सैनिक मारे।

अमेरिकी तथा ब्रिटिश परराष्ट्रमन्त्री श्री विलियम रोजर्स व डगलस ह्यूम में लन्दन में बंगला देश की समस्या पर बातचीत हुई।

२८ अप्रैल की स्थिति

आज कूचबिहार की गीतलदह सीमा के निकट काशपचाई भारतीय बस्ती के ३१ व्यक्तियों को पाकिस्तानी सेना ने मार दिया और त्रिपुरा में बेलोनिया और सोनमुरा चौकियों पर गोलाबारी की। नीलफामारी सबडिवीजन के कालीगंज में भारतीय सीमा की ओर आते २५० शरणार्थियों को पाकिस्तानी सेना ने गोलियां मार दीं।

भारत सरकार ने पिंडी को इन हमलों के विरोध में कड़ा विरोधपत्र दिया और पाकिस्तान का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया कि ढाका से भारतीय कर्मचारी नैपाली विमान द्वारा काठमांडू ले जाये जायें और पाकिस्तानी कर्मचारी सीधे कराची भेजे जायें।

आज तक २० लाख शरणार्थी भारत आ गये। पुरानी कांग्रेस के महामंत्री श्री श्यामधर मिश्र ने सरकार से बंगला देश की मान्यता की मांग की।

बंगला देश में

जैसोर के नवरोन में मुक्ति सेना ने तीन सौ पाक सैनिक मौत के घाट उतारे और शाहबाजपुर पर कब्जे के प्रयत्न में ५० पाक सैनिक और मरे। लेकिन सिराजगंज और मदारीपुर में पाकिस्तानी सेना घुस गयी तथा ब्राह्मणबेरिया के निकट माधवपुर पर भी कब्जा कर लिया।

विदेशों में

लन्दन में आज ब्रिटिश संसद के लेबर सदस्य श्री डगलस मान ने पाकिस्तान की सैनिक कार्रवाई को आक्रमण बताया और संयुक्त राष्ट्रसंघ से कत्लेआम रोकने की माँग की।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के एक प्रवक्ता ने आज बताया कि शरणार्थियों की सहायता के लिये भारत द्वारा की गयी अपील पर श्री ऊ थांत ने विशिष्ट संस्थाओं के अध्यक्षों के साथ आज विचार विमर्श किया।

आज 'डेली टेलीग्राफ' के संवाददाता श्री डेविड ने कहा, पाकिस्तान को बंगला देश खाली करना ही होगा।

२९ अप्रैल

पाकिस्तान हाई कमीशन से नाता तोड़ कर बंगला देश का समर्थन करने वाले श्री शहाबुद्दीन और श्री हक बंगला देश सरकार से बातचीत करके दिल्ली आये।

चीन ने पाकिस्तान को और सैनिक सामान भेजा। पाकिस्तानी सेना के २०० जवान आज और मारे गये। पाकिस्तान का बारीसाल पर कब्जे का यत्न विफल हुआ। ९०० शरणार्थियों को भारत आते हुए फिर पाकिस्तानियों ने भून दिया।

आज पाकिस्तानियों ने अपनी यह जिद छोड़ दी कि कलकत्ता के दूतावास के सभी कर्मचारियों को पाकिस्तान भेजा जाये।

३० अप्रैल का दिन

कूचविहार जिले के पीतलदेह के पास १५० भारतीयों को हमला करके पाकिस्तानियों ने मार दिया। २६ और २७ अप्रैल को भी पाकिस्तानियों ने यहां हमला किया था।

पाकिस्तान सरकार ने आज ढाका स्थित उप उच्चायुक्त के कार्यालय तथा उन पर से सारे प्रतिबन्ध हटा लिये।

अंकारा में हो रही सेंटो संगठन की बैठक में पाकिस्तान ने भारत पर आरोप लगाया कि वह पाकिस्तान के आंतरिक मामलों में दखल दे रहा है।

पाकिस्तान के गेहूँ से लदे दो जहाज आज कलकत्ता में रोक लिये गये।

बंगला शरणार्थियों के लिये भारत सरकार ने आज २० नये शिविर कायम किये।

मुजीबुर्रहमान नामक एक मुक्ति सेना के सूबेदार ने १५० पाक सैनिक मार कर वीरगति प्राप्त की। मौलवी बाजार पर पाक सेना का अधिकार आज हो गया। गोलड से भी मुक्ति सेना हट गयी। सुभाषपुर पुल पर १०० पाक सैनिक मारे गये।

१ मई का दिन

आज पाकिस्तान ने अपना विदेशों का ऋण ६ महीने तक चुकाने से इन्कार कर दिया।

बंगला देश से आये २५० सैनिकों ने आज भारतीय सीमा सुरक्षा दल के सामने आत्मसमर्पण किया।

भारत में पाक जासूसों को पकड़ने के लिये कानून बना। आज पाकिस्तानी

गोलाबारी से ७ भारतीय घायल हुए.

वंगला देश में

पाकिस्तान ने बच्चों को नपुंसक बनाने के इंजेक्शन शुरू किये।

आज मुक्ति सेना ने इच्छाखाली चौकी पर कब्जा कर लिया।

२ मई की स्थिति

आज मुक्ति सेना ने कस्बा से फिर पाक सैनिक खदेड़ दिये। पाकिस्तानियों ने आज चटगांव के बौद्धों को कत्ल किया। पाकिस्तानी कमांडर एजाज आज मारा गया।

पाक सेना ने आज भारतीय नगर साबरम और राधिकापुर पर गोलाबारी की और उसके वायुयानों ने सीमा का अतिक्रमण किया।

उ० प्र० सरकार ने वंगला देश को मान्यता का प्रस्ताव पास किया।

३ मई

मुक्ति छापामारों ने जगह-जगह बिखरी पाकिस्तानी सेना को ढाका की ओर धकेलना शुरू किया।

वंगला देश मिशन द्वारा घोषणा की गयी कि श्री शहाबुद्दीन को दिल्ली में वंगला देश कार्यालय का प्रधान नियुक्त किया जाता है।

४ मई का विशेष दिन

प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने आज अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से शरणार्थियों को सहायता देने की अपील करते हुए कहा कि भारत इनका अकेले भार उठाने में असमर्थ है। उन्होंने कहा--उन्हें स्थायी रूप से बसाने का कोई विचार नहीं है। समस्या का हल होते ही उन्हें भेज दिया जावेगा।

मुक्ति सेना ने आज विभिन्न मुठभेड़ों में २ हजार पाकिस्तानियों को मौत के घाट उतारा।

आज निश्चय हुआ कि ढाका से भारतीय कर्मचारियों को दिल्ली और कलकत्ता से पाकिस्तानी कर्मचारियों को कराची पहुँचाने के लिये दो रूसी जहाज आयेंगे।

आज ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री एडवर्ड हीथ ने कामन्स सभा में यह मांग फिर रद्द कर दी कि पाकिस्तानी सहायता बन्द कर दी जाय।

५ मई—भारत की चेतावनी

भारत सरकार ने आज पाकिस्तान को फिर गम्भीर चेतावनी दी कि यदि उसने हमारी पूर्वी सीमा पर गोलाबारी बन्द नहीं की तो परिणाम गम्भीर होंगे।

पाकिस्तान सरकार ने आज घोषणा की कि मुजीब जीवित है और स्वास्थ्य अच्छा है।

मुक्तिवाहिनी ने तंगेल और रायगढ़ पर फिर कब्जा किया।

आज पाकिस्तान ने ऐलान किया कि जब तक विद्रोही बंगला देश वालों से मेंहदी मसूद अलग-अलग बातें नहीं कर लेते, तब तक कर्मचारियों की अदला-बदली नहीं होगी।

आज भारत सरकार ने पाकिस्तान से मांग की कि बार-बार हमारी पूर्वी सीमा पर गोलियां चलाने से जो हमारी हानि हुई है, उसकी क्षतिपूर्ति करे। अन्यथा इसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

६ मई की घटनाएं—फिर विरोध-पत्र

संयुक्त राष्ट्रसंघ के शरणार्थी उच्चायोग के तीन प्रतिनिधि शरणार्थियों की मदद करने के बारे में बातचीत के लिये दिल्ली आये, यह प्रतिनिधि थे—श्री चार्ल्स मेस, श्री टी० जेनिसन और डा० पाल वेड्स।

चटगांव के पहाड़ी क्षेत्र के एक कबीले के राजा श्री यांग फू सेन त्रिपुरा के शरणार्थी शिविर में शरणार्थी बन कर आये।

श्रम और पुनर्वास मंत्री श्री खाडिलकर ने आज एक पत्रकार गोष्ठी में कहा—शरणार्थियों की जिम्मेदारी राष्ट्रसंघ को संभालनी चाहिये। आपने कहा कि विदेशियों का यह कहना गलत है कि मुक्ति संग्राम टूट गया है। वास्तविकता यह है कि लड़ते समय टुकड़ियों को हथियार मुहैया करने और उनके गठन में समय लगता ही रहता है।

आज पाकिस्तानी सेना के भारतीय सीमान्तों पर कार्य संभालने का समाचार मिला।

नयी दिल्ली के पाकिस्तानी हाई कमीशन के सब बंगालियों को ड्यूटी से यह कहकर हटा दिया कि उनका तबादला दूसरी जगह किया जा रहा है।

नयी दिल्ली में बंगला देश छात्रसंघ के अध्यक्ष श्री नूरुल इस्लाम ने युवकों

से अपील की कि वह बंगला देश के लिये जनमत तैयार करें।

वंगला छापामारों ने आज पाकिस्तानियों के कई रसद मार्ग काट दिये।

७ मई—प्रधान मन्त्री का वक्तव्य

आज प्र धानमन्त्री ने स्पष्ट कर दिया कि भारत वंगला देश को शीघ्र मान्यता नहीं देगा। यह बात उन्होंने विरोधी दलों के नेताओं से कही। उन्होंने कहा—हमने कई मित्र देशों से मान्यता देने पर बातचीत की; लेकिन कोई तैयार नहीं हुआ। अभी रुका जाय और स्थिति को देखा जाय। इस बैठक में डा० कर्णसिह और मुस्लिम लीग के इस्माइल को छोड़कर शेष सभी नेताओं ने मान्यता की मांग की। श्रीमती गांधी ने कहा— जहां तक वंगला देश वालों की सहायता का प्रश्न है, वह दी जा रही है; लेकिन मान्यता का प्रश्न जल्दबाजी में हल नहीं किया जायगा।

आज मंत्रिमण्डल की बैठक में भी इस प्रश्न पर विचार हुआ। वंगला देश विधान सभा ने भी आज मान्यता और सहायता देने का प्रस्ताव पास किया।

बिरोधी दलों के नेताओं ने भी आज अपनी वैठक अलग बुलाकर सहायता देने पर विचार किया।

देश के ४४ लेखकों और बुद्धिजीवियों ने संसार से वंगला नर-संहार रुकवाने की अपील की। राजनयिकों की वापसी का प्रश्न आज तक हल नहीं हुआ।

आज देश में निवारक नजरवन्दी के लिये आंतरिक सुरक्षा प्रवन्ध अध्यादेश लागू हो गया जिसके अन्तर्गत किसी भी विदेशी या भारतीय नागरिक को नजरवन्द किया जा सकता है। इस अध्यादेश पर आज राष्ट्रपति ने बंगलौर में हस्ताक्षर किये।

राष्ट्रसंघीय सहायता के अन्तर्गत विस्थापितों के लिये १० लाख डालर का दुग्धचूर्ण और घी मिलने की घोषणा हुई।

—क्रेमलिन में श्री कोसीगिन ने आज भारतीत राजदूत से वंगला देश पर वार्ता की।

वंगला देश में

मैमनसिंह क्षेत्र में कालूलखाना नामक स्थान पर मुक्ति छापामारों ने आज १५ पाकिस्तानी सैनिक मारे और तेलियापाड़ा रेलवे स्टेशन पर कब्जा किए हुए ५१ पाकिस्तानी सैनिक भी लुढ़का दिए।

आज एक शरणार्थी ने लखनऊ जाते हुए वताया कि पाकिस्तानी सैनिक मार ही नहीं रहे, आँखें भी निकाल लेते हैं और शरीर से खून भी खींच लेते हैं। उन्होंने अपने पास लेटे अपने भान्जे को प्रमाण के रूप में दिखाया।

८ मई की लड़ाई

आज अखौरा क्षेत्र की लड़ाई में मुक्ति सेना ने १५० सैनिक मारे। लड़ाई के समय पाकिस्तानी गोले भारतीय सीमा में आकर फट रहे थे। वंगला देश के सियालदाह में महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के मकान को भी पाकिस्तानियों ने नष्ट कर दिया। शेख मुजीव के साथी श्री अहमद फजलुलरहमान को भी आज पाकिस्तानियों ने गिरफ्तार कर लिया। यह गिरफ्तारी ढाका में की गई।

९ मई की स्थिति

आज अखौरा क्षेत्र में चार दिन की लड़ाई के वाद मुक्ति सेना को हटना पड़ा। कमतपुर को ७० पाक सैनिकों ने लूटा। वंगला सरकार ने आज वताया कि लूटमार में लीगी और विहारी मुसलमान पाकिस्तानियों से भी आगे हैं। भारतीय सीमा पर आज भी पाकिस्तानी वायुयानों ने उड़ान की और गोलियाँ चलायीं।

१० मई का दिन—वंगला देश में

आज मुजीव नगर से 'स्वाधीन वंगला' पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। और पाकिस्तानी कमाण्डर गुलाम जलाल सहित कई सैनिक पकड़े तथा ४०० का अखौरा क्षेत्र में सफाया किया। सुनामगंज के लिये लड़ाई चलती रही। कार्यवाहक राष्ट्रपति श्री नजरुल इस्लाम ने जनता को आश्वासन दिया कि अवामी लीग ने जो वायदे किये हैं, वो पूरे किए जायेंगे।

११ मई के हमले

आज वंगाली छापामारों ने जगह-जगह पाकिस्तानियों पर हमले किये; लेकिन अखौरा चौकी पर पाकिस्तानी सेना ने कब्जा कर लिया।

१२ मई का दिन

आज लड़ाई ठंडी रही। लन्दन में ब्रिटिश मजदूर दल के नेता श्री डेनिस हेली ने वताया कि पूर्व वंगाल जैसी मिसाल इतिहास में मिलना कठिन है। उन्होंने कहा—यदि पाक को सहायता दी गयी तो वह वंगला देशवासियों को और कुचलेगा।

१३ मई की जोड़-तोड़

आज मुक्तिवाहिनी ने अगरतल्ला से कुछ मील दूर गोपीनाथपुर तथा मुनिहन्द क्षेत्रों में वढ़ती पाक सेना को रोक दिया। पाकिस्तानी सेना ने सीमा की १ मील लम्वी पट्टी के सारे गांवों को आग लगा दी।

संयुक्त राष्ट्र संघ की टीम ने फेनी नदी के किनारे जले हुए वर्वाद क्षेत्रों को देखा और रामगढ़ में लगी आग के चित्र लिये।

बैंकाक से एसोसियेटेड प्रेस के संवाददाता मोर्ट रोजर्न, जिन्हें ढाका से निकाल दिया गया था, समाचार दिया कि ५ लाख से अधिक का कत्ल तो पिछले महीने ही हो चुका था।

उत्तर प्रदेश में नयी कांग्रेस की विधायक श्रीमती हमीदा हमीदुल्ला ने कलकत्ता में सीमा क्षेत्रों से लौटकर बताया कि बंगला देश में रक्तपात और आगजनी ज्यों की त्यों जारी है। उन्होंने बताया मोनाखाली की १५० लड़कियों को पाकिस्तानी उड़ाकर ले गये। खुलना से ३०० लड़कियाँ ले गये और वहाँ के अस्पताल के ३०० कर्मचारी मारे गये तथा मेहरपुर गाँव के सारे औरतों और बच्चों का कत्ल कर गये, ५०० रिक्शा चालकों को सेना का सामान न ढोने पर गोली मार दी।

संयुक्त राष्ट्र संघ की आर्थिक और सामाजिक परिषद् की राजनैतिक समिति में भारतीय प्रतिनिधि श्री समर सेन ने बंगला देश में हो रहे नर-संहार की चर्चा करते हुए कहा—पाकिस्तान के दमन से पीड़ित शरणार्थियों की सहायता की जानी चाहिए।

आज भारत सरकार ने शरणार्थी शिविरों को सीमा से २५ मील दूर हटाने का निर्णय किया।

१४ मई—राजनैतिक हलचल

ढाका और कलकत्ता से भारतीय तथा पाक राजनयिक अधिकारियों की वापसी के सवाल पर स्विस सरकार को बीच में लेने की पाक ने अपनी माँग की स्वयं ही उपेक्षा कर दी। उसने फिर मसूद का कर्मचारियों से मिलने का सवाल खड़ा कर दिया।

नयी दिल्ली में आज सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश ने बंगला देश के सवाल पर चुप रहने वाले सभी राष्ट्रों की निन्दा की।

भारतीय सुरक्षा दल ने आज सीमा में घुसते हुए २६८ पाक गुप्तचरों को गिरफ्तार किया।

बंगला छापामारों ने आज १८६ पाकिस्तानी सिपाही लुढ़काये।

लन्दन के समाचार पत्र 'गार्जीयन' ने अपने अग्रलेख में लिखा—पाकिस्तान का विघटन निश्चित है।

१५ मई—श्रीमती गांधी का विश्वास

अगरतल्ला में आज प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने आशा व्यक्त की कि बंगला देश की जनता लोकतन्त्री सरकार कायम करने में सफल होगी और भारत उस

सरकार का स्वागत भी करेगा तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करेगा। हम पाकिस्तान के मामले में दखल देना नहीं चाहते; लेकिन चुप भी नहीं रह सकते।

मुजीब नगर में आज भारत सरकार की दहाड़ शेर की और दिल चूजे का वहां के सरकारी प्रवक्ता ने बताया।

श्री जयप्रकाश नारायण ने विश्व से नर-संहार बन्द कराने की आज फिर अपील की और मुन्शीनगर में पुरानी कांग्रेस महासमिति की मीटिंग में भारत सरकार से बंगला देश को मान्यता देने की माग की गई।

आज राष्ट्रसंघ के सदस्यों ने कहा—शरणार्थियों के बारे में भारत सरकार का प्रचार अत्यन्त शिथिल है, जबकि इस मामले में पाकिस्तान अपने झूठ को भी चमका रहा है।

आज भारत सरकार ने स्पष्ट किया कि यदि पाकिस्तानी अपने शरणार्थियों को वापस लेने से इन्कार करेंगे, तो उससे क्षतिपूर्ति के साथ-साथ उन्हें बसाने के लिए जमीन भी ली जायेगी, यह पत्र नयी दिल्ली में पाकिस्तानी उच्चायुक्त को दिया।

● हालैंड सरकार ने पाकिस्तान को जहाज देने से इन्कार कर दिया। ब्रिटेन के निर्यात गारन्टी विभाग ने स्पष्ट कर दिया कि भविष्य में जो माल पाकिस्तान को दिया जायेगा उसकी वसूली के सम्बन्ध में विभाग कोई गारंटी नहीं देगा।

● प्रतिदिन १ लाख शरणार्थी भारत में आने शुरू हो गये। भारतीय क्षेत्र पर पाकिस्तान ने फिर गोलाबारी की।

● नवाबगंज राजशाही क्षेत्र में मुक्ति सेना ने एक नया मोर्चा खोला और मुजीबनगर की ओर बढ़ती हुई पा सेना को मेहरपुर तक खदेड़ दिया।

१६ मई

लखनऊ में केन्द्रीय औद्योगिक विकास मंत्री मोइनुल हक चौधरी ने मांग की कि शरणार्थियों का खर्चा पाकिस्तान बर्दाश्त करे या उसको हथियार देने वाले देश।

दमदम हवाई अड्डे पर आज प्रधान मन्त्री ने कहा कि बंगला देश को मान्यता उसके हित को देखकर समयानुसार दी जायेगी और हथियार देने के स्थान पर उन्होंने चुप्पी साध ली।

हल्दीबाड़ी (कूचबिहार) में शरणार्थी शिविरों का दौरा करने के बाद प्रधानमन्त्री ने कहा—हमारी सरकार जो फैसला करेगी वह स्वतन्त्र होगा। हमारी कार्रवाई दूसरे देशों पर निर्भर नहीं होगी। उन्होंने कहा—भारत विश्व भर में जनमत जाग्रत करने की कोशिश कर रहा है।

१७ मई का दिन

नयी दिल्ली में बंगला देश सहायता के निरीक्षण के लिए आये राष्ट्रसंघ के एक प्रतिनिधि चार्ल्स मेस ने शरणार्थियों को मदद देने की घोषणा की। भारत सरकार ने बताया कि ६ महीने में शरणार्थियों पर होने वाले खर्च के लिये २ अरब रुपये चाहिएँ। श्री चार्ल्स ने भारत सरकार के साहस की प्रशंसा भी एक प्रेस कांफ्रेंस में की।

प्रधानमन्त्री ने पाक के इस बयान को गलत बताया कि पूर्व बंगाल में सामान्य स्थिति कायम हो गयी है। उन्होंने उपयुक्त समय पर मान्यता की बात भी कही और नैनीताल में जनता से शरणार्थियों को मदद देने की अपील की।

आज सोवियत यूनियन ने पाकिस्तान के युद्ध में कूदने का संकेत दिया।

मुनीरहाट में आज मुक्ति सेना को सफलता मिली। एक पाकिस्तानी मेजर को रंगपुर क्षेत्र के रामनगर में मार दिया गया।

१८ मई—भारत लड़ाई के लिए तैयार

रानीखेत में आज प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि भारत उसकी किसी धमकी में नहीं आयेगा। यदि हमें लड़ने के लिये मजबूर किया गया तो हम उसके लिये भी तैयार हैं। प्रधानमन्त्री ने कहा कि यदि बंगला देश की स्थिति सामान्य हो गयी है तो अब भी शरणार्थी क्यों आ रहे हैं।

श्रीमती गाँधी ने संसार के सब देशों से इस कत्लेआम को रुकवाने की अपील की और शरणार्थियों के लिये सहायता की भी माँग की।

आज चौबीस परगना के सुन्दर वन में दो भारतीय गश्ती नौकाओं पर पाकिस्तानियों ने गोलियाँ चलाकर दो व्यक्ति मार दिये।

आज भारत सरकार ने पश्चिमी राष्ट्रों को स्पष्ट सूचना दी कि यदि बंगला देश की स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो भारत को विवश होकर निर्णयात्मक कदम उठाना होगा।

आज लन्दन में भारतीय राजदूत श्री अप्पा पन्त ने प्रधान मंत्री श्री हीथ और विदेश मंत्री श्री डगलस ह्यूम से भी बातचीत की।

परराष्ट्र सचिव श्री त्रिलोकीनाथ कौल ने भी आज ईरान के प्रधानमंत्री और और विदेश मंत्री से बंगला देश की समस्या पर बातचीत की।

सोवियत यूनियन ने शरणार्थियों को ५० हजार टन चावल और चेचक के टीके देने का निर्णय किया।

पाकिस्तान ने आज भारत सरकार का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया कि स्विस प्रतिनिधि ढाका जाकर भारतीय दूतावास के कर्मचारियों की हालत देखें और यदि उन्हें कोई कठिनाई हो तो उसे दूर करने का प्रयत्न करें।

पाकिस्तानी करतूत

पाकिस्तान ने आज सीमावर्ती क्षेत्रों में दमन और तेज कर दिया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग भारत भाग सकें और संयुक्त राष्ट्रसंघ से २० लाख टन अन्न की मांग भी की, जबकि चार दिन पहले ही उसने कहा—हमें अन्न की कोई जरूरत नहीं।

बंगला देश

फेनी की ओर जाते कुछ पाकिस्तानी दस्तों को घेर कर मुक्ति सेना ने १५० पाक सैनिक मार दिये। कस्बा लेने के लिये लड़ाई जारी थी। चटगांव के क्षेत्र में आज पाकिस्तानियों ने कुछ छाताधारी सैनिक उतारे।

१६ मई का दिन

आज विश्व बैंक ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि यदि उसने मुजीब पर मुकदमा चलाया तो उसे कोई सहायता नहीं दी जायेगी।

श्री ऊ थांत ने भी आज शरणार्थियों को सहायता देने की अपील की।

आज पाकिस्तानी सेना भारतीय सीमा चौकियों से स्वतः ही हट गयी।

दूसरी ओर मुक्ति सेना सिलहट के कई अंचलों से हट गयी। उसका हटने का कारण पाक वायुसेना की भयानक बमबारी था। तेलियापाड़ा के लिये लड़ाई चलती रही।

२० मई की घटनाएँ

आज पाकिस्तान ने नदिया जिले के तीन गांवों पर गोलाबारी की और पहले दिन हटकर करीमगंज के पास फिर आ जमी।

शरणार्थियों की समस्या पर मंत्रिमण्डल में आज विचार हुआ। पत्रकारों ने आज शरणार्थी शिविरों का दौरा किया।

संयुक्त राष्ट्र एसोसियेशन के विश्व संघ के अधिवेशन में पारित एक प्रस्ताव में संयुक्त राष्ट्र तथा इसकी सदस्य सरकारों से अपील की गयी कि शरणार्थियों की सहायता करें और बंगला देश में कत्लेआम रुकवायें। अमेरिका ने बंगला देश से भारत आये शरणार्थियों की तुरन्त मदद के लिये ३७ लाख ५० हजार रुपये की अतिरिक्त राशि देने की घोषणा की।

बंगला देश में

मुक्ति छापामारों ने ढाका के आसपास हमले किये। दीनाजपुर के हाथीडोता, अखौरा तथा त्रिपुरा से कुछ मील परे ५५ पाकिस्तानी सैनिक मारे।

ब्रिटेन ने १० लाख पौंड की सहायता शरणार्थियों को देने की घोषणा की और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री हीथ ने फ्रांस के श्री पोंपेंदू से बंगला देश की समस्या पर बातचीत की।

२१ मई—भारत सरकार का निश्चय

भारत सरकार ने अपनी बैठक में निश्चय किया कि कुछ संसद सदस्यों को विदेश भेज कर सारी स्थिति समझा दी जाय और उन्हें बताया जाय कि भारत देर तक इस स्थिति को सहन नहीं करेगा।

आज मंत्रीमंडल की बैठक में अरब देशों के विपरीत रुख के बारे में भी विचार किया गया। मुक्ति सेना आज तेलियापाड़ा से पीछे हट गयी।

२२ मई—राष्ट्रसंघ में पाकिस्तान

आज संयुक्त राष्ट्र संघ में पाकिस्तान ने यह स्वीकार किया कि पूर्व बंगाल में मानव अधिकारों का हनन हुआ होगा और निरपराध पुरुष और स्त्री बच्चे मारे गये होंगे; लेकिन सरकार ऐसे विद्रोह को दबाने के लिये कोशिश कर रही है।

राष्ट्रसंघ की उसी मीटिंग में भारतीय सदस्य श्री समरसेन को पाकिस्तानी सदस्य तब बार-बार टोकते रहे जब श्री सेन शरणार्थियों की दशा का वर्णन वहां कर रहे थे।

आज पाकिस्तान ने खान अब्दुल गफ्फार खां का वह प्रस्ताव ठुकरा दिया जो उन्होंने मध्यस्थता के लिये रखा था और थाना के ५०० संथाल ईसाइयों का कत्ल कराया।

भारत में

जनसंघ ने बंगला देश को मान्यता देने के लिये सरकार के विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव रखने का निश्चय किया।

प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने आज कांग्रेस दल की मीटिंग में कहा—बंगला देश से ३२ लाख शरणार्थी आ चुके हैं। अब यह समस्या आर्थिक के साथ-साथ राजनैतिक भी बन गयी है। हमारी पाकिस्तान के मामले में दस्तन्दाजी की इच्छा नहीं है; लेकिन जो कुछ वहाँ हो रहा है, उसका प्रभाव हमारे ऊपर पड़ रहा है, उसी की हमें चिन्ता है।

२३ मई

आज सिलहट और कोमिल्ला क्षेत्रों की लड़ाई में १०० पाक सैनिक मारे गये।

२४ मई—विश्व को इन्दिरा की चेतावनी

प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने आज लोकसभा और राज्य सभा—दोनों सदनों में कहा कि बंगला देश की समस्या का राजनैतिक हल निकाला जाना आवश्यक है। आपने कहा—हमने सभी देशों से इस समस्या के हल के लिये अनुरोध के साथ-साथ यह बता दिया है कि भारत को अपनी ससस्या और सुरक्षा के लिये कोई भी कदम उठाने के लिये विवश होना पड़ सकता है।

आज बंगला देश पर विभिन्न विपक्षी सदस्यों द्वारा प्रस्तुत कामरोको प्रस्ताव को अनुमति नहीं मिली। अतः सभी विपक्षी सदस्यों ने वाक्‌आउट कर दिया।

आज लोकसभा में उत्तेजित सदस्यों को उत्तर देते हुए रक्षा मंत्री श्री जगजीवन राम ने बताया कि सीमा सुरक्षा सैनिकों को आदेश दे दिया गया है कि सीमा पर हमला करने वाले पाक सैनिकों को मुँह तोड़ जबाब दिया जाय और हवाई अतिक्रमण करने वाले उसके जहाजों को गोली मार कर गिरा दिया जाय। अब तक वह २४ बार सीमा पर गोलाबारी कर चुका है। १६ बार वायु सीमा का उल्लंघन कर चुका है।

विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह ने आज लोकसभा में बताया—सरकार बंगला देश को मान्यता के प्रश्न पर विचार कर रही है और संयुक्त राष्ट्र संघ को कुछ ठोस प्रस्ताव भी भेजे हैं।

बंगला देश की मदद के लिये आज एक त्रिसदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली आया। असम के करीमगंज क्षेत्र में भारतीय सीमांत चौकी सुतारकंडी पर पाकिस्तानी सेना ने जोरदार गोलाबारी की। हमारे दो जवान मारे गये और २५ घायल हुए।

२५ मई—फिर पाकिस्तानी हमले

मेघालय के दालू क्षेत्र में पाकिस्तानी गोलाबारी से २२ भारतीय जवान मारे गये और एक जूनियर कमीशंड आफीसर का अपहरण किया गया तथा ११ नागरिक घायल हुए। इस कांड के कारण असम सरकार ने केन्द्रीय सुरक्षा मंत्री से तुरन्त कार्रवाई करने की मांग करते हुए कहा कि राज्य को खतरा बढ़ता जा रहा है।

आज लोक सभा में फिर बंगला देश को मान्यता और मुक्ति सेना की सहायता की मांग की गयी।

२६ मई को फिर चेतावनी

प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने आज तीसरे पहर लोकसभा में घोषणा की कि पाकिस्तान सेना को मेघालय तथा असम से भगा दिया गया है। आपने कहा—

भाषण देने से समस्याएँ हल नहीं हो जातीं, हम मान्यता देने के लिये किसी देश का इन्तजार नहीं कर रहे, अपितु अपने देश की सुरक्षा को ध्यान में रख कर विचार कर रहे हैं और न हमें पाक का डर है और न चीन का ।

आज भूतपूर्व रक्षामंत्री श्री मेनन ने बड़े ही संयत और शांत ढंग से लोकसभा में मान्यता की माँग करते हुए कहा—हम जितनी देर करेंगे समस्या उतनी ही जटिल होगी ।

पाकिस्तान ने आज भारत को प्रधानमंत्री के लोकसभा के भाषण पर विरोध-पत्र दिया ।

श्री शील भद्र याज्ञी जी ने बंगला देश की सहायता की माँग की ।

भारतीय सीमा पर पाक की गोलाबारी पर सोवियत यूनियन ने चिन्ता प्रकट की और अमेरिका ने भारत तथा पाकिस्तान को संयम से काम लेने की सलाह दी ।

बंगला देश में

मैमनसिंह के १० छात्रों को पाकिस्तानियों ने गोली मार दी और भारतीय चौकी दावकी के सामने और कस्बा क्षेत्र में मुक्ति सेना ने १७० पाक सैनिक मारे ।

२७ मई का दिन

पाकिस्तान ने भारतीय सीमांत पर छेड़छाड़ जारी रखी और उधर भारत सरकार ने घोषणा की कि यदि सेना को अग्रिम मोर्चों पर भेजने का आदेश देना पड़ा तो संकोच नहीं किया जायेगा । राज्य सभा में जासूसों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की भी माँग की गयी ।

● पाकिस्तानियों ने बंगला देश में बंगालियों की सम्पत्ति की नीलामी करनी शुरू कर दी ।

२८ मई

भारतीय सीमा पर पाक गोलाबारी जारी रही और रंगपुर क्षेत्र में मुक्ति सेना ने पाकिस्तानी सेना के १५० जवान मारे ।

२९ मई—छत्रसाल पर गोलाबारी

पाकिस्तानी सेना ने छत्रसाल के साथ-साथ समस्त पूर्वी सीमा पर जोरदार गोलाबारी शुरू कर दी ।

बंगला देश में

● आज कनाडा ने शरणार्थियों को ५ करोड़ की सहायता दी ।

सिलहट के विभिन्न क्षेत्रों में मुक्ति सेना ने दो पाक अफसर और ७० सैनिक मारे । अखौरा में एक अफसर और ४० सैनिक मारे ।

३१ मई का दिन

मुक्ति सेनाओं ने सिलहट के उत्तरी भाग पर कब्जा कर लिया और छटक के लिये भीषण युध्द चला। रंगपुर पर लड़ाई चलती रही। आज पाकिस्तानी सेना ने अचानक लड़ाई के बाद नुरूल गामरी नामक चौकी पर कब्जा कर लिया। मुक्ति सेना के साथ हुई लड़ाई में आज ३५० पाकिस्तानी सैनिक मरे। इनमें एक कैप्टिन भी था।

असम सीमा के पास पाक के मोर्चे संभालने का समाचार मिला।

ब्रिटेन ने श्रीमती गांधी का यह प्रस्ताव रद्द कर दिया कि याहिया पर दवाव डालने के लिये ब्रिटेन पाकिस्तान को सहायता देना वन्द कर दे।

३१ मई—छटक मुक्त

पांच सौ सैनिकों को मरवा कर पाकिस्तानी छटक से भाग गये और खुलना के पास गणेशपुर में दो पाकिस्तानी बटालियनों का सफाया कर दिया गया।

+मौलाना भाषानी ने आज बंगला देश पर राजनैतिक हल खोजने वालों की निन्दा की और फिर पूर्ण आजादी की मांग की।

आज नयी दिल्ली में अरब देशों के दूतों को बुलाका भारत सरकार ने स्पष्ट बता दिया कि उनका पाकिस्तान द्वारा बंगला देश में कत्लेआम का समर्थन और कत्ले-आम बढ़वाने के लिये पाक को और मदद देना भारत सहन नहीं करेगा और वह अपनी विदेश नीति बदल देगा।

—चीन से आज भारी मात्रा में हथियार ढाका भेजे गये।

१ जून—विशेष दिन

आज खान अब्दुल गफ्फार खान ने पाकिस्तान और बंगला देश में समझौता कराने के लिये अपनी सेवाएं देने की पेशकश की।

मुक्ति सेना ने मैमनसिंह की तावा कूचा सीमा चौकी से पाकिस्तानी सेना को खदेड़ दिया।

—श्री भुट्टो ने जनता के चुने प्रतिनिधियों को सत्ता सौंपने की मांग की।

भारत में

पश्चिम बंगाल के भू० पू० मंत्री गुलाम यजदानी और भू० पू० संसद सदस्य बदरूज्जा को राष्ट्र विरोधी गतिविधियों और पाकिस्तान के लिये जासूसी करने के आरोप में कलकत्ता में गिरफ्तार कर लिया गया।

श्री अजदानी श्री मुखर्जी की दूसरी मोर्चा सरकार में पारपत्र मंत्री थे। मार्क्स-

वादी मोर्चे के समर्थन से स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीते थे। इनके साथी वदरुज्जा मुस्लिम तथा दूसरे अन्य अल्पसंख्यक महासंघ के अध्यक्ष थे। यह जो कागजात पाकिस्तान सरकार के पास ढाका भेज रहे थे उन्हें सीमा सुरक्षा दल के जवानों ने पकड़ा था और तभी इनके जासूस होने का पता चला था।

कृष्णनगर के पास तीन पाकिस्तानी और एक हिन्दुस्तानी जासूस कुँओं में जहर मिलाते पकड़े गये। यह उन कुँओं में जहर मिला रहे थे जो शरणार्थियों के रास्ते में पड़ते थे।

आज बंगला देश से आये त्रिसदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का संसद के केन्द्रीय कक्ष में अभिनंदन किया गया जिसमें संसद के दोनों सदनों के सदस्य शामिल थे। शिष्टमण्डल के नेता श्री फणी मजुमदार ने मान्यता की मांग की और कहा—जितनी देर की जायगी उतना ही भारत और बंगला देश को नुकसान होगा। पहल भारत को ही करनी होगी। शिष्टमण्डल की दूसरी सदस्या बेगम नूरजहां खुर्शीद ने पाकिस्तानी कत्ले आम का भयानक चित्र प्रदर्शित किया और भारतीय जनता के समर्थन, सहायता तथा सहयोग के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। शिष्टमण्डल के तीसरे सदस्य ढाका के एडवोकेट शाह मुअज्जम हुसैन थे। उन्होंने भी भारतीय सहायता के लिये भारत को धन्यवाद दिया और कहा याहिया जैसा फ़रेबी, गद्दार और हत्यारा इतिहास में अभी तक पैदा नहीं हुआ। मण्डल का स्वागत लोकसभा के अध्यक्ष श्री गुरुदयाल सिंह ढिल्लो ने किया।

२ जून—श्री जयप्रकाश नारायण का मिशन

पेरिस में आज सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने फ्रांस सरकार से अपील की कि वह बंगला-काण्ड पर तमाशायी न रह कर हत्याकाण्ड रुकवाने के लिये याहिया पर दवाव डालें। श्री जयप्रकाश नारायण भारत सरकार के विशेष दूत के रूप में बंगला देश का मामला यूरोपियन सरकारों को समझाने के लिये यात्रा कर रहे थे।

आज ही श्री जयप्रकाश लन्दन पहुँच गये और उन्होंने हवाई अड्डे पर ही प्रेस कांफ्रेंस करके शरणार्थी समस्या, बंगला देश में कत्लेआम की ओर पत्रकारों का ध्यान खींचा और ब्रिटिश सरकार से पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री याहिया खां पर दवाव डालने की माँग की।

आज ही ब्रिटेन की लिबरल पार्टी के संसद सदस्य श्री रसेल जानसन ने प्रधान मंत्री श्री हीथ से राष्ट्रमंडलीय देशों का सम्मेलन बुलाकर बंगला देश का मामला हल करने की दुवारा माँग की और श्री हीथ के इस कथन को गलत वताया कि बंगला देश का मामला पाकिस्तान का आन्तरिक मामला है।

ब्रिटेन के दैनिक पत्र 'टाइम्स' ने पाक के इस दावे को गलत बताया कि पूर्वी पाक में शान्ति है। उसने शरणार्थियों की दास्तानें छापीं और चित्र छापे। ब्रिटेन के दूसरे पत्र 'इकानामिस्ट' ने लिखा—बंगाल से आने वाले लाखों शरणार्थियों का बोझ संभालना भारत के वश की बात नहीं। यदि उन्हें यहीं बसना पड़ा तो भारत के लिये गम्भीर संकट पैदा हो जायेगा।

बंगला देश में

बंगला देश के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री ताजुद्दीन ने बेतार केन्द्र से आज घोषणा की कि हम पाकिस्तान से कोई समझौता नहीं करेंगे। हमारा उद्देश्य अपनी आजादी हासिल करना है।

+ लूट के माल के बटवारे पर एक बलूच अफसर ने एक पंजाबी कैप्टिन को मार दिया।

३ जून—पाकिस्तानी सरगर्मी

आज पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सीमा पर सरगर्मी तेज कर दी। रंगपुर सीमा पार सोनाहाट तथा आसपास के क्षेत्र पर १६ घण्टे तक गोलाबारी के बाद मेघालय—पूर्वी बंगाल सीमा पर गारो पहाड़ी तथा मैमनसिंह सीमांत पर गोलाबारी तेज कर दी। साथ ही सीमा पार से कूच बिहार जिले के चार गाँवों पर भी गोलाबारी की। गाँव वाले भाग गये और सारी ६३० मील की सीमा पर सीमा सुरक्षा दल ने अपनी स्थिति भी मजबूत कर ली।

+ लन्दन में श्री जयप्रकाश नारायण ने आज ब्रिटिश संसद सदस्यों से बंगला देश और शरणार्थी समस्या पर बातचीत की।

+ बंगाल के मुख्यमंत्री अजय मुखर्जी ने केन्द्र सरकार को धमकी दी कि वह शरणार्थियों का खर्चा और उनकी रहने-सहने की व्यवस्था आप करे।

+ लन्दन 'टाइम्स' ने लिखा, एक लाख शरणार्थियों रोज भारत आ रहे हैं। वहाँ कैम्पों में हैजा फैलने लगा है। जो लोग उन्हें संभाल रहे हैं, कहीं ऐसा न हो कि उनका मनोबल भी टूट जाय। अतः इन शरणार्थियों को जल्दी से जल्दी सहायता देनी चाहिये।

४ जून

राष्ट्रसंघ के महासचिव ऊ थांत ने बंगला देश की घटनाओं को मानवता के लिये कलंक बताया।

+ अमेरिकी लोक सभा की उपसमिति के अध्यक्ष कोर्नेलियम ने आज शरणार्थी शिविरों का दौरा करने के बाद कहा—मैंने शरणार्थियों से बातचीत की।

उन्होंने बताया पाकिस्तानी सेना ने प्रोफेसरों, पत्रकारों, छात्र नेताओं, राजनैतिक नेताओं और बुद्धिजीवियों को मार भगाने तथा साम्प्रदायिक भावनाएँ उभार कर हिन्दुओं को उखाड़ने और कत्ल कराने के काण्ड किये। उन्होंने कहा—अब पूर्वी पाकिस्तान, पाकिस्तान का मामला नहीं रहा। उसके कुकृत्यों का नक्शा हमने देख लिया।

—लंदन में बंगाली महिलाओं और बच्चों ने जलूस निकालकर ब्रिटिश सरकार से पाक को मदद बन्द करने की माँग की।

५ जून--प्रधानमंत्री कलकत्ता में

५ जून को प्रधानमंत्री कलकत्ता गयीं और उन्होंने शरणार्थी शिविरों के दौरे के बाद कहा—शरणार्थियों को अन्य राज्यों में भेजा जायेगा और उनका भार केन्द्र सरकार संभालेगी। उनके साथ रेल मंत्री श्री हनुमंतैया और गृह-मंत्रालय के राज्य मंत्री कृष्णचन्द्र पंत भी थे।

—भारतीय क्रांति दल के नेता चौ० चरणसिंह ने बंगला देश वालों को सैन्य सहायता देने की मांग की।

—पाकिस्तान के लिये जासूसी करने पर कलकत्ता में तीन पत्रकार—श्री सुरेन्द्र कोहिली, कलकत्ता के इद्रीस उलहक और अमिताभ गुप्त तथा नैपाली अभिनेता डी०बी० फरेश गिरफ्तार किये गए।

—हैजे से आज तक भारतीय शिविरों में ३ हजार शरणार्थी मरे।

—आज भारत सरकार ने पाकिस्तान के डिप्टी उप-आयुक्त श्री मेंहदी मसूद और उनके कलकत्ता के सारे स्टाफ पर पाबन्दी लगा दी कि वे बिना अनुमति के यहां से बाहर न निकलें।

६ जून की स्थिति

मास्को के दो दिन के दौरे पर भारत के विदेश मंत्री स्वर्णसिंह आज वहां पहुच गये। वे बंगला देश की स्थिति पर सोवियत नेताओं से वार्ता करने गये थे।

—विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दो टन औषधियां बंगला देश के शरणार्थियों के लिये भेजी।

—सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश अमेरिका के एक सप्ताह के दौरे पर आज न्यूयार्क पहुँचे। वहां उन्होंने कहा—मैं यह मानता हूँ कि बंगला देश को मान्यता देने में अमरीका को पहल करनी चाहिये।

—आज ब्रिटेन के सभी समाचारपत्रों ने संसार से अपील की कि वह शरणा-शरणार्थियों की रक्षा और सहायता में यथाशक्ति सहयोग दे।

७ जून—घटनाएँ

भारत के विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने मास्को में रूसी विदेश मन्त्री श्री ग्रोमिको से बंगला देश की समस्या के बारे में बातचीत की।

—आज भारत सरकार ने ७ जिले हैजा ग्रस्त क्षेत्र घोषित किये और संसद ने शरणार्थी शिविरों में हैजा फैलने पर भारी चिन्ता और क्षोभ प्रगट किया।

—मुक्ति सैनिकों ने सभी क्षेत्रों में अपनी कार्रवाई जारी रखी और २५० पाक सैनिकों को मारा।

८ जून—मुशावरात की करतूत

मुस्लिम मुशावरात ने बंगला देश के कत्लेग्राम पर पाकिस्तान की निन्दा करने से मुसलमानों को डांट दिया।

× शरणार्थियों के लिये दवाइयाँ और विदेशी सहायता भारत आई और ब्रिटेन ने आज फिर पाकिस्तान को मदद न देने की माँग ठुकराई।

९ जून

न्यूयार्क में जयप्रकाश नारायण ने आशा व्यक्त की कि अमेरिका बंगला देश की समस्या के बारे में पाकिस्तान पर दबाव डालेगा। उन्होंने टेलीवीजन पर भेंट तब दी थी जब वे अमेरिका के उप-विदेश मंत्री से सवेरे मिल चुके थे।

× हैजे से बचाव के लिये आज सरकार ने बंगाल की सीमा का एक भाग बन्द कर दिया।

× आज भारत-सोवियत संयुक्त वक्तव्य में शरणार्थियों का पलायन तुरन्त रोकने पर जोर दिया गया और पाकिस्तान से माँग की गयी कि ऐसी स्थिति उत्पन्न की जाय कि शरणार्थी जल्दी से जल्दी अपने घर लौट जायें।

× बंगला देश की स्थिति पर पश्चिमी जर्मन सरकार से विचार विमर्श करने के लिये श्री स्वर्णसिंह आज बौन पहुँचे।

१० जून

आज भारत आये बंगला देश के प्रतिनिधिमण्डल ने मद्रास में कहा कि विगत एक सप्ताह से हमारा ठंडा पड़ा छापामार युद्ध अब तेज कर दिया जायेगा।

× पश्चिमी जर्मनी ने १० करोड़ मार्क शरणार्थी सहायता के रूप में देने की घोषणा की।

११ जून—प्रधान मंत्री की चेतावनी

करीमगंज में प्रधान मंत्री ने पाक को चेतावनी दी कि भारत पाकिस्तानी सेना की घुसपैठ को बर्दाश्त नहीं करेगा। भारतीय सेनाएं उचित कार्रवाई के लिए

तैयार हैं । उसी सभा में प्रधान मंत्री ने कहा, बंगला देश की समस्या को साम्प्रदायिक रूप देकर भारत में दंगे-फिसाद कराने की उसकी योजना से हम बेखबर नहीं हैं । अब विश्व जनमत बंगला देश में उसके कराये कत्लेआम को देख चुका है ।

× पश्चिमी बंगाल और त्रिपुरा में भारी भीड़-भाड़ देख कर सरकार ने २५ लाख शरणार्थियों को अन्य राज्यों में भेजने का निश्चय किया ।

× आज ब्रिटिश संसद में चार घण्टे तक पाकिस्तान और बंगला देश की समस्या पर विचार-विमर्श हुआ ।

१३ जून—श्री जयप्रकाश नारायण

१२ जून को कोई उल्लेखनीय घटना नहीं हुई । १३ जून का सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने राष्ट्रसंघ से कहा—बंगला देश में शान्ति स्थापित करने के लिये विश्व नेताओं के पास अभी समय है, यद्यपि यह समय बहुत अधिक नहीं है । यदि उन्होंने ठीक कदम नहीं उठाया तो हमारे उप-द्वीप में दावानल भड़क उठेगा और वह भी ऐसा जिसकी कल्पना करना भी कठिन है ।

× मुजीब नगर से श्री ताजुद्दीन ने रूस और अरब राष्ट्रों से मान्यता की अपील की

१५ जून–प्रधान मंत्री की विश्व को चेतावनी

श्रीमती गांधी ने आज राज्यसभा में कहा—विश्व के देश बंगला देश से आये शरणार्थियों को सहायता दें या न दें, लेकिन अपनी जिम्मेदारी से वह भाग नहीं सकते । उन्होंने कहा हमें शरणार्थियों के राहत की ही नहीं उनके अधिकारों की भी चिन्ता है । इस समस्या की विलक्षणता को देखकर ही विभिन्न देशों में सरकार ने अपने प्रतिनिधि भेजे हैं । उन्होंने कहा—अब पाकिस्तान के दोनों भागों को मिलाने के लिये किसी राजनैतिक हल की कोई आशा नहीं ।

× चीन ने पाकिस्तान को ७ करोड़ डालर की और सहायता आज दी ।

१६ जून–राजनैतिक सरगर्मी

आज श्री स्वर्णसिंह ने राष्ट्रसंघ के महासचिव ऊ थाँत से बंगला देश पर वार्ता की और श्री ऊ थाँत ने विश्व के राष्ट्रों से बंगला देश की जनता और शरणार्थियों को सहायता देने की अपील की । उन्होंने शरणार्थी समस्या पर आगे विचार के लिये अपना इथोपिया का दौरा भी रद्द कर दिया ।

× अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों से आज तक केवल ३० करोड़ रुपये की सहायता प्राप्त हुई ।

आज तक ६० लाख शरणार्थी आ चुके थे । जिनमें ४२ लाख ९ हजार

पश्चिमी बंगाल में, ६ लाख ५५ हजार त्रिपुरा में, २ लाख ५४ हजार मेघालय में, २ लाख ५० हजार असम में, १० हजार बिहार में तथा कुछ अन्य सीमांत शिविरों में थे।

आज भारत सरकार की ओर से लोकसभा में बताया गया कि भारत समय पर कार्रवाई से नहीं चूकेगा और छः महीने में शरणार्थी भी अपने घरों को लौट जायेंगे। रक्षा-विधेयक भी आज सरकार ने लोकसभा में पेश किया।

रक्षा-मंत्री श्री जगजीवनराम ने राज्य सभा में आज कहा—भारतीय सेना पाक की किसी भी चुनौती का सामना करने के लिये तैयार है।

× ओटावा में श्री जयप्रकाश नारायण ने कनाडा सरकार से अपील की कि पाक को आर्थिक सहायता भी न दी जाय। इससे वहाँ सैनिक शासन और अत्याचार करेगा।

× हेलसिंकी में विश्व शान्ति परिषद ने संसार के सभी देशों से अपील की।

× उत्तर प्रदेश में बंगला सप्ताह मनाया गया।

× मलेशिया में श्री रे ने तुन अब्दुल्ल रज्जाक से बंगला देश पर बात-चीत की।

× ईरान ने भारत-पाक में तनाव दूर करने के लिए अपनी सेवाएँ देने की घोषणा की।

× स्वीडन, इटली, हालैंड, आस्ट्रिया और हंगरी ने शरणार्थियों के लिए सहायता भेजने का वायदा किया और कनाडा ने पाक से अपील की कि वह शरणार्थियों को लौटाने का वातावरण तैयार करे।

बंगला देश में जौहर

रंगपुर जिले के सैदपुर में पाकिस्तानियों ने आज ४०० हिन्दुओं का कत्ल किया। सभी युवा हिन्दू महिलाओं ने अपने को आग में झोंक कर जौहर किया। इन हिन्दू पुरुषों को भारत पहुँचाने के बहाने १२ जून को ट्रकों में लाया गया था। और तीन दिन बाद गोलियाँ मारी गयीं। बाद में गाँव में आग लगा दी। उसमें औरतें और बच्चे जल मरे। केवल ३ व्यक्ति जिन्दा बचकर भारतीय सीमा में आये।

× ब्रिटिश संसद के १२० सदस्यों ने आज पाकिस्तान पर बंगला देश में नर-संहार का खुला आरोप लगाया।

१७ जून

आज श्री बदरुद्दीन आगा खां ने घोषणा की कि बंगला देश में स्थिति सामान्य नहीं है।

× भारत सरकार ने बंगला छात्रों के प्रमाण पत्रों को नौकरियों के और दाखले के लिये मान्यता दी।

× भारत के विदेश मंत्री स्वर्णसिंह ने आज न्यूयार्क में एक टेलीवीजन भेंट में कहा—अमेरिका पाकिस्तान का सबसे बड़ा हितैषी और सहायक है। अतः वह याहिया पर बंगला देश के कत्लेआम रुकवाने पर दबाव नहीं डाल रहा।

इसके साथ ही वह भारत और पाक को एक स्तर पर रखते हुए शरणार्थियों के लिये जितना दोषी पाक को मानता है, उतना ही भारत को बताता है। वह यह कहने तक को तैयार नहीं है कि याहिया पर शरणार्थियों को वापस बुलाने का जोर भी डालेंगे या नहीं।

× आज स्विस सहयोग से भारत और पाक के कर्मचारियों की अदला-बदली की आशा बढ़ी।

× नोआखाली, कोमिल्ला और सिलहट क्षेत्रों में मुक्ति सेना ने तीन दिन में ४०० पाक सैनिक मारे।

१८ जून

लोकसभा में आंतरिक सुरक्षा विधेयक पास हुआ और समस्त विरोधी दलों ने लोकसभा में बंगला देश को मान्यता देने की माँग की।

१९ जून

आज दिल्ली स्थित पाक उच्चायुक्त के कार्यालय में दंगा हुआ और पंजाबी कर्मचारियों ने बंगाली तथा पठान कर्मचारियों को पीटा।

× श्रीनगर में प्रधान मंत्री ने कहा—देश किसी भी हमले के मुकाबले के लिये तैयार है।

× मुक्ति सेना ने ६७० सैनिक मारे।

× सरदार स्वर्णसिंह ने आज लन्दन में ब्रिटिश सरकार से बंगला देश की समस्या पर बातचीत की।

२० जून—गर्म दिन

प्रधान मंत्री ने आज फिर दुहराया कि न हम चीन से डरते हैं और न पाकिस्तान से और जब तक बंगला देश में कत्लेआम बन्द नहीं हो जाता, तब तक हम पाकिस्तान से कोई बात भी नहीं करेंगे। श्रीनगर में श्रीमती गाँधी पत्रकारों से बातचीत कर रही थीं।

× आज ही रक्षा मन्त्री ने जालंधर में जनता तथा जवानों से तैयार रहने की अपील की।

× मेघालय की सीमा के पास कर्फ्यू लगा दिया गया।

× चार पाकिस्तानी जहाज सेना लेकर आज बंगला देश पहुँचे।

२१ जून—

भारतीय संसद में आज आगा खाँ को भारत के दौरे की अनुमति देने के कारण सरकार की आलोचना हुई। सरकार ने बताया कि श्री मुजीब की रिहाई के लिए विदेशों से सम्पर्क किया हुआ है।

बंगला बेतार केन्द्र के अनुसार अब तक २६ हजार पाक सैनिक मारे गये। मुजीब के साथी श्री पुलिनदे ने बताथा कि मुक्ति सेना पाकिस्तानियों के कब्जे से शहरों को मुक्त कराने के लिये शीघ्र कार्रवाई करेगी।

२२ जून का दिन

श्री स्वर्णसिंह अपना यूरोप और अमेरिका का दौरा करके आज भारत वापस आ गये और श्री जयप्रकाश नारायण कनाडा से सिंगापुर पहुंच गये।

प्रमुख कांग्रेसी संसद सदस्यों ने सरकार से मांग की कि पाकिस्तान से शरणार्थियों को बसाने के लिये जमीन मांगी जाय। श्री पार्थ सारथी ने कहा—अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार भारत इस समस्या को सुलझाने के लिये बल का प्रयोग भी कर सकता है।

२३ जून की हलचल

अमेरिका द्वारा पाक को ४० करोड़ के शस्त्र देने से सरकारी क्षेत्रों में उत्तेजना फैली। अतः अमेरिका के कार्यवाहक राजदूत श्री स्टोन को दो बार विदेश मंत्रालय में बुलाया गया। उसे बताया गया कि अमेरिका सरकार का यह काम उसके द्वारा भारत को दिए गए सभी आश्वासनों का उल्लंघन है। बाद में मंत्रिमंडल ने इस नयी समस्या पर विचार किया।

सभी राजनैतिक दलों ने आज अमेरिका की इस वादाखिलाफी पर क्षोभ व्यक्त किया। विरोधी संसद सदस्यों ने आज नयी दिल्ली के अमेरिकी दूतावास पर प्रदर्शन किया और ज्ञापन दिया। साथ ही चेतावनी दी कि पाकिस्तान को हथियार देकर अमेरिका यहां दूसरा वियतनाम बनाने का प्रयत्न न करे।

× आज ही प्रधान मन्त्री को सोवियत प्रधान मन्त्री कोसिगिन और ईरान के शाह के सन्देश मिले कि पाकिस्तान से युद्ध टालने का हर संभव प्रयास किया जाय। उत्तर में प्रधान मन्त्री ने लिखा—अपनी ओर से भारत युद्ध टालने का बराबर प्रयत्न कर रहा है।

× आज पाकिस्तानी गोलाबारी से छः भारतीय मरे।

× मुजीब नगर से बंगला देश के कार्यवाहक राष्ट्रपति ने अमेरिका की पाकिस्तान को हथियार भेजने पर कड़ी निन्दा की।

× न्यूयार्क में सेनेटर चर्च ने अपील की कि एस० एस० पद्मा जब बाल्टीमोर पहुँचे, तब उस पर से हथियार उतार लिये जायें। उन्होंने कहा—यह कार्यवाही अमेरिकी जनता को धोखा देने का एक गन्दा उदाहरण है।

२४ जून की स्थिति

आज भारत ने अमेरिकी सरकार से आग्रह किया कि वह हथियारों से लदे पाकिस्तानी जहाजों को रुकवाने का प्रयत्न करे। संसद में अमेरिका के इस व्यवहार पर भारी रोष छाया रहा और साथ ही कांग्रेसी महिलाओं ने इसके हथियार वापस मंगाने की माँग की।

इसी दिन यह भी पता चला कि हथियारों से लदा एक तीसरा जहाज भी कराची के लिये रवाना हुआ है।

× अमेरिका ने शरणार्थियों के लिये ५१ करोड़ ५० लाख रुपये की सहायता देने की घोषणा की। आज पाकिस्तानी सेनापति जनरल अब्दुल हमीद खां ढाका पहुँचे।

निक्सन सरकार का नंगापन

२४ जून को निक्सन सरकार ने अपना नंगापन प्रदर्शित कर दिया और पाकिस्तान को सहायता जारी रखने का फैसला कर दिया।

◆मिहिरपुर से तीस किलोमीटर दूर मुक्ति सेना ने एक पाकिस्तानी प्लाटून का सफाया किया।

◆लन्दन के समाचार पत्र सण्डे टाइम्स, ने आज पाक अत्याचारों के सचित्र समाचार प्रकाशित किये।

२५ जून और श्रीमती गांधी

प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने आज कहा कि बंगला देश को मान्यता देने से पूर्व उसके परिणामों पर विचार करना पड़ेगा। वर्तमान में मान्यता से किसी को लाभ नहीं होगा। आपने पाकिस्तान के इस आरोप का खंडन किया कि बंगला देश में जो कुछ हो रहा है, उसमें भारत का हाथ है।

आज अमेरिकी शस्त्रों के मामले को लेकर लोकसभा में फिर हंगामा मचा और सरकार से अमेरिका की आलोचना करते हुए प्रस्ताव पेश करने की माँग की गई।

◆अफ्रेशियाई सम्मेलन में आज अरब देशों ने बंगला नर-संहार पर पाकिस्तान की निन्दा करने से इन्कार कर दिया।

◆अमेरिकी विदेश विभाग के एक प्रवक्ता ने घोषणा की कि पाकिस्तान को सैन्य सामग्री की खरीद के लिये दो लायसेन्स और जारी किये गये हैं।

२६ जून

गोपीनाथपुरा की लड़ाई में मुक्ति सेना ने १०० पाक सैनिक मारे।

पाक आक्रमण विरोधी दिवस मनाने के कारण जनसंघ के १२० कार्यकर्ता वम्वई में गिरफ्तार हुए।

→बंगला देश में हत्याकांड एकाएक तेज हो गया। परिणामस्वरूप ४८ घंटों में सवा लाख शरणार्थी भारत आये।

→मुक्तिवाहिनी ने विभिन्न झड़पों में १३४ पाक सैनिक मारे।

→छः बड़े देशों ने आज पाकिस्तान की अनिश्चित काल के लिये मद द बन्द कर दी। विश्व बैंक के नेतृत्व में सहायता देने वाले इन देशों की पेरिस में जो बैठक हुई थी, उसमें बताया गया कि बैंक के प्रतिनिधि मंडल ने पाकिस्तान का दौरा करने के बाद जो रिपोर्ट दी है उसमें लिखा है—बंगला देश में हिन्दू और आवामी लीग वालों का भारी नर-संहार हो रहा है। परिवहन स्थिति छिन्न-भिन्न है। अनाज तक का वितरण संभव नहीं है। अतः पाकिस्तान को सहायता देना उचित नहीं।

२७ जून की घटनाएँ

पाकिस्तानी राष्ट्रपति याहिया खां ने आज घोषणा की कि पाकिस्तान में नये सिरे से चुनाव कराने का मेरा कोई इरादा नहीं है और इन परिस्थितियों में देश के लिये नया संविधान तैयार करना भी संभव नहीं है। इसके सिवा और कोई चारा नहीं है कि संविधान बनाने का कार्य कुछ विशेषज्ञों को सौंप दूं। इसमें संशोधन बाद में राष्ट्रीय असेम्वली करेगी। मैंने एक संविधान समिति गठित कर दी है और वह संविधान बनाने का कार्य कर रही है। जिन लोगों ने पृथकृतावादी आन्दोलन में हिस्सा लिया है उसकी जगह नये चुनाव कराये जायेंगे।

याहिया ने आशा व्यक्त की कि मैं चार महीने में चुने हुए प्रतिनिधियों को सत्ता सौंप दूँगा। याहिया ने शरणार्थियों से लौटने की अपील भी की।

→लोक सभा में पाकिस्तान को हथियार भेजने के बारे में अमेरिका की तीव्र भर्त्सना की गयी। विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह ने इस मामले को राष्ट्रसंघ में उठाने का आश्वासन भी सदन को दिया।

श्रीमती गांधी ने विरोधी दलों के सदस्यों से आग्रह किया कि इस मामले पर पाकिस्तान से युद्ध की बातें न करें; क्योंकि तब उसके साथी उसे और ज्यादा हथियारों की मदद देने लगेंगे।

→आज लोकसभा में रक्षामंत्री जगजीवनराम ने सदस्यों को तसल्ली दी कि बंगला देश की सीमा पर सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था है।

३० जून

पाकिस्तानी जहाज 'सपनिए अरब' आज बड़ी मात्रा में तोपें और गोलाबारूद लेकर, चटगांव बन्दरगाह पर पहुँचा। यह सभी सामान अमेरिकी था। इनमें कुछ हथियार उस किस्म के भी थे जिनका प्रयोग अमेरिका वियतनाम की लड़ाई में कर रहा है।

१ जुलाई

ब्रिटिश संसदीय प्रतिनिधि मण्डल ने चार दिन तक पूर्वी बंगाल का दौरा करने के बाद आज नयी दिल्ली में बताया कि शेख मुजीब से समझौता वार्ता से ही समस्या का कोई हल निकल सकता है।

प्रतिनिधि मण्डल के नेता आर्थर बाटमले ने बताया कि पूर्व बंगाल में सैनिक शासन जारी रखना मूर्खता है। साढ़े सात करोड़ लोगों को कुचला नहीं जा सकता।

अनुदार दली सदस्य टावी जैरुल ने कहा—पाकिस्तानी कार्रवाई अत्यन्त जंगली और अपमानजनक है। इससे भारत पाक में संघर्ष हो सकता है।

ब्रिटिश संसद सदस्य भारतीय संसद सदस्यों की सर्वदलीय बैठक में भी गये। उन्होंने कहा—किसी देश से इतनी बड़ी संख्या में शरणार्थियों को आना इतिहास की सबसे पहली घटना है। यह ऐसी चुनौती है जिसे अकेले भारत को ही बर्दाश्त नहीं करनी चाहिये, इसके लिये सारे संसार की जिम्मेदारी है। बंगला देश में व्यापक रूप में विनाश किया गया है। शरणार्थियों के लौटने लायक स्थिति वहाँ नहीं है। लोग सैनिकों को देख कर डरते हैं। बड़े-बड़े सभी क्षेत्र बर्बाद कर दिये गये हैं। बहुत कम लोग हमें वहाँ काम करते दिखाई दिये।

◆दिल्ली विश्वविद्यालय ने बंगला देश से आये छात्र शरणार्थियों को दाखले की व्यवस्था की।

२ जुलाई

पाकिस्तान से आज समाचार मिला कि मुजीब पर मुकदमे की तैयारी का नाटक शुरू होने वाला है।

◆बंगला देश से आज भी छापामार युद्ध के समाचार मिले।

◆भारत के विदेश मंत्री स्वर्णसिंह ने आज कांग्रेस की मीटिंग में बताया कि याहिया खां के भाषण से पाकिस्तान के विघटन का रास्ता साफ हो गया है।

◆सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाशनारायण अपने यूरोप और अमेरिका के दौरे से लौट आये और आज नयी दिल्ली में बताया कि विश्व के देश बंगला देश के प्रति सहानुभूति तो रखते हैं, लेकिन पहल नहीं करना चाहते। उन्होंने मान्यता न देने के

लिये भारत सरकार की भी आलोचना करते हुए कहा—मान्यता का अर्थ पाक से युद्ध और बंगला देश को सैनिक तथा आर्थिक सहायता देना होगा। यदि हमें ऐसा करना भी पड़े तो कोई हर्ज नहीं।

२ जुलाई—प्रधान मंत्री की घोषणा

आज लखनऊ में प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने अपने भाषण में कहा—बन्दूक की गोली और विदेशी सहायता से पाक को टूटने से नहीं बचाया जा सकता। यहाँ प्रधान मंत्री प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में बोल रही थीं। शरणार्थियों के बारे में प्रधानमन्त्री ने कहा—उन्हें शान्ति और अमन के वातावरण में अपने देश जाना होगा। इन ६४ लाख शरणार्थियों के कारण भारत की आर्थिक स्थिति पर असर पड़ रहा है। हम सारे साधनों का उपयोग करने के बाद भी पूर्ण व्यवस्था नहीं कर पा रहे।

◆जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने आज उदयपुर में कहा—युद्ध का खतरा मोल लेकर भी हमें बंगला देश को मान्यता देनी चाहिये और स्वतन्त्र सेनानियों को हथियार देने चहियें। ७० करोड़ लोगों को भारत की सीमा में धकेल कर पाकिस्तान ने तो एक प्रकार से भारत के साथ युद्ध शुरू कर ही दिया है, उसका मुंह तोड़ उत्तर हमें देना ही पड़ेगा, उससे विमुख नहीं हुआ जा सकता। उन्होंने कहा—राजनैतिक हल एक ढकोसला है, बंगला देश की जनता पूर्ण स्वतन्त्रता के अतिरिक्त और कुछ स्वीकार नहीं करेगी। इसके लिये उसने भारी बलिदान दिया है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि पाकिस्तान का विघटन होकर रहेगा।

◆श्री अटल ने उदयपुर में मुजीब की गिरफ्तारी और मुकदमे के समाचार पर भी चिन्ता प्रकट की।

◆फ्रांस द्वारा पाकिस्तान को मिराज विमान बेचे जाने का समाचार भी आज भारत सरकार को मिला और देश में क्षोभ फैला।

◆भारत स्थित अमेरिकी राजदूत श्री कैनेथ कीटिंग ने पाकिस्तान को शस्त्रों की सप्लाई जारी रखने के दोष स्वरूप अपनी सरकार को इस्तीफे की धमकी दी।

४ जुलाई—जनसंघ की घोषणा

उदयपुर में ४ जुलाई को जनसंघ ने घोषणा की कि बंगला देश को मान्यता देने के हेतु भारत सरकार पर जोर डालने के लिये जनसंघ दिल्ली में १ अगस्त से सामूहिक सत्याग्रह शुरू करेगा और ११ अगस्त को संसद भवन पर भारी प्रदर्शन के बाद १२ को अधिवेशन करके सत्याग्रह समाप्त कर दिया जायेगा।

◆आज ही श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने भविष्य में किसी भी चुनाव के न लड़ने का निश्चय किया।

◆आज तीन सदस्यों का कनाडी प्रतिनिधि मण्डल बंगला देश की स्थिति

देखने के वाद नयी दिल्ली पहुँचा और उसने कहा—बंगला देश में चुने हुए लोगों को सत्ता देना ही एकमात्र हल है।

◆ब्रिटिश संसद के उन सदस्यों ने, जो बंगला देश का दौरा करके अपने देश लौटे थे, लन्दन में बताया कि इसमें जरा भी सन्देह की गुंजायश नहीं कि पाकिस्तानी सेना ने बंगला देश में भारी नर-संहार किया है और अब भी कर रही है। विस्थापितों को लौटने की सलाह देना एकदम मूर्खतापूर्ण है। उनका जीवन शिविरों में ही सुरक्षित है।

◆पाकिस्तान ने अमेरिका से बी० ५७ खोजी जेट विमान माँगे।

५ जुलाई—प्रधानमंत्री की सलाह

कांग्रेस संसदीय कार्यकारिणी की बैठक में प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने कहा—सदस्य बंगला देश के बारे में जनमत तैयार करें और सरकार पर इस बात के लिये जोर न दें कि वह जल्दवाजी में कोई कदम उठाये। प्रधानमन्त्री ने कहा—बंगला देश की हालत देखने के लिये और भी विदेशी प्रतिनिधि मण्डलों को यहाँ बुलाना और यहाँ से विदेश भेजना जरूरी है।

◆आज पाकिस्तान ने ब्रिटिश हाई कमिश्नर को एक विरोधपत्र देकर धमकी दी कि यदि विटिश संसद, बी० बी० सी० और प्रेस पाकिस्तान की आलोचना करते रहे तो ब्रिटेन और पाकिस्तान के सम्बन्ध और खराब हो जायेंगे। विरोध पत्र में बंगला देश की घटनाओं को पाकिस्तान का अन्दरूनी मामला बताया गया।

◆रूसी राजदूत ने आज नयी दिल्ली में कहा—२५ मार्च के बाद सोवियत यूनियन ने पाकिस्तान को किसी प्रकार के हथियार या पुर्जे नहीं दिये।

◆आज पाकिस्तानी सेना ने पैत्रीपोल पर गोलाबारी की।

◆बंगला देश में छापामार हमले तेज हो गये और सिलहट तथा मैमनसिंह आदि सारे पूर्वी क्षेत्र में उसकी गतिविधियाँ तेज हो गयीं।

◆भारत में भू० पू० अमेरिकी राजदूत चेस्टर वोल्स ने पाकिस्तान को शस्त्र देने के अमेरिकी सरकार के निर्णय को भयानक भूल बताया।

"न्यूयार्क टाइम्स" ने आज लिखा—पहले कहा गया कि यह अफसरशाही की भूल है और अमेरिका की नीति से इसका सम्बन्ध नहीं है; किन्तु पिछले दिनों जो प्रमाण मिले हैं, उनसे सिद्ध है कि सरकार ने यह जान-बूझकर किया है। यह सरकार की ऐसी भूल है जो इण्डोचीन की हार से भी बुरी है और इसे इतिहासकार शायद ही क्षमा करें।

आगे लिखा गया था—अपने यहाँ बंगला देश के विस्थापितों को रोकने के लिये या उनके घरों को वापस भेजने के लिये बंगला देश में उग्र वामपंथी सरकार

की स्थापना रोकने के लिये भारत सरकार बाध्य होकर वहां अपनी सेना उतार सकती है। इसके बदले पाकिस्तान कश्मीर और पंजाब पर हमला कर सकता है। १९६५ के भारत पाक युद्ध के समान चीन भारत को अल्टीमेटम दे सकता है और रूस भारत की मदद को उतर सकता है।

६ जुलाई—नया राजनैतिक घटनाचक्र

अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के सलाहकार डा० किसिंगर दो दिन की यात्रा पर आज नयी दिल्ली आये और पालम हवाई अड्डे पर कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से उनके विरुद्ध प्रदर्शन किया गया।

◆बम्बई में अमेरिकी उपराष्ट्रपति एगन्यू के विरुद्ध भी सांताक्रूज हवाई अड्डे पर जोरदार विरोधी प्रदर्शन किया गया।

◆दिल्ली में बंगला देश के प्रतिनिधि श्री शाहबुद्दीन ने पाकिस्तानी दूतावास में काम कर रहे बंगाली कर्मचारियों की रक्षा की मांग भारत सरकार और अन्य देशों के राजदूतों से की।

◆विदेश मंत्री स्वर्णसिंह ने आज लोकसभा में कहा—पाकिस्तान को कहीं से भी हथियार मिलें—उनसे भारत को खतरा है। श्री स्वर्णसिंह दंडवते के कामरोको प्रस्ताव पर बोल रहे थे, जिसमें फ्रांस और सोवियत से पाकिस्तान को हथियार मिलने की बात कही गई थी।

रक्षामंत्री जगजीवनराम ने आज घोषणा की कि शरणार्थी लौटेंगे ; लेकिन याहिया के पाक में नहीं मुजीब के देश में। उस देश का नाम होगा—बंगला देश। उन्होंने शरणार्थियों को भारत में धकेला जाना भारत के विरुद्ध हमला माना।

◆ कनाडी प्रतिनिधि मण्डल ने अमेरिका द्वारा पाक को शस्त्र सप्लाई करना बिल्कुल गलत काम बताया।

बंगला देश में

फरीदपुर में पाक सेना ने हिन्दुओं का कत्लेआम किया। इससे पहले अप्रैल में हिन्दुओं का कत्लेआम किया गया था। पहले हिन्दू का घर, शब्द पीले रंग से लिखा गया। बाद में बिहारी मुसलमानों को हथियार देकर हिन्दुओं का कत्लेआम कराया गया।

मालबाजार में १० हजार अशुद्ध पाकिस्तानियों (हिन्दू-आवामी लीगी मुसलमान) को मौत के घाट उतारा गया।

◆टिक्का खां ने आज २१० सड़कों का इस्लामीकरण किया।

◆सीमा सुरक्षा दल के सामने आज ५० पाक सैनिकों ने हथियार रखे और पबना क्षेत्र में एक पाक यूनिट को मुक्ति सेना ने यमपुर भेजा।

७ जुलाई—प्रधानमन्त्री की चेतावनी

आज प्रधानमंत्री ने अमेरिकी राष्ट्रपति के सलाहकार किसिंगर को स्पष्ट बता दिया कि अमेरिका ७० लाख शरणार्थियों की वापसी की समस्या हल कराये और पाकिस्तान को हथियार देना बन्द करे। यदि समय रहते कार्रवाई नहीं की गयी तो भारत हमेशा के लिये इन समस्याओं को अपने सर पर नहीं लादेगा। हम समस्यो का हल तुरन्त चाहते हैं। अन्यथा इस उप-महाद्वीप में अशान्ति निश्चित है। किसिंगर ने प्रधानमँत्री को श्री निक्सन का संदेश दिया।

◆जयप्रकाश नारायण ने पटना में स्पष्ट घोषणा की—भारत को पाकिस्तान से युद्ध के लिये कतराना नहीं चाहिये। यदि जनता और सरकार युद्ध से डरती है तो उसे जीने का हक नहीं। बंगला देश की हार भारत की हार होगी। बंगला देश या तो शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उठेगा या लड़कर मिट जायेगा। श्री प्रकाश ने कहा—सरकार को मान्यता और सहायता—दोनों देना चाहिये, देर करने से हमारा और बंगला देश—दोनों का नुकसान होगा।

◆पाकिस्तान सरकार ने ब्रिटिश सरकार को आज दूसरा विरोधपत्र दिया।

८ जुलाई

आज लोकसभा में जोरदार शब्दों में रक्षा के लिये परमाणु बम बनाने की माँग की गयी।

◆किसिंगर नयी दिल्ली से इस्लामाबाद जाकर याहिया से मिले।

◆पश्चिमी जर्मनी ने पाक को मदद बन्द करने की घोषणा की।

◆प्रधान मंत्री गांधी को ब्रिटिश-प्रधान मंत्री हीथ का पत्र मिला।

◆पटना में आज बंगला देश के चटगांव विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डा० अब्दुल रहमान मलिक ने कहा—बंगला देश के शहर और सीमावर्ती क्षेत्रों पर पाकिस्तान का कब्जा अवश्य है, शेष क्षेत्र हमारे अधिकार में है। हम अन्तिम दम तक लड़ेंगे। भारत द्वारा मान्यता के प्रश्न पर आपने कहा, ऐसा करते ही भारत-पाक में युद्ध शुरू हो सकता है।

◆कनाडा के संसद सदस्यों ने शरणार्थी शिविरों की अवस्था सन्तोषजनक बतायी।

९ जुलाई की विशेष घटनाएं

अमेरिकी सेनेटर टनी ने आज अमरीकी प्रशासन पर आरोप लगाया कि अमेरिकी अनाज के जहाज, पाकिस्तानी सेना को पूर्व बंगाल ले जा रहे हैं। जो जहाज अनाज लेकर भी चटगांव जाने वाले थे, उन्हें भी कराची भेज दिया गया है। हमारे कार्य घृणित हैं। हम पाकिस्तान के गृह-युद्ध में एक पक्ष का साथ दे रहे हैं। अमेरिकी सरकार ने हथियारों की सप्लाई जारी रखने की फिर घोषणा की है।

भारत में

भारत और पाकिस्तान में इस बारे में समझौता हो गया कि कलकत्ता स्थित उन भूतपूर्व पाकिस्तानी कर्मचारियों की राय स्विस प्रतिनिधि जानेंगे और ढाका से भारतीय कर्मचारियों को रूसी विमान से नयी दिल्ली और कलकत्ता से ईरानी विमान से पाक कर्मचारियों को कराची ले जाया जायेगा।

◆पाकिस्तानी सेना के बंगाली अधिकारी कई टोलियों में आये और भारतीय सीमा सुरक्षा दल को आत्मसमर्पण किया।

◆पाकिस्तानी सेना ने आज २४ परगना जिले की चौडंगा चौकी पर गोलाबारी की और दो भारतीय सिपाही मारे।

◆श्री जयप्रकाशनारायण ने कलकत्ता में आज फिर भार सरकार से बंगला देश को मान्यता देने की मांग की।

◆कनाडा के संसद सदस्यों ने आज पत्रकारों से नयी दिल्ली में कहा—बंगला देश की समस्या के हल के लिये राजनीतिक समझौता किया जाय।

◆रक्षा उत्पादन मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने आज लोकसभा में कहा कि अपनी रक्षा की आवश्यकताओं के मामले में भारत ने काफी आत्म-निर्भरता प्राप्त करली है।

१० जुलाई का दिन

कूचविहार पर पाकिस्तानी गोलाबारी से आज दो भारतीय और मरे।

◆विश्व बैंक ने वाशिंगटन में बंगाला देश में आतंक, अर्थ-संकट और भुखमरी की रिपोर्ट में कहा कि पाक सेना ने कत्लेआम में पहले की सभी घटनाओं को मात कर दिया। उस हत्याकांड से रोंगटे खड़े होते हैं।

११ जुलाई

बंगला छापामारों ने जगह-जगह पाकिस्तानियों को भूना और ढाका की बिजली लाईन उड़ा दी। आज ३० पाक सैनिक और चार अधिकारी मारे गये।

१२ जुलाई—भारत में भारी राजनैतिक हलचल

१२ जुलाई का दिन भारतीय इतिहास में विशेष हलचल का दिन माना जायेगा। पाक को अमेरिकी हथियारों की सप्लाई के सम्बन्ध में क्रुद्ध संसद सदस्यों ने सदन में मांग की कि भारतीय राजदूत को अमेरिका से वापस बुलाया जाय। विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह ने लोकसभा को बताया कि शस्त्र सप्लाई के विरोध में भारत ने अमेरिका को विरोध-पत्र भेजा है, साथ ही उसे बता दिया है कि उसकी इस कार्र-वाई से इस उप-महाद्वीप में शान्ति खतरे में पड़ जायेगी।

संसद सदस्यों ने विरोधस्वरूप अमेरिकी सहायता को भी ठुकराने की माँग की।

◆आज लोक सभा में रक्षामंत्री श्री जगजीवनराम ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दी कि भारत बंगला देश के मुक्ति संग्राम का समर्थन करता है और करता रहेगा और पाकिस्तानी कुत्सित इरादों के लिये भी तैयार है।

◆नयी दिल्ली में आज पता चला कि शेख मुजीबुर्रहमान को मियांवाली जेल में बन्द किया हुआ है।

◆जनसंघ अध्यक्ष श्री अटलविहारी वाजपेयी ने आज भोपाल की एक विशाल सभा में प्रधानमंत्री पर वायदाखिलाफी का आरोप लगाते हुए कहा—प्रधानमंत्री बंगला देश के प्रश्न पर अपने वायदे से मुकर रही हैं। वे विदेशी दबाव में आ चुकी हैं। यदि उन्होंने मान्यता न दी तो बंगला देश विवश होकर भारत विरोधी शक्तियों के हाथ में चला जायगा।

१३ जुलाई—छापामार बढ़े

आज बंगला छापामारों ने पाकिस्तानी सेना को मेहरपुर से भगा दिया। फेनी और गुगावती के पुल उड़ा दिये।

◆कनाडा के प्रधान मंत्री शार्प ने कहा—पाकिस्तान का विभाजन हो जाना ही इस समस्या का एकमात्र हल है।

दिल्ली में—

युवक कांग्रेस के ६९ कार्यकर्त्ता नयी दिल्ली के अमेरिकी दूतावास पर धरना देते हुए पुलिस ने आज गिरफ्तार किये।

१४ जुलाई—मुक्ति सेना की कार्रवाई और तेज

मुजीब नगर से मुक्ति सेना की कार्रवाई और तेज होने का समाचार मिला। खुलना में खोजी सीमा चौकी से पाकिस्तानी भगाये। बहुत से शस्त्रास्त्र और गोला-बारूद हाथ लगा। कुश्तिया में मेहरपुर नगर घेर लिया। नूरपुर-मेहरपुर मार्ग पर ५६ पाकिस्तानी सैनिक मारे। अमेरिकी और चीनी दूतावासों पर हमला करके छापामार हथगोलों के नक्शे उठा ले गये। आज की इन घटनाओं की पुष्टि पाकिस्तान रेडियो ने भी की।

◆नदिया जिले में भारतीय सेना ने तीन सिपाही जहन्नुम भेजे।

◆ब्रिटिश संसद सदस्यों ने नयी दिल्ली में घोषणा की कि संसार को चाहिये कि वह पाकिस्तान के जुल्मों की निन्दा करे।

◆सीनेटर कैनेडी ने पाक को शस्त्र सहायता जारी रखने के लिये प्रशासन की कटु आलोचना की।

१५ जुलाई—मुक्ति सेना द्वारा समुद्री लड़ाई शुरू

बंगला देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री ताजुद्दीन ने घोषणा की कि अब हमने समुद्री और हवाई युद्ध शुरू करने का निर्णय किया है। श्री ताजुद्दीन की घोषणा के बाद मुक्ति सेना ने जिसका नाम आज 'मुक्तिवाहिनी' किया गया, दिन दहाड़े सिलहट, ढाका और ढाका के सरकारी निवास स्थानों पर हमले शुरू कर दिये।

—पाकिस्तान ने आज राष्ट्रमण्डल से हटने की धमकी दी।

—अमेरिकी लोकसभा की विदेश मामला समिति में सरकार के उस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया जिसमें पाकिस्तान को ११८० लाख डालर की सहायता का सुझाव था।

१७ जुलाई—विशेष दिन

१७ जुलाई संसार की राजनीति में निक्सन के चीन जाने की घोषणा के कारण विशेष दिन था। जिसकी भारत में मिली जुली प्रतिक्रिया हुयी। आम तौर से राजनैतिक क्षेत्रों में इसे पेकिंग—पिंडी—वाशिंगटन धुरी माना गया।

—भारतीय रेलों में पाकिस्तानी जासूसों द्वारा तोड़फोड़ की वारदातें रोकने के लिये लाईनों पर सेना की गश्त बढ़ायी गयी।

रेडियो पाकिस्तान ने इस्लामी सदर मुकाम के महासचिव तूँकू अब्दुल रहमान की याहिया खां से बातचीत का जिक्र किया। बताया गया कि उन्होंने कहा—मैं शरणार्थियों के प्रश्न पर पाकिस्तान और भारत में मध्यस्थता करने को तैयार ही हूँ। यदि दोनों पक्ष चाहें।

—अमेरिका स्थित भारतीय राजदूत श्री एल० के० झा श्री किसिंगर से बातचीत करने के लिये लाल एंजेल्स रवाना हुए।

— राष्ट्रसंघ के महासचिव श्री थाँत ने अपने विदेशों में स्थित सभी कार्यालयों को निर्देश दिया कि वे बंगला देश के बारे में कोई ज्ञापन न लें। ऊ थाँत ने बंगला देश के लोगों से मिलने, या उनकी बात सुनने से इन्कार कर दिया था; लेकिन दो 'गद्दार' बंगालियों जिन्हें पाकिस्तान ने अमेरिका भेजा था, उनसे मिले। उनमें एक थे—पाकिस्तान के भू० पू० विदेशमंत्री हमीदुलहक और दूसरे थे—पाकिस्तान डेमोक्रेटिक पार्टी के उपाध्यक्ष श्री महमूद अली।

—वर्धा गंज में आज सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने फिर कहा—बंगला देश को मान्यता देने का समय आ गया है।

आज याहिया खाँ ने घोषणा की—सारी दुनिया इस बात को सुनले, यदि भारत ने पूर्वी पाकिस्तान के किसी भाग पर कब्जे का प्रयत्न किया तो मैं युद्ध छेड़ दूँगा।

◆गुजरात के राज्यपाल श्री मन्नारायण को एक पत्र में खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने लिखा—पाकिस्तान एक शरारती बच्चा है जिसके चपत लगाना जरूरी है।

◆राज्य सभा में आज फिर वाशिंगटन से अपना दूत वापस बुलाने की मांग की गयी और विदेश मंत्री श्री स्वर्णसिंह ने कहा—पाकिस्तान को लगातार अमेरिकी शस्त्रास्त्रों की सहायता से भारत-अमरीकी संबंधों पर प्रभाव पड़ सकता है। अमरीका ने पाक को हथियार भेजने की जो मात्रा स्वीकार की है, वह उससे कहीं अधिक ही हो सकती है।

◆बंगला देश के शरणार्थियों की सहायता के लिये चालू साल के बजट में रखे गये ६० करोड़ रुपये व्यय किये जा चुके हैं। इसलिये सरकार इसी अधिवेशन में शरणार्थियों के लिये १५० करोड़ की पूरक मांगे पेश करेगी। अतः यह घाटा २०० करोड़ से बढ़कर ३५० करोड़ हो सकता है। अतः इस घाटे की पूर्ति के लिए नवम्बर में शुरू होने वाले अधिवेशन में नये कर प्रस्ताव रखे जायेंगे, यह घोषणा आज वित्त मंत्री श्री चव्हाण ने की।

२१ जुलाई

२० जुलाई को कोई उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। २१ जुलाई को पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहियाखाँ की इस धमकी पर कि मैं भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ दूँगा, संसद सदस्यों ने तीव्र रोष व्यक्त किया। विदेश मंत्री ने आश्वासन दिया कि भारत किसी भी पाकिस्तानी हमले का मुँह तोड़ जवाब देगा।

भारत सरकार ने आज भारत और पाक सीमा पर राष्ट्रसंघ के प्रेक्षक रखने से इन्कार कर दिया।

प्रधानमंत्री ने आज देशवासियों से अपील की कि वह बंगला देश की खातिर मुसीबतें झेलने को तैयार रहें।

२२ जुलाई

जनसंघ अध्यक्ष श्री वाजपेयी ने आज लखनऊ में कहा—बंगला देश को मान्यता न देना भारी भूल होगी।

भारत सरकार ने आज फिर पाकिस्तान को सीमा का उल्लंघन न करने की चेतावनी दी।

◆बंगला देश में मुक्तिवाहिनी ने कई क्षेत्र पाक के अधिकार से मुक्त करा लिये।

२३ जुलाई

संसद में आज रक्षा मंत्री श्री जगजीवनराम ने घोषणा की कि भारतीय सीमा का उल्लंघन करने वाले पाकिस्तानी जहाजों को मार गिराया जायेगा।

२५ जुलाई

पाकिस्तान ने ढाका स्थित भारतीय उच्चायुक्त श्री सेन गुप्त को उनके मकान में नजरबन्द करके फोन काट दिया ।

२६ जुलाई

प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने आज विरोधी दलों के सदस्यों को बताया कि बंगला देश को मान्यता देने के लिये कोई शर्त नहीं है, केवल उचित समय आने भर की प्रतीक्षा है ।

२७ जुलाई

संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्कालीन महासचिव श्री ऊ थांत ने भारत और बंगला देश के राजदूतों से भारत और पाकिस्तान की सीमा स्थिति पर अलग-अलग बातचीत की ।

नयी दिल्ली में राज्य सभा के अधिवेशन में बंगला देश को मान्यता के प्रश्न पर आधा घण्टा तक हंगामा हुआ ।

३० जुलाई

राष्ट्रसंघ में बीस देशों ने आज यह नोट लिखकर ऊ थांत को दिया कि प्रेक्षकों को भारत-पाक सीमा पर नियुक्त नहीं होने दिया जायेगा । साथ ही भारत ने भी आज यह स्पष्ट घोषणा कर दी कि भारत इस मामले में सुरक्षा परिषद का हस्तक्षेप भी सहन नहीं करेगा ।

३१ जुलाई

राज्य सभा में आज सभी पक्षों की ओर से बंगला देश को मान्यता देने की मांग की गई और कहा गया कि यदि बंगला देश को मान्यता देने में देर की तो भारत की सुरक्षा और आर्थिक नीति को गहरा धक्का लगेगा ।

उर्दू सम्पादकों ने आज नयी दिल्ली में पाकिस्तान के विरुद्ध प्रदर्शन किया ।

● अमेरिका के भूतपूर्व सेनेटर श्री मैकार्थी ने आज स्वतन्त्र बंगला देश का समर्थन किया ।

१ अगस्त

आज अखिल भारतीय जनसंघ के ५०० कार्यकर्त्ता, बंगला देश के मामले पर १२ दिन के प्रथम सत्याग्रह में गिरफ्तार किये गये ।

● आज कोमिल्ला का बंगला देश से सम्बन्ध मुक्ति सेना ने काट दिया ।

● ब्रिटेन स्थित पाक दूतावास के बंगाली कर्मचारियों और वाशिंगटन स्थित पाक दूतावास के बंगाली कर्मचारियों ने आज बंगला देश के प्रति निष्ठा व्यक्त की ।

२ अगस्त

आज नई दिल्ली में बंगला देश को मान्यता के प्रश्न पर सत्याग्रह करते हुए जनसंघ के ६०० सत्याग्रही और गिरफ्तार हुए।

आज भारत सरकार ने बंगला देश पर प्रेक्षकों की नियुक्ति के लिये स्पष्ट इन्कार कर दिया।

विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने याहिया खां की धमकी का उत्तर लोकसभा में देते हुए कहा कि हम पाकिस्तानी हमले का मुँह तोड़ उत्तर देंगे।

दिल्ली स्थित पाक उच्चायोग के तीसरे व्यक्ति अब्दुल मजीद ने आज बंगला देश के प्रति निष्ठा व्यक्त की।

आज श्री कैनेडी के १८ अगस्त को भारत आने की अधिकृत घोषणा हुई और काबुल में खान अब्दुल गफ्फार खां ने पाकिस्तान को सलाह दी कि वह बंगला देश से राजनैतिक समझौता कर लें।

पाकिस्तान सरकार ने आज इंजीनियरिंग कालेजों में बंगला छात्रों का दाखला रद्द कर दिया।

फरीदपुर में मुक्तिवाहिनी ने आज अपनी कार्रवाई तेज कर दी।

३ अगस्त

भारत सरकार ने बताया कि वह शेख मुजीब की रिहाई के लिये अनेक देशों से बातचीत कर रही है।

आज पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहिया खां ने यह आश्वासन देने से इन्कार कर दिया कि शेख को फांसी नहीं दी जायेगी। फाँसी दी जा सकती है।

४ अगस्त

आज बंगला छापामारों ने पाकिस्तान का सी० १३० विमान मार गिराया।

मलेशिया के भू० पू० प्रधानमन्त्री तुंकु अब्दुल रहमान ने आज बंगला देश के मामले पर प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी और परराष्ट्र मन्त्री श्री स्वर्णसिंह से बातचीत की।

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने पाकिस्तान को सहायता बन्द करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

५ अगस्त

मास्को में आज भारतीय राजदूत ने सोवियत प्रधान मन्त्री से बंगला देश के मामले पर बातचीत की।

आज निक्सन ने अपनी संसद के इस प्रस्ताव को मानने से इन्कार कर

दिया कि पाकिस्तान की सहायता बन्द की जाय।

● नयी दिल्ली में जनसंघ के आज ७६० सत्याग्रही गिरफ्तार हुए।

६ अगस्त

याहिया खां ने ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री हीथ की मुजीब की मुक्ति के सम्बन्ध में मिलने की मांग अस्वीकार कर दी।

आज ब्रिटेन में लार्ड ब्रॉकवे ने भविष्यवाणी की कि बंगला देश बन कर रहेगा।

भारतीय संसद के सत्रह सदस्यों ने आज घोषणा की कि जनसंघ का सत्याग्रह देश की एकता भंग करने के लिये है।

नयी दिल्ली में कांग्रेस ने बंगबन्धु की रिहाई के लिये प्रदर्शन किया और श्रीमती गांधी ने अपने भाषण में कहा कि सारे पाकिस्तान में उपद्रव की-सी स्थिति है।

आज ८३७ जनसंघी और गिरफ्तार हुए।

● आज ५०० संसद सदस्यों ने श्री मुजीब की मुक्ति के लिये आन्दोलन छेड़ने की घोषणा की।

७ अगस्त

श्री चह्वाण ने आज अपने भाषण में कहा—इस बार के युद्ध में हम पाकिस्तान को और भी अच्छा पाठ पढ़ायेंगे।

● जनसंघ के प्रदर्शनकारियों पर, जो पाक उच्चायुक्त के कार्यालय पर प्रदर्शन कर रहे थे, पुलिस ने अश्रुगैस छोड़ी।

● आज तक ७४ लाख शरणार्थी आ चुके थे।

● आज भारत सरकार ने अमेरिका से कड़ा विरोध प्रकट किया कि वह पाकिस्तान की हिमायत में जो कुछ कर रहा है, वह भारत के प्रति अमैत्री है।

अध्याय ८

भारतीय राजनीति को नया मोड़

८ अगस्त से भारतीय राजनीति को तब नया मोड़ मिलना प्रारम्भ हुआ जब रूस के विदेशमन्त्री श्री ग्रोमिको भारत आये और भारत सरकार को रूस के राष्ट्रपति का एक पत्र मिला।

आज सोवियत विदेश मन्त्री श्री ग्रोमिको ने विदेशमन्त्री सरदार स्वर्णसिंह से ६५ मिनट तक वार्ता की। यह वार्ता याहिया खां की युद्ध छेड़ने की धमकी और बंगला देश के प्रश्न पर हुई।

● जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटल विहारी वाजपेयी और कांग्रेस दल के नेताओं ने बंगला देश को मान्यता की मांग फिर दुहराई।

● पाक राष्ट्रपति याहिया खां ने आज लन्दन के 'संडे टाइम्स' को दी गयी भेंट में कहा—मुजीब ठीक है। आज तक ठीक है, कल की खुदा जाने।

● बंगला देश के कार्यवाहक राष्ट्रपति श्री नजरूल इस्लाम ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि यदि मुजीब की हत्या की गयी तो हम पाकिस्तान से कठोर बदला लेंगे।

● पाकिस्तान ने भारत आई बंगला देश की प्रसिद्ध अभिनेत्री कावेरी चौधरी की सम्पत्ति जब्त करली और १४ साल की कैद की सजा सुना दी।

९ अगस्त का विशेष महत्वपूर्ण दिन—भारत सोवियत २० वर्षीय संधि

९ अगस्त १९७१ ई० का दिन भारत के राजनैतिक इतिहास में विशेष महत्वपूर्ण दिन था। आज के दिन भारत और सोवियत संघ के बीच २० वर्षीय मैत्री-संधि हुई, जिससे संसार के सब बड़े देश चौंक गये। और भारत के सभी दलों के नेताओं ने इस संधि का स्वागत किया। प्रधानमन्त्री ने सवेरे ९ बजे संसद की बैठक बुलाकर पहले स्वीकृति ली।

संधि की रूपरेखा

इस संधि पर सोवियत संघ की ओर से श्री ग्रोमिको और भारत की ओर से सरदार स्वर्णसिंह ने हस्ताक्षर किये। संधि के अनुसार दोनों देश एक दूसरे पर आक्र-

मण नहीं करेंगे, एक दूसरे के विरुद्ध किसी गुट में शामिल नहीं होंगे। एक दूसरे के शत्रु को किसी प्रकार की सहायता नहीं देंगे। और एक पर आक्रमण होने के बाद उसके निराकरण के लिये तुरन्त बातचीत करेंगे। भारत पर ३ दिसम्बर को पाक के आक्रमण के बाद इसी संधि की धारा ९ के अन्तर्गत बातचीत हुई थी। इस संधि के अन्तर्गत सोवियत संघ ने वचन दिया था कि भारत के संकट के समय सोवियत संघ प्रभावकारी कार्रवाई करेगा।

आज प्रधानमन्त्री के समर्थन में लगभग १५ लाख व्यक्तियों की विशाल रैली हुई। इस रैली में इण्डियागेट मैदान पर प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने घोषणा की कि इस संधि से भारत की गुट निर्पेक्ष नीति में कोई अन्तर नहीं आया है।

● अमेरिका में इस संधि के बारे में कहा गया कि यह संधि अमेरिका और चीन की पिंगपौंग संधि का उत्तर है।

● आज भारतीय संसद में विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने याहिया खां की इस घोषणा पर कि शेख को फाँसी दी जा सकती है, कहा कि यदि याहिया ने यह बेवकूफी की तो इसका भयंकर परिणाम होगा।

●पाकिस्तान की फौजी सरकार ने आज घोषणा की कि ११ अगस्त को मुजीब पर विशेष अदालत के बन्द कमरे में मुकदमा चलाया जायेगा।

सोवियत विदेश मन्त्री श्री ग्रोमिको को पाकिस्तान ने अपने देश में आने का निमन्त्रण भेजा।

१० अगस्त का दिन

शेख मुजीब ने आज अपने मुकदमे में अपने बचाव के लिये वकील की मदद लेने से इन्कार कर दिया।

● श्री ग्रोमिको ने पाक जाने की योजना रद्द कर दी।

● पाकिस्तान ने श्री कैनेडी का पाक का दौरा रद्द कर दिया।

● नयी दिल्ली स्थित पाक दूतावास के एक चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी अपने बच्चों को लेकर बाहर आकर आजाद हो गये।

११ अगस्त

प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने १४ देशों के राष्ट्राध्यक्षों से मुजीब के प्राण बचाने की अपील करते हुए कहा कि यदि मुजीब को कुछ हो गया तो उसका परिणाम भयंकर होगा।

● भारत और सोवियत संयुक्त विज्ञप्ति में आज घोषणा की गयी कि बंगला

देश की समस्या का राजनैतिक हल निकाला जाय और शरणार्थियों को लौटाने के लिये सुरक्षा की गारण्टी दी जाय।

● आज श्री मुजीब पर मुकदमा शुरू होने का समाचार मिला और साथ ही उनके नाना बन जाने की खबर भी मिली।

● अमेरिकी सीनेटर श्री जान कैनेडी ने आज शरणार्थी शिविरों का दौरा किया और केन्द्रीय मंत्री श्री रे से बातचीत की।

आवामी लीग ने आज घोषणा की कि यदि मुजीब को फांसी दी गयी तो सारे पाकिस्तान समर्थक लोग और उसकी ४।। डिवीजन सेना का सफाया कर दिया जायेगा।

१२ अगस्त

आज ५ लाख आदमियों की विशाल रैली में जनसंघ अध्यक्ष श्री अटलविहारी वाजपेयी ने घोषणा की कि यदि पाकिस्तान ने हमला किया तो सारा देश एक होकर लड़ेगा।

● भारतीय राजनयिक और कर्मचारी आज ढाका से भारत लौट आये और श्री ग्रोमिको अपने देश पहुंच गये।

१३ अगस्त

श्री जान कैनेडी आज शरणार्थी शिविरों के दौरे से लौट आये और पत्रकार कॉफ्रेंस में उन्होंने कहा—इतिहास में इतने बड़े पैमाने पर कभी नर-संहार नहीं हुआ।

आज राष्ट्रपति ने भारत-रूस संधि पर हस्ताक्षर किये।

१४ अगस्त

आज राष्ट्रपति श्री गिरि ने स्वाधीनता दिवस के अपने सन्देश में कहा—बंगला देश की घटनाएं मानवता के लिये चुनौती हैं। रक्षा मन्त्री ने कहा—बंगला देश की समस्या का एकमात्र हल उसे आजादी देना है।

असम के कछार जिले में आज पाकिस्तानी विध्वंसकारियों ने एक भारतीय रेल को उड़ा दिया।

१५ अगस्त

प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने आज लालकिले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए कहा—हम सभी प्रकार के खतरों का सामना करने को तैयार हैं। भारत को आगे बढ़ने से दुनिया की कोई भी ताकत नहीं रोक सकती।

१६ अगस्त—गर्म दिन

आज मुक्तिवाहिनी ने कई क्षेत्रों पर धावा बोला और साथ ही सोमालिया के एक जहाज को उड़ा दिया।

ढाका में टिक्का खाँ ने आवामी लीग के विधायकों पर सम्मन जारी कराये। और उसकी सेनाओं ने एक भारतीय गांव पर धावा बोला।

● सोवियत यूनियन ने चीन और पाकिस्तान को चेतावनी दी कि वह भारत के विरुद्ध कोई कदम उठाने से पहले भारत-सोवियत संधि को भी कृपया अपनेध्यान में रखें।

● सेनेटर श्री कैनेडी ने नयी दिल्ली में अमेरिकी नीति की निन्दा की और भारत की प्रशंसा की। श्री कैनेडी ने भारत-रूस सन्धि को भी अमेरिका के विरुद्ध नहीं माना।

१७ अगस्त

राष्ट्रपति श्री गिरि ने आज बम्बई में अपने भाषण में कहा कि बंगला देश वालों की सभी आकांक्षाएं पूरी होंगी।

आज आपरेशन ओमेगा बंगला देश में २०० गज घुसा।

● पाक गोलाबारी से तीन भारतीय मरे।

● वियतनाम से अमेरिका ने पाक को बड़ी मात्रा में हथियार भेजे।

● पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्रसंघ से अपील की कि भारत-पाक सीमा पर तनाव घटाने के लिये एक आयोग भेजा जाय।

१८ अगस्त

खान अब्दुल गफ्फार खां के पुत्र खान वली खां ने आज घोषणा की कि पाकिस्तान के सामने दो विकल्प हैं। वह या तो बंगला देश छोड़ दे या भारत में मिल जाय।

सोवियत सरकार ने आज याहिया को बता दिया कि उसकी भारत के साथ युद्ध की धमकी का परिणाम विनाशकारी होगा। और ओमेगा दल ढाका से लौट आया।

१९ अगस्त

पाकिस्तान ने बंगला देश असेम्बली के १९५ सदस्यों को आज अयोग्य घोषित कर दिया।

२० अगस्त

आज चटगांव में मुक्ति सेना ने तीन जहाज उड़ाये। और अमेरिका ने पाकिस्तान को १३ जहाज और भेजे।

प्रधानमन्त्री ने संयुक्तराष्ट्र की भूमिका को खेदजनक बताया।

श्री मुजीब से मिलने पाकिस्तानी वकील श्री ब्रोही मौंटगुमरी जेल गये।

भारत में अमेरिका के भू० पू० राजदूत श्री गालब्रेथ ने पाक को अमेरिकी सैनिक मदद बन्द करने की मांग की।

२१ अगस्त

पूर्वी जर्मनी ने पाक को हथियार न देने की घोषणा की। मुक्तिवाहिनी ने कई क्षेत्रों को मुक्त किया और लूट के माल के बँटवारे पर ७५ पाकिस्तानी सैनिक लड़ मरे।

ईराक में पाक राजदूत ने पाकिस्तान का साथ छोड़ दिया।

२२ अगस्त

मुक्ति सेना ने हथियारों से लदे कई जहाज डुबाये। ८० लाख शरणार्थी भारत आ चुके। छापामारों को सहायता भारत न दे यह अपील पाकिस्तान ने रूस से की।

२८ अगस्त

२८ अगस्त को अमेरिका सरकार ने स्पष्ट घोषणा की कि वह पाकिस्तान को हथियारों की सप्लाई जारी रखेगा। कारण यह बताया गया कि उसकी यह खरीद बंगला देश के मामले से पहली है। सीनेटर पर्सी ने अमेरिकी सरकार की इस नीति की कठोर निन्दा की।

३१ अगस्त और १ सितम्बर

याहिया खां ने श्री ए० एम० मलिक को टिक्का खां की जगह पूर्वी बंगाल में नागरिक शासन प्रदान करने की घोषणा करते हुए गवर्नर बनाया। पाकिस्तान से यह भी समाचार मिला कि तीन महीने तक श्री मुजीब पर मुकदमा नहीं चलाया जायेगा। साथ ही याहिया खाँ ने विश्व को चेतावनी दी कि भारत हमारे एक हिस्से को हज्म कर लेना चाहता है। यदि उसने ऐसा किया तो एक पूरा युद्ध छेड़ दूंगा।

पाक सदस्य श्री आगा हिलाली ने आज राष्ट्रसंघ में भारत-सोवियत मैत्री संधि की आलोचना की और यह स्वीकार किया कि पूर्वी बंगाल में हजारों पाक समर्थकों का सफाया कर दिया गया है।

३ सितम्बर

ब्रिटिश संसद सदस्य श्री शीर ने आज घोषणा की कि बंगला देश के रूप में एक नये राष्ट्र का जन्म होने वाला है। पश्चिमी जर्मन प्रतिनिधि दल ने घोषणा की कि बंगला देश का मामला तय हुए बिना पाकिस्तान को किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जायेगी।

मुक्ति सेना के गुरिल्लों ने दो विदेशी जहाज डुबा दिये और २५० पाक सैनिक मारे।

४ सितम्बर

पेरिस में अन्तर्राष्ट्रीय यूनियन का ५६वां सम्मेलन शुरू हुआ और बंगला देश के मामले पर विचार हुआ। पाकिस्तानी सैनिकों का विवाह आज कई हजार बंगला देश की लड़कियों से किया गया और भारत-सीमा पर गोलियाँ चला कर त्रिपुरा के गोपालनगर शरणार्थी कैम्प के छः शरणार्थी और पांच बच्चे पाकिस्तानियों ने मार दिये।

६ सितम्बर

जम्मू में आज प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने कहा—भारत किसी भी हमले का सामना करने को तैयार है। इसके अतिरिक्त शांति परिषद के सदस्य बंगला समस्या पर श्री ऊथांत से मिले। और बंगला देश में मुक्ति सैनिकों ने दो सौ पाक सैनिकों को समाप्त कर कई बड़े क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। इसके अतिरिक्त पाक प्रतिनिधि-मण्डल ने रूस जाकर सोवियत नेताओं से वार्ता की।

७ सितम्बर और ८ सितम्बर

बंगला देश के दिल्ली स्थित प्रतिनिधि श्री शहाबुद्दीन ने आज नयी दिल्ली में बताया कि बंगला देश के बड़े भाग पर मुक्तिवाहिनी अधिकार कर चुकी है।

पाकिस्तानी सेना ने आज ढाका की घेराबन्दी शुरू कर दी।

९ सितम्बर

हैदराबाद में राष्ट्रपति श्री गिरि ने कहा—बंगला देश की दुर्दशा पर विश्व का जनमत जाग्रत न होना अत्यन्त खेदजनक बात है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आज घोषणा की कि भारत-रूस संधि बंगला देश के मामले पर निर्णायक कदम उठाने में बाधक है। बंगला देश में मुक्ति-संग्राम चलाने के लिये एक समिति का गठन किया गया।

१०-११ सितम्बर

मैमनसिंह, रंगपुर और दीनाजपुर क्षेत्र में मुक्ति सैनिकों ने ४५६ पाक सैनिक मारे। १०६ घायल किये और बहुत-सा गोला-बारूद उनके हाथ लगा।

कोलम्बो में लंका की प्रधान मंत्री श्रीमती माओ से सरदार स्वर्णसिंह ने वार्ता की।

ढाका में पूर्वी बंगाल के नये गवर्नर डा० मलिक ने आशा व्यक्त की कि आवामी लीग के नेताओं से बातचीत हो जायेगी। लेकिन आवामी लीग के नेताओं ने घोषणा की कि हम उनसे कोई बातचीत नहीं करेंगे।

१४ सितम्बर

आज फिलिपीन में पाकिस्तान के राजदूत ने बंगला देश के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की और भुट्टो के १३ सितम्बर के उस भाषण का जिसमें उसने कहा था—पश्चिमी पाकिस्तान में भी मुक्ति युद्ध शुरू हो सकता है, राष्ट्रपति याहिया ने कड़ा विरोध प्रकट किया।

विश्व शांति परिषद ने ऊथांत को स्मृति-पत्र देकर मांग की कि बंगला देश का हल जनता की इच्छानुसार किया जाय।

१५ सितम्बर

सिंगापुर में आज प्रधानमन्त्री श्री लीकुआन ने राष्ट्रपति श्री गिरि से बातचीत की और बंगला देश पर अपना रुख भारत के अनुकूल माना।

याहिया खां ने आज ईरान के शाह से तेहरान जाकर वार्ता की और बंगला देश में मुक्ति सैनिकों ने ६० पाकिस्तानी सैनिक मार डाले।

१६ सितम्बर

आज पाक एजेंटों ने असम में एक भारतीय रेल गाड़ी को डायनामाइट से उड़ाने का प्रयत्न किया। ६ डिब्बे इंजन सहित पटरी से उतर गये। कई यात्री मरे, कई घायल हुए।

बंगला देश में पाकिस्तानी सेना ने अत्याचारों में और तेजी की। अब उन्होंने गांवों पर हमले और औरतों तथा लड़कियों के पकड़ने का काम तेज कर दिया। और मुजीव नगर में श्री धर से बंगला देश के मंत्रियों ने वार्ता की।

१७ सितम्बर

आज पाक विमानों ने भारतीय सीमा का उल्लंघन किया और पाक सैनिक शिविर पर मुक्ति सेना ने हमला किया।

१८ सितम्बर

नयी दिल्ली में बंगला देश पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। उसमें शेख मुजीब की रिहाई की माँग की गई और भारत से मान्यता देने की अपील की।

२१ सितम्बर

आज नई दिल्ली में सोवियत कूटनीतिज्ञ श्री एस० के० सदापकिन आये और बंगला देश तथा चीन के रुख तथा हिन्द महासागर के सवाल पर भारत सरकार से बातचीत की।

२२ सितम्बर

बंगला देश का एक प्रतिनिधि मण्डल अपनी स्थिति राष्ट्रसंघ को समझाने के

लिये न्यूयार्क रवाना हुआ। इसके नेता श्री अबू सईद चौधरी थे। वह बाद में सदस्यों से मिला।

२४ सितम्बर

आज अचानक पूर्वी बंगाल सीमा चौकियों से पाक सेना पीछे हट गई, दिल्ली में आपात स्थिति की घोषणा करने पर विचार हुआ।

२५ सितम्बर

बम्बई में शेख मुजीब के छोटे भाई अबू नासिर ने घोषणा की कि बंगला देश १९४७ में भारत आये लोगों को भी वापस लेगा।

२७ सितम्बर—भारत की तेज गतिविधियां

२७ सितम्बर को भारत की राजनैतिक गतिविधि तब अचानक तेज हो गयी, जब प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी मास्को पहुँचीं और नुकोलो विमान स्थल पर स्वागत के बाद उन्होंने भारत-सोवियत मैत्री संधि तथा बंगला देश के नेताओं से राजनैतिक वार्ता की। आज ही भारत के विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में पाकिस्तानी अत्याचारों की तस्वीर खींची और मांग की कि पाकिस्तान को बंगला देश के साथ राजनैतिक हल के लिये विवश किया जाय।

आज ही भारतीय नौसेना ने बम्बई के पास एक पाकिस्तानी पनडुब्बी का पीछा किया और खुलना के एक बड़े भाग पर मुक्ति सेना ने अधिकार किया।

२८ सितम्बर

सोवियत प्रधानमन्त्री श्री कोसीगिन ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री याहिया से एक आम सभा में बंगला देश का राजनतिक हल निकालने की अपील की।

३० सितम्बर

सोवियत राष्ट्रपति पोदगोर्नी हनोई जाते हुए भारत में रुके। मुक्तिसेना ने ढाका विद्युत स्टेशन नष्ट किया। वाशिंगटन में भारत के वित्तमंत्री श्री चह्वाण ने कहा—पाकिस्तान को शस्त्र देकर अमेरिका ने भारत का बहुत अहित किया है।

ब्रिटेन के विदेश मंत्री सर एलेक डगलस ह्यूम ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में कहा—सीमान्त स्थिति से ऐसा लगता है कि भारत और पाकिस्तान में युद्ध छिड़ जायेगा। मास्को से समाचार मिला कि बंगला देश के मामले पर सोवियत संघ भारत के रुख से सहमत है।

१ अक्तूबर

वाशिंगटन में शान्ति के लिये विश्व सम्मेलन में महामन्त्री होमर जैक ने कहा—शरणार्थी समस्या का एकमात्र हल बंगला देश का निर्माण है। सीनेटर कैनेडी

युद्ध छेड़ने का अपराधी घोषित किया और राष्ट्रपति याहिया खां से उन्हें मृत्यु दण्ड देने की सिफारिश की।

१२ अक्तूबर

समस्त भारतीय सीमांत पर पाकिस्तानी सेना आ जमी; मद्रास में जनसंघ ने बंगला देश को मान्यता की अपनी माँग फिर दुहराई; श्रीलंका की प्रधानमन्त्री श्रीमती बंडारनायक ने पूर्वी बंगाल की समस्या का राजनैतिक समाधान खोजने पर बल दिया और याहिया खां ने भारत के विरुद्ध जहरीला भाषण दिया।

मुक्ति सेना ने दीनाजपुर, रंगपुर और राजशाही पर अपने आक्रमण जारी रखे।

१३ अक्तूबर

आज बेलगांव में प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने पाकिस्तान के युद्ध के खतरे के प्रति जनता से तैयार हो जाने की अपील की; और भारत सरकार ने याहिया खां की कल की युद्ध की धमकी के भाषण पर विचार किया।

याहिया खां ने अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन से मध्यस्थता की अपील की और अपनी सैनिक हरकतों में तेजी भी कर दी। पाकिस्तान में सभी शहरों की दीवारों पर 'भारत को कुचल दो' के पोस्टर लगाये और भारत को कुचलने वाला एक मोर्चा एक रिटायर्ड पाकिस्तानी कर्नल की कमान में तैयार किया गया।

१४ अक्तूबर

आज सोवियत सरकार ने भारत सरकार को सूचित किया कि बंगला देश के बारे में सोवियत सरकार की नीति यथापूर्व है और वह वही है जो भारत की है।

फिरोजपुर में आज पाकिस्तानी सेना के बख्तरबन्द दस्ते को भारतीय सीमा की ओर बढ़ते देखा गया।

बम्बई के एक प्रेस सम्मेलन में आज प्रधानमंत्री ने स्पष्ट घोषणा की कि भारत बंगला देश के प्रश्न पर मित्र देशों के सहयोग की आकाँक्षा अवश्य रखता है; लेकिन अपनी नीति में हस्तक्षेप की नहीं। उसी दिन एक दूसरे भाषण में प्रधानमंत्री ने कहा—भारत याहिया की किसी भी धमकी से नहीं डरता। उसकी जो इच्छा हो करे; लेकिन परिणाम भुगतने के लिये भी तैयार रहे।

मास्को में सोवियत-मिस्र संयुक्त विज्ञप्ति में बंगला देश का कोई जिक्र नहीं किया गया। शायद ऐसा मिस्र के राष्ट्रपति सादात के कहने पर किया गया।

१६ अक्तूबर

आज मंत्रिमण्डल ने नयी दिल्ली में संभावित पाकिस्तानी आक्रमण की स्थिति

पर विचार किया और यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो भारत आये। याहिया ईरान से सांठ-गाँठ करके रावलपिंडी वापस आ गये।

१७ अक्टूबर

सोवियत संघ के प्रमुख पत्र 'प्रावदा' ने भारतीय उप-महाद्वीप में तनाव के लिये पाकिस्तान को दोषी ठहराया और श्री स्वर्णसिंह ने भारत पर पाकिस्तानी आक्रमण को अवश्यंभावी बताया।

पाकिस्तान रेडियो ने घोषणा की कि यदि भारत बंगला देश को सहायता न दे और उधर से अपनी सारी सेना हटा ले, तब पाकिस्तान भी हटा लेगा।

प्रसिद्ध ब्रिटिश विचारक व लेखक जान ग्रिग ने पश्चिमी देशों से अपील की कि वह भारत-पाक युद्ध रुकवाने के लिये आगे बढ़ें।

राष्ट्रपति टीटो ने नयी दिल्ली में घोषणा की कि बंगला देश की घटनाओं के कारण पूरे उप-महाद्वीप को खतरा पैदा हो गया है।

रक्षा मंत्री श्री जगजीवनराम ने आज जालंधर में भाषण देते हुए कहा—यदि भारत पर युद्ध लादा गया तो भारतीय सेना पाक के अन्दर घुस जायेगी और इस बार हमारे जवान पीछे नहीं हटेंगे, भले ही उसका परिणाम कुछ भी हो।

अमेरिका ने आज इस गड़बड़ पर चिन्ता प्रकट की और पाकिस्तान ने राष्ट्र-संघ के प्रेक्षकों के घूमने-फिरने पर रोक लगा दी।

आज मुक्तिवाहिनी ने छटक नगर के एक भाग पर कब्जा कर लिया।

१८ अक्टूबर

मद्रास के मुख्यमन्त्री श्री करुणानिधि ने राष्ट्र-रक्षा के लिये जनता से उठ कर खड़े हो जाने की सारगर्भित अपील की।

पूना के पास सैनिक ट्रेन उड़ाने की पाकिस्तानी जासूसों ने कोशिश की और शीलाँग में एक भारतीय मालगाड़ी के चार डिब्बे उड़ा भी दिये।

अखिल भारतीय बन्दरगाह तथा गोदी कामगार संघ के अध्यक्ष श्री एम० आर कुलकर्णी ने विदेशी जहाजों को चेतावनी दी कि वह विदेशों से भारत आने वाले माल और भारतीय यात्रियों को किसी भी पाकिस्तानी बन्दरगाह पर लेकर न जायें।

श्रीमती गांधी ने यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति श्री टीटो से आज बंगला देश की समस्या पर वार्ता की और पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहिया खां ने बंगला देश संघर्ष को पाक का अन्दरूनी मामला बताकर भारत से बातचीत करने की अपील की।

मुक्तिवाहिनी ने आज १२५ पाकिस्तानी सैनिकों का सफाया किया और अनेक पुल नष्ट किये।

२० अक्तूबर का विशेष महत्वपूर्ण दिन

आज भारत सरकार ने अमेरिका का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया कि भारत अपनी सीमा से सेना हटा ले। प्रवक्ता ने कहा—जब तक पाकिस्तान की ओर से पैदा किया गया खतरा दूर नहीं हो जाता, भारत अपनी सेनाएं नहीं हटायेगा।

भारत—यूगोस्लाव संयुक्त विज्ञप्ति में आज बंगला देश की समस्या के लिये राजनैतिक हल निकालने पर बल दिया गया।

आज अगरतल्ला क्षेत्र पर हुई पाक गोलाबारी से चार भारतीय मरे और दस घायल हुए।

पाकिस्तान को सऊदी अरब ने ५७ वायुयान दिये और बंगला देश में मुक्ति सेनाओं ने अपना युद्ध तेज कर दिया और कस्बा नगर पर कब्जा कर लिया।

आज राष्ट्रसंघ के अध्यक्ष श्री ऊ थांत ने भारतीय और पाकिस्तानी प्रतिनिधियों से अलग-अलग बातचीत की।

प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने बंगला देश के प्रश्न पर पाकिस्तान से बातचीत करने से इन्कार कर दिया।

२१ अक्तूबर

हैदराबाद में रक्षामन्त्री श्री जगजीवनराम ने घोषणा की पाकिस्तान की हर कार्यवाही का जवाब देने के लिये हम तैयार हैं।

पाकिस्तानी जासूसों ने आज फिर गोहाटी में मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतार दिये।

२२ अक्तूबर

आज रात केन्द्रीय सरकार ने एक आपत्कालीन उपाय के रूप में अतिरिक्त साधन स्रोत जुटाने के लिये राज्यों द्वारा लगाये जाने वाले करों के साथ-साथ तीन अध्यादेशों को लागू कर दिया जिनके द्वारा ७० करोड़ रुपये के नये कर लगाये गये।

जम्मू-छम्ब-जोरियाँ क्षेत्र पर आज पाकिस्तानी बख्तरबन्द दस्ते आ गये। यह वही क्षेत्र है जहां १९६५ के भारत—पाक युद्ध के समय पाकिस्तान ने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पार की थी।

आज राष्ट्रपति श्री गिरि ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि वह भारतीय संयम का अर्थ कमजोरी न लगाये। हम उसकी हर हरकत का उत्तर देने को तैयार हैं।

भारत-पाक सीमाओं को गर्म होते देखकर सोवियत सरकार के उप-विदेश मन्त्री भारत सरकार से आवश्यक परामर्श के लिये आज नयी दिल्ली आये।

जनसंघ अध्यक्ष श्री अटल विहारी वाजपेयी ने प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी को आश्वासन दिया कि पाक की शरारत के समय जनसंघ देश में एकता बनाये रखेगा और सरकार को पूरा सहयोग देगा।

◆बंगला देश से भागकर आये १२ हजार रजाकारों ने सीमा पार करके भारत से शरण माँगी।

२३ अक्तूबर

प्रधानमन्त्री ने आज राष्ट्र की जनता से देश की रक्षा और अखण्डता की रक्षा के लिये अपील करते हुए कहा—यह समय सैनिकों के लिये ही नहीं जनता के लिये भी सजग और तैयार रहने का है।

◆कच्छ सीमा की रक्षा का भार आज सेना के सुपुर्द कर दिया गया।

◆ऊ थांत ने संयम बनाये रखने के लिये भारत और पाकिस्तान सरकार को पत्र लिखे।

◆अगरतल्ला पर पाकिस्तानी गोलाबारी से २० भारतीय घायल हुए।

◆पाकिस्तान में प्रधानमन्त्री गाँधी और श्री कोसीगिन के पुतले जलाये गये।

अध्याय ९

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की ऐतिहासिक विदेश-यात्रा

२४ अक्तूबर को प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने अपनी उस ऐतिहासिक यात्रा का प्रारम्भ किया जिसमें उन्होंने बड़ी शक्तियों को बंगला देश की परिस्थिति समझाने का प्रयत्न किया था। यह दौरा यूरोप और अमेरिका मेंतीन सप्ताह का था।

२४ अक्तूबर को प्रधान मन्त्री की प्रथम वातचीत लेबनान के प्रधानमन्त्री से बेरुत में हुई और वहीं पत्रकारों को भी उन्होंने बंगला देश की स्थिति समझायी। उसके बाद उसी दिन प्रधान मन्त्री बेल्जियम की राजधानी ब्रूसेल्स पहुँच गयीं। यहाँ उन्हें तीन दिन रुकना था।

✦त्रिपुरा और असम पर पाक ने गोलाबारी तेज कर दी और मुक्ति सेना ने पाकिस्तानी सेना का सफाया भी तेज कर दिया।

✦मिस्र के राष्ट्रपति सादात को आज भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी का पत्र मिल गया। भारत में ऊ थाँत के पत्र का अध्ययन जारी रहा। अमेरिका सरकार ने भारत के विरुद्ध प्रचार का जिहाद छेड़ दिया। पाकिस्तानी दूतावास ने पाकिस्तान लौटने के लिये नयी दिल्ली के अपने समस्त कर्मचारियों को बोरिया-बिस्तर लपेटने की आज्ञा दे दी। पाक सेना की हरकतों पर भारतीय सेना ने निगाह रखनी शुरू कर दी।

२५ अक्तूबर

बेल्जियम के प्रधानमन्त्री गेस्टन आइस्केल ने प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी से ९० मिनट तक बंगला देश की स्थिति पर विचार किया। वार्ता में भारतीय राजदूत श्री बी०आर० पटेल और श्री आइस्केल के दो सहायक अधिकारी भी उपस्थिति थे।

बाद में प्रधानमन्त्री ने एक भाषण में कहा—बंगला देश पर हमारा दृष्टिकोण यथापूर्व है। यदि पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण की बेवकूफी की तो उसे कुचलने के लिये भारतीय सेना भी तैयार है। आपने बताया कि बंगला देश के संकट के लिये पाक सैनिक शासन ही जिम्मेदार है।

सोवियत संघ के प्रमुख पत्र 'प्रावदा' ने आज भारत विरोधी रुख के कारण पश्चिमी राष्ट्रों की निन्दा की।

◆बम्बई में गोदी कामगारों ने एक जर्मन पोत से पाकिस्तान को जाती हुई बन्दूकें उतार लीं।

◆श्री जगजीवनराम ने भारतीय सीमांत से आज फिर सेना न हटाने की घोषणा की और जम्मू-सीमा पर पाकिस्तान ने कई डिवीजन सेना और लाकर खड़ी कर दी।

२६ अक्तूबर

आज संयुक्त राष्ट्रसंघ वृहत्सभा ने कम्यूनिस्ट चीन को राष्ट्रसंघ का सदस्य स्वीकार कर लिया और ताईवान को निष्कासित करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। प्रस्ताव के पक्ष में ७६ मत पड़े और विरोध में केवल ३५ और १७ देशों ने मतदान में भाग नहीं लिया। यह प्रस्ताव अलबानिया ने प्रस्तुत किया था। अमेरिका ने ताईवान को राष्ट्रसंघ का सदस्य बनाये रखने की सरतोड़ कोशिश की; लेकिन वह हार गया।

◆प्रधान मन्त्री ब्रुसेल्स में बेल्जियम के शाह से बातचीत करके आज आस्ट्रिया की राजधानी वियेना पहुँच गयीं। यहाँ आने से पहले आपने टेलीफोन पर स्वीडन के प्रधानमन्त्री से बातचीत की थी।

पाकिस्तान ने पंजाब सीमा पर रेंजरों को हटाकर सेना खड़ी कर दी।

◆श्री राजगोपालाचारी ने आज अमेरिका की दुरंगी नीति की निन्दा की।

◆राष्ट्रसंघ में आज पाकिस्तानी आरोपों का भारतीय सदस्य ने करारा उत्तर दिया।

◆शांतिदूत स्वामी विष्णु देवानन्द को लाहौर में गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तातारी से पूर्व इन्होंने शांति पर्चे और फूल अपने जहाज से पाकिस्तान पर बरसाये।

◆पाकिस्तान ने आज बंगला देश के नगरों पर बमबारी और तेज कर दी और मुक्ति सेना ने पाकिस्तान के जलपोत को जल-समाधि दे दी।

२७ अक्तूबर की स्थिति

प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने आज आस्ट्रिया में भाषण देते हुए कहा—भारत अपनी सुरक्षा के लिये प्रत्येक उपाय काम में लायेगा। आपने कहा कि स्थिति गम्भीर है। पाकिस्तान ने भारत की सुरक्षा को खतरा पैदा कर दिया है।

आज भारत—सोवियत संयुक्त वक्तव्य में सोवियत परराष्ट्र उप-मन्त्री श्री फेरुविन ने भारत के सुरक्षा कदमों का समर्थन किया।

भारतीय नौ सेना के कमाण्डर श्री नन्दा ने आज अहमदाबाद में पाकिस्तान

को चेतावनी दी कि पाकिस्तानी जल सेना को कराची में ही समाधी दे दी जाएगी।

नवीन घटनाओं पर केन्द्रीय समिति की बैठक में विचार हुआ और देश के विभिन्न भागों में नागरिक सुरक्षा पर भी विचार हुआ तथा रक्षामन्त्री ने पश्चिमी सीमा के अग्रिम क्षेत्रों का दौरा किया और ऊ थांत ने भारत पाक सरकारों के सामने अपनी मध्यस्थता का प्रस्ताव रखा।

पाकिस्तान के विशेष दूत (वर्तमान राष्ट्रपति) श्री भुट्टो ने आज काहिरा में भारत-विरोधी प्रचार किया।

◆महासभा क्लब के सदस्य देशों की मींटिग में भारत आये बंगला शरणार्थियों के व्यय के लिये ७० करोड़ डालर के अनुदान की अपील की गयी।

२८ अक्तूबर

आज वियेना में पत्रकार कांफ्रेंस में प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने बंगला देश और सीमा तनाव के सम्बन्ध में भारत तथा पाकिस्तान को समान स्तर पर रखने वाले राष्ट्रों की निन्दा की। आपने कहा—जब पाकिस्तान भारत की सीमा पर अपनी सेनाएं खड़ी कर रहा था, बंगला देश में कत्ले आम चल रहा था, तब यह देश कहाँ थे, इन्हें शान्ति की चिन्ता क्यों नहीं हुई।

विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह ने कहा—बंगला देश के प्रश्न पर सोवियत संधि के कारण हमारे रुख में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

पाकिस्तान ने आज भारत की पूर्वी सीमा पर गोलाबारी और तेज कर दी और मुक्तिवाहिनी ने पाक नौसेना पर झपट्टे मारने शुरू कर दिये तथा १७५ पाकी फौजियों को यमलोक भेजा।

◆राष्ट्रसंघ में भारतीय प्रतिनिधि श्री समरसेन ने श्री ऊ थाँत से लम्बी बातचीत की।

◆न्यूयार्क में 'वाशिंगटन टाइम्स' ने बंगला शहरों के अत्याचारों पर एक लम्बी रिपोर्ट छापते हुए लिखा कि वहाँ के नगरों कीऔर देश की ३० प्रतिशत जनता लापता है और मुक्तिवाहिनी के हमले जगह-जगह जारी हैं।

◆आस्ट्रिया के चाँसलर श्री क्रिस्की ने प्रधानमन्त्री गाँधी के भोज में भाषण देते हुए कहा—शेख मुजीब की रिहाई से तनाव कम हो जायेगा।

२९ अक्तूबर

पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहिया खाँ ने आज विभिन्न देशों को सूचना दी कि मुजीब अभी जीवित है।

प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी आज पश्चिमी देशों के दौरे के बाद आज लन्दन पहुंच गयीं।

मुक्तिवाहिनी ने अपने हमलों का क्षेत्र बढ़ा दिया। कई पुल, कई जलयान नष्ट किये और काफी संख्या में पाक सैनिक मारे। पाकिस्तान ने कमालपुर पर अंधा-धुंध गोलाबारी की।

राजस्थान की सीमा पर आज दो डिवीजन पाकिस्तानी सेना और आयी। बम्बई में ब्लैक आउट का अभ्यास किया गया।

मार्शल टीटो आज वाशिंगटन पहुँचे और राष्ट्रपति निक्सन को प्रधान मंत्री गाँधी से हुई अपनी बातचीत का ब्यौरा दिया।

नयी दिल्ली स्थित पाक हाई कमिश्नर के कार्यालय ने अपनी गुप्त फाइलों को रात जला दिया।

३१ अक्तूबर

लन्दन में आज प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी और ब्रिटिश प्रधान मन्त्री श्री हीथ की बातचीत के बाद प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी ने सन्तोष व्यक्त किया।

—नयी दिल्ली में आज ब्लैक आउट का अभ्यास किया गया और अगर-तल्ला पर पाकिस्तान ने गोलाबारी तेज कर दी।

—राष्ट्रसंघ में आज भारतीय प्रतिनिधि ने पाकिस्तान पर आरोप लगाया कि उसने बंगला देश की ७॥ करोड़ जनता को मानवीय अधिकारों तक से वंचित कर दिया है।

१ नवम्बर

आज लन्दन में प्रधान मन्त्री गाँधी ने स्पष्ट किया कि भारत अपनी सीमा पर राष्ट्रसंघ के प्रतिनिधि नहीं रखेगा। साथ ही नयी दिल्ली में श्री करीम भाई चागला ने छात्रों से अपील की कि वे देश की एकता के लिये कार्य करें; क्योंकि पाकिस्तानी आक्रमण का मुँहतोड़ उत्तर देना जरूरी है।

+ अमेरिका की 'न्यूज वीक' पत्रिका ने राष्ट्रपति याहिया खाँ का एक बयान आज प्रकाशित करते हुए बताया कि उन्होंने कहा है—हमारा भारत से युद्ध जल्दी छिड़ने वाला है और तब हमें चीन हथियारों की भरपूर मदद देगा। यदि राष्ट्र-संघ ने मुझसे मुजीब की रिहाई की माँग की तो मैं उसे भी छोड़ दूँगा।

+भारत के थल सेनाध्यक्ष जनरल मानिक शाह ने आज अग्रिम क्षेत्रों का दौरा किया और भारतीय सीमा दस्तों ने जवाबी कार्यकाई करके त्रिपुरा के कमालपुर कस्बे पर ११ दिन से लगातार गोले बरसाने वाली पाकिस्तानी तोपों का मुंह बन्द कर दिया। आज त्रिपुरा में राष्ट्रपति शासन जारी कर दिया गया।

राजनैतिक मामलों की समिति में आज पाकिस्तान के आक्रमाक रुख पर विचार हुआ और रक्षा मन्त्री श्री जगजीवन राम ने देश की सैन्य शक्ति की रिपोर्ट दी।

+ लन्दन में आज प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी ने राष्ट्रसंघ के अध्यक्ष श्री ऊ थांत का प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया। भारत सरकार ने अपनी पूर्वी सीमा को विदेशियों के लिये वन्द कर दिया।

+ ढाका में आज दिन दहाड़े विस्फोट हुए और पाकिस्तान के दो जहाजों ने श्रीनगर के हवाई अड्डे पर उड़ान की और गोहाटी के पास उसके जहाजों ने एक भारतीय रेल गाड़ी को उड़ाने की कोशिश की जिससे तीन व्यक्ति घायल हुए।

२ नवम्बर

आज कई देशों में पाकिस्तानी दूतावास के बंगला कर्मचारियों ने पाक की अधीनता छोड़ दी और नयी दिल्ली में श्री हुमायूं रशीद चौधरी ने पाकिस्तानी उच्चायोग को नोटिस दिया कि यदि ४८ घण्टे में उसने श्री हुसैन अली को नहीं छोड़ा तो परिणाम बुरा होगा। बाद में पाक उच्चायोग ने मारपीट करके और घायल करके श्री हुसैन अली को बाहर कर दिया। श्री अली उस समय बहुत घायल थे।

+ बंगला देश में आज अनेक मोर्चों पर मुक्ति सेना ने पाकिस्तानी सेना की पिटाई की और ढाका के आसपास की सारी यातायात व्यवस्था काट दी।

विहार में आज पाक विध्वंसकारी और एजेंट सक्रिय हो गए और राष्ट्रसंघ में पाकिस्तानी प्रतिनिधि ने भारत पर खूब कीचड़ उछाली। अमेरिका ने पाकिस्तान को सहायता देने की फिर घोषणा की।

ब्रिटिश संसद सदस्यों की सभा में आज प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी ने भाषण किया और बंगला देश के प्रति भारतीय नीति पर प्रकाश डाला।

× अमेरिकी सरकार से बँगला देश के संकट के निवारण के लिए श्री कैनेडी ने आज फिर अपील की।

३ नवम्बर

प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी ने आज अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन के साथ लम्बी बातचीत की। अमेरिका में आज उनका व्यस्त कार्यक्रम था। उन्हें राष्ट्रसंघ के महासचिव श्री ऊथाँत से भी मिलना था; लेकिन श्री ऊथाँत बीमार बनकर अस्पताल में दाखिल हो गये।

× फ्रांस ने आज पाकिस्तान से अपील की कि वह इस झंझट को राजनैतिक हल निकाल कर समाप्त करे।

× आज पाकिस्तान ने भारत के सारे पूर्वी सीमांत पर गोलाबारी तेज कर दी और भारग सरकार ने सारा पूर्वी सीमांत 'प्रतिबंधित क्षेत्र' घोषित कर दिया। साथ ही पंजाब में सीमा का अतिक्रमण करने वाले दो पाकी जहाजों को भगा दिया गया।

× मुक्तिवाहिनी ने किशोरगंज के सारे उप-भाग को भारी युद्ध के बाद

पाकिस्तानी सेना से छीन लिया और तंगाइल के लिये युद्ध छेड़ दिया।

४ नवम्बर—श्रीमती गांधी की साफ-साफ बातें

अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन से अपनी बातचीत के दौरान श्रीमती गांधी ने स्पष्ट कहा कि बंगला देश की सहायता का हल श्री मुजीब से समझौता करके ही हो सकता है।

× पाकिस्तान द्वारा भारत में तोड़-फोड़ कराने के एक षड्यन्त्र का भण्डा-फोड़ आज नयी दिल्ली में बंगला देश के नौजवानों ने किया और अपने यहां उन्होंने ६० पाकी सैनिक कब्रों में दाखिल किये।

५ नवम्बर—टिक्का खां अपदस्थ

पाकिस्तान सरकार ने आज पूर्वी पाकिस्तान के भू० पू० सैनिक प्रशासक तथा बंगला प्रदेश में जनता के हत्यारे टिक्का खां, जिन्हें आजकल राष्ट्रपति भुट्टो ने पाकिस्तान का थल सेनाध्यक्ष बनाया हुआ है, को उनके पद 'कोर-कमाण्डर' से मुक्त कर दिया और उनके उस पद पर शेर बहादुर को नियुक्त कर दिया और अपने सैनिक सदरमुकाम को पीछे हटा लिया।

श्री मुजीब को रिहा करने से याहिया खां ने इन्कार कर दिया और श्री भुट्टो के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल श्री चाऊ से सलाह लेने पेकिंग भेज दिया तथा जम्मू-कश्मीर पर फिर अपने दो जहाजों को सीमा का अतिक्रमण करने भेजा।

वाशिंगटन में श्रीमती गाँधी ने अपनी आज की दूसरी मुलाकात में अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन को स्पष्ट बता दिया कि मेरा देश किसी गलतफहमी में नहीं रह सकता, श्री निक्सन अपनी नीति निर्धारित कर लें।

श्रीमती गांधी ने कहा—मैं बंगला देश की स्थिति बताने आयी हूँ, कोई सहायता मांगने नहीं आयी। भारत अपनी सेनाओं को पीछे नहीं हटायेगा। यह देखना मेरा काम है कि अपनी सीमाओं पर चीनी और पाकिस्तानी सेनाओं को जमे देखकर मुझे क्या करना है। जबकि मैं यह जानती हूँ कि हमारी सेनाएं पीछे हटा लेने पर भी यह देश अपनी सेनाएं पीछे नही हटायेंगे। संयम की कोई सीमा होती है। संयम के उपदेश भी हम बहुत सुन चुके और संयम रख कर भी देख लिया; लेकिन तब भी अमेरिका भारत और पाकिस्ता को एक ही पलड़े पर रखता रहा।

६ नवम्बर•

राष्ट्रपति निक्सन और प्रशासन के अधिकारियों से बंगला देश पर बातचीत करने के बाद प्रधान मन्त्री आज वाशिंगटन से न्यूयार्क लौट आयीं। अमेरिका की यात्रा का आज उनका चौथा व्यस्त दिन था। यहाँ उन्होंने अपनी सीमा पर राष्ट्रसंघ के

प्रेक्षक रखने से फिर इन्कार कर दिया। आपने ऊ थांत से टेलीफोन पर वातचीत की।

मास्को में 'प्रावदा' ने आज लिखा कि अमेरिका का रुख वंगला देश के हित में न था और न अब है। वह केवल श्रीमती गाँधी पर अपनी विचारधारा थोपने का प्रयास करता रहा है।

× सदरुद्दीन आगा खां आज भारत आये और नयी दिल्ली में छात्रों ने पाक उच्चायोग के वाहर प्रदर्शन किया। रंगपुर के युद्ध में २४०० पाकी सैनिक मुक्ति सेना ने ठिकाने लगाये। जनरल मानिकशाह ने जम्मू-कश्मीर सीमांत का निरीक्षण किया।

७ नवम्बर

श्रीमती गाँधी ने आज कोलम्विया विश्वविद्यालय में भाषण करते हुए कहा—भारत अपने सिद्धान्तों के लिये अकेला लड़ने को तैयार है। पाकिस्तान की शरारत को हम अब हर्गिज वर्दाश्त नहीं करेंगे; भले ही उसका परिणाम कुछ भी क्यों न हो।

न्यूयार्क में एक टेलीविजन भेंट में प्रधान मन्त्री ने कहा—यदि भारत पर हमला हुआ तो हमें पूरा विश्वास है कि सोवियत संघ तथा अन्य कुछ देश हमारी मदद अवश्य करेंगे।

× चीन ने आज भारत और पाकिस्तान से अपील की कि वे अपनी सीमाओं पर तनाव को कम करने के लिये आपस में वातचीत करें। कोई विज्ञप्ति दोनों देशों की जारी नहीं की गयी; लेकिन पेकिंग ने पाकिस्तान को सहायता का आश्वासन दिया और याहिया के 'कत्लेआम' का समर्थन किया।

× ब्रिटिश संवाददाताओं ने आज समाचार दिये कि श्रीमती गाँधी राष्ट्रपति निक्सन का मत वदलने में असफल रहीं।

× भारी युद्ध के वाद नोआखली के विशाल भू-भाग पर मुक्ति सेना ने अधिकार कर लिया।

८ नवम्बर

पेरिस में आज प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी और फ्रांस के प्रधान मन्त्री के वीच ७५ मिनट तक वातचीत हुई। इस वातचीत में फ्राँस ने भारत की नीति का समर्थन किया।

वाशिंगटन में आज अमेरिकी अधिकारियों ने घोषणा की कि पाकिस्तान को ३,३००,००० डालर की कीमत के सैनिक उपकरणों के निर्यात के लिये लायसेंस रद्द कर दिये गये।

९ नवम्बर

ब्रिटिश पत्रों ने आज लिखा कि भारत के साथ होने वाले भावी युद्ध में पाकिस्तान पिटेगा और अकेला भी पड़ जायेगा।

× वंगलादेश के छात्रों ने आज अपने देश को सहायता देने की अपील की और प्रिंस आगा खां ने शरणार्थियों के मामले में भारत सरकार की प्रशंसा की।

× राष्ट्रसंघ में विश्व शान्ति परिषद के सदस्यों ने बंगला देश की आजादी को ही एक मात्र हल बताया। काठमांडू के तीन पाकिस्तानी कर्मचारियों ने आज दूतावास का परित्याग कर दिया।

पेरिस में आज प्रधान मन्त्री गांधी ने घोषणा की कि भारत चीन के साथ सामान्य सम्बन्ध बनाने के लिये तैयार है।

राष्ट्रपति गिरि ने आज जनता से युद्ध के लिये तैयार रहने की अपील की और मोटर वाहनों का अध्याचन अध्यादेश जारी किया। इसके अनुसार सरकार आवश्यक कार्यों के लिये निजी वाहनों को ले सकेगी।

पाकिस्तान से विदेशियों ने भागना शुरू कर दिया और कुष्टिया जिले में भारी युद्ध के भाग मुक्तिवाहिनी ने काफी हिस्से पर कब्जा कर लिया।

१० नवम्बर

प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी आज पेरिस से बौन पहुँचीं और पश्चिमी जर्मनी के चांसलर श्री विली ब्रांट से उनकी दो घण्टे तक बातचीत हुई। इससे पहले उनकी बातचीत पश्चिमी जर्मनी के विदेश मन्त्री श्री वाल्टर शील से हुई। श्री ब्रांट ने भारत के मत से सहमती प्रकट की और सहायता का आश्वासन भी दिया।

११ नवम्बर

आज पश्चिमी जर्मनी में श्रीमती गाँधी ने स्पष्ट कर दिया कि भारत किसी भी बड़ी शक्ति के दबाव को बर्दाश्त नहीं करेगा और जो बंगला शरणार्थी भारत आये हैं, उन्हें वापस भी भेजा जायेगा।

पश्चिमी जर्मनी के चान्सलर ने बंगला देश की समस्या के हल के लिये राजनैतिक समझौता जरूरी बताया और प्रधान मन्त्री गांधी के साथ हुई अपनी बातचीत को लाभकारी बताया।

भारतीय सीमाओं पर पाकिस्तानी सेनाओं ने अतिक्रमण शुरू कर दिये।

१२ नवम्बर

आज प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी ने बौन (जर्मनी) में अपनी प्रेस कांफ्रेंस में स्पष्ट किया कि शरणार्थियों की वापसी के बिना बँगला देश की समस्या हल नहीं हो सकती और बँगला देश में कत्लेआम का जो दौर अब भी जारी है, उसे देखते हुए उन्हें वहां भेजा भी नहीं जा सकता। मेरी इस यात्रा का उद्देश्य बंगला देश की स्थिति की विश्व को जानकारी देना था और उन अभागों लिये विश्व की सहानुभूति जगाना था।

◆प्रसिद्ध पत्रकार मस्करेन्हास ने वम्वई में कहा कि शेख मुजीव की रिहाई के विना वंगला देश की समस्या नहीं सुलझ सकती।

◆पाकिस्तानी वायुयानों ने आज कई वार भारतीय सीमा का उल्लंघन किया और पूर्वी अँचल में उनकी गोलावारी से ६ भारतीय मरे।

◆घमासान युद्ध के वाद मुक्तिवाहिनी ने पूरे तंगेल जिले पर नियन्त्रण कर लिया। ढाका में आज विस्फोट से ३ व्यक्ति मरे और ५५ जख्मी हुए। भारत ने पश्चिमी बँगाल के ८ जिले विदेशियों के लिये प्रतिवंधित क्षेत्र घोषित कर दिए और श्रीमती गांधी अपना यूरोप का दौरा समाप्त कर नयी दिल्ली के लिए चल दीं।

१३ नवम्वर—प्रधान मन्त्री की वापसी

यूरोप और अमेरिका के ६ देशों की तीन सप्ताह की यात्रा के वाद आज प्रधान मन्त्री नयी दिल्ली वापस आ गयीं। हवाई अड्डे पर उन्होंने आशा व्यक्त की कि यूरोप के देशों की मदद से बंगला देश की समस्या का कोई ऐसा राजनैतिक हल निकल जायेगा जो वंगला देश के नेताओं को स्वीकार होगा।

◆एक अमेरिकी जहाज को वंगला गुरिल्लों ने सुरँग से उड़ा दिया।

१४ नवंबर

आज पाकिस्तानी विमानों ने जम्मू में भारतीय सीमा पार करके उड़ान भरी। नयी दिल्ली में संसद के शीतकालीन अधिवेशन में पहले दिन पाक फौजों के अतिक्रमण और वंगला देश के प्रश्न पर विचार हुआ।

चीन के प्रधानमंत्री श्री चाऊ एन० लाई ने प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी को एक सन्देश भेजकर लिखा—भारत और चीन की मैत्री में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी।

आज पाक फौजों को भारतीय सीमा पार करने के प्रयास में भारतीय सेना ने पीछे धकेल दिया। वंगला देश के सभी जिलों में छापामारों ने अपनी गतिविधियां तेज कर दीं। पाकिस्तान ने आज सुरक्षा परिषद से शिकायत की कि भारत कश्मीर में अपनी सेनाओं में लगातार वृद्धि कर रहा है।

१५ नवंबर

रक्षामंत्री श्री जगजीवनराम ने आज घोषणा की कि भारत की रक्षा-व्यवस्था पूरी कर ली गयी है और हमला होने पर युद्ध पाक के भीतर लड़ा जायेगा।

अपनी विदेश यात्रा से लौटने पर प्रधानमंत्री ने आज संसद के दोनों सदनों में भाषण देते हुए घोषणा की कि भारतीय सेनाएं सीमा से तव तक नहीं हटाई जायेंगी जव तक वंगला देश की समस्या हल नहीं हो जाती।

भारतीय सेना ने आज जवावी कार्रवाई करके अपनी पूर्वी सीमा पर १३५ पाक सैनिक मारे। संसद में श्री विद्याचरण शुक्ल ने वताया कि मार्च से अव तक

भारतीय क्षेत्र पर गोलाबारी करके पाकिस्तान ने ३५६ भारतीय मारे । ८४५ घायल किये और ४४ का अपहरण किया । इनमें ५ जूनियर कमीशंड और ७२ सैनिक भी थे।

१६ नवंबर

सुरक्षा परिषद में चीनी और पाकिस्तानी सदस्यों में दो दिन बातचीत चली ।

आज पाकिस्तानी सेना ने सारी भारतीय सीमा पर अतिक्रमण किया और भारतीय सेना ने उसे हर जगह पीछे धकेला ।

ढाका में जगह-जगह बम विस्फोट हुए और १८ चौकियों पर मुक्ति सेना ने कब्जा कर लिया ।

१७ नवंबर

त्रिपुरा, मेघालय, असम और बंगाल की सीमा में पाकिस्तानियों ने घुसने का प्रयत्न किया, लेकिन सभी जगह भारतीय सेना ने उनकी पिटाई की ।

याहिया खां को ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री हीथ का पत्र मिला और राष्ट्रपति श्री गिरि ने कलकत्ता में यह आशा व्यक्त की कि विश्व जनमत पाकिस्तान को बंगला देश से समझौता करने के लिये विवश करेगा ।

'न्यूयार्क टाइम्स' पत्र ने आज अपने स्तंभ में पाकिस्तानी सेना द्वारा कई कस्बे नष्ट किये जाने का विवरण छापा ।

जनसंघ अध्यक्ष श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने घोषणा की कि भारत में शरणार्थी समस्या की जांच के लिये अमेरिका को कोई कमीशन भेजने का हक नहीं है । भारत अमेरिका का हिस्सा नहीं है ।

राष्ट्रसंघ की प्रथम समिति में बहस के समय डेन्मार्क के प्रतिनिधि ने पाकिस्तान से संयम से काम लेने की अपील की ।

१८ नवंबर

प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने राष्ट्रसंघ के महामंत्री ऊथांत को सूचित किया कि हमें पाकिस्तान की सैनिक तैयारी देखकर अपनी सुरक्षा के लिये विवश होना पड़ रहा है । यदि बंगला देश पर राष्ट्रसंघ कोई समाधान खोजेगा, तब भारत उसका स्वागत करेगा ।

१६ नवंबर

कलकत्ता में राष्ट्रपति ने घोषणा की कि भारतीय सेना पाकिस्तान का मुंह तोड़ने के लिये तैयार है । अतः आज सारी सीमा पर पाकिस्तानी अतिक्रमण का उत्तर भारतीय सेना ने करारा दिया । दूसरी ओर पाकिस्तानी सेना ने ढाका और नारायणगंज में नर-संहार का दूसरा दौर शुरू कर दिया ।

आज पाकिस्तानी सेना ने बंगला देश के सभी बड़े नगरों में खाइयां खोदनी शुरू कर दीं। दूसरी ओर भारतीय सेना ने अपनी सीमा से पाकिस्तानी फिर खदेड़े। नौसेना के कमाण्डर इन-चीफ श्री नन्दा ने नौ-सेना के युद्ध के लिये तैयारी की घोषणा की और राज्यसभा में विदेशमंत्री श्री स्वर्णसिंह ने घोषणा की कि किसी अन्य देश को भारत में आयोग भेजने का अधिकार नहीं है।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री याहिया खां ने आज भारत से मैत्री करने का आग्रह किया। दूसरी राष्ट्रसंघीय समिति में शरणार्थी समस्या पर बहस के समय भारतीय प्रतिनिधि श्री समर सेन ने अपने भाषण में कहा—पूर्वी बंगाल के संकट की सारी जिम्मेदारी पाकिस्तान पर है।

२० नवंबर

आज लाहौर में भारत के विरुद्ध जेहाद छेड़ने के लिये व्यापक प्रदर्शन हुए और उन्मत्त पाकिस्तानी सैनिकों ने बमों और तोपों से सारी भारतीय सीमा पर गोलाबारी की।

२१ नवंबर

आज सुबह पाकिस्तानी सेना ने करीमगंज पर फिर गोले बरसाये। इससे आठ भारतीय मरे, दो घायल हुए। इनमें एक मेजर भी था। आज अहमदाबाद में प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि चीन के रुख के कारण हमारी बंगला देश की नीति पर कोई असर नहीं पड़ा है।

'न्यूयार्क टाइम्स' ने आज लिखा कि बंगाली लोग आमरण युद्ध के लिये तैयार हैं। आज सिल्हट जिले के कई क्षेत्रों से पाकिस्तानी सेना को मुक्तिवाहिनि ने भगा दिया।

२२ नवंबर

आज पहली बार बंगाल सीमा पर भारतीय नैट विमानों ने पाकिस्तान के सैबर जैटों का पीछा किया और सिंगापुर के प्रधानमंत्री ने बंगला देश पर भारत के रुख का समर्थन किया। भारत ने सीमा पर उड़ने के लिये निजी विमानों पर रोक लगा दी तथा केन्द्रीय मंत्रीमंडल की राजनैतिक मामला समिति में पाकिस्तानी हरकतों पर विचार हुआ।

२३ नवम्बर—पाकिस्तान पर भारत की पहली चोट

आज भारत ने पाकिस्तान पर पहली करारी चोट की और कलकत्ता के निकट पाकिस्तान के तीन सैबर जैटों को मार गिराया। पाकिस्तान के चार जहाज कलकत्ता से उत्तर की ओर आये थे। इनका पीछा भारत के तीन नैटों ने किया। भारतीय नैटों

को भारत के तीन लड़के—फ्लाइट लेफ्टिनेंट आर० मैसी, एम० ए० गणपति तथा डी० लैंगारान चला रहे थे। इनकी आयु कुल २५ से २८ वर्ष थी। इन्होंने पाकिस्तानी वायुसेना चालक खलील अहमद और परवेज मेंहदी को गिरफ्तार भी कर लिया। देश भर ने अपने तीनों हवाबाजों को वधाई के सन्देश भेजे। बाद में पता चला कि तीसरा चालक भी पकड़ लिया गया।

भुट्टो ने आज भारत को कुचलने की धमकी दी। भारत में प्रधानमंत्री ने अपने सेनाध्यक्षों से बातचीत की। रक्षामंत्री ने घोषणा की कि एक भी पाकिस्तानी जहाज को भारत में आने पर बख्शा नहीं जायेगा।

पाकिस्तान ने संकटकालीन स्थिति की घोषणा की और जैसोर छावनी पर मुक्ति सेना ने गोलाबारी तेज कर दी। आज ही बंगला देश के प्रधानमंत्री श्री ताजुद्दीन ने एक भाषण में कहा कि पाकिस्तान भारत पर हमले का बहाना ढूंढ़ रहा है।

भारत सरकार ने सभी विदेशी जहाजरानी कम्पनियों को आदेश दिया कि भारत का माल भारत में ही उतार कर पाकिस्तानी बन्दरगाहों को जायें।

२४ नवम्बर

आज देश के विरोधी दल के नेताओं से वार्ता करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा—याहिया के शान्ति प्रस्तावों में वास्तविकता कुछ नहीं है। बाद में उन्होंने लोकसभा में भाषण करते हुए कहा कि यदि युद्ध हुआ तो हम पाकिस्तान से ताशकन्द जैसा कोई समझौता नहीं करेंगे।

◆ भारतीय सेना को हमलावरों को सीमा से खदेड़ने के आज आदेश दिये गये। जलपोतों को भी आदेश दिया गया कि कहीं भी जाने से पहले भारतीय नौसेना से अनुमति लें।

◆ पाकिस्तान से लगने वाली कश्मीर की सीमा पर २८ दर्रे भारतीय सेना ने बन्द कर दिये।

◆ मुक्ति सेना ने भारतीय सेना से प्रार्थना की कि भारत से पाक का युद्ध छिड़ने पर मुक्ति सेना उसकी ओर से लाहौर में जाकर लड़ना चाहती है। साथ ही बंगला गुरिल्लों ने पाकिस्तानी छावनियों के रसद मार्ग काट दिये।

मास्को में भारतीय राजदूत ने श्री ग्रोमिको से बातचीत की और पाकिस्तान ने पूर्वी सीमा पर सैनिक हलचल और तेज कर दी। साथ ही श्री भुट्टो ने यह स्वीकार किया कि भारत से युद्ध होने पर पाकिस्तान का टूटना निश्चित है।

२५ नवंबर—राजनैतिक हलचल तेज : १० भारतीय मरे

आज अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन ने मुजीब की रिहाई की व्यक्तिगत अपील पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहिया खाँ से की और याहिया ने ब्रिटेन से अपील

की कि वह हमारा और भारत का संघर्ष रोकने में अपने प्रभाव का उपयोग करे।

आज सुरक्षा परिषद में भी पाकिस्तान हताश हो गया। बड़ी शक्तियाँ किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप से अलग हो गयीं। पाकिस्तान को ब्रिटेन और फ्रांस से अपने समर्थन की आशा थी; लेकिन वे दोनों इस मामले में तटस्थ हो गये।

बालूरघाट पर पाकिस्तानी सेना ने भारी गोलाबारी करके दस भारतीयों को मार डाला और बीस को घायल कर दिया।

जैसोर क्षेत्र में रोमांचक टैंक संघर्ष के बाद पाकिस्तानी सेना के दस्तों को आत्म समर्पण का आदेश दिया और पकड़े गये पाक वायु चालकों ने बताया कि बंगला देश में पाकिस्तानी सेना के पास अभी १२ सेबर जेट विमान और बाकी हैं। इस टैंक युद्ध में भारतीय सेना ने १३ पाकिस्तानी टैंक तोड़े।

श्री अजय मुखर्जी ने प्रधानमन्त्री से भेंट की और पाकिस्तान का एक जनरल हथियार लेने तुर्की गया तथा मुक्तिवाहिनी ने बंगला देश के ७ जिलों की आधी भूमि पर कब्जे की घोषणा की।

अमरीका ने भारत से आज फिर अपील की कि वह अपनी सीमाओं से सेनाएं पीछे हटा ले।

२६ नवंबर—याहिया की युद्ध-घोषणा

राज्यपालों के सम्मेलन में राष्ट्रपति श्री गिरि ने आज चेतावनी देते हुए कहा—याहिया को अपनी करतूतों का फल भुगतना पड़ेगा। प्रधान मंत्री श्रीमती गाँधी ने अपनी असम यात्रा रद्द कर दी।

याहिया खाँ ने आज अपने भाषण में एक प्रकार से युद्ध की घोषणा कर दी। उन्होंने कहा कि मैं दस दिन में युद्ध के मोर्चे पर पहुँच जाऊँगा।

श्री याहिया ने सभी दलों और शाखाओं की गति-विधियों पर रोक लगाने की घोषणा की तथा दो व्यक्तियों का एक विशेष न्यायालय बनाया गया जो जासूसी करने, शत्रु की सहायता करने और पाकिस्तान में तोड़-फोड़ करने वालों को दण्ड देगा। साथ ही आपने कुछ नेताओं को नजरबन्द करने का संकेत भी दिया। श्री मुजीब की पार्टी को उन्होंने पाकिस्तान की शत्रु और उन्हे विदेशी एजेन्ट बताया। आपने खान वली खाँ पर भी आरोप लगाया कि वे भी शत्रु के साथ साँठ-गाँठ किये हुए हैं।

श्री याहिया ने कहा—दस दिनों के भीतर भारत से युद्ध छिड़ने की पूरी संभावना है। याहिया अपना यह भाषण एक चीनी मन्त्री श्री ली शुई चिंग के भोज के समय कर रहे थे। यह मंत्री उन दिनों पाकिस्तान की यात्रा पर आये हुए थे। याहिया ने आज यह भी कहा—भारत से अब किसी प्रकार का समझौता नहीं किया

जा सकता। उन्होंने इस बात का खंडन किया कि मैंने शिखर वार्ता के लिये भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी के पास कोई सन्देश भेजा था।

आज ८० पाक सेना के सैनिक मार कर पूर्वी सीमा पर उसके हमले को भारतीय सेना ने विफल कर दिया। यह हमला हिली नामक कस्बे पर उसने किया था। दूसरी ओर फेनी और खुलना में मुक्तिवाहिनी ने गंभीर स्थिति पैदा कर दी और पाकिस्तानी सेना में भगदड़ शुरू हो गयी।

२७—नवंबर प्रधानमंत्री द्वारा अग्रिम चौकियों का दौरा

आज प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी ने राजस्थान की अग्रिम चौकियों का दौरा किया और सैनिक अधिकारियों तथा जवानों से बातचीत की। साथ ही श्री याहिया को सलाह दी कि वह श्री मुजीब को रिहा करके उनसे राजनैतिक बातचीत शुरू करें।

आज भारतीय प्रवक्ता ने पाकिस्तान को चुनौती दी कि वह गरीबपुर गाँव में सात घण्टे तक हुए भारतीय सेना के साथ टैंक युद्ध में कम-से-कम एक भारतीय टैंक तो दिखा दे।

आज मुक्तिवाहिनी ने महेशपुर नगर पर तीन ओर से हमला शुरू किया और जैसौर, रंगपुर तथा कुमिल्ला में लड़ाई तेज कर दी। दूसरी ओर भारतीय सीमांत पर पाकिस्तान ने भी गोलाबारी तेज कर दी।

जनसंघ की वृहत् परिषद् के अधिवशन में श्री अटलविहारी वाजपेयी ने घोषणा की कि बंगला देश का निर्माण ही शरणार्थी समस्या का हल है।

सुरक्षा परिषद की बैठक बुलाने का बेल्जियम का प्रस्ताव आज भारत सरकार को मिला। भारतीय प्रवक्ता ने कहा—सुरक्षा परिषद की बैठक की कोई आवश्यकता नहीं है; लेकिन यदि बुलाई जाती है तो उसमें बंगला देश के प्रतिनिधि को बुलाना आवश्यक होगा; क्योंकि झगड़ा पाकिस्तानी सैनिक शासकों और बंगला देश की जनता के बीच है।

बेल्जियम के प्रस्ताव में तीन धाराएँ थीं। एक में कहा गया था कि लड़ाई तुरन्त बन्द कर दी जाय, दूसरी धारा में संबंधित पक्षों से कहा गया था कि संयम से काम लें तथा तीसरी धारा में सभी राष्ट्रों से शरणार्थियों को सहायता देने की अपील थी।

भारतीय प्रवक्ता ने कहा—भारत लड़ाई नहीं कर रहा। अतः यह अपील तो लड़ने वालों से की जानी चाहिये।

२८ नवंबर—भारतीय सेना को पाक में घुस जाने का आदेश

आज कश्मीर में भारती सेना को पाकिस्तानी आक्रमण के समय पाकिस्तान में घुस जाने का आदेश दिया गया ।

वलूरहाट के हिल्ली क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना से भारतीय सेना की मुठभेड़ जारी रही और इस बीच भारतीय सेना पाकिस्तान के चार टैंक तोड़ चुकी थी । पाकिस्तानी सेना की गोलाबारी से ५ भारतीय मर चुके थे और ६ घायल हुए थे ।

भारत के रक्षामन्त्री श्री जगजीवनराम ने आज पूर्वी सीमा की अग्रिम चौकियों का दौरा करते हुए घोषणा की कि शरणार्थियों की वापसी के वाद ही भारतीय सेनाएँ सीमा से हटेंगी ।

◆कलकत्ता जाने वाली पुरी एक्सप्रेस के चार डिब्बों को पाकिस्तानी जासूसों ने गिरा दिया । इससे ५० व्यक्ति घायल हुए ।

◆भारत सरकार ने आज घोषणा की कि १ दिसम्बर से हर घंटे रेडियो पर समाचार बुलेटिन दिन-रात प्रसारित किये जाया करेंगे ।

◆प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने आज जयपुर में संकट का सामना करने के लिये देश का आह्वान किया और जवानों से सतर्क रहने की अपील की तथा कुछ देशों के अजीब रवैये की आलोचना करते हुए कहा—जब भारत पर कई बार हमला हुआ तब किसी ने कुछ नहीं कहा और आज जब हमने अपनी सुरक्षा के लिए कदम उठा लिया है, तब उनकी चिन्ता बढ़ गयी है और सुरक्षा परिषद की आड़ ली जा रही है ।

◆भुट्टो ने आज याहिया खाँ से मुलाकात की ।

२९ नवम्बर—युद्ध जारी

बालूरहाट हिल्ली क्षेत्र में आज भी युद्ध जारी रहा । एक पाकिस्तानी टैंक नष्ट हुआ और बम्बई के भारतीय मेजर हेमन्त मारे गये । पाकिस्तान के कई सौ जवान खेत रहे । कश्मीर में पाक अतिक्रमण करने वालों को भारतीय सेना ने पीछे धकेला ।

६ दिसम्बर से दिल्ली में ब्लैक आउट शुरू करने का निश्चय हुआ । चीन ने भारत पर आरोप लगाया कि पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तान के खिलाफ भारतीय सेना लड़ रही है, बंगाली नहीं लड़ रहे । कुछ शरारती बंगालियों को भी भारत ही हथियार दे रहा है ।

३० नवम्बर—बड़ी शक्तियों को इंदिराजी की फटकार

आज प्रधानमन्त्री ने सुरक्षा परिषद की वहस में बड़ी शक्तियों के रवैये के कारण उन्हें फटकारा और साथ ही चेतावनी दी कि उनके कार्यकलापों का भारत पर

तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ेगा।

बलूरहाट हिल्ली क्षेत्र में परास्त होकर पाकिस्तानी ले० जनरल अमीर अब्दुल्ला खान नियाजी ने अपनी सेनाओं की कमान संभाल ली और पाकिस्तान ने अपने देश में विदेशियों का प्रवेश बन्द कर दिया।

अमेरिकी सरकार ने आज भारत को चेतावनी दी कि उप-महाद्वीप में तनाव बने रहने पर अमेरिका अपनी मदद पर अंकुश लगा देगा।

कांग्रेस संसदीय दल की कार्यकारिणी की इच्छा मान कर भारत सरकार ने संविधान का २५वाँ संशोधन विधेयक प्रस्तुत करने का निर्णय किया।

१ दिसम्बर—विशेष दिन

भारत सरकार ने आज २० के विरुद्ध ३५३ मतों से २५ वां संविधान संशोधन विधेयक पास कर दिया। इस विधेयक का उद्देश्य आर्थिक नीति विषयक संविधान के निदेशक सिद्धांतों के क्रियान्वयन में सम्पत्ति तथा अन्य मौलिक अधिकारों को बाधक न बनने देना था।

आज संसद ने रेल यात्री किराया व डाक पत्रों पर विशेष कर लगाने की अनुमति दे दी।

आज बंगला देश के स्थानापन्न राष्ट्रपति श्री नजरूल इस्लाम ने अपना २ दिसम्बर का विशेष भाषण स्थगित कर दिया और यह घोषणा की कि ४ दिसम्बर को अत्यन्त अत्यधिक महत्वपूर्ण घटना इस उप-महाद्वीप में घटने वाली है।

पतरापोल पर पाकिस्तानियों ने गोलाबारी की और पाकिस्तान के हिली क्षेत्र के ठिकानों पर भारत ने कब्जा करके शासन संभाल लिया तथा रहीमपुर के पास काफी भू-भाग पर मुक्तिवाहिनी ने कब्जा कर लिया।

राष्ट्रसंघ में श्री अबू सईद-चौधरी ने घोषणा की कि पाकिस्तान टूट चुका है, वह अब कोई नहीं जोड़ सकता। हम आजादी के अलावा और किसी बात पर समझौता नहीं करेंगे।

+ढाका के आसपास आज पाकिस्तानी सेना ने भारी कत्लेआम किया। अमरीका ने भारत को शस्त्र न देने की घोषणा की। याहिया खाँ ने सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष को पत्र लिखा और भारत सरकार ने राष्ट्रसंघ के प्रेक्षक अपनी सीमा पर रखने से इन्कार कर दिया।

२ दिसम्बर—सेनापति को सीमा पार जाने का आदेश

तीन पाकिस्तानी सेबर जेट विमानों द्वारा अगरतल्ला हवाई अड्डे के चारों ओर गोलियाँ बरसाने तथा २४ घंटे से लगातार अगरतल्ला नगर तथा पास के क्षेत्र पर गोले दागने के जवाब में आज अगरतल्ला के भारतीय सेनापति को आदेश दिया

गया कि वह पूर्व बंगाल में घुसकर रक्षात्मक कार्यवाई करें और पाकिस्तानी तोपों का मुंह बन्द कर दें। आज जम्मू में भी भारतीय नैट विमानों ने चार पाकिस्तानी मिराज विमानों का पीछा किया। पाकिस्तान ने अपने देश में विदेशियों का प्रवेश बन्द कर दिया।

◆उत्तरी और दक्षिणी बंगला देश पर अपने हमले तेज करने के साथ-साथ मुक्तिवाहिनी ने अंदुलवरिया पर कब्जा कर लिया।

◆पाकिस्तान ने भारत पर आरोप लगाया कि उसने पाकिस्तान के सात मोर्चों पर हमला कर दिया है। साथ ही उसने सारे मुस्लिम देशों से सम्पर्क कायम किया।

◆प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने आज अपने भाषण में ब्रिटेन को फटकारते हुए कहा कि हमें अब किसी की चिन्ता नहीं है कि कौन हमें हमलावर कहता है या क्या कहता है। हम किसी के गुलाम नहीं हैं। पांच वर्ष पहले का भारत इस समय बदल चुका है।

अध्याय १०

रात के अंधेरे में पाकिस्तान का भारत पर आक्रमण : बाकायदा युद्ध शुरू

३ दिसम्बर की रात को लगभग ६ बजे भारत के १२ हवाई अड्डों पर आक्रमण करके पाकिस्तान ने युद्ध शुरू कर दिया। यह भारत के विरुद्ध उसका तीसरा युद्ध था। पाकिस्तान ने अपने आक्रमण में श्रीनगर, अवन्तीपुर, हलवारा, पठानकोट, अमृतसर, फरीदकोट, उत्तरलाई, आगरा, कलकत्ता, जोधपुर तथा चोहटन, अम्बाला और जम्मू को निशाना बनाया। भारत सरकार सतर्क थी। अतः पाकिस्तानी विमान भारतीय हवाई अड्डों को न तो क्षति नहीं पहुंचा सके जितनी कि उन्हें आशा थी। अपने वायु आक्रमण में पाकिस्तान ने फ्रांस के बने मिराज, चीन के बने रूसी टाईप के मिग और अमरीकी सेवर जेटों का इस्तेमाल किया।

इस दिन प्रधानमन्त्री कलकत्ता में थीं। रक्षा-मंत्री श्री जगजीवनराम पटना थे और श्री चव्हाण बम्बई में थे और सबसे बड़ी बात यह थी कि याहिया खाँ की युद्ध छेड़ देने की धमकी का आज १० वां नहीं, बल्कि ८ वाँ दिन था। इससे पहले पाकिस्तान ने छम्ब—जोरिया अंचल में मानपुर के सीमा-क्षेत्र में भारी तोपों तथा मोर्टरों से गोले बरसाने शुरू कर दिये थे। पाकिस्तान का यह वायु हमला रात के ११-५० बजे तक जारी रहा। इससे पहले दिन में ४॥ बजे नाकिस्तानी हवाई सेना ने अगरतल्ला और त्रिपुरा पर बम बरसाने की कोशिश की थी; लेकिन भारतीय नेटों ने उनमें से तीन को क्षतिग्रस्त करके भगा दिया था।

मजे की बात यह थी कि अपना हमला करके पाकिस्तान ने भारत पर आरोप लगाया कि भारत ने पाकिस्तान के पश्चिमी क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया है, ठीक उसी समय अपने रेडियो पर चीन ने भी यही शब्द नव-चीन समाचार ऐजेन्सी के नाम से दुहराये। इससे स्पष्ट संकेत था कि चीन को पाकिस्तान के हमले के समय का पता था। चीन के साथ अमेरिका को भी इस हमले का पता था; क्योंकि तभी अमेरिकी विदेश विभाग ने घोषणा की कि अमेरिका ने भारत को गोलाबारूद देने के

सभी लायसैंस रद्द कर दिये हैं। इससे केवल दो दिन पहले ही अमेरिका यह घोषणा कर चुका था कि हम २० लाख डालर के भारत के गोला बारूद के लायसेंस रद्द कर रहे हैं और उपकरणों के लायसेंस भी रद्द कर रहे हैं जो संचार इलैक्ट्रानिक और परिवहन विमानों से भी सम्वन्धित हैं।

भारत का जवाबी आक्रमण

भारत ने लगभग १२ बजे रात को तत्काल जवाबी वायु-आक्रमण शुरू कर दिया। पश्चिमी कमान के वायु सेनापति श्री इंजीनियर ने अपनी वायुसेना को आदेश दिया कि वह पाकिस्तान के युद्ध तंत्र को नष्ट कर दे।

भारतीय वायु सेना ने अपना यह विशाल आक्रमण पाकिस्तान के हर वायु अड्डों पर एक साथ किया। भारत ने अपने इस आक्रमण में ब्रिटिश हण्टर, सोवियत मिग, अपने नैट आदि को शामिल किया और कई अड्डों पर पाकिस्तान के जहाजों को जमीन पर ही फूंक दिया।

राष्ट्रपति द्वारा देश में संकटकालीन स्थिति की घोषणा

पाकिस्तानी आक्रमण के वाद रात को राष्ट्रपति श्री गिरि ने देश में संकट-कालीन स्थिति की घोषणा की और रात को ११ बजे संसद का विशेष अधिवेशन वुलाया गया। राष्ट्रपति ने अपनी घोषणा में कहा कि देश की सुरक्षा के लिये पाकिस्तान ने खतरा उत्पन्न कर दिया है।

संकटकालीन घोषणा मंत्रिमण्डल की संकटकालीन वैठक में की गयी। प्रधान मंत्री और सुरक्षा मंत्री को क्रमशः कलकत्ता और पटना में हमले की सूचना दे दी गयी थी और दोनों दिल्ली लौट आये थे।

मंत्रिमण्डल की इस वैठक में तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्ष भी मौजूद थे। संकटकाल की घोषणा संविधान की धारा ३५२ के अन्तर्गगत की गयी। अपने देश में पाकिस्तान २३ नवम्वर को ही संकटकाल की घोषणा कर चुका था।

प्रधानमन्त्री का भाषण

आधी रात के वाद आकाशवाणी पर प्रधानमन्त्री ने राष्ट्र के नाम अपना ऐतिहासिक सन्देश दिया। प्रधानमन्त्री ने कहा—पाकिस्तान के आक्रमण का उत्तर देने के लिये देश को युद्ध के यिये सन्नद्ध कर कर दिया गया है। आपने कहा पाकिस्तान ने हमारे विरुद्ध पूर्ण युद्ध छेड़ दिया है और अव वंगला देश का युद्ध हमारा युद्ध वन गया है। अतः देश को युद्ध के लिये तैयार करने के अलावा हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं रह गया है।

प्रधानमन्त्री ने कहा—वास्तव में आज शाम को ५॥ वजे ही पाकिस्तान ने

हमारे विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया था। अब भारत को हर कठिनाई के मुकाबले और हर प्रकार के बलिदान के लिये तैयार रहना होगा। यदि हमने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा, लोकतन्त्र और अपनी जीवन-पद्धति की रक्षा नहीं की तो शाँति कायम नहीं रह सकती। आज हम प्रादेशिक अखंडता के लिए ही नहीं लड़ रहे, बल्कि उन मूलभूत आदर्शों के लिये भी लड़ रहे हैं जिनसे इस देश को शक्ति मिली है।

ब्लैक आउट

पाकिस्तानी आक्रमण के साथ ही सारे बड़े शहरों में ब्लैक आउट कर दिया गया और अहमदाबाद पर भी पाकिस्तान ने हमले के लिये अपने जहाज भेजे, जिन्हें भगा दिया गया। मुक्तिवाहिनी ने ठाकुर गांव पर कब्जा कर लिया और ढाका में उसने बम-विस्फोटों का ताँता लगा दिया।

दूसरी ओर आज संसद में परराष्ट्रमन्त्री ने बताया था कि बेल्जियम सुरक्षा परिषद में अपने प्रस्ताव पर जोर नहीं देगा।

श्री अटल का भाषण

जनसंघ अध्यक्ष श्री अटलविहारी वाजपेयी ने आज अपने भाषण में कहा—जैसी कि हमें आशा थी, [पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया। अब देश को उसका करारा जवाब देना है और सेना के हर जवान को यह समझ लेना चाहिये कि सारा देश उसके साथ है।

४ दिसम्बर—पाकिस्तानी सेना पर भारत की करारी चोट

४ दिसम्बर को अर्थात् युद्ध के दूसरे दिन पाकिस्तानी सेना पर भारतीय सेना ने करारी चोट की। २४ घंटे की लड़ाई के दौरान शत्रु के २३ विमान भारतीय वायुसेना ने जमीन पर पटके और २४ हवाई अड्डों को नष्ट किया। एक जलपोत और दो तोपची जलपोत पकड़ लिये। दो दर्जन टैंक तोड़े और बंगला देश में तीन ओर से भारतीय सेना घुसी। जम्मू अंचल के ६ गाँवों पर कब्जा किया। उड़ी और हाजीपीर के बीच एक पहाड़ी पर भारतीय सेना ने कब्जा किया। पश्चिमी क्षेत्र में जनरल कैंडेय की कमान में लड़ रही भारतीय सेना सभी मोर्चों पर तेजी से आगे बढ़ती गयी। ढाका में (बंगला देश में) पाकिस्तानी वायु सेना को बिल्कुल समाप्त कर दिया गया।

तक भारतीय जवान खोखरापाड़ पर कब्जा करते हुए १५ किलोमीटर और आगे चले गये। जैसलमेर की ओर से बढ़ने वाली भारतीय सेना ने इस्लामगढ़ पर कब्जा किया।

रामगढ़ का भयानक टैंक युद्ध

पश्चिमी कमान का यहाँ रामगढ़ पर पाकिस्तानी सेना से भयानक टैंक युद्ध हुआ; क्योंकि पाकिस्तानी सेना जैसलमेर मोर्चे पर शाहगढ़ में घुस आयी थी और जोंगवाई पर कब्जा करती हुई जैसलमेर जिले की उप-तहसील के सदर मुकाम रामगढ़ से जब यह १० किलोमीटर दूर थी, तब इन पर भारतीय वायु सेना ने झपट्टा मारा और ४५ चीनी टैंकों को लोहे के ढेर के रूप में बदल दिया। इस पाकिस्तानी सेना को यह आशा थी कि वह किसी भी तरह जैसलमेर पर कब्जा करके बैठ जाये और दूसरे हुक्म की इन्तजार करे। शाहगढ़ से भी इस सेना को भारतीय सेना ने भगा दिया और भागती पाकिस्तानी सेना का पीछा किया। भागते पाकिस्तानी अपना गोलाबारूद, हथियार और घायलों को भी वहीं छोड़ भागे। एक ओर पाकिस्तानी सेना भाग रही थी और दूसरी ओर गंगानगर पर पाकी हवाई जहाज बार-बार हमला करने का प्रयत्न कर रहे थे।

पूँछ मोर्चा

इस मोर्चे पर तोपों से गोलबारी करते हुए पाकिस्तानियों ने एक भारतीय पहाड़ी पर कब्जा करने की कोशिश की। इस युद्ध में ५० पाकिस्तानी मारे गये। नौशेरा और पूँछ के मोर्चों पर युद्ध जारी था। कुछ ही देरके लिये पाकिस्तानी सेना ने सुचेतगढ़ के पश्चिम में एक भारतीय अड्डे पर भी कब्जा कर लिया; लेकिन ४५ मिनट बाद उनके १५ सैनिक पकड़कर २२ मार कर और तीन अफसर गिरफ्तार करके अड्डा छीन लिया गया।

टैंक विरोधी प्रक्षेपास्त्र पंक्ति को तोड़कर भारतीय सेनाओं ने इच्छोगिल गाँव पर कब्जा कर लिया और आज ये इच्छोगिल नहर से १॥ मील के फासले तक पहुँच गयीं। खालरा क्षेत्र में भी दो पाकिस्तानी गाँवों पर अधिकार किया गया। यहाँ भारतीय सेनाएं चार मील और आगे बढ़ीं। फाजिल्का में गोलाबारी चलती रही।

भारत ने आज पाक के १५ विमान नष्ट किये। इन्हें मिलाकर ४७ विमान पाकिस्तान के नष्ट हो चुके थे। और ६९ टैंक नष्ट किये जा चुके थे। कोमिल्ला क्षेत्र में लक्षम और अखौरा रेलवे जंकशनों पर कब्जा कर लिया गया था। पूर्वी क्षेत्र में पीरगंज, हाटीगोवा, खानपुर, मुंशीबाजार और कोट चाँदपुर पर कब्जा पूरा हो गया था। अमृतसर, सौराष्ट्र कच्छ सीमा और जम्मू कश्मीर तथा आगरा पर पाकिस्तान ने भी अपने हवाई आक्रमण जारी रखे और पांच मिराज विमान भी गिरवा लिये।

भारतीय वायुसेना के जौहर से गद्‌गद् होकर वायु सेनापति श्री इंजीनियर को श्री कैंडेथ ने वधाई का सन्देश भेजा।

राजनैतिक मोर्चा—युद्ध-विराम के प्रस्ताव पर रूस का वीटो

जिस प्रकार युद्ध मोर्चा चारों ओर गर्म था। उसी प्रकार संसार की पाकिस्तान समर्थक महाशक्तियों ने राजनैतिक मोर्चों को भी गरम किया हुआ था। उस मोर्चे को भारत से अधिक—भारत का मित्र सोवियत रूस सँभाल रहा था। आज युद्ध विराम के प्रस्ताव को भी सोवियत संघ ने अपने वीटो से पीट दिया। अमेरिका के सुरक्षा परिषद में रखे गये इस प्रस्ताव में पाक और भारत को एक ही तराजू पर तोलने की कोशिश की गयी थी और मूलभूत संकट को परे हटा दिया गया था। केवल यह कहा गया था कि युद्ध विराम का आदेश सुरक्षा परिषद दोनों देशों को दे और सेनाएं पीछे हटाने का आदेश भी दे।

इसके विपरीत सोवियत संघ ने प्रस्ताव यह रखा था कि सुरक्षा परिषद पाकिस्तान से कहे कि वह अपनी सेनाओं द्वारा किये जा रहे बंगला देश में रक्तपात को वन्द कराये और वहां कोई उचित राजनैतिक हल खोजा जाय। आज की वहस में एक मुख्य वात यह थी कि चीन के प्रतिनिधि ने सोवियत प्रतिनिधि की इस मांग को अस्वीकार कर दिया था कि बंगला देश के प्रतिनिधि को भी वोलने का मौका दिया जाए। चीनी प्रतिनिधि ने कहा—ऐसा करना पाकिस्तान के अन्दरूनी मामले में हस्तक्षेप होगा।

चीन को चेतावनी

आज बिना नाम लिये सोवियत सरकार ने चीन को चेतावनी दी कि दूसरे देश इस युद्ध से अलग रहें वरना हमारी सीमाओं को भी खतरा पैदा हो जायेगा और हम चुप नहीं रहेंगे। दूसरी ओर चीन ने भारत को आज फिर आक्रमणकारी और रूस को आक्रमण के लिये उकसाने वाला बताया।

आज अमेरिकी राजदूत को विदेश मंत्रालय में बुलाकर सुरक्षा परिषद में अमेरिकी रवैये पर भारतीय नाराजगी श्री कौल ने प्रकट की। भारत सरकार ने अपनी ओर से कश्मीर में १९४८ की युद्ध विराम रेखा की समाप्ति की घोषणा की।

×ब्रिटिश अखवारों ने अपनी सरकार को सलाह दी कि ब्रिटिश सरकार मध्यस्थता की पहल करे।

संसार के इतिहास को एक नया मोड़— बंगला देश को भारत द्वारा मान्यता

६ दिसम्बर १९७२ ई० को भारत की प्रधान मन्त्री ने संसार के इतिहास और भूगोल को एक नया मोड़, वंगला देश को मान्यता देकर दिया। दोनों सदनों में तुमुल हर्ष-ध्वनि के बीच प्रधानमंत्री ने मान्यता की घोषणा की। सदन के सभी सदस्यों ने प्रधानमंत्री की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सदस्यों ने इस मान्यता को द्वि-राष्ट्र सिद्धान्तों के दफन तथा इस उप-महाद्वीप में धर्म-निर्पेक्ष और लोकतंत्री शक्तियों की अन्तिम विजय बताया। उन्होंने कहा, अब जो कुछ बच गया है, वह पाकिस्तान का भूत है जो कुछ देशों के दूतावासों में और संयुक्त राष्ट्रसंघ में भटकता फिरता रहेगा।

पाकिस्तान ने इस समाचार को सुनकर भारत से कूटनीतिक सम्बन्ध तोड़ लिये और अमेरिका ने भारत को दी जाने वाली आर्थिक मदद स्थगित कर दी। लेकिन सेनेटर चर्च ने सरकार से मान्यता की मांग की।

रूस द्वारा फिर वीटो

अमेरिका द्वारा युद्ध विराम के पुनः प्रस्ताव पर २४ घंटे के अन्दर सोवियत प्रतिनिधि ने दूसरी वार वीटो किया। इस समय वंगला देश के प्रतिनिधि को बुलाये जाने के प्रश्न पर रूस और चीन के प्रतिनिधि में झड़प हो गयी।

अमेरिका ने कराची से अमेरिकी लोगों को निकालने तक बमबारी न करने की अपील की और ऊ थांत ने ढाका से राष्ट्रसंघ के सदस्यों तथा कुछ अन्य आदमियों को निकालने तक आक्रमण न करने की प्रार्थना की। भारतीय सैनिक कमान ने दोनों की प्रार्थनाएं मान लीं।

युद्ध की स्थिति

आज छाड़बेट पर भारतीय सेना ने अधिकार कर लिया और सिन्ध में पाकिस्तानी भूमि पर उसका बढ़ाव जारी रहा। इस बढ़ाव में उसने नयाछोड़ पर कब्जा कर लिया। छोटे-छोटे कस्बे—रेलनोर और पिरानी का पार पर कब्जा करके लगभग १ हजार वर्गमील पाक क्षेत्र पर भारतीय सेना ने अधिकार कर लिया। आज की यहाँ की लड़ाई में एक पाकिस्तानी सेवर जेट मार गिराया गया।

बम्बई पर पाकिस्तानी वायुयानों ने आक्रमण का असफल प्रयास किया। भारत ने दो तेलवाही और दो तटीय जहाज पकड़े। मेघना नदी पर कार्रवाई में दो

युद्धपोत नष्ट किये गये और एक व्यापारी जहाज डुबा दिया गया। स्यालकोट की ओर बढ़ते हुए जस्सार पर भारतीय सेना ने कब्जा किया। जम्मू क्षेत्र में दो चौकियों और ११ गांवों पर सेना ने कब्जा किया। पूर्वी मोर्चे पर फेनी और हिल्ली पर कब्जा हुआ। आज के युद्ध में भारत के दो विमान नष्ट हुए। अब तक भारत के ११ विमान नष्ट हो चुके हैं, जबकि पाकिस्तान के ५२ और ८२ टैंक तथा ८ युद्धपोत नष्ट हुए। आज पाकिस्तान ने जम्मू और ओखा पर भी हमला किया और अपने दो सेबरजैट तुड़वाये।

भारतीय सेना की दूसरी ऐतिहासिक विजय

७ दिसम्बर का दिन भारतीय सेना के इतिहास में एक अद्वितीय दूसरा दिन है। पहला दिन वह था जब कराची बन्दरगाह को बर्बाद करके भारतीय जलसेना ने पाकिस्तानी जलसेना को नष्ट किया था और आज पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) की लोह दुर्ग—जैसोर छावनी को भारतीय सेना ने नष्ट कर डाला। जैसोर को आजाद करके भारतीय सेनाएं ढाका की ओर चल पड़ीं। जैसोर पूर्व बंगाल की तीन बड़ी छावनियों में से एक थी। इसके साथ ही भारतीय सेना ने सिलहट पर भी कब्जा कर लिया। सिलहट पर भारतीय सेना ने कब्जा करने से पहले पैराशूटों से सेना, तोपें और हल्के टैंक उतारे।

कश्मीर मोर्चे पर मुनावर तवी नदी पर हमारी सेना पीछे हटआई। यह क्षेत्र १० मील लम्बा, ७ मील चौड़ा है। इस युद्ध में पाकिस्तान ने पूरी एक डिवीजन सेना और दो टैंक दस्ते झोंके थे। इस युद्ध में पाकिस्तान के २६ टैंक टूटे। हटने के बाद भारतीय सेना का पुनर्गठन किया गया ताकि प्रत्याक्रमण करके अपना क्षेत्र वापस लिया जा सके। मेंगड अंचल में तथाकथित आजाद कश्मीर के बहुत से भाग पर भारतीय सेना ने कब्जा किया। सिंध अंचल में ४० मील तक जितनी चौकियां थीं, उन पर भारतीय सेना ने अधिकार कर लिया। सिंध अंचल में २० टैंक तोड़कर २१ पाकिस्तानी चौकियों पर कब्जा किया गया। आज तक पाकिस्तान के १३३ टैंक और ९३ वायुयान तोड़े जा चुके थे। और भारतीय वायुसेना २ लाख ४० हजार पौंड के बम और राकेट पाकिस्तानी अड्डों पर गिरा चुकी थी।

मुनव्वर तवी नदी का बदला आज भारतीय सेना ने स्यालकोट अंचल में लिया और वह मरला नहर तक पहुंच गयी, जहां से इच्छोगिल नहर में पानी आता है। छम्ब में २० वर्गमील खोकर यहां ३० वर्गमील भूमि पर कब्जा कर लिया गया।

पूर्वी क्षेत्र में पाकिस्तान के ६ जहाज पकड़े गए और वायुसेना समाप्त कर दी तथा जैसोर के साथ-साथ जैहिन्दा और दुर्गाविरकती को भी मुक्त करा लिया। शाम तक

सोनामगंज भी शत्रु से छुड़ा लिया और खुलना से पाक सेना भागने लगी। भारतीय दस्ता ब्राह्मणवेरिया में जा घुसा। दूसरे दस्तों ने पीरगंज, लालमुनीरहाट, रंगपुर और कुशिग्राम को मुक्त करके बंगला देश को सौंप दिया। साथ ही नौसेना ने कालीगंग और मेंढरपुर को मुक्त कराया। पठानकोट क्षेत्र में एक टैंक पकड़ा और दस टैंक तोड़े। आज ही सिन्ध के कालवेग और जलेसी पर भारतीय सेना ने कब्जा किया और चकलाला, सरगोधा, कराची तथा रावलपिंडी के पाक विमान स्थलों पर बमबारी की।

राजनैतिक युद्ध

आज ७ दिसम्बर को भारत के बाद भूतान ने बंगला देश को मान्यता दे दी। रेडियो पाकिस्तान ने घोषणा की कि राष्ट्रपति याहिया खां ने नुरूल अमीन और श्री भुट्टो को संयुक्त सरकार बनाने को बुलाया है।

संयुक्त राष्ट्रसंघीय वृहत सभा में आज भारत-पाक-युद्ध पर अर्जेण्टाइना के प्रस्ताव पर वाद-विवाद प्रारम्भ हो गया। प्रस्ताव में युद्ध विराम कर दोनों देशों से सेनाएं हटाने की माँग की गयी थी। सोवियत रूस ने आज फिर राष्ट्रसंघ में चीन के भारत विरोधी रवैये की निन्दा की। चीन ने आज फिर भारत को विस्तारवादी तथा बंगला—हत्याकाँड को भारत का अन्दरूनी मामला बताया।

ब्रिटेन में विरोधी दल के नेता श्री हैरोल्ड विल्सन ने राष्ट्रसंघ में अमेरिकी रुख को मूर्खतापूर्ण और उसके वक्तव्य को भारत विरोधी बताते हुए कहा—"युद्ध विराम प्रस्ताव पास हो जाता, यदि कुछ देशों का गठबंधन न होता और अमेरिका मूर्खतापूर्ण रुख न अपनाता।"

राष्ट्रसंघ सुरक्षा परिषद ने भारत-पाक युद्ध का मामला आज वृहतसभा को इसलिये सौंपा क्योंकि वहां वीटो का अधिकार किसी देश को नहीं है।

पूर्वी जर्मनी ने आज पाक की निन्दा की और स्विस सरकार ने पाकिस्तान के हितों की देखभाल का प्रस्ताव मानकर पाक दूतावास पर अपना झंडा लगा दिया तथा दोनों देशों के राजनयिकों की अदला-बदली की बात शुरू हो गयी।

संसद में रक्षा मंत्री ने आज युद्ध की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कल हमने ७ से ११ बजे तक ढाका पर इसलिए बमबारी बन्द करना मान लिया था ताकि राष्ट्रसंघ का जहाज वहां उतर सके और वहाँ से लौट सके; लेकिन उस पर उतरते समय पाकिस्तानियों ने हमें बदनाम करने के लिये गोलाबारी की और वह जहाज रंगून चला गया। यह विमान कनाडा का था जो राष्ट्रसंघ का कार्य कर रहा था। भारतीय राजदूत ने मास्को में उप-विदेश मन्त्री से बातचीत की।

८ दिसम्बर—भारतीय रण-कौशल के चमत्कार

आज का दिन भी भारतीय रणकौशल का चमत्कारिक दिन था। सिन्ध के भीतर ६० मील पर पाकिस्तान के 'छोर' नामक अड्डे पर भारतीय सेना ने अधिकार कर लिया। गदरारोड और छोर के मध्य रेल-सम्बन्ध को तोड़ने के लिये पाकिस्तानी जहाजों ने बम बरसाये लेकिन मुन्नावली और खोखरापार से होती हुई भारतीय कुमुक नयाछोर तक जाती रही। स्यालकोट में अवलोमक रेल्वे स्टेशन के साथ-साथ भारतीय सेना ने १७ मील लम्बी रेल लाईन पर भी अधिकार कर लिया। आज तक पाकिस्तान के ७४ यान नष्ट किये गये।

भारतीय थल सेना के सेनापति जनरल मानिकशाह ने आज ढाका की पाकिस्तानी सेना से आत्मसमर्पण की मांग करते हुए कहा कि हमारी जल सेना ने तुम्हारे भागने के सभी रास्ते रोक कर नाकाबन्दी करली है। यदि तुमने आत्मसमर्पण नहीं किया तो समझ लो—मौत तुम्हारी राह देख रही है।

कोमिल्ला और खादिमनगर छावनियों पर अधिकार करके भारतीय सेना ढाका के लिये चल पड़ी और अग्रिम दस्ते ढाका से १८ किलोमीटर पर थे। दूसरी ओर जैसोर, कौमिल्ला, हिल्ली तथा रंगपुर की छावनियों से पिटकर पाकिस्तानी सेना ढाका की ओर भाग रही थी।

कराची से आज ५०० विदेशी भाग गये। उन्होंने कहा—पाकिस्तान भारत के साथ युद्ध में ज्यादा देर नहीं टिक सकता।

मुक्तिवाहिनी के साथ मिलकर भारतीय सेना ने आज सतखीरा को मुक्त कराया और खुलना की ओर बढ़ चली। मंगौरा की ओर बढ़ती हुई सेना के रास्ते के पुल पाकिस्तानी तोड़ते चले गये। पीरगंज भी आज मुक्त करा लिया गया था और दीनाजपुर के लिये लड़ाई चल रही थी। जमालपुर में भारतीय सैनिक ऐतिहासिक युद्ध लड़ रहे थे। भारतीय सेना के कुछ दस्ते मेमनसिंह की ओर बढ़ रहे थे। मौलवी बाजार और कौमिल्ला को घेर लिया गया था। चांदपुर को मुक्त करा कर भारतीय सेनाएं दूसरी ओर चटगांव पर जा चढ़ीं।

राजनैतिक युद्ध

राष्ट्रसंघ की वृहत्सभा ने आज युद्ध-विराम का प्रस्ताव पास कर दिया। प्रस्ताव के पक्ष में १०४ मत पड़े, विरोध में ११ मत पड़े और १० देशों ने मतदान

में भाग नहीं लिया। इस संकटकालीन अधिवेशन में प्रस्ताव अर्जेण्टाइना का था और ३१ देश प्रस्तावक और थे। ओमान के अतिरिक्त सभी मुस्लिम देशों, भारत के मित्र, श्रीलंका, यूगोस्लाविया और रूमानिया ने भी प्रस्ताव के समर्थन में मत दिया। मारीशस ने भाग नहीं लिया। सेनेगल और मालावी तटस्थ रहे। ब्रिटेन और फ्रांस भी अनुपस्थित रहे। इन्हीं के साथ नेपाल और अफगानिस्तान भी अनुपस्थित रहे।

सोवियत संघ, क्यूबा, मंगोलिया, भूतान तथा पोलैंड आदि देशों ने भारत का साथ दिया। इस प्रस्ताव पर नयी दिल्ली में केन्द्रीय राजनैतिक मामलों की समिति ने विचार किया।

◆एडवर्ड श्री कैनेडी और श्री मस्की ने आज फिर अमेरिकी सरकार की पाक समर्थक नीति की निन्दा की और ब्रिटिश लेवर पार्टी ने भी मुजीव की रिहाई की माँग की। दूसरी ओर युर्दान ने पाकिस्तान का समर्थन किया और कुछ सैनिक सहायता भी भेजी।

९ दिसम्बर : ढाका की गलियों में युद्ध आरम्भ और ईरान तक नाकाबन्दी

९ दिसम्बर का दिन पाकिस्तान के इतिहास में सबसे काला दिन माना जायेगा! इस दिन भारतीय सेनाओं ने सभी मोर्चों पर उसे इतनी करारी मार लगायी कि वह बौखला उठा और उसने आक्रामक स्थिति छोड़कर बचाव की लड़ाई शुरू कर दी।

कल से आज तक भारतीय गगन सेना ने सैनिकों, शस्त्रास्त्रों और गोला-बारूद ले जाने वाले पाकिस्तानी जहाजों, स्टीमरों, गनबोटों और मोटर बोटों का एक पूरा का पूरा बेड़ा समुद्र में डुबा दिया। गगन सेना के एअर मार्शल दीवान ने पत्रकारों को आज बताया कि खुलना-नारायणगंज मार्ग पर भैरव नदी तथा उत्तरी भाग में फूलछाड़ी-सिराजगंज मार्ग पर यमुना में पाक जहाजों और स्टीमरों पर प्रहार किया गया।

भारतीय और मुक्तिसेना के दस्ते ढाका पर अंतिम चोट करने के लिये मेघना नदी के तट पर इकट्ठे हो गये। यहां मुक्तिसेना ने ३०० रजाकारों को भी गिरफ्तार किया। मुक्तिसेना के अगले दस्तों ने ढाका की गलियों में घुसना शुरू कर दिया और पाकिस्तानी सेना ने छावनी में भागना जारी रखा।

भारतीय नौसेना ने कराची से ईरान तक और कराची से ढाका तक सारे

सागर की नाकेबन्दी पूरी कर ली, ताकि पाकिस्तान को कहीं से हथियारों और सेना की मदद न मिल सके। इसके साथ ही भारतीय जलपोतों ने कराची पर आज फिर भयंकर गोलाबारी की। चार युद्धपोत नष्ट करके, कराची बन्दरगाह पर बने तेल भण्डारों को आग लगा दी। कराची के साथ-साथ ईरान से लगे पाकिस्तानी बन्दरगाह ग्वादर पर भी भीषण बमबारी करके उसे धूल में मिला दिया। इस हमले में पनामा का झंडा लगाये एक पाकिस्तानी मालवाही जहाज को भी पकड़ लिया गया। पारदीप के पास सैनिकों से भरा एक और पाक जहाज पकड़ा गया।

कौमिल्ला क्षेत्र में जबरदस्त टैंक युद्ध जारी रहा और सिन्ध की राजधानी हैदराबाद की तरफ दो ओर से भारतीय सेनाएं बढ़ चलीं। इस बढ़ाव में थार-पारकर जिले के नगर पारकर पर अधिकार कर लिया।

विशाखापतनम् में ५ दिसम्बर को डुबाई गयी पाक पनडुब्बी—गाजी के कागजात और उसके कप्तान आदि के शव मछुवों ने वायस एडमिरल को लाकर दिये। इन पुष्ट-प्रमाणों के पुरस्कार स्वरूप मछुवों को पाँच-पांच सौ रुपये पुरस्कार दिया गया।

जालंधर में आज कुछ गद्दार पकड़े गये इनके पास वह अमरीकी यंत्र मिले, जो राडार के कार्य को ठप्प कर देते हैं और हमलावर जहाजों का मार्ग-दर्शन करते हैं। यह यंत्र अमेरिका वियतनाम-युद्ध में प्रयोग में लाता रहा है और उसने काफी मात्रा में यह पाकिस्तान को दिये थे, पाकिस्तान ने इन्हें भारतीय गद्दारों को पहुँचाया था। जट्टाखाँ नाम का एक पाक जासूस भी आज पकड़ा गया।

मैंनावाटी छावनी की सारी सेना ने आज भारतीय सेना के सामने हथियार रख दिये।

भारतीय सेना आज स्यालकोट से १६ कि०मी० दूर थी। जालंधर और भुज पर पाकिस्तानी वायुसेना ने आज फिर हमले किये। जालंधर में २० व्यक्ति मरे और २५ भारतीय घायल हुए। पठानकोट पर पाकिस्तानी हमला व्यर्थ गया।

राजनीतिक युद्ध

संयुक्त राष्ट्रसंघ की वृहतसभा की बैठक में भाग लेने के लिये पाकिस्तान के जुल्फीकार अली भुट्टो गये और आज उनका पहला पड़ाव तेहरान में था। भारतीय कमाण्डर ने आज फिर ढाका में घिरी पाकिस्तानी सेना को हथियार डालने की सलाह दी।

ब्रिटेन के भू० पू० मंत्री श्री हैरेल्ड विल्सन ने कहा—१९६५ में भारत को आक्रमणकारी कहकर जो गलती मैंने की थी, वही गलती आज अमेरिका कर रहा है।

भारत न तब दोषी था, न आज है। आज ब्रिटिश पत्रों ने कहा—अमरीका अब भी डलेस की नीति पर चल रहा है, जबकि उसके इशारे पर पाकिस्तान ने जो भारत पर अकस्मात् इजरायली ढंग का हमला किया था, वह पूरी तरह फेल हो चुका है।

आज एक अमेरिकी जासूस कलकत्ता में गिरफ्तार किया गया और भारत सरकार ने विदेशी युद्धपोतों को चेतावनी दी कि वह सारे युद्धक्षेत्र से हट जायें और उधर जाने की कोशिश भी न करें।

१० दिसम्बर : ढाका की नाकाबन्दी—चीन की धमकी

आज का दिन भी पाकिस्तान के लिये काला रहा। भारतीय सेनापतियों ने भारी संख्या में पैराशूटों से ढाका के चारों ओर सेनाएं उतार दीं। इन पैराशूटों से सेनाएं ही नहीं तोपें और दूसरे शस्त्र तक भी उतारे गये। लगभग ५० हजार सेना पैराशूटों से कुदा दी गयी। और भारतीय सेना तथा मुक्तिवाहिनी की संयुक्त कमान ने मेघना नदी से आगे बढ़कर पाकिस्तान की भैरव बाजार की सेना पर अकस्मात् आक्रमण कर दिया। पीछे हटती पाक सेना ने मेघना नदी का पुल उड़ा दिया। लेकिन सिलहट को तोड़कर जो भारतीय सेना बढ़ी उसने स्टीमरों गनबोटों और हैलीकोप्टरों की सहायता से सेना ले जाकर नदी के उस पार अपनी छोटी छावनी बना ली। साथ ही २४ घण्टे का युद्ध-विराम कर भारत ने विदेशी जहाजों को छूट दे दी कि वे अपने आदमियों को इस बीच हटा लें; लेकिन उन्हें कहीं और जाने से पहले कलकत्ता आना होगा। कमाँडर ने बताया कि अब ढाका की पाकिस्तानी सेना को कोई भी ताक़त नहीं बचा सकती।

ढाका रेडियो स्टेशन को भारतीय बमबाजों ने तोड़ दिया और उसका प्रसारण समाप्त हो गया। इसके युद्ध-पोत जो बंगला देश को माल ले जा रहे थे, पकड़ लिये गये।

बंगला देश में लड़ने वाली भारतीय सेना और बंगला देश की मुक्तिसेना की एक कमान बना ली गयी। इस समझौते पर प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी और बंगला देश की ओर से कार्यवाहक राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री ने हस्ताक्षर किये। चीन ने आज राष्ट्रसंघ में भारत को धमकी दी कि वह या तो युद्ध-विराम का प्रस्ताव स्वीकार कर ले वरना 'शर्मनाक पराजय' के लिये तैयार हो जाय।

मुनव्वर तवी नदी पर छम्ब क्षेत्र में आज पाकिस्तान ने दो बार हमारी

सेनाओं पर हमला किया। यहां पाकिस्तानी सेना की कमान टिक्का खां के हाथ में थी। जनरल मानिकशाह ने घोषणा की कि अब कश्मीर क्षेत्र से युद्ध-विराम रेखा समाप्त कर दी गयी है, यह रेखा महत्वहीन हो चुकी है। मास्को में सोवियत रूस ने भारत के विरोध में चीन और अमेरिका के कुचक्र की निन्दा की। बाड़मेर क्षेत्र की सभी पाक चौकियों पर भारतीय सेना ने कब्जा कर लिया।

नयी दिल्ली के अमरीकी दूतावास पर अ० भा० जनसंघ दल ने जोरदार प्रदर्शन किया और विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह राष्ट्रसंघ की बैठक में हिस्सा लेने के लिये न्यूयार्क रवाना हुए। भारतीय प्रवक्ता ने बी०बी०सी० और पाक रेडियो के इस समाचार को कि भारतीय जहाजों ने अस्पताल पर बम वर्षा की है, गलत बताया और कहा कि यह क्रूरता पाकिस्तान ने स्वयं ही की है ताकि भारत को बद-नाम किया जा सके।

११ दिसम्बर : ढाका का घेरा सख्त—फरमान अली को सलाह

भारत के युद्ध इतिहास में आज का दिन अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा। मैमनसिंह जिले में जमालपुर छावनी को आज ब्रिगेडियर क्लेर और जनरल नागर की सेनाओं ने तोड़ दिया। हिल्ली, मैमनसिंह और कुष्तिया मुक्त करा लिये गये और मुक्तिवाहिनी के साथ मिलकर भारतीय सेना ने ढाका का घेरा तंग करना शुरू कर दिया।

छम्ब में भारतीय सेना ने एक तगड़ा जवाबी हमला करके पाकिस्तानी सेना को मुनव्वर तवी नदी के उस पार फेंक दिया। इससे पहले इस क्षेत्र में लगातार पाकि-स्तानी सेना छः हमले कर चुकी थी। पश्चिमी क्षेत्र की २२ पाक चौकियों पर भार-तीय सेना ने कब्जा किया और ५३ टैंक तोड़े।

राजनैतिक युद्ध

श्री स्वर्णसिंह सुरक्षा परिषद की बहस में भाग लेने के लिये आज न्यूयार्क पहुँच गये। लन्दन में उन्होंने कहा—हमारा इरादा अभी युद्ध-विराम का नहीं है।

पाकिस्तान के मनोनीत प्रधानमंत्री श्री नुरूल अमीन ने रावलपिंडी में कहा, यदि भारत पाकिस्तान की सीमा से अपनी सेनाएं हटा ले और युद्ध विराम करदे तो पाकिस्तान बातचीत के लिये तैयार है।

पाकिस्तानी गवर्नर के सैनिक सलाहकार श्री जनरल राव फर्मान अली ने संयुक्त राष्ट्रसंघ से अपने और अपनी सेना को बचाने की अपील की और बंगला देश की नयी सरकार को सहायता देने का वचन भी दिया; लेकिन पाकिस्तानी प्रतिनिधि

श्री आगा शाही ने राष्ट्रसंघ के महासचिव श्री ऊ थांत से निवेदन किया कि इस पत्र को गम्भीरता से न लिया जाय।

साथ ही भारतीय सेनाध्यक्ष जनरल मानिकशाह ने आज फिर पाक सेना से आत्मसमर्पण की अपील की।

◆पाकिस्तानियों ने कनाडा और ब्रिटेन के हवाई जहाजों के, विदेशियों को ढाका से निकालने के कार्य में फिर बाधा डाली और उन जहाजों को हवाई अड्डे पर नहीं उतरने दिया। ३०० पाक सैनिकों ने आज आत्मसमर्पण भी किया।

१२ दिसम्बर : प्रधानमन्त्री का ऐतिहासिक भाषण और ढाका के लिए युद्ध आरम्भ

आज घनघोर युद्ध के दौरान प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने रामलीला मैदान में उस समय अपना ऐतिहासिक भाषण दिया जबकि शत्रु के हवाई हमले का खतरा बराबर बना हुआ था। इससे विदेशी संवाददाता भी चकित थे।

ठसाठस भरे मैदान में प्रधानमन्त्री ने कई ठोस बातें कहीं। उन्होंने कहा—हमारा इरादा पाकिस्तान के किसी क्षेत्र को हड़पने का नहीं है और न ही हम पाकिस्तान को तोड़ने जा रहे हैं। दूसरी बात यह है—हम अपने आदर्शों के लिए लड़ रहे हैं और न किसी को धमकी देते हैं और न किसी की धमकी को सहन करेंगे। हमें किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं। सहायता नहीं, वह लम्बे समय का कर्जा होता है। जब हम यह देख रहे हैं कि लोकतन्त्र का नारा लगाने वाले देश या तो आज मौन हैं या लोकतन्त्र-विरोधी देश को मदद दे रहे हैं, तब हमें उनसे क्या लेना-देना है; लेकिन उन्हें यह जान लेना चाहिए कि भारत को कोई देश न दबा सकता है और न डरा सकता है।

उन्होंने कहा—हमें यह पता नहीं कि अमेरिका या पाकिस्तान में कोई सैनिक सन्धि है। मुझे सिर्फ इतना पता है कि पाकिस्तान सी०ए०टो० का सदस्य है और इस संगठन का निर्माण कम्यूनिज्म को रोकने के लिए हुआ था। बंगला देश की आजादी की आग को कोई नहीं बुझा सकता।

×ढाका की मुक्ति के लिए युद्ध शुरू हो गया। मेघना नदी पार करके भारतीय दस्ते ढाका की ओर बढ़े और आज ५० हजार सेना भारतीय हवाई जहाजों व हैलीकाप्टरों ने बंगला देश में और उतार दी। पहला बढ़ता दस्ता नृसिहहटी अर्थात् ढाका से लगभग १८ मील पर पहुँच गया था।

१ हजार पाकिस्तानी सैनिकों और अफसरों ने आज आत्म-समर्पण किया। समूचा छाड़वेट मुक्त करा लिया गया। छम्ब मोर्चे पर संयुक्त पंजाब के भू०पू० मुख्यमन्त्री सर सिकन्दर हयात खां के पोते को गिरफ्तार किया गया। आज तक पाकिस्तान के ८० वायुयान और १५८ टैंक तोड़े गए।

×अमरीकी सरकार ने सुरक्षा परिषद की तुरन्त बैठक बुलाने की यह कह कर माँग की कि भारत पाकिस्तान पर अपना आक्रमण रोक नहीं रहा है। अतः सुरक्षा परिषद की अविलम्ब बैठक बुलाई जाए।

×चण्डीगढ़ में कश्मीर के मुख्यमन्त्री श्री सादिक का देहान्त हो गया। श्री कासिम मुख्य मन्त्री बने।

१३ दिसम्बर—निर्णायक तिथि

१३ दिसम्बर युद्ध के लिए निर्णायक दिन था। बंगला देश की तंगेल छावनी पर भारतीय सेना ने कब्जा करके खुलना और मैनावती को घेर लिया। इसके साथ ही ढाका भारतीय तोपों की मार में आ गया।

भारतीय जवान तीन ओर से ढाका की ओर बढ़ते रहे। एक दस्ता जमशेदपुर पहुंच गया। यह स्थान ढाका से १८ मील दूर है। दूसरी टुकड़ी भैरव बाजार से बढ़ रही थी। तीसरी ओर की टुकड़ी केवल तीन मील रह गयी थी। कारगिल में भी हमारी फौजें बढ़ती गयीं। छम्ब मोर्चे पर आज शान्ति रही। दो चौकियों पर भारतीय सेना ने कब्जा किया। राजस्थान से गुजरात के बड़े क्षेत्र तक पाकिस्तानी सेना खदेड़ दी गयी।

अमेरिका का ७वां बेड़ा जिसकी कमान अणुचालित युद्ध पोत 'इण्टर प्राईज' कर रहा था, आज बंगाल की खाड़ी की ओर आने का समाचार मिला।

जनरल मानिकशाह ने पाक क्रमाण्डर से फिर हथियार डालने की अपील करते हुए कहा—तुम्हारा लड़ना व्यर्थ है। भारतीय सेना से तुम घिरे हुए हो। इस पर भी यदि लड़ना चाहते हो तो विदेशियों और स्त्री-बच्चों को युद्ध से हटाकर हम से निपट लो ताकि व्यर्थ उन निर्दोषों की जान न जाये।

सुरक्षा परिषद में बोलते हुए जिसकी मीटिंग अमेरिका के अनुरोध पर बुलायी गयी थी, श्री स्वर्णसिंह ने कहा—युद्ध विराम की अपील हमारी बजाय पाकिस्तान से करनी चाहिये। युद्ध उसने शुरू किया है, हमने नहीं। दूसरे सेनाएं भी उसे ही हटानी हैं। तीसरी बात यह है कि यहां बंगला देश के प्रतिनिधि को बोलने के लिये बुलाया जाय और जब तक बंगला देश से पाकिस्तानी सेना नहीं हट जाती, तब तक युद्ध विराम का कोई मतलब ही नहीं।

पाकिस्तान की ओर से बोलने के लिये श्री भुट्टो आये थे। वे बोले—यदि ताकत से आज भारत ने पाकिस्तान को तोड़ दिया तो कल, अफगानिस्तान, ईरान, नेपाल, श्रीलंका को भी हज्म कर लेगा। भूटान और सिक्कम तो उसकी जेब में हैं ही।

१४५ करोड़ के नये कर लगाने की वित्तमंत्री श्री चव्हाण ने आज लोकसभा में घोषणा की।

१४ दिसम्बर : ढाका की मोर्चाबन्दी टूटी : पाक अधिकारी भागे

भारत की विजयवाहिनी ने आज मुक्तिवाहिनी के साथ ढाका की मोर्चाबन्दी तोड़कर पहले एक चौकी पर कब्जा किया और एक ब्रिगेडियर, दो लैफ्टिनेन्ट कर्नल तथा ६ मेजरों को बन्दी बनाकर ढाका के अन्दर प्रवेश प्रारम्भ कर दिया। जिस पाकिस्तानी ब्रिगेडियर ने आत्मसमर्पण किया वह ९३वीं पैदल सेना का कमांडिंग आफिसर खादिर खान था और दो लेफ्टिनेन्ट कर्नल थे—मुहम्मद अकबर और अमीर मुहम्मद खान।

तंगेल को जीत कर भारतीय सेना की दूसरी टुकड़ी दक्षिण की ओर बढ़ी और जयदेवपुर को मुक्त करा कर, ढाका के उत्तर में १२ मील दूर तेजी से पहुंच गयी। उत्तर में भैरव बाजार से जो दस्ता नरसिंहगटी पहुँच गया था, वह आज ढाका की सीमाओं से केवल ८ मील था। इसके अतिरिक्त पाकिस्तानी सेना के डिवीजनल सदरमुकाम बोगरा को भारतीय सेना ने मुक्त करा दिया और दोनों पाकिस्तानी जनरल भाग गये। यहां पर कुछ ही घमासान युद्ध हुआ और पाकिस्तानी टैंक भी तोड़े गये। दीनाजपुर, सैदपुर और रंगपुर में पाकिस्तानी बटालियनें कहीं-कहीं अब भी मोर्चा ले रही थीं, लेकिन भारतीय तोपखाने की मार इतनी तगड़ी थी कि कहीं भी वे जम नहीं पाते थे। चटगांव को पूरी तरह तोड़ने के लिये भारतीय सेनाएं कुमीरहाट पहुँच गयी थीं। खुलना में शत्रु के बख्तरबन्द दस्ते और टैंकों ने काफी लोहा लिया, अपने तीन टैंक तुड़वाये और एक भारतीय टैंक भी तोड़ा। कौमिल्ला मैनावाटी छावनियों पर भारतीय तोपखाना आज भयानक आग उगल रहा था।

अधिकारी भागे

भारतीय तोपखाना ने ढाका में घुसते ही यकायक गोलाबारी तेज कर दी और गगन सेना ने सरकारी इमारतों को गोले बरसाकर धूल में मिलाना शुरू किया।

आज गवर्नर हाऊस पर जब भारतीय सेना ने निशाने लगाये, तब ढाका का गवर्नर और उसकी लड़की तथा पत्नी खाइयों में लेटे हुए थे और वहीं पड़े थे राव फर्मानअली। बम गिरते ही गवर्नर हाऊस ढेर हो गया और जैसे ही भारतीय वायुयान वापस गये, तैसे ही डा० ए० एम० मलिक ने जल्दी से नमाज पढ़ी। नमाज पढ़कर उठे ही थे कि उनके मंत्रिमण्डल का पिछले दिन का लिखा इस्तीफा सामने आ गया।

राव फर्मानअली भी गिरते-पड़ते खाई से निकले और उनके निकलते ही भारतीय वायुयानों की दूसरी लहर बम बरसाने को आ गयी। फर्मानअली यह कहते हुए भाग गये—"यह भारतीय आखिर चाहते क्या हैं ?" उन्होंने किसी से अपने सवाल का जवाब तक लेने का इन्तजार भी नहीं किया और भारतीय वायुयानों के जाते ही जल्दी-जल्दी अपना सामान बांधकर गवर्नर श्री मलिक अपनी लड़की और अपनी आस्ट्रेलियन पत्नी को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास के तटस्थ होटल इन्टर नेशनल जा पहुंचे जहां उनके दूसरे सहयोगी पहले ही पहुँचे हुए थे। यह उनके सहयोगी थे तीस व्यक्ति जो पाकिस्तान की बंगला देश स्थित सरकार की मौत की आखिरी नमाज पढ़कर आये थे और पाकिस्तानी सेनापति ने इनकी सुरक्षा की गारंटी देने से साफ इन्कार कर दिया था।

बंकर से भागने से पहले एक रद्दी कागज का टुकड़ा उठाकर गवर्नर ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति को अपना और अपने मंत्रिमण्डल का इस्तीफा लिखा।

पश्चिमी मोर्चा

पश्चिमी मोर्चे पर भारतीय सेना ने स्यालकोट क्षेत्र में ३५० वर्ग मील भूमि पर अधिकार कर लिया और शकरगढ़ कस्बे के लिये लड़ाई शुरू हो गयी। यहाँ पांच पैटन टैंक भारतीय सेना ने तोड़े। १९६५ में इसी इलाके के पास—पसरूर चायविंडा में भयानक टैंक युद्ध हुआ था जिसमें सैकड़ों पैटन टैंक भारतीय सेना ने तोड़े थे। कारगिल क्षेत्र में भारतीय सेना ने तीन चौकियों पर अधिकार कर लिया। इस क्षेत्र में इन्हें मिलाकर २६ चौकियों पर कब्जा हुआ। जम्मू-कश्मीर के पुंछ अंचल में भारतीय सेना ने हजीरा-कोटली मार्ग को काट दिया।

सिन्ध अंचल में नयाछोड़ के लिये युद्ध जारी था और शत्रु के आज २१ टैंक नष्ट किये जा चुके थे। कल रात शत्रु ने पठानकोट और अमृतसर पर हवाई हमला किया था। लेकिन आज केवल श्रीनगर पर ही किया जबकि भारतीय विमानों ने बहावलपुर, खैरपुर, रायविंड, छांगामोगा बादिन तथा कराची पर हमला बोला। आज तक पाकिस्तान के ८३ वायुयान टूटे और भारत के ४१ नष्ट हुए तथा

पाकिस्तान के १७५ टैंकों के मुकाबले भारत ने ६१ टैंकों से हाथ धोया और दो पनडुब्बियां, चार युद्धपोत, १६ गनबोट तथा १२ अन्य जहाज भारत ने पाकिस्तान के पकड़े या तोड़े ।

राजनीतिक युद्ध—रूस द्वारा तीसरी बार वीटो

पिछले नौ दिनों में तीसरी बार सोवियत रूस ने सुरक्षा परिषद में अमरीका के प्रस्ताव पर वीटो किया । आज भारत के पक्ष में सोवियत रूस और पोलैंड ने मत दिये । ब्रिटेन और फ्रांस तटस्थ रहे तथा भारत के विरोध में ग्यारह सदस्य थे । इससे पहले भारत के विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह ने अपने भाषण में स्पष्ट किया कि पाकिस्तानी खतरे के दूर होने के बाद ही हम युद्ध विराम करेंगे । अमेरिका को चाहिये कि वह हमारी बजाय पाकिस्तान से पूछे कि भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ने में उसका उद्देश्य क्या है ?

दूसरी ओर सोवियत सरकार ने भारत को डराने की अमरीकी धमकी की निन्दा की कि वह एक ओर भारत को सुरक्षा परिषद में दबाना चाहता है और दूसरी ओर टोंगकिंग की खाड़ी से अपना बेड़ा भारत को भेज रहा है ।

भारतीय लोकसभा ने आज सरकार का भरपूर समर्थन करते हुए कहा कि वह अमेरिकी बेड़े के आने से जरा भी भयभीत न हो । प्रतिरक्षा मंत्री श्री जगजीवन राम ने कहा—अब तक आठ हजार १६१ अफसर और सैनिक शत्रु के पकड़े जा चुके हैं । अरब सागर में हमारा युद्धपोत खुखरी डुबो दिया गया है, उसके ६ अफसर और ६१ नौसैनिक बचा लिये गये हैं तथा १८ अफसर और १७३ नौसैनिक लापता हैं ।

रूस के प्रथम विदेश उप-सचिव श्री कामिली कुजनेत्सोव ने अपना प्रोग्राम बदल लिया और अमेरिका के इरादों पर नजर रखने के लिये दिल्ली में ही अभी टिके रहने का निश्चय किया । अमरीका का सातवां बेड़ा सिंगापुर से हिन्दमहासागर की ओर बढ़ता जा रहा था । इसी कारण रूसी मन्त्री आज मास्को नहीं लौटे । क्योंकि भारत में आतंक सा फैल रहा था । समझा जा रहा था कि यह बेड़ा या तो कराची की नाकाबन्दी समाप्त करेगा या ढाका में फंसी पाकिस्तानी सेना का उद्धार करेगा ।

१५ दिसम्बर : 'आत्मसमर्पण करो या मरो'—भारतीय सेनापति का अल्टीमेटम

आज भारतीय सेनापति श्री मानिकशाह ने पाकिस्तानी कमाण्डर जनरल
[illegible] १६ दिसम्बर को

सवेरे ६ बजे तक आत्मसमर्पण के लिये तैयार नहीं हुए तो भारतीय सेना को चारों ओर से हमला करने की आज्ञा दे दी जायेगी।

जनरल मानिकशाह ने अपना संदेश अमेरिकी दूतावास की मार्फत भेजा। क्योंकि नियाजी का भारत सरकार को युद्ध विराम का निवेदन भी इसी दूतावास की मार्फत मिला था। जनरल मानिकशाह ने लिखा—मैंने शाम को ५ बजे से सवेरे ६ बजे तक इसीलिये बमबारी बन्द रखने का आदेश अपनी सेनाओं को दिया है।

धूर्त्त नियाजी

पहले जनरल नियाजी ने आखिरी दम तक लड़ने का दावा किया था। लेकिन आज उन्होंने लड़ाई बन्द कर अमरिकी ७वें बेड़े में बैठकर भाग जाने की आज्ञा जनरल मानिकशाह से मांगी। इस पर राव फर्मानअली के भी हस्ताक्षर थे। इससे पहले नियाजी ने पाक राष्ट्रपति याहिया खाँ से बातचीत की। याहिया ने उन्हें सलाह दी कि जरूरत हो तो लड़ाई बन्द कर दो। अतः नियाजी मय हथियारों के सेना सहित अमेरिकी बेड़े में भागने का मंसूबा बाँध रहे थे।

धूर्त नियाजी ने आज अपने बंकरों के आगे स्त्रियों और बच्चों को बांध दिया। अपना हैडक्वार्टर ढाका विश्वविद्यालय ले गये और रेडक्रास के तटस्थ क्षेत्र—होटल इण्टर कांटिनेंटल की छत पर अपनी सैनिक चौकी बना ली।

अमरीकी बेड़े के पीछे रूसी बेड़ा

आज अमेरिकी बेड़े के आगमन के समाचार से देश में क्षोभ और क्रोध तीव्र गति पर पहुँच गया। प्रधानमंत्री ने इस बेड़े के आने और उसकी कार्यवाही से उत्पन्न स्थिति—जो विश्वयुद्ध का रूप भी ले सकती है, विचार किया; उसके मुकाबले के लिये भारतीय नौसेना तैयार हो गयी; लेकिन रात को जापान के प्रतिरक्षा मंत्रालय ने एकाएक समाचार दिया कि प्रक्षेपास्त्रों से सुसज्जित एक रूसी फ्रिगेट तथा एक युद्ध-पोत जापान के दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र और कोरियाई प्रायद्वीप के बीच पश्चिमी जलडमरूमध्य से होकर आज प्रातः तीव्रगति से हिन्दमहासागर की ओर बढ़ते देखा गया है और इससे पहले ६ दिसम्बर को भी एक ऐसा ही फ्रिगेट और प्रेक्षापास्त्र से सुसज्जित पनडुब्बी इसी मार्ग से जाती देखी गयी थी। बताया गया कि सोवियत युद्ध पोतों की संख्या २० है और इनमें ७ हजार टन भारी प्रक्षेपास्त्र सज्जित क्रूजर भी शामिल है। प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी से जब इन बेड़ों के बारे में संसद में पूछा गया, तब उन्होंने बताया कि मुझे केवल इतना पता है कि अमे- बेड़े का पीछा सोवियत बेड़ा कर रहा है। आज संसद के दोनों सदनों में बहुत रोष था। कई सदस्य अमरीका से सम्बन्ध विच्छेद की मांग तक कर रहे थे।

राजनीतिक मोर्चा—भुट्टो ने रोते हुए फाईल फाड़ी

आज पाकिस्तान के मनोनीत विदेशमंत्री और वर्तमान राष्ट्रपति श्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में फाइलें फाड़ दीं और रोते हुए वाक आउट कर दिया। भुट्टो ने कहा—संयुक्त राष्ट्रसंघ एक धोखाघर है। यह भद्दी वास्तविकताओं को छिपाने का फैशनघर वन गया है। आपको महासचिव नहीं, एक जल्लाद चाहिये। मैं यहां पाकिस्तान के आत्मसमर्पण के कागज पर हस्ताक्षर करने नहीं आया हूँ।

अमेरिका और चीन के सुरक्षा पषिद में वार-वार रखे जाने वाले प्रस्तावों को जव सोवियत संघ ने अपने वीटो से पीट दिया तव फ्रांस और ब्रिटेन ने नया प्रस्ताव रखा। उसका आशय था कि युद्ध-विराम और सेनाओं की वापसी के साथ-साथ वंगला देश के मामले के निपटारे के लिये भी कार्य शुरू किया जाय।

भारतीय राजदूत की चेतावनी

अमेरिका में भारतीय राजदूत श्री लक्ष्मीकांत झा ने कहा—अमेरिकी वेड़े का भारत जाना एक गम्भीर मामला होगा। भारत सरकार पूर्व वंगाल से तव तक एक भी फौजी को नहीं भागने देगी, जव तक पश्चिम में युद्ध जारी है।

सोवियत रूस का प्रस्ताव

सोवियत संघ ने सुरक्षा परिषद में ब्रिटेन और फ्रांस के प्रस्ताव का विरोध किया और स्वयं अपना एक प्रस्ताव पेश किया। सोवियत प्रतिनिधि श्री मलिक ने कहा—ब्रिटिश-फ्रेंच प्रस्ताव में युद्ध विराम और राजनैतिक निपटारे के सम्बन्ध को महत्व नहीं दिया गया।

सुरक्षा परिषद की वैठक तीन वार हुई और निष्फल प्रयासों के वाद आज तड़के स्थगित हो गयी ताकि नये प्रस्तावों के लिये सदस्यों को अपनी सरकारों से निर्देश मिल सकें। चीन ने भी आज वीटो की धमकी दी। चीनी प्रतिनिधि ने कहा—यदि किसी प्रस्ताव में बंगला देश का समर्थन किया गया तो चीन उस पर वीटो करेगा।

१६ दिसम्बर—बंगलादेश मुक्त : ९३ हजार पाकिस्तानी सेना ने हथियार डाले

१६ दिसम्बर को विश्व के इतिहास में और भूगोल में एक नये देश—वंगला देश का नाम और जुड़ गया तथा भारतीय सेना ने एक नया कीर्तिमान ९३ हजार

पाकिस्तानी सेना का आत्मसमर्पण स्वीकार करके स्थापित किया । पाकिस्तानी सेना के हथियार डालते ही बंगला देश गणतंत्र हो गया । पाकिस्तानी सेना के आत्मसमर्पण के दस्तावेज पर पाकिस्तानी सेना के कमाण्डर लेफ्टिनेन्ट जनरल नियाजी ने आज सायं ४ बजकर ३१ मिनट पर हस्ताक्षर किये और भारत तथा मुक्तिवाहिनी के जी० ओ० सी० लेफ्टिनेण्ट जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा ने दस्तावेज स्वीकार कर लिया । दस्तावेज़ स्वीकार करने के लिये श्री अरोड़ा हैलीकोप्टर द्वारा ही ढाका गये ।

आत्मसमर्पण की घोषणा लोकसभा में प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी और राज्य सभा में रक्षामंत्री श्री जगजीवनराम ने की । सदस्यों ने मेजें और तालियां बजायीं और प्रधान मंत्री जिन्दाबाद के नारे लगाये । बैठक नियत समय से आज साढ़े चार घंटे अधिक चली ।

प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने अपने भाषण में कहा—भारतीय सेनाएं आवश्यकता से अधिक बंगला देश में नहीं रुकेंगी । और देश उन वीरों के बलिदान को कभी नहीं भूलेगा जिन्होंने इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये वीरगति पाई है । साथ ही मुझे अपनी वायु सेना, नौ-सेना और थल सेना पर गर्व है जिसने अद्‌भुत रण कौशल का प्रमाण दिया है ।

इकतरफा युद्ध विराम की घोषणा

प्रधानमंत्री ने आज इकतरफा युद्ध-विराम की घोषणा करते हुए कहा—कल रात को अर्थात् १७ दिसम्बर को रात के ८ बजे से पश्चिमी मोर्चो पर भारत सरकार युद्ध विराम कर देगी, आशा है तब तक बंगला देश की पाक सेनाओं के आत्मसमर्पण का कार्य पूरा हो जायगा ।

संयोग की बात है जब प्रधानमंत्री युद्ध विराम की घोषणा कर रही थीं, तब पाकिस्तानी राष्ट्रपति याहिया खाँ कह रहे थे—एक मोर्चे पर हारना कोई मानी नहीं रखता—पाकिस्तान लड़ाई जारी रखेगा ।

प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने ६-३० पर सायंकाल बंगला देश की मुक्ति और पाकिस्तानी सेनाओं के हथियार डालने की सूचना राष्ट्रसंघ के नाम प्रसारित किये गये एक सन्देश में दी । साथ ही भारत के विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह को जो उन दिनों न्यूयार्क में थे, राष्ट्रसंघ को सूचना देने का निर्देश दिया गया ।

प्रधानमंत्री ने आशा व्यक्त की कि बंगला देश के राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान शीघ्र ही अपना उचित स्थान ग्रहण सकेंगे ।

आत्मसमर्पण कैसे हुआ—नियाजी रो पड़ा

कल के जनरल मानिकशाह के अल्टीमेटम के उत्तर में जनरल श्री नियाजी ने ६ घंटे का समय सोच-विचार के लिये और मांगा था । पश्चात् बातचीत के लिये

श्री नियाजी से मिलने मेजर जनरल जेकब गये और उन्होंने आत्मसमर्पण के कागजात तैयार किये।

शाम को रेसकोर्स के उस ऐतहासिक मैदान में जहाँ गत मार्च में श्री मुजीबुर्रहमान ने बंगला देश की मुक्ति का आह्वान किया था पाकिस्तानी सेना ने हथियार डाल दिये और बंगला देश आजाद हो गया।

ले० जनरल नियाजी ने आत्मसमर्पण के कागजों पर हस्ताक्षर किये और भारतीय सेनापति श्री जगजीतसिंह अरोड़ा को दे दिये। श्री अरोड़ा ने अपने हस्ताक्षर कर सर हिलाकर स्वीकार करने का सन्देश दिया। नियाजी ने झुककर अपने कंधे से अपने ओहदे का बिल्ला उतार दिया। अपनी रिवाल्वर खाली करके गोलियाँ जनरल अरोड़ा को सौंप दीं। और अन्त में उन्होंने भारतीय जनरल के सामने अपना सर झुका दिया। यह इस बात का प्रतीक है कि मैं नम्रभाव ने आत्मसमर्पण कर रहा हूँ।

मैदान के चारों ओर लोग बंगला देश और भारत देश के झंडे लिये उमड़ते चले आ रहे थे—जय भारत, जय बंगला देश, जय श्रीमती गाँधी के नारे लग रहे थे। जनरल नियाजी के साथ ही मेजर जनरल फरमान अली भी खड़े थे और पीछे भारतीय तथा पाकिस्तानी सेनाएं आमने-सामने खड़ी थीं। अपने जनरल का समर्पण समाप्त होते ही पाक सेना ने जमीन पर हथियार रखे और दो कदम पीछे हट गयी। भारतीय सेना ने उसे अपने घेरे में ले लिया।

जनरल नियाजी को भीड़ ने घेरा। गालियाँ दीं। ढेले फेंकने शुरू किये और थूकना शुरू कर दिया। नियाजी की आँखों में आँसू छलछला रहे थे। चेहरा पीला पड़ा हुआ था। नियाजी को बैठाकर जनरल अरोड़ा अपनी कार में ले गये। तब तक कलकत्ता से भारतीय और विदेशी पत्रकारों, कैमरामैनों और फिल्मवालों के दल भी हैलीकोप्टरों से आ चुके थे। लेकिन जनता की इतनी भीड़ थी और इस तरह खुशियाँ मनाई जा रही थीं कि वहाँ तक उनको पहुँचाना बड़ा मुश्किल रहा।

आत्मसमर्पण की शर्तें

समर्पण की शर्तें निम्न प्रकार थीं—पाकिस्तान की पूर्वी कमान भारत तथा बंगला देश की संयुक्त कमान के कमांडर लेफ्टि० जनरल अरोड़ा के सामने आत्मसमर्पण करती है। इसमें तीनों प्रकार की सेनाओं, सशस्त्र पुलिस और अर्द्ध सैनिकों का समर्पण भी शामिल है।

समर्पण के मसौदे पर हस्ताक्षर के तत्काल बाद पाकिस्तान की पूर्वी कमान जनरल अरोड़ा के अधीन हो जायेगी।

पाकिस्तानी सेनाएं जहां हैं, वहां निकट की भारतीय सेनाओं के सामने आत्म-समर्पण कर देंगी।

इन आज्ञाओं के न मानने पर दण्ड दिया जा सकेगा। शर्तों पर कोई विवाद उठने पर जनरल अरोड़ा का निर्णय मान्य होगा।

पश्चिम में ४५ टैंक तोड़े

आज भारतीय सेना ने शकरगढ़ मोर्चे पर टैंकों को तोड़ने का फिर नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस मोर्चे के कमांडर जनरल श्री कैंडेथ थे। यहाँ भारतीय सेना ने आज ४५ टैंक तोड़े। पिछले दिन से यह टैंकयुद्ध शुरू हुआ था और बंगला देश में आज पाकिस्तानी सेनाओं के हथियार डालते समय तक भी चल रहा था।

अध्याय ११

१७ दिसंबर—याहिया को युद्ध-विराम स्वीकार

आज रात ८ बजे पश्चिम के सभी मोर्चों पर युद्ध विराम के साथ दो सप्ताह से शुरू हुआ भारत-पाकिस्तान युद्ध समाप्त हो गया । दूसरी ओर बंगला देश में पाकिस्तानी सैनिकों और रजाकारों को युद्ध बन्दी बनाने का कार्य भी पूरा हो गया।

आज तीसरे पहर साढ़े तीन बजे पाकिस्तानी राष्ट्रपति याहियाखां ने अमेरिका और स्विस दूतों की मार्फत युध्द विराम की स्वीकृति की सूचना भारत सरकार को भिजवा दी । भारतीय सेनाओं को आदेश दिया गया कि वे जहां जिस स्थान पर हैं वहीं रहें और बिना दुश्मन के हमला किये गोली न चलायें।

अपने भाषण में याहियाखां ने आज कहा—युद्ध से समस्याएँ हल नहीं होतीं। इसलिए मैंने सुरक्षा परिषद का प्रस्ताव स्वीकार किया था। अब भारत और पाक में बातचीत होनी चाहिये।

बंगला देश में कल से आज तक ३१ हजार पाकिस्तानी सैनिक हथियार डाल चुके थे । कहीं उन्होंने लड़ने की कोशिश नहीं की । ढाका में १ हजार सैनिक अफसरों के साथ २४ हजार सैनिकों ने, समादपुर में ७ टैंकों के साथ ५ हजार ने, बोगरा में ४३ अफसरों के साथ १५०० ने, रंगपुर में १५ अफसरों के साथ ५०० ने इसी प्रकार अन्य स्थानों पर पाक सेना ने हथियार डाले।

तत्कालीन स्थिति

तत्कालीन स्थिति के अनुसार लद्दाख तथा पंजाब के मैदानी इलाके से कश्मीर तक भारतीय संचार व्यवस्था पूर्णत: सुरक्षित थी। आज पश्चिमी कमान के सेनापति जनरल श्री कैंडेथ ने आत्मसमर्पण के समाचार पर दुख प्रकट करते हुए कहा कि—जब हमारे जवान पाकिस्तनी सेना की रीढ़ की हड्डी शकरगढ़ में तोड़ने जा रहे थे युध्द विराम गलत हुआ। हमने शकरगढ़ घेरा हुआ था । उन्होंने कहा—राजगढ़ पर हमारा कब्जा बहुत महत्वपूर्ण होता क्योंकि शत्रु यहां से हमारे संचार साधनों पर हमले किया करता था।

छम्ब क्षेत्र में २७०० वर्ग मीटर जमीन, फिरोजपुर क्षेत्र में हुसैनीवाला की कुछ जमीन। शत्रु को भारतीय भूमि पर कहीं पैर नहीं रखने दिया गया। पश्चिमी मोर्चे पर कुल मिलाकर ३५ चौकियों पर कब्जा हुआ। शिनागो नदी पर शत्रु के ७२० मीटर क्षेत्र पर अधिकार कर लिया गया।

ममदोत-जलालाबाद क्षेत्र में हमारी सेना ने शत्रु की तीन चौकियों पर कब्जा किया। शकरगढ़ में ४०० वर्ग मीटर भूमि पर भारतीय सेना का कब्जा था।

आज रात ८ बजे सभी मोर्चों पर युद्धविराम था। बंगला देश में पाकिस्तानी सैनिकों और रजाकारों को बन्दी बनाने का काम पूरा हो चुका था। और श्रीमती गांधी के एकतरफा युद्ध विराम के प्रस्ताव को आज तीसरे पहर पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल याहियाखां ने स्विस और अमेरिकी दूतावासों की मार्फत स्वीकार कर लिया था और पाकिस्तान में हलचल मच चुकी थी।

न्यूयार्क में आज उप-प्रधान मंत्री श्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा—पाकिस्तान ने यदि बंगला देश को मान्यता दे भी दी तब भी समस्याओं का हल नहीं होगा। उन्होंने आगे कहा—बंगला देश कोई नहीं है—पूर्व पाकिस्तान है और पूर्वी पाकिस्तान के नेताओं से बातचीत करने को हम तैयार हैं। एक भारतीय पत्रकार के एक प्रश्न के उत्तर में श्री भुट्टो बोले—आपने हम पर युद्ध थोपा है।

आज राष्ट्रपति याहियाखां संविधान के प्रस्ताव में जो महत्वपूर्ण संशोधन करने की घोषणा करने वाले थे वह घोषणा रद्द कर दी गयी और युद्ध विराम की घोषणा का जो वक्तव्य पाकिस्तान रेडियो से प्रसारित किया गया उसमें भी राष्ट्रपति याहियाखां का नाम नहीं जोड़ा गया। उनके नाम की बजाय राष्ट्रपति और मुख्य सैनिक प्रशासक का उल्लेख किया गया।

विजयी प्रधान मंत्री का भाषण

नयी कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने अपने भाषण में कहा—जहां तक हमारी सेनाओं का प्रश्न है, वह शांति रखेंगी। पाकिस्तान की बात वह जाने; लेकिन आने वाले दिन कितनी कठिनाइयों से भरे होंगे, उसके लिये देशवासियों को तैयार रहना चाहिये। उन्होंने कहा—हमारा ध्यान उन बच्चों की ओर है, जो अनाथ हुए हैं, उन महिलाओं की ओर है जो विधवाएं हुई हैं। अतः देशवासियों को इस विजय को अत्यन्त विनम्र भाव से ग्रहण करना चाहिये।

प्रतिरक्षा मंत्री का भाषण

प्रतिरक्षा मंत्री श्री जगजीवनराम, जिन्होंने बार-बार पाकिस्तान को और देश को यह बताया था कि यदि पाकिस्तान ने आक्रमण किया तो युद्ध पाकिस्तान की

जमीन पर ही होगा, आज फूलों से लदे हुए जनता से अपील की कि मेरे देशवासियों को जीत को शालीनता से स्वीकार करते हुए देश के अनिश्चित भविष्य का साहस और मुस्कान से स्वागत करने के लिये भी तैयार रहना चाहिये।

उन्होंने सेनाओं को धन्यवाद देते हुए कहा—हमारी सेनाओं ने अपने दिये वचनों को पूरी तरह निभाया है। प्रतिरक्षामंत्री ने प्रधानमंत्री को भी बधाई दी कि उनके सही नेतृत्व के बिना विजय कठिन थी। यदि पाकिस्तानी फौजों द्वारा आत्म-समर्पण करना विशेष उपलब्धि है तो प्रधानमंत्री द्वारा पश्चिम में युद्ध विराम करने की पेशकश उससे भी बड़ी बात है। हमारी सेनाओं की सफलता से विश्व में हमारे देश का गौरव बढ़ा है।

उन्होंने आगे कहा—संसार में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं कि किसी भी देश ने संसार के दूसरे देशवासियों को बिना किसी शर्त या लाभ अथवा लोभ के स्वतन्त्र कराया हो। पाकिस्तान से भी बड़ा बंगला देश, मुस्लिम देश बना है जो धार्मिक नहीं धर्मनिर्पेक्ष राज्य होगा।

श्री अरोड़ा की कांफ्रेन्स

पूर्वी कमान के सेनापति श्री जगजीतसिंह अरोड़ा ने अपनी कलकत्ता की प्रेस कांफ्रेंस में घोषणा की कि भारतीय सेनाओं की वापसी बंगला देश सरकार की आवश्यकताओं पर निर्भर है; क्योंकि इस नये देश के सामने आंतरिक सुरक्षा, संचार व्यवस्था, पुलों और सड़कों की मरम्मत तथा शरणार्थियों के पुनर्वास जैसी भीषण समस्याएं हैं। इन समस्याओं के लिये भारतीय सेना और भारत से आये असैनिक अधिकारी तथा इंजीनियर बंगला देश की सरकार को मदद देंगे।

भारतीय सेनापति जनरल मानिकशाह ने भी अरोड़ा को बंगला देश में की गयी सफल सैनिक कार्रवाई के लिये बधाई का सन्देश भेजा। साथ ही श्री शाह ने बहादुरी से लड़ाई लड़ने के लिये पाकिस्तानी सेना की भी प्रशंसा की और अपनी गगन तथा जल सेना के सेनापतियों को भी युद्ध में अपूर्व शौर्य अर्जित करने के लिये बधाई दी।

लोकसभा में जनसंघ दल के अध्यक्ष श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा—हमारा दल एकपक्षीय युद्ध विराम पसन्द नहीं करता। हम अल्पकालिक संधि नहीं चाहते, हम युद्ध का अन्त चाहते हैं; लेकिन श्री गोपालन और श्री इन्द्रजीत गुप्ता ने कहा—कल तो आप एकतरफा युद्ध विराम स्वीकार कर चुके हैं और प्रधानमंत्री के हर, प्रत्येक शब्द का समर्थन किया है, आज ऐसा क्यों? यह सुनकर अटल जी [illegible] गये।

प्रधानमंत्री का निक्सन को पत्र

आज प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन को निम्न पत्र लिखा—"भारत पाकिस्तान के साथ स्थायी शांति चाहता है; लेकिन क्या २४ वर्ष से निरन्तर चलाये जा रहे, कश्मीर विषयक आन्दोलन को पाकिस्तान समाप्त कर देगा और भारत के विरुद्ध घृणा तथा आक्रामक रवैये को छोड़ देगा। भारत ने विगत २४ वर्षों के दौरान पाकिस्तान के सामने अनाक्रमण संधि के कई प्रस्ताव रखे, लेकिन पाकिस्तान उन्हें ठुकराता रहा। मैंने अपनी हाल की ६ देशों की यात्रा के दौरान, हर देश में इस बात पर बल दिया कि बंगला देश की समस्या का राजनैतिक हल आवश्यक है। भारत ने ९ महीने तक प्रतीक्षा की है। हमारे प्रति अमेरिकी रवैये की कठोरता से पूर्व यह तो बताया जाना चाहिये था कि हम गलती क्या कर रहे हैं। यदि पाकिस्तान ३ दिसम्बर को आक्रमण न करता और अमेरिका श्री मुजीब को अपने प्रभाव से रिहा करा देता, तब युद्ध की नौबत ही न आती।

सुरक्षा परिषद द्वारा स्वागत

भारत द्वारा युद्ध विराम की घोषणा और ढाका में पाकिस्तानी सेनाओं के आत्मसमर्पण के समाचार को सुनकर राष्ट्रसंघीय सुरक्षा परिषद के सदस्य चकित रह गये और काफी समय तक बैठक ठंडी पड़ गयी।

बंगला देश में पाकिस्तानी सेना के हथियार डालने और प्रधानमंत्री द्वारा एकतरफा युद्ध विराम की घोषणा की सूचना सुरक्षा परिषद में भारत के विदेश मंत्री श्री स्वर्णसिंह ने जब दी, तब सोवियत प्रतिनिधि श्री जैकब मलिक ने खड़े होकर घोषणा कि की अब सुरक्षा परिषद में युद्ध विराम सम्बन्धी रखे गये सभी प्रस्ताव निरर्थक हो गये हैं। उस समय सोवियत संघ, जापान, अमेरिका तथा ब्रिटेन—फ्रांस आदि के ६ प्रस्ताव विचारार्थ थे। सोवियत प्रस्ताव में युद्ध बन्द होने का स्वागत किया गया और पाकिस्तान से कहा गया कि वह भारत का अनुकरण करे और १९७० के निर्वाचित प्रतिनिधियों को सत्ता सौंप दे।

पाकिस्तानी प्रतिनिधि ने सुरक्षा परिषद की सवेरे की बैठक का बहिष्कार किया था; लेकिन शाम की बैठक में अपनी सीट पर आकर बैठ गया। तभी श्री स्वर्णसिंह ने एकतरफा युद्ध विराम की प्रधानमंत्री की घोषणा पढ़कर सुनायी।

अमरीकी पनडुब्बी का आगमन

आज जापान से समाचार मिला कि ३५०० टन की "स्कैम्प" नामक अमेरीकी आणविक पनडुब्बी, तोकियो के निकट चोकीसुका नौसैनिक अमरीकी अड्डे से रवाना हो गयी। यह पनडुब्बी ७वें अमेरिकी बेड़े में शामिल होने के लिये जा रही है। साथ

ही अमेरिकी विदेश विभाग के एक प्रवक्ता ने बताया कि अमरिकी ७वां बेड़ा उस समय तक हिन्दमहासागर में रहेगा, जब तक भारत-पाक युद्ध समाप्त नहीं हो जाता और पाकिस्तान में रह रहे अमेरिकी नागरिकों के लिये खतरा कम नहीं हो जाता। पेंटागन के प्रवक्ता श्री जैरो ने कहा—अमेरिकी युद्ध पोत 'एण्टर प्राइज' और हैलीकोप्टर वाहक त्रिपोली इस समय बंगाल की खाड़ी में हैं। इनके अतिरिक्त अमेरिकी अधिकारियों ने कहा—सातवां बेड़ा भारत और रूस के लिये शक्ति प्रदर्शन है और बंगाल की खाड़ी में इसका प्रवेश राजनैतिक और मानवीय है।

व्हाइट हाउस के प्रवक्ता ने युद्ध विराम के प्रस्ताव को उत्साहवर्द्धक मोड़ बताया और पूर्वी जर्मनी ने भारतीय शांति प्रस्ताव की प्रशंसा की। अमेरिकी स्नातक संघ ने निक्सन की भारत विरोधी नीति की निन्दा की।

बंगला देश सरकार की घोषणा

आज बंगला देश सरकार ने जनता को यह आश्वासन दिया कि पाकिस्तानी सैनिक अफसरों को मदद देने वाले लोगों पर मुकदमा चलाया जायेगा। गृहमंत्री श्री कमरूज्जमां ने बताया—सरकारी अधिकारी तथा कर्मचारी जो बंगला देश में काम करते रहे हैं, अब पुनः अपने काम पर लौट रहे हैं और सरकार ने देश को भुखमरी से बचाने के लिये १॥ लाख टन चावल अपने मित्र देशों से मांगा है।

बंगला देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री ताजुद्दीन अहमद ने घोषणा की कि मेरी सरकार का कार्यालय शीघ्र ही मुजीबनगर से ढाका में स्थानांतरित हो जायेगा।

◆ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री एडवर्ड हीथ ने आज मत व्यक्त किया कि अब संयुक्त पाकिस्तान का अस्तित्व समाप्त हो गया।

◆अमेरिकी विदेश विभाग ने घोषणा की कि अमेरिका 'पूर्वी पाकिस्तान' को सहायता देने के लिये तैयार है; लेकिन इसका यह अर्थ न लगाया जाय कि हम पाकिस्तान के इस पूर्वी हिस्से के बारेमें कोई राजनैतिक निर्णय कर रहे हैं।

◆चीन ने आज धमकी दी कि भारतीय सैनिक सिक्कम की ओर से टोह लेने के लिये हमारे क्षेत्र में घुसे हैं। चीन ने आज पाकिस्तान को हथियारों की मदद देने की भी घोषणा की और सोवियत रूस पर आरोप लगाया कि वह भारत को 'उपमहान शक्ति' बनाने में सहयोग दे रहा है।

अध्याय १२

१८ दिसंबर—श्रीमती गाँधी के जीवन का सुनहरा दिन और याहिया का इस्तीफा

१८ दिसम्बर का दिन प्रधानमंत्री के जीवन का सबसे सुनहरा दिन था जबकि दिल्ली की ५० लाख जनता ने उनका विभिन्न ढगों से अभिनन्दन किया और पाकिस्तान के राष्ट्रपति याहिया खां के जीवन का यह सबसे काला दिन था । उन्होंने राष्ट्रपति पद से अपना इस्तीफा दे दिया ।

सैंट्रल हाल में संसद सदस्यों ने उनका स्वागत जिस ढंग से किया वह देश के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा । प्रधामंत्री को फूलों से दोनों सदनों के सदस्य लाद रहे थे। १४ दिन के भारत पाक युद्ध और बंगला देश को दमन चक्र से मुक्त कराने पर राजधानी का बच्चा-बच्चा उनका अभिनन्दन करना चाहता था। और उस उत्साह भरे वातावरण में कैमरामैन तथा टेलीविजन और फिल्मों वाले झपट्टे मार रहे थे। लोकसभा के सदस्य श्री समरगुह ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का एक चित्र और बंगला देश का ध्वज प्रधानमंत्री को भेंट किया तथा रक्षामन्त्री श्री जगजीवन राम को फूलों से लादकर मखमली म्यान में लिपटी एक कटार तथा बंगला देश के प्रतिनिधि श्री एच० आर० चौधरी को गुलदस्ते भेंट किये। उपहारों में सबसे आकर्षक गुलाब के फूलों का हार द्रमुक नेता श्री मनोहरन का था ।

वक्ताओं ने अपने भाषण में कहा—प्रधानमंत्री न केवल अपने दल की नेता हैं अपितु उन्होंने अपने महान् कार्यों से राष्ट्र और मानवता के महान् नेतृत्व का प्रमाण दिया है। समारोह की अध्यक्षता श्री जी० एस० पाठक ने की और लोकसभा के अध्यक्ष श्री जी० एस० ढिल्लों से दोनों सदनों की ओर से मानपत्र पढ़ने के लिये कहा ।

मानपत्र में कहा—"प्रधानमन्त्री महोदया, आपका बुद्धिमत्तापूर्ण तथा उत्साहवर्द्धक नेतृत्व और बंगला देश की ७॥ करोड़ जनता को मुक्त कराने में आपने जो महत्वपूर्ण पार्ट अदा किया है, वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। विजय की इस

महान् घड़ी में हम संसद सदस्य आपका स्वागत करके फूले नहीं समा रहे। हम आपको अपने पूर्ण समर्थन का आश्वासन देते हैं।" बंगला देश के प्रतिनिधि ने प्रधान मंत्री को भारत की ही नहीं, बंगला देश की भी नेता बताया।

प्रधानमन्त्री ने अपने उत्तर में कहा—वास्तव में बधाई भारतीय सेना और मुक्तिवाहिनी को मिलनी चाहिये जिसने बलिदानों के बल पर बंगला देश को मुक्त कराया। उन्होंने आगे कहा—युद्ध-विराम हमने किसी के परामर्श से नहीं किया। हमने सीमित उद्देश्य के लिये युद्ध का वरण स्वीकार किया था, बंगला देश की स्वतंत्रता के पश्चात् वह उद्देश्य पूरा हो गया।

प्रधानमंत्री को भारत-रत्न की उपाधि

राष्ट्रपति श्री वी०वी० गिरी ने १४ दिन के भारत पाक संघर्ष में राष्ट्र के सर पर विजय का सेहरा बांधने वाली प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भारत के सर्वोच्च अलंकरण—'भारत रत्न से विभूषित किया।

रक्षामंत्री का भाषण

भारत के रक्षामंत्री श्री जगजीवनराम ने लोकसभा में कहा—भारत के विरुद्ध पाकिस्तान को अपने दुस्साहसपूर्ण आक्रमण का अच्छा सबक मिल गया है। इस जन और सैनिक क्षति को देखकर पाकिस्तानी जनता समझ जायेगी कि युद्ध का क्या परिणाम होता है। हम किसी की भूमि नहीं छीनना चाहते; लेकिन हमें अपने जवानों को यह आश्वासन देना होगा कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया। हमारा प्रयत्न पाकिस्तान के साथ नये सम्बन्ध स्थापित करने का होगा। आपने कहा—कल जिस समय यद्ध-विराम हुआ था, उस समय कारगिल और उड़ी क्षेत्र में अनेक पाकिस्तानी चौकियों पर भारतीय सेनाएं बैठी थीं। भारतीय सेनाओं ने जिस वीरता से हर मोर्चे पर दुश्मन का मुकाबला किया, उस पर देश को गर्व है।

पाकिस्तान में

पाकिस्तानी प्रवक्ता ने आज घोषणा की—"श्री मुजीबुर्रहमान लायलपुर जेल में हैं। उन पर मुकद्दमे की सुनवाई पूरी हो चुकी है। गवाहों के बयान लिये जा चुके हैं; लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि निर्णय कब किया जायेगा ?

याहिया का इस्तीफा

पाक राष्ट्रपति याहिया खाँ ने युद्ध-विराम स्वीकार करने के बाद तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्षों के सामने अपना इस्तीफा रख दिया। दूसरा समाचार यह

मिला कि याहिया खाँ पाकिस्तान की हार से जनता में उत्तेजना देखकर श्री भुट्टो को जल्दी लौट आने की आज्ञा दे चुके हैं । अभी तक पाक रेडियो पाकिस्तानी सेना की जीत और भारतीय सेना की हार के समाचार जनता को सुनाया करता था ।

रेडियो पाकिस्तान ने बताया कि श्री भुट्टो के आने के बाद नये संविधान के अन्तर्गत प्रतिनिधि सरकार का गठन किया जायेगा । पंजाब पीपुल्स पार्टी के महा-सचिव श्री गुलाम मुस्तफा ने आज रावलपिंडी में श्री याहिया से भेंट की क्योंकि सारा पाकिस्तान याहिया के इस्तीफे की मांग कर रहा था । जलूस निकलने शुरू हो गये थे और विरोधी जलसे जगह-जगह होने लगे थे ।

अमेरिका को उत्तर

भारतीय विदेश मंत्रालय ने अमरीकी आरोप का खंडन किया कि भारतीय सेना पाकिस्तान को समाप्त करना चाहती है । प्रवक्ता ने अमेरिका के इस दावे को गलत बताया कि यद्ध-विराम का श्रेय भी अमेरिका को ही है । प्रवक्ता ने कहा—अमेरिका का यह कहना बिल्कुल गलत है कि अमेरिका ने रूस पर दबाव डलवा कर युद्ध विराम कराया है । वास्तव में श्री किसिंगर चुपचाप ऐसे समाचार अखबारों, रेडियो और टेलीविजनों पर भिजवाया करते थे कि अमेरिका ने इस प्रकार युद्ध-विराम कराया ।

युद्ध-विराम की नयी रेखा

भारतीय प्रवक्ता ने आज स्पष्ट किया कि कश्मीर में ताशकन्द समझौते वाली रेखा समाप्त हो चुकी है । अब युद्ध-विराम रेखा वह है जो इस युद्ध में अब बनी है ।

बंगला देश में

बंगला देश में जब भारतीय सेना पाकिस्तानी सेना का आत्मसमर्पण स्वीकार करके उनके बंकरों की तलाशी ले रही थी, तब अधिकांश पाकिस्तानी सैनिकों के बंकरों से स्त्रियां और लड़कियां बेबस दशा में मिली थीं जिन्हें अय्याशी के लिए वे अपने साथ बंकर में रखते थे, और जनरल नियाजी के कैम्प से २५० जवान लड़कियों को मुक्त किया गया था । मनादी कराकर लूट का माल पहचान बताकर उसके मालिकों को सौंपा जा रहा था ।

इसके बाद वहां सामूहिक वधस्थलों का पता चला । ढाका से बाहर मुहम्मदपुर में एक उथले तालाब से ढाका के ३१ बुद्धिजीवियों के शव बुरी दश आज मिले । इसके बाद २५० शव दूसरे दिन मिले । जब भारतीय ६ दिसम्बर

को ब्राह्मण बेरिया की तरफ बढ़ रही थी तब पाकिस्तानी सेनाओं ने १०४ बुद्धि-जीवियों, प्रोफेसरों, डाक्टरों को जेल से निकालकर हाथ बाँधकर एक लाईन में खड़ा करके गोली मारी और बाद में किरचों से उनके सीने और पेट फोड़े थे। मारने से पहले एक पाक सैनिक अफसर ने उनसे कहा था—"भारत से तुम्हारे दोस्त आ रहे हैं। वह तुम्हें बंगला देश दिलायेंगे।" यह कार्यवाही आधी रात के बाद की गई थी। परिवार वालों ने जिन्हें पहचाना उनमें ढाका मेडिकल कालेज के हृदय रोग के विशेषज्ञ डा० एफ० रब्बी तथा दूसरे एक बंगाली भाषा विभाग के अध्यक्ष डा० मुनीर चौधरी का शव भी था।

१९ दिसम्बर का दिन

आज भुट्टो रावलपिंडी लौट आये और कल याहिया खाँ के इस्तीफा देने का निश्चय हो गया। पाक के भू० पू० एयर मार्शल असगर खां ने याहिया पर मुकदमा चलाने की माँग की और वायु सेनापति से कहा—याहिया को भागने के लिये वायु-यान मत देना।

◆पाकिस्तान के मनोनीत प्रधानमंत्री श्री नुरूल अमीन ने शेख मुजीब की शीघ्र रिहाई की घोषणा की।

◆कानपुर में वित्तमन्त्री श्री चव्हाण ने बंगला देश के पुनर्निर्माण में भरपूर सहायता की घोषणा की।

◆जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने बिना कश्मीर वापस लिये सेना का लौटना खतरनाक बताया।

◆राजधानी में आज विजय दिवस मनाया गया।

◆९३ हजार पाकिस्तानी बन्दियों के हथियार लेकर उनके भारत भेजने का काम प्रारम्भ हो गया।

◆बंगला देश के प्रधानमंत्री श्री ताजुद्दीन अहमद ने शरणार्थियों के पुनर्वास के लिये करोड़ों रुपये की आवश्यकता बतायी और अमेरिका से मदद लेने से इन्कार किया तथा बताया कि सीमा के पास रह रहे शरणार्थी लौटने शुरू हो गये हैं और श्री मुजीब भी जल्दी आ जायेंगे।

भुट्टो का भाषण

पाकिस्तान लौटने से पहले श्री भुट्टो ने वाशिंगटन में एक जहरीला भाषण दिया। इससे पहले वे श्री निक्सन और श्री रोजर्स से मिले। चीन और अमरीका की तारीफ की और बाद में पत्रकारों से कहा—भारत की जीत नहीं, सोवियत रूस की

जीत है; क्योंकि यह उसी के हथियारों से हुई है। हमसे भारत नाक नहीं रगड़वा सकता। यदि ऐसा वह सोचता है तब उस महाद्वीप में खून की नदियां बह जायेंगी। विवादों के हल के लिये जो भी बातचीत सही हो सकती है वह संयुक्त पाकिस्तान के लिये ही होगी। पाकिस्तान का जो भी विधान बनेगा उसमें पूर्वी बंगाल भी शामिल होगा।

भारत पाकिस्तान युद्ध के समय चीन के रुख की आज सोवियत पत्र 'प्रावदा' ने कड़ी आलोचना की और चीन की जनता को आजादी का गला घोटने वालों का साथी बताते हुये लिखा कि उसने गरीबों की मसीहाई का अपना नकाब उतार दिया और बंगला देश में और कत्लेआम कराने के लिये पाकिस्तान को हथियार दिये।

अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन का पत्र श्रीमती गाँधी को आज मिला और सोवियत रूस तथा भारत ने संयुक्त रूप से मुजीब को रिहा कराने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया।

२० दिसंबर—याहिया विदा : जुल्फिकार अली भुट्टो राष्ट्रपति बने

आज २० दिसम्बर को याहिया खां राष्ट्रपति पद का कार्यभार श्री भुट्टो को सौंपकर गायब हो गए। भुट्टो आज ही न्यूयार्क से रावलपिंडी लौटे थे। राष्ट्रपति बनते ही बन्द कमरे में भुट्टो ने सैनिक और असैनिक अधिकारियों से बातचीत की। राष्ट्रपति पद की शपथ याहिया खाँ ने दिलायी। बाद में वे पंजाब हाउस गये और पाकिस्तानी वायु सेनाध्यक्ष एअर मार्शल रहीमखाँ तथा स्थल सेनाध्यक्ष से बातचीत की। इसके बाद अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन तथा फ्रांस के राजदूतों को मिलने के लिये बुलाया। आज सारे पाकिस्तान में याहिया विरोधी प्रदर्शन हो रहे थे।

श्री भुट्टो का पहला भाषण

आज राष्ट्रपति के रूप में श्री भुट्टो का पहला भाषण था। भाषण में उन्होंने कहा, मेरा देश भारत से अपने अपमान का बदला लेगा। आपने बंगालियों से कहा पाकिस्तानी सैनिकों की गलतियाँ जनता भूल जायें और उन्हें क्षमा कर दें; क्योंकि पूर्वी पाकिस्तान, पाकिस्तान का अविभाज्य अंग है। अपने एक घण्टे के भाषण में भुट्टो ने लेफ्टिनेन्ट जनरल गुलहसन को प्रधान सेनापति और ६ पाकिस्तानी जनरलों को बर्खास्त करने की घोषणा की।

श्री भुट्टो ने पाकिस्तान की पराजय स्वीकार की और भारत के प्रतिरक्षा मंत्री श्री जगजीवनराम को सम्बोधित करते हुये कहा कि उन्हें अस्थायी विजय पर प्रसन्न नहीं होना चाहिये। श्री भुट्टो ने वंगलादेश को वार-वार मुस्लिम वंगाल कहते हुए उसे अपना अंग वताया और अपने अन्तर्गत रखकर ही नया संविधान वनाने की घोषणा की।

◆याहिया खाँ के लापता होने का शोर संसार में मचा और स्विस सरकार के प्रयत्न से भारत और पाक के राजनयिकों की अदला-वदली हुई। कई सौ पाकिस्तानी दूतावासों के कर्मचारी रावलपिंडी भेजे गये और भारतीय दूतावास के नई दिल्ली आये।

◆आज वंगला देश में मुक्तिवाहिनी के श्री अब्दुल कादर सिद्दीकी ने घोषणा की कि जव तक वंगवंधु वापस नहीं आ जाते, हम हथियार नहीं सौंपेंगे।

◆कई सामूहिक वध-स्थलों का भी ढाका के आस-पास पता चला। श्री स्टोन हाउस ने इन वध-स्थलों के लिये पाकिस्तान के वरिष्ठ सैनिक अधिकारियों को दोषी बताया।

◆ढाका में वंगला देश सरकार के महासचिव श्री कुद्दूस ने घोषणा की कि युद्ध अपराधियों पर मुकदमा चलाया जायेगा।

◆अमेरिका का सातवाँ वेड़ा आज वंगाल की खाड़ी छोड़कर हिन्द महासागर में चला गया।

२१ दिसम्बर

पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने वताया कि श्री मुजीव को जेल से रिहा करके एक मकान में वन्द रखा जायेगा। श्री भुट्टो ने देश से वेतन न लेने की घोषणा की और देश को समाजवादी वनाने की घोषणा की।

◆वंगला देश में भारतीय सेना 'मित्रवाहिनी' के नाम से विख्यात हुई। ढाका में जन जीवन सामान्य हो गया।

◆योजना आयोग की वैठक में भाषण करते हुए प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने वंगला देश को आर्थिक सहायता का आश्वासन दिया और अपनी सरकार से विदेशी सहायता पर निर्भरता कम करने की अपील की।

२२ दिसम्बर

आज मुजीवनगर से वंगला सरकार ढाका पहुँच गयी। जनता ने 'जय इंदिरा' और 'जय मुजीव' के नारों से मंत्रियों का स्वागत किया। उस समय एक लाख से भी अधिक व्यक्ति उनके स्वागत के लिए इकट्ठे थे। वँगला देश के कार्यवाहक राष्ट्रपति श्री नजरुल इस्लाम ने भुट्टो को चेतावनी दी कि वह पूर्वी पाकिस्तान की रटंत भूल

जाये और श्री मुजीब को रिहा कर दे। अन्त में सभी नेताओं ने प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी, भारतीय सेना और जनता के प्रति बार-बार कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा— "हम इस उपकार को कभी भी नहीं भूल सकते। बंगला देश सदा भारत के साथ रहेगा।"

◆पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री भुट्टो के मास्को और पेकिंग जाने की घोषणा हुई और पाकिस्तान के २२ धनी परिवारों के पारपत्र श्री भुट्टो ने जब्त करा ही लिये।

◆सुरक्षा परिषद में श्री स्वर्णसिंह ने घोषणा की कि मेरा देश शेख मुजीब की रिहाई के लिये हर प्रयत्न करेगा। आपने आशा व्यक्त की कि पाकिस्तानी अधिकारी शीघ्र ही शेख को मुक्त कर देंगे। आज सुरक्षा परिषद में बंगला देश को भी एक पक्ष माना गया और अन्त में भारतीय उप महाद्वीप में स्थायी युद्ध-विराम का प्रस्ताव पास हो गया। रूस और पोलैंड तटस्थ रहे।

◆आज पाकिस्तानी राष्ट्रपति श्री भुट्टो नें पंजाब, सिन्ध और सीमा प्रान्त के सैनिक गवर्नरों को बर्खास्त करके उनके स्थान पर नये गवर्नर नियुक्त किये।

२३ दिसम्बर

लन्दन में श्री स्वर्णसिंह ने घोषणा की कि बंगला देश को मानने पर ही पाकिस्तान से समझौता होगा।

◆श्री मुजीब की पत्नी को आज प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी का पत्र मिला और श्री मुजीब को जेल से निकाल कर रावलपिंडी लाने का समाचार मिला।

◆◆श्री जगजीवनराम ने घोषणा की कि युद्ध अपराधियों की अदला-बदली पर बंगला देश की राय ली जायेगी।

२४ दिसम्बर—तेज राजनैतिक गतिविधि

आज का दिन फिर विशेष था। अमृतसर में प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी ने देश को मुसीबतों का सामना करने के लिये तैयार रहने को कहा और बड़ी शक्तियों को लताड़ा।

आपने कहा—वह दिन लद गये जब भारत के मामलों में विदेशी शक्तियाँ हस्तक्षेप किया करती थी। हमें दबाव या धमकियों से कोई नहीं दबा सकता। आपने कहा—भारत की विजय उसके सिद्धान्तों की जीत है, स्वतन्त्रता-प्रियता की जीत है और जनता तथा सेना की जीत है।

◆पाकिस्तान से पता चला कि श्री भुट्टो और श्री मुजीब की वार्ता शुरू हो गयी और पाकिस्तान और पाकिस्तानी पराजय की जांच का आदेश भुट्टो ने देने की घोषणा की। साथ ही श्री भुट्टो ने नया मंत्रिमण्डल भी आज बनाया।

◆संसद सदस्यों ने आज चीन को फटकारा। रोहतक में श्री मानिकशाह ने सेना से सजग रहने की अपील की और हरियाणा के वहादुरों की प्रशंसा की।

◆श्री भुट्टो ने घोषणा की कि यदि ब्रिटेन ने वंगला देश को मान्यता दी तो वह राष्ट्रमंडल से अलग हो जायेगा। अमेरिकी विदेश मंत्री श्री रोजर्स से पाकिस्तान को हर कीमत पर संयुक्त वनाये रखने की घोषणा की। और नयी दिल्ली में श्री जगजीवनराम ने वर्तमान विजय को सेना के इतिहास में एक अद्वितीय घटना बताया।

जव श्री भुट्टो से एक अमेरिकी संवाददाता ने पूछा—'क्या शेख मुजीव आप से वात करेंगे ?' तब भुट्टो वोले—'यह भी कह सकते हैं तुम जहन्नुम में जाओ।'

२५ दिसम्बर

वंगला देश के गृहमन्त्री श्री कमरुज्जमाँ ने घोषणा की कि वंगला देश के भू० पू० गवर्नर श्री मलिक, जिन्हें कल गिरफ्तार किया गया था, उनके मंत्रियों सहित उन पर मुकदमा चलाया जायेगा।

◆सोवियत सरकार ने उचित समय पर वंगला देश को मान्यता की घोषणा की। चीनी और अमेरिकी दूतावासों के सामने नयी दिल्ली में प्रदर्शन हुए और वंगला देश में कावस वाजार की नदी में सोनेके सिक्कों के वोरे मिले जो वैंकों से पाकिस्तानी सैनिक लुटकर लाये थे।

२६ दिसम्बर

भारत के विदेश मंत्रालय की नीति-नियोजन समिति के अध्यक्ष श्री धर और जनरल श्री मानिकशाह आज ढाका गये। दोनों का शानदार स्वागत जनता ने किया। श्री धर ने घोषणा की कि नर-संहार के लिये जिम्मेदार सभी लोगों पर मुकदमा चलाया जायेगा।

◆चटगाँव जिले में १ लाख व्यक्तियों के कत्ल होने की पुष्टि हुई और पाक राष्ट्रपति भुट्टो ने ऐलान किया कि भारत पाकिस्तान को नष्ट करना चाहता है।

२७ दिसम्बर

ढाका में जनरल मानिकशाह ने कहा—२५ हजार सैनिक अपने घरों को भेजे जा रहे हैं और १ करोड़ पाकिस्तानी कैदियों को हम १५ जनवरी तक भारत ले जायेंगे। वाद में सेनाध्यक्ष श्री नजरुल इस्लाम से मिले।

◆भुट्टो ने श्री मुजीब से आज फिर वातचीत की। वास्तव में अपने मकान के पिछवाड़े ही मुजीव को रखा गया था। श्री भुट्टो ने आज कहा—श्री मुजीव से वातचीत से मैं अप्रसन्न नहीं हूँ।

◆अमेरिकी विदेश मन्त्री ने कहा—अगर हम पाकिस्तान को हथियार न देते तो भारत उसे निगल जाता। लेकिन 'प्रावदा' ने लिखा—पाकिस्तान को आक्रमण के लिये अमेरिका और चीन ने उकसाया था।

२८ दिसम्बर

आज श्री भुट्टो ने कहा—मेरी सरकार श्री मुजीब की रिहाई के बारे में विचार कर रही है।

◆◆गंगानगर क्षेत्र में भारतीय सेनाओं को आज पाकिस्तानी सेना का मुंह फिर तोड़ना पड़ा। युद्ध-विराम का उल्लंघन कर पाकिस्तानी अपनी कुछ चौकियां वापस लेना चाहते थे।

२९ दिसम्बर

श्रीनगर में प्रधान मंत्री ने फिर यह घोषणा की कि भारत किसी की धमकी के आगे नहीं झुकेगा। साथ ही पाकिस्तान को सलाह दी कि उसकी भलाई भारत से मित्रता में ही है।

३० दिसम्बर

आणविक शक्ति आयोग के अध्यक्ष श्री विक्रम साराभाई का त्रिवेन्द्रम के पास आज निधन हो गया।

◆श्री भुट्टो ने श्री मुजीब के सामने बंगला देश को अधिक स्वायत्तता और वे चाहें तो पाकिस्तान का राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री तक बनने का प्रस्ताव रखा।

◆आज बंगला देश में बोगरा के सामूहिक वध-स्थल और विशाल शवागार का भी पता चला।

◆नयी दिल्ली में जनरल मानिकशाह से जब पूछा गया कि यदि याहिया की जगह आप होते तो क्या करते? तब उन्होंने कहा—'अपने को गोली मार लेता।'

◆बंगला देश के गृह और पुनर्वास मंत्री श्री कमरुज्जमाँ ने शरणार्थियों से बंगला देश लौटने की अपील की।

विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह ने आज राष्ट्रसंघ के विशेष प्रतिनिधि से शेख मुजीबुर्रहमान की रिहाई के लिये काम करने का अनुरोध किया।

भारत सरकार के सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि भारत सीमा सुरक्षा दल के वे दस्ते जो अपनी सेना की मदद के लिये बंगला देश में लड़ रहे थे, कल तक वापस बुला लिये जायेंगे।

'पाकिस्तान टाइम्स' ने आज लिखा कि पाक राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने शेख

मुजीवुर्रहमान के सामने स्वायत्तता की शर्त इस शर्त के साथ रखी है कि पाकिस्तान के अन्दर रह कर वे स्वशासन ले सकते हैं।

बांगला देश में आज तीन और वध-स्थल पाये गये। इनमें एक बोगरा शहर का था, जहां ३ हजार निर्दोष व्यक्तियों को पाकिस्तानी सैनिकों ने कत्ल किया। दूसरा खुलना का था, यहां ५० हजार व्यक्तियों की हत्या की गयी और नर-कंकालों का एक ढेर गोरापाड़ा में मिला। बोगरा के एक चाय वेचने वाले ने बताया कि उसकी पत्नी और पुत्री से स्वयं उसकी आँखों के सामने पाकिस्तानी सैनिकों ने बलात्कार किया।

३१ दिसम्बर

बंगला देश के वर्तमान राष्ट्रपति श्री अबूसईद चौधरी ने लन्दन में बताया कि अमेरिका के बुद्धि-जीवी वंगला देश के स्वातंत्र्य संग्राम के समर्थक हैं। श्री चौधरी राष्ट्रसंघ में गये वंगला देश प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व करने गये थे।

वंगला देश के तत्कालीन गृह तथा पुनर्वास मंत्री श्री कमरुज्जमां ने कहा—"जो व्यक्ति देश के विरुद्ध षड्यंत्र करेगा उसे छोड़ा नहीं जायेगा।"

कराची के 'डान' अखबार ने वंगबंधु की रिहाई की मांग करते हुए लिखा—अब कोई कुछ भी कहे, स्थिति में परिवर्तन होने वाला नहीं है। अतः शेख की रिहाई में विलम्ब नहीं होना चाहिए।

श्रीमती गाँधी का सहयोग के लिये हाथ

नयी दिल्ली के प्रेस सम्मेलन में श्रीमती गाँधी ने आज घोषणा की कि कश्मीर में नयी युद्ध विराम रेखा पुनः स्थापित की जानी चाहिये और भारत तथा पाकिस्तान को अपने मतभेद स्वयं हल करने चाहिएँ। मध्यस्थता के लिये तीसरे देश की जरूरत नहीं है। उन्होंने यह भी कहा—हमारे देश पर पाकिस्तान ने हमला किया था। अतः हमें युद्ध की क्षतिपूर्ति मांगने का हक भी हासिल है। इस सम्मेलन में प्रधानमन्त्री ने युद्धकाल में पाकिस्तान का खुल कर साथ देने के लिये अमरीका की भी निन्दा की।

ढाका में आज वंगला देश के तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अब्दुल समद आजाद से राष्ट्रसंघ के प्रतिनिधि विन्स पियरे गुई सियार्दी ने ९० मिनिट तक शेख मुजीव की रिहाई और वंगला देश के नागरिकों तथा पाकिस्तान में रहे वंगाली नागरिकों के बारे में बातचीत की।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने व्यवहार में वंगला देश को उस समय मान्यता दे दी जब उसने संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिनिधि श्री विन्स पियरे गुई सियार्दी ने वंगला देश मिशन से ढाका जाने के लिए अपने तथा अपने दल के सदस्यों के लिए वीसा मांगा।

शरणार्थियों की वापसी

नयी दिल्ली में आज प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने घोषणा की कि एक या दो मास में ही बंगला देश आये शरणार्थी वापस भेज दिये जायेंगे।

बंगला देश सरकार ने आज एक आयोग गठित करने का निर्णय किया जो बंगला देश में पाकिस्तानी सेनाओं द्वारा किये गये नर-संहार, उसकी प्रकृति तथा सीमा की जांच करेगा और पाकिस्तानियों द्वारा की गयी तोड़फोड़ तथा बुद्धिजीवियों के कत्ल के बारे में गवाहियाँ भी एकत्र करेगा।

राष्ट्रपति ने आज संविधान के २६ वें संशोधन विधेयक को स्वीकृति दे दी। विधेयक, जो अब अधिनियम बन चुका है, भू०पू० राजाओं के प्रिवी पर्स समाप्त करता है।

१ जनवरी १९७२—राष्ट्रपति का भाषण

भारत के राष्ट्रपति श्री वी०वी० गिरि ने पाकिस्तान को आज अपने भाषण में सुझाव दिया कि वह भारत से घृणा और द्वेष को बन्द करे। राष्ट्रपति ने साथ ही देश के श्रमिकों से तीन वर्ष तक हड़ताल न करने और मालिकों से तीन वर्ष तक तालाबन्दी न करने की अपील की। राष्ट्रपति मैसूर वाणिज्य मंडल में भाषण कर रहे थे।

अमेरिकी मिशन के प्रधान श्री स्पाक ने आज स्वयं ही ढाका में बंगला देश के तत्कालीन विदेश मन्त्री श्री समद से मुलाकात की और आधा घंटा तक बातचीत की। इस मुलाकात को महत्वपूर्ण इसलिये माना गया कि बंगला देश के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री ताजुद्दीन ने यह घोषणा की थी कि बंगला देश सरकार अमेरिका से सहायता लेने से इन्कार कर सकती है।

भारत को जूट और जूट का माल भेजने पर लगी पाबन्दी को आज बंगला देश सरकार ने समाप्त कर दिया।

आज बंगला देश के दो हजार विस्थापितों लेकर विशेष रेल गाड़ियाँ चौबीस परगना जिले के नौगांव से जैसोर को रवाना हुयीं। यह लोग जैसोर खुलना, दौलतपुर, बारीसाल और बेसरहाट के थे। आज तक २५ हजार शरणार्थी अपने घरों को लौट चुके थे।

लौटने वालों को १५-१५ दिन का राशन भी भारत सरकार ने दिया।

२ जनवरी

कराची में शेख की रिहाई के बारे में आज एक पाकिस्तानी उच्चस्तरीय सम्मेलन में विचार हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता पाक राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने

की। इस सम्मेलन में पाकिस्तान के चारों प्रान्तों के गवर्नर भी शामिल थे।

◆जालंधर में रक्षा मन्त्री श्री स्वर्णसिंह ने घोषणा की कि लोकतन्त्री पाकिस्तान को भारत पूरा सहयोग देगा।

◆पाकिस्तानी धमकियों का उत्तर देते हुए प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने कहा—हम शांति और युद्ध—दोनों के लिये तैयार हैं। प्रधानमंत्री का आज दिल्ली के रामलीला मैदान में अभिनन्दन किया जा रहा था। इसमें दिल्ली की २८६ संस्थाएं शामिल थीं।

श्रीमती गाँधी ने कहा—हर संकट के समय अपनी शक्ति ही काम आती है। उसकी ओर देशवासियों को ध्यान देना चाहिए। हम अपने देश के स्वयं भविष्य निर्माता हैं, हमें किसी के उपदेशों को सुनने की जरूरत नहीं है।

◆पश्चिमी कमान के ले० जनरल कैंडेथ को चण्डीगढ़ में और पूर्वी कमान के ले० जनरल अरोड़ा को कलकत्ता में सम्मानित करके तलवारें भेंट की गयीं।

३ जनवरी—शेख की रिहाई की घोषणा

पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने आज कराची में घोषणा की कि शेख मुजीबुर्रहमान से रावलपिंडी में बातचीत करने के बाद वे उन्हें बिना शर्त रिहा कर देंगे। यहाँ श्री भुट्टो एक जनसभा में ८० मिनट तक बोले और शेख की रिहाई के लिये जनता से आज्ञा माँगी। लोगों ने "हाँ" कह कर आज्ञा दे दी। इस भाषण में श्री भुट्टो ने बार-बार शेख मुजीबुर्रहमान को पूर्वी पाकिस्तान के नेता शब्द से ही सम्बोधित किया। २० दिसम्बर १९७१ ई० को जब भुट्टो राष्ट्रपति बने थे, तब से अब तक शेख से वह दो बार मिल चुके थे।

श्री भुट्टो ने कहा—मेरे और शेख के बीच गलतफहमियां याहिया ने पैदा की थीं। जब मैंने उससे सत्ता सौंपने कहा—तब उसने यह जवाब दिया था कि सत्ता तो मेरी लाश पर ही सौंपी जायेगी। भुट्टो की इस घोषणा का सर्वत्र प्रसन्नता से स्वागत किया गया। बेगम मुजीब ने कहा—मेरे पास प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। फिर भी मैं भारत और सोवियत रूस की आभारी हूँ, जिन्होंने उन्हें छुड़ाने का प्रयत्न किया।

◆रक्षामन्त्री श्री जगजीवनराम ने आज घोषणा की कि पश्चिमी सीमा से सेनाएं अभी नहीं हटायी जायेंगी।

◆प्रख्यात अमेरिकी पत्रकार श्री जैक ऐण्डरसन ने कहा—पत्रकारों से श्री किसिंगर ने यह गलत कहा था कि अमेरिकी सरकार भारत विरोधी नहीं है। व्हाइट हाउस की एक लिखित रिपोर्ट का हवाला देते हुए उन्होंने कहा—श्री किसिंगर अपने सहायक अधिकारियों से इसलिए नाराज थे कि वे भारत के विरुद्ध तगड़ा रवैया नहीं

अपना रहे; जबकि हर आधा घंटे बाद मुझ पर भारत के विरुद्ध और तगड़ा रवैया अपनाने के लिए डांट पड़ती है। तीन दिन बाद तो उन्होंने यह आदेश तक दिया था कि भारतीय राजदूत के प्रति उच्च स्तर पर सम्मान न किया जाय और श्री निक्सन ने यह आदेश दिया था कि अमेरिकी बजट में भारत के लिये कोई प्रावधान न किया जाय।

४ जनवरी

होशियारपुर से १८ मील दूर मौलीगाँव में बंगला देश का हुमायूँ रजा नामक एक सैकिंड लेफ्टिनेन्ट अपने पाकिस्तानी मेजर को गोली मारकर पाकिस्तानी जहाज को भारत उड़ा लाया। मृत मेजर कासिम मियाँवाली से यह विमान लेकर चला था।

फिरोजपुर में श्री स्वर्णसिंह ने बताया कि १० दिसम्बर को ही जनरल नियाजी आत्मसमर्पण करना चाहता था; लेकिन भुट्टो से कहकर अमेरिका ने उसे रुकवा दिया था। भुट्टो उन दिनों अमेरिका में ही थे।

५ जनवरी

शेख मुजीब आज तक रिहा नहीं हुए। आज पाकिस्तान सरकार ने रेडक्रास के लोगों को भी शेख से नहीं मिलने दिया। इससे संसार की चिन्ता बढ़ गयी।

बेकरगंज (बंगला देश) के एक वधस्थल से २५ हजार व्यक्तियों के मारने का पता चला और बंगला देश के तत्कालीन विदेश मन्त्री श्री आजाद ने आज रात दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पर घोषणा की कि भारत और बंगला देश की जनता के दिलों में कोई सीमा नहीं है। भारत सरकार के निमन्त्रण पर चार दिन की यात्रा पर श्री आजाद आज दिल्ली आये थे।

६ जनवरी

लन्दन से पता चला कि अमेरिका ने लीबिया में प्रशिक्षण पा रहे तुर्की चालकों को आदेश दिया था कि वह रावलपिंडी जाने के लिये तैयार रहें। आदेश मिलते ही सऊदी अरब के रास्ते विमानों को रावलपिंडी ले जायें। इसका अर्थ यह है कि यदि ५-६ दिन युद्ध और चलता तो अमेरिका खुद या सऊदी अरब और ईरान को आगे करके युद्ध में कूद पड़ता।

लरकाना में साक राष्ट्रपति भुट्टो ने कहा—शेख की रिहाई के इन्तजाम किये जा रहे हैं।

आज बंगला देश के तत्कालीन विदेश मंत्री श्री आजाद ने राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और विदेश मन्त्री से अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर बातचीत की। बंगला देश मिशन के श्री हुमायूँ चौधरी ने बताया कि बातचीत का मुख्य विषय शेख की रिहाई

और उनके ढाका लौटने का था। श्री आजाद ने प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी को ढाका आने के लिए निमंत्रण दिया और उन्होंने यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। निमन्त्रण देते हुए श्री आजाद ने कहा—बंगला देश की जनता आपके दर्शन करना चाहती है।

७ जनवरी

आज भू०पू० पाक राष्ट्रपति याहिया खां नजरबंद कर दिये गये और ईरान के शाह की पाकिस्तान जाने की खबर मिली। भारत ने बंगला देश को आश्वासन दिया कि भारत विस्थापितों के पुनर्वास में पूरी सहायता देगा।

अध्याय १३

८ जनवरी १९७२--पाकिस्तानी जेल से शेख मुजीब रिहा

८ जनवरी १९७२ को विना किसी पूर्व सूचना के पाकिस्तान इण्टर नेशनल एग्रर लाइंस के हवाई जहाज से शेख मुजीवुर्ररहमान लन्दन पहुँच गये। वास्तव में ७ जनवरी को रात के ३-३० बजे पाक राष्ट्रपति उन्हें लेकर हवाई ग्रड्डे पर पहुँचे ग्रौर 'ग्रलविदा' कहकर चले गये। इनसे पहले श्री भुट्टो ने शेख मुजीवुर्ररहमान से तुर्की, ईरान या चीन जाने का ग्रनुरोध किया था; लेकिन शेख तैयार न हुए ग्रौर उन्होंने लन्दन जाने की इच्छा व्यक्त की थी।

हवाई जहाज के पहुँचने तक लन्दन में भी उनके ग्राने की सूचना किसी को नहीं थी। ग्राधा घंटे पहले जब ब्रिटिश सरकार को पता चला तो ब्रिटिश विदेश मंत्रालय ग्रौर राष्ट्रमण्डल कार्यालय में खलबली मच गयी ग्रौर वरिष्ठ ग्रधिकारी शेख के स्वागत के लिए हवाई ग्रड्डे की ग्रोर लपके। सबसे पहले उनकी बातचीत श्री सदरलैंड से हवाई ग्रड्डे पर एक घण्टे तक हुई। पत्रकारों से उन्होंने केवल इतना कहा—ग्राप देख रहे हैं, मैं ठीक हूँ ग्रौर जीवित भी हूँ। ग्रभी मैं ग्रापसे ग्रधिक नहीं बोलूंगा।

→वंगला देश सरकार की ग्रोर से एग्रर इंडिया का एक विमान वंग-वंधु को लाने के लिये लन्दन रवाना हुग्रा।

प्रधानमंत्री से वातचीत

प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी से ग्राज टेलीफोन पर लन्दन से शेख मुजीवुर्रहमान ने वातचीत की। लन्दन से भारतीय उच्चायुक्त ने सूचित किया था कि शेख प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी से वातचीत करना चाहते हैं।

प्रधानमंत्री ने पहले शेख से उनकी कुशल पूछी ग्रौर वाद में उनके कार्यक्रम के वारे में पूछा।

बंगबंधु ने कहा—भावी योजनाओं के बारे में मैं भारतीय उच्चायुक्त से सम्पर्क बनाये हुए हूँ। साथ ही शेख ने प्रधानमंत्री के द्वारा भारतीय जनता को शुभ कामनाएं भी भेजीं। प्रधानमंत्री ने शेख को ढाका जाने से पहले दिल्ली आने के लिये आमंत्रित किया।

सर्वत्र हर्ष

शेख की रिहाई के समाचार से सर्वत्र हर्ष व्याप्त हो गया। बंगला देश मंत्रि-मण्डल की एक विशेष बैठक बंग भवन में हुई और शेख की वापसी के बारे में विस्तृत योजना तैयार की गयी।

भारत में जब यह समाचार मिला कि पाकिस्तान ने शेख को रिहा कर दिया है, तब प्रधानमंत्री लखनऊ में थीं और उन्होंने लखनऊ से ही शेख से बातचीत की थी। भारत में तीसरे पहर तक भी शेख के बारे में कुछ पता नहीं चला था; क्योंकि पाकिस्तान रेडियो ने यह तो बताया था कि शेख को रिहा कर दिया गया है; लेकिन यह नहीं बताया था कि शेख को किस देश भेजा गया है।

लन्दन में शेख मुजीबुर्रहमान की प्रथम प्रेस कांफ्रेंस

लन्दन में शेख मुजीबुर्रहमान ने आज अपनी पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि बंगला देश एक वास्तविकता है, जिसे चुनौती नहीं दी जा सकती। संसार के देश बंगला देश को मान्यता दें और उसे राष्ट्रसंघ का सदस्य बनायें। आगे शेख ने बताया कि मुझे ६ माह तक काल कोठरी में रखा गया और फाँसी की सजा भी सुना दी गयी थी। उन्होंने यह भी बताया कि मैंने श्री भुट्टो से पाकिस्तान के साथ रहने का कोई वायदा नहीं किया है। श्री भुट्टो ने संबंध बनाये रखने का आग्रह अवश्य किया था।

शेख ने कॉन्फ्रेंस में कहा—पाकिस्तानियों ने बंगला देश में जो अत्याचार ढाये हैं, यदि आज हिटलर होता तो उसकी गर्दन भी शर्म से झुक जाती। शेख ने यह भी बताया कि जिस काल कोठरी में मुझे रखा गया था, वह एकांत थी, कोई मिल नहीं सकता था। मौत की सजा सुनाने के बाद बराबर वाली खाली कोठरी में मेरे लिए कब्र भी खोद दी गयी थी; लेकिन याहिया खाँ के जोर देने पर भी श्री भुट्टो की सरकार ने मुझे फांसी देने से इंकार कर दिया।

पाकिस्तान में जब सत्ता डगमगाई और यह पता चला कि याहिया सत्ता भुट्टो को सौंपने वाला है, तब इस बीच मेरी हत्या न करा दी जाय, जेलर चुपचाप रात को मुझे अपने घर ले गया और दो-तीन दिन उसने मुझे अपने घर में छुपाकर रखा।

शेख का अपनी पत्नी को फोन

२८९ दिनों के बाद शेख श्री मुजीव ने लन्दन से अपनी पत्नी को फोन किया—शेख ने कहा—मैं मुजीव बोल रहा हूँ और कुशलपूर्वक हूँ। क्या तुम सब लोग जिन्दा हो ? पहली बार फोन सुनकर बेगम मुजीब मात्र विह्वल हो गयीं और हलो-हलो कह कर रह गयीं। दूसरी बार उन्होंने पूछा—तुम कैसे हो ? बाद में उनके छोटे बेटे रसूल और बेटियाँ—हसीना और रेहाना ने अपने पिता से बातचीत की।

इनके बाद शेख ने बंगला देश के राष्ट्रपति श्री सैयद नजरुल इस्लाम और प्रधानमन्त्री श्री ताजुद्दीन अहमद से बंगला देश सरकार के बारे में बातचीत की। उसके बाद नयी दिल्ली में श्री आजाद से बातचीत की।

+लन्दन में भारतीय उच्चायुक्त श्री अप्पा पंत ने जब शेख को प्रधानमन्त्री का अभिनन्दन प्रेषित किया। तब शेख के आँसू टपकने लगे और बोले—'वे महान् महिला हैं।'

खतरा टला नहीं

लखनऊ की विशाल सभा में आज प्रधानमन्त्री ने कहा—पाकिस्तान की ओर से अभी खतरा टला नहीं है।

हमें सतर्क और सावधान रहने की जरूरत है। प्रधानमन्त्री ने कहा—वर्तमान में देश के सामने जो चुनौती आई है उसे देश स्वीकार करे और सहायता आदि माँगने की आदत छोड़ दे।

✧भारतीय नाविक यूनियन के महासचिव श्री लियो बर्नस के अनुसार कराची में नजबरन्द ५५ भारतीय नाविक पाक सरकार द्वारा बिना शर्त रिहा कर दिये गये।

९ जनवरी—शेख की लन्दन से रवानगी

बंगबंधु शेख मुजीबुर्रहमान आज भारत के लिए रवाना हो गये और नयी दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पर उनके स्वागत की तैयारियाँ शुरू हो गयीं। कल शाम को वे ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री एडवर्ड हीथ से भी मिल चुके थे। बंगबंधु की यात्रा की व्यवस्था ब्रिटिश सरकार ने की। उनको ब्रिटिश रायल एयरफोर्स का विशेष कामेट विमान सवेरे लेकर उड़ा। सुरक्षा की दृष्टि से यहाँ भी उनकी रवानगी गुप्त रखी गयी थी।

ढाका में जगह-जगह तोरण द्वार बनाये जा रहे थे। गाँवों और शहरों से लोग भारी संख्या में ढाका में इकट्ठे हो रहे थे। शेख के घर आने-जाने वालों का तांता

लगा हुआ था। उनकी पत्नी से तरह-तरह के सवाल पूछे जा रहे थे। एक सवाल यह भी था कि बंगला देश की विशेष महिला बनने पर आपको कैसा लग रहा है ? उनका उत्तर था—मैं पहले पत्नी हूँ। गृहस्थी का दारोमदार मेरे ऊपर है। वृद्ध सास-स्वसुर और बच्चों का दायित्व मेरे ऊपर है। मैं राजनीतिज्ञ तो नहीं हूँ।

प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी अपनी उत्तर प्रदेश की यात्रा स्थगित कर नयी दिल्ली लौट आयीं।

भारत बंगला देश प्रथम संयुक्त विज्ञप्ति

आज भारत और बंगला देश की पहली संयुक्त विज्ञप्ति प्रकाशित हुई। बंगला देश के विदेश मन्त्री श्री आजाद भारत के विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह के निमंत्रण पर भारत यात्रा पर आये थे और आज उनकी यात्रा समाप्त थी।

संयुक्त विज्ञप्ति में विश्व के देशों से मान्यता की अपील की गयी। भूतान, बल्गेरिया, यूगोस्लाविया, पोलैंड, पूर्वी जर्मनी, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, मंगोलिया तथा सोवियत रूस को वस्तुस्थिति समझने के लिए धन्यवाद दिया गया और ब्रिटेन तथा फ्रांस द्वारा युद्धकाल में अपनाये गये रवैये के प्रति संतोष व्यक्त किया गया था ?

दोनों सरकारों ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया कि जब बंगला देश की सरकार की इच्छा होगी, भारत की सशस्त्र सेनाएं बंगला देश से वापस बुला ली जायेंगी। दोनों देशों के सम्बन्ध सब देशों की सार्वभौमता व क्षेत्रीय अखंडता तथा एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में दखल न देने और समानता के आपसी हितों पर निर्धारित होंगे।

१० जनवरी—बंगबंधु दिल्ली में, २१ तोपों को सलामी

१० जनवरी १९७२ को बंगबंधु शेख मुजीबुर्रहमान ब्रिटिश एयरवेज के जहाज से प्रातः ८ बजे नयी दिल्ली आये और उसी दिन दोपहर को १० बजकर ४० मिनट पर कलकत्ता के रास्ते उसी जहाज से ढाका के लिए रवाना हो गये। दिल्ली में वे केवल १६० मिनट रुके। उनके स्वागत कार्यक्रम को आकाशवाणी से प्रसारित किया गया। हवाई जहाज से उतरते ही उन्हें २१ तोपों की सलामी दी गयी। विमान के नीचे राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री, दिल्ली के महापौर और अन्य केन्द्रीय मंत्रियों ने उनका स्वागत किया।

बाद में उन्हें स्वागत कक्ष में लाया गया। यहाँ तीनों भारतीय सेनाओं की टुकड़ियों ने उन्हें सलामी दी।

राष्ट्रपति श्री गिरि ने वंगबंधु का स्वागत करते हुए कहा—'आप मानव की स्वतंत्रता के लिए त्याग और वलिदान की भावना के महान् प्रतीक हैं।" वंग-वंधु ने भरे गले से राष्ट्रपति, भारतीय जनता और प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी को वार-वार धन्यवाद देते हुए कहा—आपने स्वतंत्र वांगला देश आने की मेरी इस यात्रा को संभव वना दिया । महान् भारत की ऐतिहासिक राजधानी में उतरते समय, मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आप मेरे देश के सवसे अच्छे मित्र हैं। मेरी यह ढाका यात्रा अन्धेरे से उजाले की ओर यात्रा है। जेल से आजादी की ओर यात्रा है। मैं अव वंगला देश के करोड़ों लोगों के आजाद मुख देखने जा रहा हूं, जिन्होंने मेरे जेल में रहते समय आजादी की लड़ाई लड़ी थी।

इस स्वागत समारोह के वाद, प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी के साथ 'जय वंगला' के नारों के वीच वंगवंधु परेड मैदान गये और वहाँ उन्होंने वंगला भाषा में भाषण करते हुए कहा—भारत और वंगला देश एक असीम भाईचारे में वंध गये हैं। उनका देश भारत की सहायता को कभी नहीं भूल सकता। भारत और वंगला देश के आदर्श और दृष्टिकोण समान हैं। शेख ने अपना भाषण 'जय हिन्द' के साथ समाप्त किया; लेकिन प्रधानमन्त्री ने 'जय वाँगला' कहा। शेख ने कहा—मेरी स्वत-न्त्रता का कारण प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी का प्रयत्न ही है। मुझे जेल में यह विश्वास ही नहीं था कि मैं वंगला देश लौट भी सकूंगा। लन्दन जाकर ही मुझे अपने देश के हत्याकांड का पता चला और भारत द्वारा मेरे देश के उद्धार का भी पता चला। मैं कायर याहिया खां से यह कल्पना भी नहीं करता था कि मेरे देश के ३० लाख स्त्री-पुरुषों की हत्या इस तरह करायी जायेगी । उनकी वहू-वेटियों की इज्जत परिवार के पुरुषों के सामने पाकिस्तानी भेड़िये लूटेंगे। मैं भारत की वार-वार सराहना करता हूँ और भारत सहित प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने ६-१० महीने तक मेरे देश के १ करोड़ लोगों को शरण देकर उनका खर्चा वहन किया और जिसकी सेनाएं मेरे देश के उद्धार के लिये गयीं। मेरे देश के लिये भारतीय जवानों ने अपना वलिदान दिया। कृतज्ञ वाँगला देश उनके प्रति कभी अकृ-तज्ञ नहीं होगा। अन्त में वंगवन्धु ने जय हिन्द और जय श्रीमती गांधी का नारा फिर लगाया।

प्रधानमंत्री का भाषण

प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने अपने भाषण में कहा—शेख स्वतन्त्र होकर अपने स्वतन्त्र देश—वांगला देश जा रहे हैं। हमें इस वात की वहुत खुशी है। मैंने भारत की जनता से तीन वायदे किये थे, उन्हें मैंने पूरा कर दिया। पहला शरणार्थी वापस भेजे जायेंगे । दूसरा वंगला देश की मुक्ति का समर्थन करते हुए हम उस देश

को स्वतन्त्र करायेंगे और तीसरा शेख श्री मुजीबुर्रहमान को स्वतंत्र करायेंगे। वे वायदे आज पूरे हो गये।

राष्ट्रपति भवन में

बंगबंधु को देखने के लिए जनता ने राष्ट्रपति भवन को चारों ओर से घेरा हुआ था। वे प्रधानमन्त्री के साथ राष्ट्रपति भवन के मुगल उद्यान में गये। वहाँ उन्होंने राष्ट्रपति और अन्य मंत्रियों के साथ नाश्ता किया। बाद में पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर दिये। पहले आपने मृतकों की आत्माओं के लिए शांति की प्रार्थना की। उनसे पहला प्रश्न था—"भारतीय सेनाएं कब बंगला देश से हटेंगी ?" शेख का उत्तर था—जिस दिन मैं प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी से निवेदन करूँगा, उस दिन हट जायेंगी। युद्ध अपराधियों के लिये अन्तर्राष्ट्रीय ट्रिब्युनल के बारे में भी उनसे पूछा गया और ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री हीथ से हुई बातचीत के बारे में भी। अन्त में बंगला देश में पाकिस्तानी सेना द्वारा की गई बर्बादी के बारे में उन्होंने बयान दिया। पश्चात् राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री ने उन्हें हवाई अड्डे पर विदाई दी और अपने देश के विदेश मन्त्री श्री अब्दुस्समद आजाद के साथ वे ढाका के लिये पुनः उसी जहाज में उड़ चले।

विदेशी दृष्टिकोण

शेख का स्वागत करने के लिए बड़े देशों में चीन, अमेरिका और अरब देशों के न राजदूत थे और न उनका कोई प्रतिनिधि; लेकिन सोवियत रूस, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, पोलैंड, हंगरी, यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, डेन्मार्क, भूतान, बल्गारिया, क्यूबा तथा मारीशस के राजदूत व इटली, पश्चिमी जर्मनी, बेल्जियम, आयरलैंड, कोलम्बिया और पोप के प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

पाक के साथ सम्बन्ध हमेशा के लिए समाप्त करने की घोषणा

ब्रिटिश विमान जैसे ही बंगबंधु को लेकर तेजगांव हवाई अड्डे पर उतरा वैसे ही बंगबन्धु जिन्दाबाद, प्रधान मन्त्री गाँधी जिन्दाबाद के नारों से आकाश गूँज उठा। आज दिन भर बंगवासी प्रधान मन्त्री गाँधी के चित्र खरीदते रहे थे, जो उनके पास अब भी थे। बंगला देश के इतिहास में ऐसी भीड़ पहले कभी नहीं देखी गयी। काफी देर तक शेख के जहाज को उतरने के लिये जगह ही नहीं मिली। अपार जनता अपार हर्ष मना रही थी। शेख के वृद्ध पिता व दूसरे देशों के राजदूतों के साथ अमेरिकी राजदूत भी थे। यहां भी शेख को २१ तोपों की सलामी दी गयी और बंगदेश की सेनाओं की तीनों टुकड़ियों ने भी सलामी दी। कार्यवाहक राष्ट्रपति सैयद नजरुल

इस्लाम और प्रधानमन्त्री श्री ताजुद्दीन अहमद ने उन्हें गले लगाया और पश्चात् उसी रेसकोर्स मैदान में ले जाया गया, जहाँ हवाई अड्डे से भी अधिक समूह उनकी इन्तजार कर रहा था और जहाँ उन्होंने आज से १० माह पूर्व पाकिस्तानी सत्ता को ठुकराया था।

यहाँ अपने स्वतंत्र देश के लिये उन्होंने अपना प्रथम अधिकारिक भाषण देते हुए कहा—वंगला देश और पाकिस्तान के वीच सम्वन्ध हमेशा हमेशा लिये समाप्त हैं। वह अपने घर में खुश रहें, हम अपने वतन में। ७ करोड़ वंगला देश वालों की गुलामी के लिये एक दिन रविन्द्रनाथ टैगोर ने दुख प्रकट किया था। आज उनकी आत्मा को संतुष्टि मिलेगी। साथ ही मैं पाकिस्तान के राष्ट्रपति भुट्टो को वता देना चाहता हूँ कि यदि वंगला देश की आजादी के विरुद्ध कुछ उन्होंने किया तो मैं अपने खून की अंतिम वूंद तक लड़ूंगा। इस समय अपने वतन में वंगवंधु ने वार-वार भारतीय सेना की प्रशंसा की और श्रीमती गांधी तथा भारतीय जनता के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और अमेरिकी जनता के रवैये की भी सराहना की। शेख ने कहा—"मैंने पाकिस्तानियों से निवेदन किया था कि फांसी देने के वाद मेरे शव को मेरे देश भेज देना। उन्होंने यह भी कहा—जिस तरह का कत्लेआम और मेरी वहन-वेटियों की वेइज्जती पाकिस्तानियों ने की है उसे इस देश की कोई भी पीढ़ी नहीं भुला सकती। वंगला देश के लिए मान्यता और सहायता की अपील विदेशों से करते हुए शेख ने कहा—हम लुट चुके हैं, गरीव देश है—विदेशी शक्तियों को हमारी सहायता करनी चाहिये। भारत धनिक देश नहीं है—मैं जानता हूँ; लेकिन अव तक हमारे लिये उसने सव कुछ किया है, उसके हम सदा कृतज्ञ रहेंगे।" उन्होंने वंगला देश के नर-संहार की जांच संयुक्त राष्ट्र या विश्व न्यायविद संघ द्वारा कराए जाने की मांग की।

११ जनवरी

वंगला देश में आज राष्ट्रपति का एक आदेश जारी हुआ। जिसके अनुसार १९७०-७१ में निर्वाचित राष्ट्रीय असेम्वली और प्राँतीय असेम्वली के सभी सदस्य जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि माने जायेंगे और वंगलादेश का अस्थायी संविधान आदेश १९७२ लागू किया गया। आज राष्ट्रपति शेख मुजीवुर्रहमान ने अपने मंत्रिमण्डल के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया। यह वैठक प्रधान मंत्री श्री ताजुद्दीन अहमद के निवासस्था न पर हुई। इसमें डा० कमाल हुसैन और जस्टिस श्री अवु सईद चौधरी विशेष रूप से वुलाये गये थे। कमाल हुसैन श्री मुजीव के उस समय भी राजनैतिक सलाहकार थे जव २५ मार्च १९७१ को याहिया से वातचीत की थी। इन्हें भी २५ मार्च को ही पाकिस्तानियों ने नजरवन्द कर दिया था और शेख के साथ ही इन्हें भी लौटाया गया था। श्री चौधरी पहले ढाका हाईकोर्ट के जज थे। वाद में ढाका विश्व-

वंगला देश के राष्ट्रपति श्री चौधरी ने भारत के साथ अपनी मैत्री को स्थायी बताया और भारतीय सेना, जनता तथा प्रधानमन्त्री को सहायता के लिए धन्यवाद दिया। श्री मुजीब ने अपने भाषण में पहले कवीन्द्र रवीन्द्र की एक कविता पढ़ी और बाद में उन्होंने पाकिस्तान से बदला न लेने की घोषणा की।

पोलैंड और मंगोलिया ने आज बंगला देश को मान्यता दी।

श्री ज्योतिन्द्र नाथ दीक्षित को बंगला देश में भारत सरकार ने कार्यवाहक राजदूत नियुक्त किया।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारतीय प्रतिनिधि श्री समर सेन ने कहा—हम पाकिस्तान से फौजें हटाने के लिए बातचीत को तैयार हैं।

१३ जनवरी

बर्मा ने बंगला देश को मान्यता दी और पाकिस्तान ने बल्गारिया, पोलैंड और मंगोलिया से अपने राजनैतिक सम्बन्ध तोड़ लिये।

बंगला देश सरकार ने कृषि भूमि पर लगान माफ करने की घोषणा की। प्रधानमंत्री का सन्देश श्री मुजीब को मिला तथा भारत ने १८२८ करोड़ के और अनुदान बंगला देश को देने की घोषणा की।

अमेरिका ने घोषणा की कि जब तक भारतीय सेनाएं बंगला देश से नहीं हट जातीं तब तक बंगला देश को मान्यता नहीं देनी चाहिये।

ढाका में आज अपनी प्रेस कांफ्रेन्स में बंगला देश के प्रधानमंत्री श्री मुजीबुर्रहमान ने कहा—बंगला देश में लोकतंत्री समाजवादी व्यवस्था कायम की जायेगी। पाकिस्तान से किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं रखा जायेगा। युद्ध अपराधियों तथा अत्याचारियों पर मुकदमे चलाये जायेंगे। बंगला देश की स्वतंत्र तटस्थ और धर्म निरपेक्ष विदेश नीति की घोषणा करते हुए वृहत्तर बंगला देश के निर्माण के लिए उन्होंने इन्कार किया; लेकिन अपने दिल में भारत के लिए विशेष स्थान को उन्होंने स्वीकार किया। भारतीय सेना को उन्होंने मित्र की संज्ञा दी।

बंगबंधु ने कहा—एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसी बनायी जाय जो बंगला देश में रहने वाले १६ लाख गैर बंगालियों और पाकिस्तान में फंसे चार लाख बंगालियों की आसानी से अदला-बदली करा दे।

पाकिस्तान में अपने भाषण में आज पाक राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने कहा—भारत ने हमारे बड़े प्रांत—पूर्वी पाकिस्तान पर कब्जा कर रखा है। उसे भारत के पंजे से छुड़वाने के लिये जनता तैयार रहे। पाक लेफ्टिनेंट जनरल अतीकुर्रहमान ने आज कहा—राष्ट्रपति भुट्टो के पास ३१ करोड़ की सम्पत्ति है।

१४ जनवरी

भारत की तीनों सेनाओं के जनरल आज पद्म विभूषण से अलंकृत किये गये।

पाकिस्तान में भाषण देते हुए, श्री भुट्टो ने कहा—मैं भारत से वार्ता के लिये हर समय तैयार हूँ; लेकिन वार्ता से पहले कोई शर्त नहीं होनी चाहिए। बंगला देश के बारे में भुट्टो ने कहा—जिन लोगों ने गलतियाँ की थीं उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है, हम उन्हें सजा देंगे; लेकिन सारी सेना गुनाहगार नहीं है।

बंगला देश में आज शराब पर पाबन्दी लगा दी गयी।

आवामी लीग के कार्यालय में श्री मुजीब जब भाषण कर रहे थे तब बंगला देश हत्याकांड और बलात्कार की घटनाओं के वर्णन करते समय रो पड़े और एक कार्यकर्ता तो बेहोश हो गया।

१६ जनवरी

राष्ट्रपति ने आज १० परमवीर सेवा पदक युद्ध काल में शौर्य प्रदर्शित करने के लिये श्री कैंडेथ, श्री अरोड़ा, श्री सरतार्जसिंह, श्री के०के० सिंह, समसर्तसिंह, श्री टी०एन० रेना तथा आई० एस० गिल को दिए, यह सभी लेफ्टिनेन्ट,जनरल हैं। इनके अलावा वाइस एडमिरल श्री कोहली एन० कृष्णन, एयर मार्शल इंजीनियर तथा एयर मार्शल एच० सी० दीवान को भी यही पदक अर्पित किये गये।

नेपाल ने आज बंगला देश को मान्यता दे दी। श्री मुजीब ने बंगला देश के युवकों से हथियार वापस करने की अपील की।

निक्सन की पाक नीति से नाराज होकर अमेरिकी उप-रक्षामन्त्री श्री डेविड पैकर्ड ने इस्तीफा दे दिया।

पश्चिमी सीमा से सेनाएं न हटाने की घोषणा सिलीगुडी में प्रति रक्षामन्त्री श्री जगजीवनराम ने की।

१७ जनवरी

बंगला देश के प्रधानमन्त्री श्री मुजीब ने आज गणवाहिनी के सभी सदस्यों को आदेश दिया कि दस दिन के अन्दर वे अपने सभी शस्त्र और गोला बारूद सब डिवीजनल अफसरों के हवाले कर दें। इस अवधि के बाद किसी व्यक्ति के पास हथियारों का होना गैर-कानूनी माना जायेगा। उन्होंने आभार प्रकट करते हुए कहा कि जो छात्र अपनी शिक्षा जारी रखेंगे, सरकार उन्हें सभी सहूलियतें देगी। देश में नयी पुलिस की घोषणा करते हुए शेख ने कहा—इसमें भर्ती गणवाहिनी के सदस्यों से ही की जायेगी।

३० लाख की हत्या

आज ब्रिटिश पत्रकार को भेंट देते हुए श्री मुजीब ने बताया कि ३० लाख बंगला नर-नारियों को बेरहमी के साथ कत्ल किया गया है। इनमें सैकड़ों बुद्धिजीवी भी थे। उन्होंने याहिया खाँ को युद्ध अपराधी घोषित करते हुए उस पर मुकदमा चलाने की माँग की।

भारत द्वारा भारी सहायता

बँगला देश के पुनर्निर्माण के लिये आज भारत सरकार ने २५ करोड़ रुपये की सहायता तथा ५० लाख ब्रिटिश पौण्ड की विदेशी मुद्रा का ऋण देने का निश्चय किया और समझौते के कागजों का परस्पर आदान-प्रदान हुआ। समझौते के कागजों का यह पहला आदान-प्रदान था।

बंगला देश स्थित भारतीय राजनयिक मिशन के अध्यक्ष पद का भार संभालने के लिए आज श्री जी०एन० दीक्षित ढाका पहुंचे।

भारत सरकार ने आज राष्ट्रसंघ को सूचित किया कि जिन लोगों ने बंगला देश में कत्लेआम, आगजनी तथा अन्य अत्याचार किये हैं, जैनेवा समझौते के अनुसार उन्हें क्षमा नहीं किया जायेगा। बंगला देश और भारत की संयुक्त कमान से बंगला देश की सरकार को यह मांग करने का अधिकार है कि ऐसे लोग बंगला सरकार के हवाले कर दिये जायें ताकि अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार उन पर मुकदमा चलाया जा सके।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने आज कहा—मैं अपना पद छोड़कर शेख मुजीब को पाकिस्तान की सत्ता सौंपने के लिए भी तैयार हूं। शर्त केवल यही है कि पाकिस्तान की अखंडता बनी रहे। आज श्री भुट्टो ने अपने लरकाना स्थित मकान पर सभी राजदूतों को निमंत्रित भी किया।

रेडियो पाकिस्तान ने आज बताया कि बंगला देश में पाकिस्तानी सेना की हार तथा पश्चिमी अंचल में युद्ध-विराम की जांच के लिए कायम तीन सदस्यीय न्यायिक आयोग की कार्रवाई आज रावलपिंडी में शुरू हुयी। आयोग के अध्यक्ष पाकिस्तान के चीफ जस्टिस श्री हमीदुर्रहमान हैं। श्री रहमान ने कहा कि मैं अपनी रिपोर्ट ९० दिन में पूरी कर लूंगा।

श्री मुजीब ने आज बताया कि २५ मार्च १९७१ ई० को मैं जान बचाकर इसलिए नहीं भागा कि मेरी हत्या की योजना यह बनायी गयी थी कि जैसे ही मैं घर से भागूं मुझ पर बाहर हमला करके मार डाला जाय और घोषित यह कर दिया जाय कि शेख की हत्या उनके विरोधियों ने कर दी।

१८ जनवरी

श्री मुजीव ने पाक राष्ट्रपति के इस प्रस्ताव को हास्यास्पद बताया कि वे पाक के राष्ट्रपति बन जायें।

◆श्री मुजीब ने उन सभी कैदियों को रिहा करने का आदेश दिया जिन्हें पाकिस्तानियों ने विभिन्न आरोपों में गिरफ्तार किया था।

◆अमेरिकन सिनेटर श्री कैनेडी ने आज कहा कि भारत-पाक युद्ध अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन की नीति का सबसे कमजोर पहलू था। उससे पता चलता हैं कि हमारी विदेश नीति कितनी ढुलमिल है।

१६ जनवरी

आज तीन और मन्त्री बढ़ाकर बंगला देश सरकार का विस्तार किया गया। इनके नाम हैं—श्री मुस्तफीज़ुर्रहमान सिद्दीक़ी, श्री शम्सुल हक़ और श्री मजीउर-रहमान।

◆बंगला देश की अर्थ-व्यवस्था का गठन करने के लिए भारत सरकार का एक मिशन नयी दिल्ली से ढाका रवाना हुआ। इस मिशन के अध्यक्ष भारत सरकार के प्रमुख आर्थिक सलाहकार श्री अशोक मित्र थे।

२० जनवरी

मौलाना भाषानी जो दिल्ली में अपना इलाज करा रहे थे, आज बंगला देश को रवाना हो गये। ढाका में अलबदर के भयानक संचालक अब्दुल खालिक से आज पूछताछ की गयी जो कि हरेक बंगाली मुसलमान या हिन्दू की खोपड़ी लाने वाले को इनाम देता था।

२१ जनवरी

आज स्वीडन, डेन्मार्क, नार्वे, फिनलैंड, आस्ट्रिया और बारबडोस ने बंगला देश को मान्यता देने का फैसला किया। ढाका के उपनगर मीर के पास शियालवाड़ी में मानव हड्डियों के जगह-जगह अम्बार आज मिले। शेख श्री मुजीब ने आज बताया कि हम हर तरह की ऐसी सहायता का स्वागत करेंगे जिसके साथ कोई शर्त जुड़ी हुई न हो।

२२ जनवरी

पाक राष्ट्रपति भुट्टो ने ब्रिटेन से बंगला देश को मान्यता न देने की माँग की और मान्यता देने पर राष्ट्रमंडल छोड़ने की धमकी भी दी। उन्होंने कहा—जब तक

मैं शेख श्री मुजीव बातें न कर लूं और भारत अपनी सेनाएं न हटा ले, तब तक मान्यता न दी जाय।

◆वंगला देश छात्र यूनियन ने अपने सभी हथियार सरकार को सौंपने की घोषणा की। और भारत ने वंगला देश की रेल-व्यवस्था के लिये १३ करोड़ रुपये और देने की घोषणा और की। अमेरिका स्थित पाक राजदूत ने बंगला देश को अब भी पाक का एक भाग बताया। मौलाना भाषानी ने ढाका में वंगवासियों से एक जुट हो जाने की अपील की। दीनाजपुर क्षेत्र के ठाकुर गाँव में दो बाघों का वह पिंजरा मिला जिसमें उनके भोजन के लिये दो वंगालियों को सवेरे शाम फेंका जाता था। यह बाघ सेना ने पाले हुए थे।

◆श्री कमरूज्जमां ने बताया कि हमें अपनी व्यवस्था ठीक करने के लिये दो अरब रुपये की जरूरत है।

◆ढाका में प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी के विशेष दूत श्री दुर्गाप्रसाद धर ने आज वंगवंधु से ३ घण्टे तक भेंट की और दोनों देशों के सम्बन्धों और सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से विचार किया। इस बैठक में वंगला देश के विदेश मंत्री श्री आजाद भी उपस्थित थे।

◆वाशिंगटन में यूनाइटेड आटोमोवाइल यूनियन के शक्तिशाली अन्तर्राष्ट्रीय बोर्ड ने अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन से अपनी पाक समर्थक नीति का स्पष्टीकरण करने की माँग की।

◆अमेरिकी सरकार ने अपने भारत और पाकिस्तान स्थित राजदूतों को सलाह के लिये वाशिंगटन बुलाया।

२३ जनवरी

मौलाना भाषानी ने आज घोषणा की कि वंगलादेश का पाक से अब ही नहीं, किसी सदी में भी कोई सम्बन्ध कायम होना असम्भव हो चुका है।

◆श्री धर ने श्री मुजीव के घर पर वंगला देश की आर्थिक स्थिति के बारे में तीन घंटे तक उनसे बातचीत की।

◆यूगोस्लाविया ने आज वंगला देश को मान्यता दे दी।

२४ जनवरी—सोवियत संघ द्वारा मान्यता

आज सोवियत रूस ने वंगला देश को मान्यता दे दी। और पाकिस्तान ने यूगोस्लाविया से राजनैतिक सम्बन्ध तोड़ लिये। पाकिस्तान के राष्ट्रपति भुट्टो अंकारा पहुँच गये।

◈प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी और राष्ट्रपति श्री गिरि ने अपने भाषणों में पाकिस्तान से मित्रता की अपील की। प्रधानमन्त्री ने कहा—पाकिस्तान यदि कोई मित्रता का कदम उठाएगा तो हम उसका स्वागत करेंगे।

◈अमेरिका ने भारत को अगले वर्ष दी जाने वाली सहायता को समाप्त कर दिया।

◈टाईगर के नाम से विख्यात श्री कादिर सिद्दीकी के नेतृत्व में आज तंगैल के विख्यात छापामार दस्ते के डेढ़ हजार जवानों ने प्रधानमन्त्री श्री मुजीव के सामने अपने हथियार रख दिये।

२५ जनवरी

आज राष्ट्रपति ने पाकिस्तान से पुनः दुर्भावना त्यागने की अपील की और श्री भुट्टे ने भारत-पाक तथा बंगला देश की त्रिपक्षीय वार्ता से इन्कार कर दिया।

२७ जनवरी

पाकिस्तान ने हंगरी से सम्बन्ध विच्छेद किया। श्रीमती गांधी 'भारत-रत्न' पदक से अलंकृत की गयीं। बंगला देश के वित्त मन्त्री श्री ताजुद्दीन ने आज प्रधान मन्त्री से बातचीत की। और श्री मुजीब ने राष्ट्रमण्डल में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की।

२८ जनवरी

खुलना में आज नर-कंकालों के नये ढेर का पता चला। कुश्तिया में मुक्ति-वाहिनी के १६ हजार जवानों ने हथियार सौंपे। श्री ताजुद्दीन ने आज नयी दिल्ली की प्रैस कांफ्रेंस में कहा—हमें अपने मित्रों से सहयोग और सहायता का भरोसा है। हम शत्रु देशों से मदद नहीं लेंगे। साठ लाख शरणार्थी आज वापस जा चुके थे।

◈अमेरिकी विदेश मन्त्री श्री रोजर्स ने वाशिंगटन में यह स्वीकार किया कि "हम यह स्वीकार करते हैं कि पाकिस्तान ने ही ऐसी स्थिति पैदा करदी जिसके कारण युद्ध छिड़ गया।"

३० जनवरी—पाकिस्तान राष्ट्रमण्डल से अलग

आज ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड ने बंगला देश को मान्यता देने का फैसला किया और पाक राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने राष्ट्रमण्डल से अपना इस्तीफा देकर पाक उच्चायुक्त को राजदूत घोषित कर दिया। राष्ट्रमण्डल छोड़ने की घोषणा रेडियो पाकिस्तान से आज विशेष प्रसारण द्वारा की गयी।

३१ जनवरी

आज पाकिस्तान के राष्ट्रपति भुट्टो पेकिंग रवाना हो गये ।

वंगला देश के प्रधानमन्त्री शेख मुजीव ने अमेरिका को अल्टीमेटम दिया कि वह या तो वंगला देश को मान्यता दे, वरना उसके दूतावास के कर्मचारियों का वोरिया विस्तर वाँधकर वापस भेज दिया जायेगा ।

◆पाकिस्तानी सैना के जुल्मों के साथ देने वाले ५३ वंगला देश के अधिकारियों को सरकार ने आज वर्खास्त कर दिया ।

◆वारीसाल जिले में एक सामूहक वध-स्थल का पता चला । यहां वीस खण्डों में १ हजार व्यक्तियों को कत्ल करके दफनाया गया था ।

१ फरवरी

वंगला देश के प्रधानमन्त्री शेख मुजीवुर्रहमान ने घोषणा की कि पाकिस्तान ने जो कर्जे लिये हैं, उनके देनदार हम नहीं हैं । उनकी राशि भी हमारे देश पर खर्च नहीं की गयी ।

◆पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने पेकिंग में आज चाऊ और माओत्से-तुंग से वातचीत की ।

◆श्री मुजीव के अल्टीमेटम पर अमेरिकी सरकार क्षुब्ध हुई ।

२ फरवरी

पाकिस्तान के राष्ट्रपति की आज फिर चीनी अधिकारियों से वार्ता हुई । वार्ता का मुख्य मुद्दा पाकिस्तान पर १९६४ से अव तक का ३० करोड़ ७० लाख डालर का ऋण था । इसमें २० करोड़ डालर तो १९७० में ही दिया गया था । चीन से अपनी रवानगी के वाद श्री भुट्टो ने कहा—चीन पाकिस्तान को भरपूर सहायता देगा ।

३ फरवरी—पाकिस्तान में गिरफ्तार जिन ५७० भारतीय सैनिकों की सूची प्रकाशित की गई उनमें ९ स्थलसेना के और १२ वायुसेना के अफसर भी शामिल हैं ।

◆खुलना के उन शवागारों का पता भी आज चला जहाँ १ लाख व्यक्ति कत्ल करके दफनाये गये थे ।

◆भारत सरकार ने शांति के लिये आज अपना प्रस्ताव प्रसारित किया कि सभी विवादों के हल के लिये भारत पाक से किसी भी स्तर पर वार्ता के लिए तैयार है ।

४ फरवरी—आज ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी और इस्राइल सहित ८ अन्य

यूरोपियन देशों ने बंगला देश को मान्यता दी। आज तक ३० देश बंगला देश को मान्यता दे चुके थे।

५ फरवरी—पाकिस्तान को बड़ी मात्रा में हथियार मिले और ब्रिटिश विदेश मन्त्री श्री डगलस ह्यूम दिल्ली आये।

६ फरवरी—शेख श्री मुजीब आज कलकत्ता आये और वहाँ उन्होंने अपने स्वागत-भाषण में कहा—भारत और बंगला देश के बीच मैत्री अटूट है। उसी सभा में प्रधान मन्त्री गाँधी ने पाकिस्तान को सलाह दी कि वह युद्ध का रास्ता छोड़कर शांति का रास्ता ग्रहण करे।

७ फरवरी—ब्रिटिश विदेशमन्त्री ने नयी दिल्ली में कहा—युद्धोत्तर समस्याओं पर भारत और पाकिस्तान में सीधी ही बातचीत होनी चाहिये। प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने कहा—पाक से बंगला देश पर वार्ता नहीं होगी। श्री मुजीव ने आज घोपणा की कि गैर बंगालियों को बंगला देश में कोई खतरा नहीं है।

८ फरवरी—आज भारत-बंगला देश संयुक्त विज्ञप्ति तब प्रकाशित की गई जब शेख श्री मुजीब अपनी कलकत्ता की ४५ घण्टे की राजकीय यात्रा के बाद लौट रहे थे। विज्ञप्ति में भारत और बंगला देश के परस्पर सहयोग का विशेष उल्लेख था। विज्ञप्ति में २५ मार्च तक भारतीय सेना के बंगला देश से वापस जाने का भी उल्लेख था। दोनों देशों के प्रधान मन्त्रियों ने अपनी साढ़े पाँच घण्टे की बातचीत में प्रजातंत्र, समाजवाद और धर्मनिर्पेक्षता तथा तटस्थता और उपनिवेशवाद के विरोध पर जमे रहने का निश्चय किया। विज्ञप्ति के बाद शेख ने कहा—भारत बंगला मैत्री से एक नये युग का सूत्रपात एशिया में हुआ है।

◆ब्रिटिश विदेश मन्त्री श्री ह्यूम ने अपनी नयी दिल्ली की प्रैस कॉंफ्रेंस में पाकिस्तान को सलाह दी कि बंगला देश की स्वतन्त्रता स्वीकार करे। उन्होंने हिन्द महासागर में रूसी प्रभाव क्षेत्र बढ़ने पर चिंता व्यक्त की और पड़ोसी देशों की सामूहिक सुरक्षा पर बल दिया।

९ फरवरी—अमेरिकी राष्ट्रपति श्री निक्सन ने भारत को अब भी युद्ध अपराधी मानते हुए अमेरिका से वातचीत की शर्तें पेश कीं। उनका कड़ा विरोध भारत सरकार ने किया।

१० फरवरी—आज जापान, क्यूबा और चिली ने बंगला देश को मान्यता दे दी।

'न्यूयार्क टाइम्स' के एक समाचार से पता लला कि अमेरिकी गुप्तचर संस्था (सी०आई० ए०) को किसी भारतीय मन्त्री से यह समाचार मिला था कि भारत का इरादा पाक अधिकृत कश्मीर पर भी कब्जा करना है। राष्ट्रपति निक्सन के

सलाहकार श्री किसिंजर ने बताया कि इसीलिए श्री निक्सन ने ७वाँ बेड़ा बंगाल की खाड़ी में भेजा था।

११ फरवरी—नीदरलैंड, लक्समबर्ग और बेल्जियम ने आज बंगला देश को मान्यता दी। श्री निक्सन ने भारत से नये सम्बन्ध सुधारने की घोषणा की। ढाका में संयुक्तराष्ट्र संघ के महासचिव के प्रतिनिधि ने उनका एक पत्र श्री मुजीब को बंगला देश का प्रधानमन्त्री मानते हुए दिया। भारत ने भारत होकर पाकिस्तान माल ले जाने वाले समस्त विदेशी जहाजों से पाबन्दी हटा ली। रंगपुर में ६० हजार व्यक्तियों के कब्रिस्तानों का पता चला।

१२ फरवरी—पाकिस्तान के भू०पू० राष्ट्रपति श्री याहियाखां के लाहौर के शाही किले में बन्द होने का समाचार मिला। फ्रांस, आयरलैंड और इटली ने भी आज बँगला देश को मान्यता दे दी। संयुक्त राष्ट्र संघ के दूत से बंगला देश के विदेशमंत्री श्री अब्दुस्समद आजाद ने पाक से बंगालियों की वापसी के लिये प्रयत्न की अपील की।

१३ फरवरी—पाकिस्तान के राष्ट्रपति भुट्टो ने अमेरिका से आग्रह किया कि वह पाक और अमेरिका के बीच उस द्विपक्षीय समझौते को पुनः जीवित करने और मजबूत करने का इच्छुक है जिसे अमेरिका ने १९६७ में समाप्त कर दिया था। बँगलादेश में आज पाक सेना के १० हजार सहयोगी गिरफ्तार कर लिये गये।

१४ फरवरी—अमेरिकन सिनेटर श्री केनेडी और उनकी पत्नी ने ढाका में आज मुजीब से मुलाकात की। अपने घर के द्वार पर बंगबन्धु ने उनका स्वागत किया। पाक राष्ट्रपति भुट्टो ने आज घोषणा की कि वह भारत और बंगला देश के प्रधान मन्त्रियों से शीघ्र ही भेंट करेंगे।

१५ फरवरी—अमेरिकी सरकार ने आज घोषणा की कि वह पाकिस्तान के साथ कोई नया रक्षा समझौता करना नहीं चाहता।

१६ फरवरी—आज सिंगापुर, थाईलैंड और मध्य अफ्रीका ने बंगला देश को मान्यता दे दी। अमेरिकी लेखक जैक एण्डरसन ने आज कहा—भारत-पाक युद्ध के समय अमेरिका वहां परमाणु युद्ध छेड़ने के लिये तैयार हो गया था। भारत के बंगला स्थित राजदूत श्री सुबिमल दत्त ने अपने परिचय-पत्र बंगलादेश के राष्ट्रपति को प्रस्तुत किये।

१७ फरवरी—प्रधानमन्त्री गांधी ने 'न्यूयार्क टाइम्स' को एक भेंट में कहा—भारत अमेरिका से वार्ता का स्वागत करेगा। हमारी विदेश नीति का आधार तटस्थता है। राष्ट्रपति निक्सन अपनी पत्नी तथा कुछ साथियों के साथ चीन रवाना हुए और भारत ने घोषणा की कि पाक के घायल युद्ध-बन्दियों को लौटाया जायेगा।

१८ फरवरी—पाक राष्ट्रपति भुट्टो ने अपने मन्त्रिमण्डल की आज एक विशेष बैठक बुलाई और उसमें महँगाई और अनाज की कमी पर विचार किया तथा कुछ अधिकारियों को भी मुअत्तल किया।

१९ फरवरी—पाक राष्ट्रपति भुट्टो ने आज कहा कि मेरे द्वारा दिखाई गयी सद्भावना को देखकर भारत को पाक युद्धबन्दी रिहा कर देने चाहियें। संयुक्त रा० में भारतीय प्रतिनिधि श्री समरसेन ने महासचिव को अपनी सरकार का एक पत्र दिया जिसमें लिखा था—भारत किसी भी समय और किसी भी स्तर पर पाकिस्तान से बातचीत के लिये तैयार है। अमेरिका ने पाकिस्तान को पुनः सैनिक और आर्थिक मदद की घोषणा की। श्री निक्सन ने काँग्रेस को लिखा—जिस हालत के कारण पाबन्दी लगाई गयी थी, वह समाप्त हो गयी।

२० फरवरी—आज बम्बई में भाषण करते हुए प्रधानमन्त्री गाँधी ने कहा—भारत-अमेरिकी वार्ता की सफलता अमेरिकी रुख पर निर्भर है।

◆पाकिस्तान में नेशनल आवामी लीग के नेता श्री खान अब्दुल वली खान ने राष्ट्रपति भुट्टो को यह अल्टीमेटम दिया कि बिलोचिस्तान और उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त में मार्शल-ला समाप्त किया जाय और वर्तमान गवर्नरों को हटाया जाय, क्योंकि इन दोनों स्थानों पर भुट्टो के दल को बहुमत प्राप्त नहीं है।

२१ फरवरी—रावलपिंडी में राष्ट्रपति भुट्टो की पार्टी के विरुद्ध पठान पुलिस-मैनों ने आन्दोलन शुरू कर दिया। पेकिंग में निक्सन और माओ के बीच एक घण्टे तक वार्ता हुयी और प्रधान मन्त्री गाँधी ने नयी दिल्ली में अपने भाषण से कहा—एशिया के भाग्य का निर्णय चाऊ और निक्सन नहीं कर सकते।

२२ फरवरी—पाक राष्ट्रपति ने आज कहा—मैंने रूस या श्रीलंका की मार्फत बातचीत का कोई प्रस्ताव भारत नहीं भेजा। भारत सरकार ने घोषणा की कि बंगलादेश में बसे बिहारी मुसलमानों की हम पर कोई जिम्मेदारी नहीं।

२३ फरवरी—जयपुर में प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने घोषणा की कि बिहारी मुसलमानों को भारत में शरण नहीं दी जायेगी। शेख मुजीब ने अपने वक्तव्य में कहा—एशिया के देश अपनी समस्याएँ स्वयं हल करेंगे, न कि निक्सन से हल करायेंगे। जनरल मानिकशाह रूस के निमन्त्रण पर अपनी दो दिन की यात्रा पर मास्को रवाना हो गये।

२४ फरवरी—अधिकांश भारतीय सेना बंगला देश से लौट आयी।

२५ फरवरी—पाकिस्तान ने पहली बार आज भारत के १७ युद्धबन्दी लौटाये और भारत ने २७ घायल युद्धबन्दी पाकिस्तान भेजे। अदला-बदली रेडक्रास के द्वारा हुयी।

२६ फरवरी—आज बंगला देश के विदेशमन्त्री श्री आजाद ने अमेरिकी वाणिज्य दूत हरबर्ट स्ववेक को बुलाकर अपनी स्थिति स्पष्ट करने को कहा।

२७ फरवरी—कलकत्ता में रक्षामन्त्री ने घोषणा की कि भारत अपने रक्षा प्रयत्नों में ढिलाई नहीं करेगा।

२६ फरवरी—राष्ट्रसंघ के महासचिव ने सभी देशों से बंगला देश को सहायता देने की अपील की। जापान ने ४ करोड़ ३० लाख येन की सामग्री सहायता के रूप में बंगला देश भेजी। बंगला देश और हंगरी के बीच आज दौत्य सम्बन्ध कायम हुए।

१ मार्च—विशेष दिन

डिब्रूगढ़ में भाषण करते हुए प्रधानमन्त्री गाँधी ने कहा—भारत पाकिस्तान के साथ अनाक्रमण संधि करना चाहता है, हमें आशा है पाकिस्तान हमें अनुकूल उत्तर देगा।

◆शेख मुजीब अपनी ५ दिन की रूस यात्रा पर आज मास्को पहुँचे और सोवियत प्रधानमन्त्री श्री कोसीगिन से उन्होंने ३ घण्टे तक बातचीत की। इस वार्ता में अन्य सोवियत अधिकारियों के अतिरिक्त कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव भी उपस्थित थे। शाम को श्री मुजीब को भोज दिया गया।

२ मार्च—पाकिस्तान रेडियो से अपना भाषण ब्राडकास्ट करते हुए श्री भुट्टो ने भारत से पुनः युद्ध बंदियों को रिहा करने की अपील की।

पाकिस्तान के लेफ्टिनेण्ट जनरल गुल हसन ने आज पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे दिया और उनकी जगह राष्ट्रपति भुट्टो ने लेफ्टिनेंट जनरल टिक्का खाँ को सेना का सर्वोच्च अधिकारी बना दिया। इसके साथ ही उन्होंने एयर मार्शल रहीम खाँ को भी पदच्युत कर दिया और उनके स्थान पर एयर मार्शल जफर चौधरी को नियुक्त किया।

◆भारत स्थित सभी बंगला देश शरणार्थी स्वदेश लौट गये।

६ मार्च—भारत सरकार ने स्पष्ट घोषणा की कि समझौते से पूर्व युद्धबन्दी नहीं छोड़े जायेंगे। पाक राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने आज घोषणा की कि पाक असेम्बली की बैठक १४ अप्रैल को होगी और १४ अगस्त को पाकिस्तान से मार्शल-ला समाप्त कर दिया जायेगा।

१४ मार्च—संसद के बजट अधिवेशन में आज दोनों सदनों की गुप्त बैठक में राष्ट्रपति श्री वी०वी० गिरी ने घोषणा की कि भारत न तो किसी पर प्रभुत्व जमाना

चाहता है और न किसी का प्रभुत्व सहन करेगा। पाकिस्तान से भारत वार्ता के लिये तैयार है।

◆स्विटजरलैंड ने भी आज बंगला देश को मान्यता दे दी।

१४ मार्च—ब्रिटेन को भारत-पाक में मध्यस्थ बनाने के लिये राष्ट्रपति भुट्टो ने अपना दूत ब्रिटेन भेजा।

◆राष्ट्रपति भुट्टो से बातचीत करने के लिये भारतीय पत्रकार श्री दिलीप मुखर्जी आज कराची पहुँचे। 'टाइम्स आफ इण्डिया' के दिल्ली व्यूरो के यह पहले पत्रकार हैं जो युद्ध के बाद पाकिस्तान गये थे।

◆बंगला देश ने आज सारे देश में शराबबन्दी की घोषणा की।

१५ मार्च——पाक राष्ट्रपति भुट्टो ने आज प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी से मिलने और सभी विवादों को वार्ता द्वारा हल करने की घोषणा की।

१७ मार्च—संसद में भारत सरकार ने घोषणा की कि बंगला देश की सहमति के बिना भारत से युद्धबन्दी नहीं लौटाये जायेंगे। मास्को में श्री कौसीगिन और बंगबंधु में भारत और पाक की वर्तमान स्थित पर विचार हुआ।

श्रीमती गाँधी का ढाका में स्वागत

बंगला देश सरकार के निमंत्रण पर आज प्रधानमन्त्री गांधी ढाका पहुँचीं। हवाई अड्डे पर स्वागत के बाद बंगला देश के राष्ट्रपति अबू सईद चौधरी और प्रधानमन्त्री शेख मूजीब उन्हें रेडकोर्स मैदान की कृतज्ञता-ज्ञापन सभा में ले गये। वहाँ प्रधान मन्त्री ने ३० फुट ऊंचे मंच से बंगला देश वासियों की सभा में भाषण किया।

प्रारम्भ से बंगला देश के प्रधान मन्त्री ने अपने देशवासियों को चेतावनी देते हुए कहा—अभी कुछ विदेशी शक्तियाँ हमारी स्वतन्त्रता पर आँखें दिखा रही हैं। अतः हमें सावधान रहना है और फिर हथियार उठाने पड़ सकते हैं। बाद में उन्होंने कहा—भारत से घनिष्ठ मैत्री हमारी विदेश नीति का मूलाधार है। भारतीय सेना ने जितना शानदार कार्य यहाँ किया है, हम उसके सदा आभारी रहेंगे। श्रीमती गांधी ने प्रधानमन्त्री श्री शेख से ९० मिनट बातचीत करने से पहले अपने स्वागत में आयी २० लाख बंगला जनता से कहा—आपकी सहायता करना हमारा कर्तव्य था—नीति थी—सिद्धान्त था। उस सहायता में न कोई दबाव था और न कोई आकांक्षा।

१८ मार्च—बंगला देश में श्रीमती गांधी का भाषण

प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने घोषणा की कि बंगला देश की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होने पर भारत उसकी पूरी सहायता करेगा। दोनों देशों की नीतियां समान

हैं। इस सीमा पर इस समय शान्ति है। प्रधान मन्त्री ने बंगला देश की जनता के त्याग और साहस की प्रशंसा की।

—भारत सरकार ने १९७२-७३ के लिए दो अरब रुपये की सहायता बंगला देश को देना स्वीकार किया।

—पाक राष्ट्रपति भुट्टो की रूस यात्रा भी आज समाप्त हो गई। वे तीन दिन की यात्रा पर यहाँ आये थे। यात्रा के बाद संयुक्त विज्ञप्ति में कहा गया—दोनों देशों में विश्व शाँति के लिए कदम उठाने, एक-दूसरे के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करने तथा क्षेत्रीय अखंडता पर बल दिया गया।

—बँगला देश के प्रधानमन्त्री मुजीव ने सऊदी अरब के जद्दा में होने वाले इस्लामी सम्मेलन का वह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया कि सम्मेलन का एक प्रतिनिधि मण्डल बंगला देश की यात्रा करेगा। इस सम्मेलन के अध्यक्ष तंकू अब्दुल रहमान से मुजीव ने पूछा—बंगला देश के कत्लेआम के समय आप कहाँ थे?

१९ मार्च—भारत और बंगला देश में २५ वर्षीय सन्धि

भारत और बंगला देश के बीच ढाका में सुरक्षा तथा राजनैतिक सहयोग की दृष्टि से २५ वर्षीय मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किये गये। बंगला देश की स्वतन्त्रता के बाद सद्भाव पर आधारित यह पहली संधि थी।

संधि पर भारत की ओर से प्रधानमन्त्री गाँधी और बंगला देश की ओर से प्रधानमन्त्री मुजीव ने हस्ताक्षर किये। संधि तत्काल लागू मान ली गयी।

संधि के अनुसार एक-दूसरे की अखंडता का आदर किया जायेगा। घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा। उपनिवेशवाद, रंगभेद और साम्राज्यवाद के उन्मूलन के लिये कार्य किया जायेगा। यदि दोनों में से किसी देश पर हमला हुआ या उसकी आशंका हुई तो तत्काल ही दोनों देश बातचीत करेंगे। एक-दूसरे के शत्रु को मदद नहीं देंगे और न एक-दूसरे पर हमला करेंगे। संधि की धारा १० के अन्तर्गत दोनों देश किसी देश से गुप्त या खुला ऐसा कोई समझौता नहीं करेंगे जो संधि के विरुद्ध हो। मतभेद होने पर मामले बातचीत से हल किये जायेंगे। एक-दूसरे के विरुद्ध किसी देश से सैनिक संधि नहीं की जायेगी।

पाक ने इस संधि को 'सैनिक संधि' बताया।

—ढाका से नयी दिल्ली लौटने पर प्रधानमंत्री गाँधी ने कहा—भारत पाक की समस्याओं पर शिखर सम्मेलन से पूर्व विचार-विमर्श के लिये अधिकारी स्तर पर सम्मेलन आवश्यक है और भारत में पाकिस्तानी युद्ध बंदियों की वापसी का प्रश्न

युद्ध सम्बन्धी अन्य वातों से अलग नहीं किया जा सकता।

२४ मार्च—कावुल में पाक के विघटन के लिये खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने भुट्टो को दोषी वताया।

२६ मार्च—वंगलादेश स्वतन्त्रता की प्रथम वर्षगाँठ पर शेख मुजीव ने भारत-वंगलादेश मैत्री को निरंतर दृढ़ करने की अपील की और बैंक, वीमा तथा जूट उद्योग का राष्ट्रीयकरण कर दिया।

◆लखनऊ में जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटल विहारी वाजपेयी ने मांग की कि वंगला देश के नाम पर लगे सभी कर समाप्त कर दिये जायें।

२७ मार्च—भारत और वंगला देश में प्रथम व्यापार समझौते पर आज वार्ता शुरू हुई। श्री भुट्टो ने घोषणा की कि मैं वंगला देश से वार्ता को तैयार हूँ यदि हमारे ९३ हजार वंदी भारत रिहा कर दे।

२८ मार्च—भारत-वँगला देश व्यापार समझौते पर आज हस्ताक्षर हो गये। इसके अधीन २५-२५ करोड़ रुपयों के मूल्य का माल दोनों देश निर्यात करेंगे। भुगतान रुपयों में होगा। सीमा पर १६ किलोमीटर के इलाके में उन्मुक्त व्यापार की जनता को सुविधा दी जायेगी। भारत वंगला देश को सीमेंट, कोयला, कल पुर्जे, मशीनें, दवाएं, सूत, पुस्तकें आदि देगा और वहाँ से वह कच्चा जूट, मछली तथा अखबारी कागज लेगा।

◆वंगला देश में १० हजार युद्ध अपराधियों पर मुकदमा चलाने के लिये ७३ अदालतें कायम की गयीं।

२९ मार्च—श्री अटल ने भारत सरकार से मांग की कि विना शांति समझौते के युद्धवंदियों को वापस न भेजा जाय।

३० मार्च—स्विस प्रतिनिधि ने आज वताया कि भारत-पाक वार्ता के लिये श्री भुट्टो का उत्तर एक-दो दिन में भारत सरकार को दे दिया जायेगा।

४ अप्रैल—आज अमेरिका ने वंगला देश को मान्यता दे दी।

प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी ने लोकसभा में आज यह घोषणा की कि पाक के साथ हमने सीधा सम्पर्क कायम किया हुआ है। मास्को में श्री स्वर्णसिंह और सोवियत नेताओं के वीच महत्वपूर्ण वार्ता हुयी।

६ अप्रैल—श्रीमती गाँधी का एक पत्र राष्ट्रपति भुट्टो को वार्ता के सुझाव के लिये आज मिला।

९ अप्रैल—राष्ट्रपति भुट्टो ने भारत का वार्ता प्रस्ताव पेशावर की एक सभा में स्वीकार कर लिया।

१२ अप्रैल—भुट्टो की वार्ता स्वीकारोक्ति का पत्र अधिकारिक रूप से आज श्रीमती गांधी को मिल गया।

१६ अप्रैल—युद्ध वंदियों के वारे में वंगला देश का रुख जानने के लिये श्री धर ढाका गये; क्योंकि २५ अप्रैल को उन्हें भारत-पाक वार्ता की आधारशिला के लिये पाकिस्तान जाना था।

२४ अप्रैल—रावलपिंडी में पाक राष्ट्रपति ने कहा—मैं भारत से वार्ता से भी पहले राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने को तैयार हूँ।

२६ अप्रैल—आज शाम को रावलपिंडी के समीप मरी में भारत और पाक के वीच दूत-स्तर पर वातचीत प्रारम्भ हुयी। इसमें भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व श्री धर ने और पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल श्री अजीज अहमद ने किया।

२८ अप्रैल—श्री धर की पाक राष्ट्रपति से रावलपिंडी में आज ७५ मिनट तक वार्ता हुयी।

२९ अप्रैल—आज वार्ता का दौर ९० मिनट तक चला और इस सम्मेलन में शिखर सम्मेलन के आधार-भूत सिद्धान्त तय हुए। पश्चात् दोनों में वार्ता की तिथि २८ जून तय हुयी।

अध्याय १४

भारत–पाक शिखर-सम्मेलन

शिमला में भार-पाक शिखर-सम्मेलन २८ जून से प्रारम्भ हुआ और २ जुलाई तक चला । २ जुलाई को दोनों देशों की संयुक्त विज्ञप्ति प्रकाशित हुई। पाकिस्तान की ओर से लगभग ६० सदस्य राष्ट्रपति भुट्टो के साथ आये थे । वास्तव में इनमें वार्ताकार मुख्यतः श्री अजीज अहमद ही थे जो राष्ट्रपति भुट्टो के प्रमुख सलाहकार थे। राष्ट्रपति भुट्टो के साथ उनकी व्यक्तिगत सचिव के रूप में अमेरिका में पढ़ने वाली उनकी १८ वर्षी पुत्रीय कुमारी वेनजीर भी आयी थीं । और उनके साथ आये थे पाक पत्रकार।

इस ऐतिहासिक शिखर सम्मेलन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी के विशेष दूत के रूप में श्री दुर्गाप्रसाद धर २६ अप्रैल को पाकिस्तान गए थे और वहाँ मरी में उनकी बातचीत पाकिस्तान के विदेशी मामलों के सचिव श्री अजीज अहमद से शुरू हुई । दूसरे दिन तक भी जब दोनों दूतों में समझौता न हो सका तब श्री धर से राष्ट्रपति भुट्टो ने बातचीत आरम्भ की और अन्त में २८ अप्रैल १९७२ ई० को भारत-पाक शिखर-सम्मेलन की पृष्ठभूमि तैयार की गई । पश्चात् दोनों देशों की परस्पर बातचीत में २८ जून की तिथि सम्मेलन के लिए निश्चित की गई; क्योंकि इस बीच प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी को बाल्कन देशों में जाकर कृतज्ञता प्रकट करनी थी; क्योंकि युद्धकाल में इन देशों ने भारत का नैतिक और राजनैतिक रूप में साथ दिया था। दूसरी ओर पाक राष्ट्रपति भुट्टो को मुस्लिम देशों में जाकर शिखर-सम्मेलन के बारे में उनसे सलाह-मशविरा करना था।

शिखर-सम्मेलन में अन्त तक गतिरोध कायम रहा और दोनों नेता किसी भी परिणाम पर पहुँचने में असफल रहे; क्योंकि भारत युद्धबन्दियों के मामले में बिना बंगला देश की सलाह के कोई भी समझौता करने के लिए तैयार नहीं था और दूसरी ओर पाकिस्तान कश्मीर में जनमत-संग्रह की माँग पर अड़ा हुआ था । अन्त में २ जुलाई को श्रीमती गाँधी और राष्ट्रपति भुट्टो में एक समझौते पर सहमति हुई और पाक राष्ट्रपति ने उसे अपने देश की असेम्बली के सामने मान्यता के लिए रखने की घोषणा करके ३ जुलाई को चण्डीगढ़ के रास्ते लाहौर के लिए प्रस्थान किया। उक्त समझौते की रूपरेखा निम्न लिखित हैं :—

(१) भारत और पाकिस्तान की सरकारें यह संकल्प करती हैं कि दोनों देश उस संघर्ष और टकराव को समाप्त करेंगे जिसने उनके सम्बन्धों को अब तक बिगाड़े रखा है। वे मैत्री और सद्भावनापूर्ण सम्बन्धों तथा उपमहाद्वीप में स्थायी शान्ति कायम करने के लिए काम करेंगे, जिससे आगे से दोनों देश अपने साधनों और शक्ति का उपयोग अपनी जनता के कल्याण के गुरुत्तर कार्य में कर सकेंगे।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भारत और पाकिस्तान की सरकारें निम्न बातों पर सहमत हैं कि :—

(क) दोनों देश आपसी सम्बन्धों में संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र के सिद्धान्तों और उद्देश्यों के अनुरूप कार्य करेंगे।

(ख) दोनों देश अपने मतभेदों को शान्तिपूर्ण उपायों तथा द्विपक्षीय बातचीत अथवा ऐसे किसी उपाय से हल करेंगे, जो दोनों देशों को मान्य हो। दोनों देशों के बीच किसी भी समस्या के अन्तिम समाधान होने तक कोई भी पक्ष एकतरफा तौर पर स्थिति में कोईपरिवर्तन नहीं करेगा और दोनों पक्ष ऐसी किसी कार्रवाई के संगठन, उसकी सहायता और प्रोत्साहन को रोकेंगे, जिससे शान्तिपूर्ण और सद्भावनापूर्ण सम्बन्धों को हानि पहुँचती हो।

(ग) दोनों देश समझौते, अच्छे पड़ोसीपन और स्थायी शान्ति के लिए वायदा करते हैं कि वे शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता एवं प्रभुत्व सम्पन्नता तथा बराबरी तथा दोनों के लाभपर आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने के उसूलों पर काम करेंगे।

(घ) दोनों देशों के सम्बन्धों में पिछले २५ वर्षों से बिगाड़ पैदा करने वाले संघर्ष के मूल विवादों और कारणों को शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा सुलझाया जायगा।

(ङ) वे एक-दूसरे की राष्ट्रीय एकता, क्षेत्रीय अखंडता, राजनीतिक स्वतन्त्रता और समानता का सदैव सम्मान करेंगे।

(च) दोनों देश संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र के अनुरूप एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता या राजनीतिक स्वतन्त्रता के विरुद्ध शक्ति का उपयोग नहीं करेंगे और न ही ऐसा करने की धमकी देंगे।

(२) दोनों सरकारें एक-दूसरे के खिलाफ शत्रुतापूर्ण प्रचार रोकने के लिए सभी सम्भव कदम उठायेंगी । वे ऐसी सूचना व प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन नहीं देंगी, जिससे दोनों देशों के सम्वन्धों में वृद्धि हो ।

(३) दोनों देशों के वीच शनैः-शनैः सम्बन्धों को कायम करने और उन्हें सामान्य वनाने के लिए इस पर सहमति हुई कि :

(क) संचार सम्वन्ध पुनः कायम करने के लिए कदम उठाए जायेंगे । संचार सम्बन्धों में डाक, तार, समुद्रीय एवं स्थलीय यात्रा और विमान सेवाएं शामिल हैं । विमान-सेवा में भारत पर से होकर उड़ानें भी सम्मिलित हैं ।

(ख) एक-दूसरे देश के नागरिकों को यात्रा-सुविधाएं वढ़ाने के लिए उचित कदम उठाए जाएंगे ।

(ग) आर्थिक तथा आपसी सहमति के क्षेत्रों में व्यापार और सहयोग यथा-सम्भव पुनः शुरू किया जाएगा ।

(घ) विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में आदान-प्रदान को प्रोत्साहन दिया जाएगा ।

इस सम्बन्ध में आवश्यक विवरण तैयार करने के लिए दोनों देशों के प्रतिनिधिमण्डल समय-समय पर मिलते रहेंगे ।

(४) स्थायी शान्ति की स्थापना की प्रक्रिया शुरू करने के लिए दोनों सरकारें इस पर सहमत हैं कि :—

(क) भारतीय और पाकिस्तानी सेनाएं अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से अपनी-अपनी ओर हटा ली जाएंगी ।

(ख) दोनों देश जम्मू-कश्मीर में १७ दिसम्वर १९७१ को हुए युद्ध-विराम के फलस्वरूप कायम हुई नियन्त्रण रेखा का किसी भी पक्ष द्वारा स्वीकृत स्थिति को प्रभावित किए विना समादर करेंगे । कोई भी पक्ष इस सम्वन्ध में आपसी मतभेद या कानूनी परिभाषा को लेकर एकतरफा तौर पर स्थिति में परिवर्तन नहीं करेगा । दोनों पक्ष वायदा करते हैं कि शक्ति काउपयोग करके रेखा का उल्लंघन नहीं करेंगे ।

(ग) सेनाओं की वापसी इस समझौते के लागू होने पर शुरू हो

जाएगी और उसके ३० दिन बाद यह काम पूरा हो जाएगा।

(५) इस समझौते की दोनों देशों की अपनी-अपनी सांविधानिक प्रक्रियाओं क अनुरूप पुष्टि होनी आवश्यक है। इन पुष्टि-पत्रों की आदान-प्रदान की तिथि से ही समझौता लागू होगा।

(६) दोनों सरकारें इस पर सहमत हैं कि उनके प्रधान भविष्य में दोनों की सुविधा के अनुरूप किसी समय मिलेंगे। इस बीच सम्बन्धों के सामान्यीकरण की प्रक्रिया और प्रबन्ध तय करने के लिए दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों की बैठक होंगी। ये प्रतिनिधि युद्ध में बन्दी बनाए गए सैनिकों और नागरिकों की वापसी, जम्मू-कश्मीर विवाद के अन्तिम निपटारे और राजनयिक सम्बन्ध पुनः कायम करने के प्रश्नों पर विचार करेंगे।

इस समझौते पर १० जुलाई को पाकिस्तान की राष्ट्रीय असेम्बली ने अपनी स्वीकृति प्रदान की और २८ जुलाई को भारत के राष्ट्रपति श्री गिरि ने इस पर हस्ताक्षर किए।

अध्याय १५

पाकिस्तानी शासक—जिन्ना से भुट्टो तक

पाकिस्तान का यह दुर्भाग्य रहा कि उसे जितने भी शासक अब तक मिले—स्वार्थी मिले। जनता की निर्धनता को दूर करने का प्रयत्न करने की अपेक्षा वे उसे सदा भारत के भय के भुलावे में डालकर उसके हृदय में भारत के प्रति घृणा की भावना भरते रहे, क्योंकि इसी में उनकी गद्दी की सुरक्षा निहित थी। इसके बाद जब भी जनता ने आँखें खोलकर अपनी स्थिति को देखा, तभी उन्होंने भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़कर उसका ध्यान बंटाया।

अपनी विदेश-नीति उन्होंने इस तरह की रखी जिससे परस्पर दो दुश्मन भी पाकिस्तान को सहायता देने के मंच पर एक हो जायें। यही कारण था कि चीन और अमेरिका जैसे आपसी शत्रुओं से भी पाकिस्तानी नेता हथियारों और धन की सहायता बराबर लेते रहे। बँगला देश के जूट पर और अमेरिकी डालर पर मौज करने वाले पाकिस्तानी शासकों ने अपने देश में भारत के प्रति जितनी घृणा पैदा की है, वह वर्ष दो वर्ष में घुलने वाली नहीं है।

वस्तुतः पाकिस्तान का निर्माण ही घृणा और द्वेष के आधार पर हुआ था। घृणा और द्वेष के पुंज श्री मुहम्मदअली जिन्ना इस देश के प्रथम गवर्नर जनरल १४ अगस्त १९४७ ई० को जब बने थे, तब साम्प्रदायिक दंगों में १० लाख व्यक्ति मारे गये थे। भारत को बार-बार घूँसा दिखाने वाले इनके प्रधान मन्त्री थे श्री लियाकत अली खां थे। इस घूंसेबाज की मौत भी पाकिस्तानियों ने गोली मारकर की।

इनके शासनकाल में सरकार में अस्थिरता रही। जिन्ना में और इनमें मन मुटाव पैदा हुआ और १९५१ ई० में रावलपिंडी में लियाकतअली खां की हत्या कर दी गयी या करा दी गयी।

मार्च १९५६ में पाकिस्तान में नया संविधान बना और देश को गणतन्त्र घोषित किया गया। इस गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति श्री इस्कन्दर मिर्जा बने। इनके कार्यकाल में इतनी अराजकता बढ़ी कि सेनापति अय्यूबखां ने १९५८ में पिस्तौल के बल पर इनसे इस्तीफा लिखा लिया और पाकिस्तान में सैनिक शासन शुरू हो गया। २२ अक्तूबर १९५८ को अय्यूब राष्ट्रपति बने और जून १९५९ में अय्यूबखां ने

बालिग लोकतन्त्र प्रणाली चलाई। इस प्रणाली में देश के कुल ८० हजार व्यक्तियों को मतदान का अधिकार मिला। इन्होंने राष्ट्रीय विधान सभा का भी निर्माण किया और पुन. चुनाव के आधार पर १९६० में फिर राष्ट्रपति चुने गये। १७ फरवरी को इन्होंने राष्ट्रपति पद की शपथ ली। १९६२ में नये संविधान की घोषणा की। इसके अनुसार एक ही सदन की संसद और पश्चिमी तथा पूर्वी पाकिस्तान के सदस्यों की संख्या बराबर रखी गयी।

१९६५ में अय्यूबखाँ फिर राष्ट्रपति बने और तभी भारत-पाक युद्ध हुआ। मार्च १९६९ में पाकिस्तान में इनके विरोध में दंगे हुए और इन्होंने इस्तीफा दे दिया। उनका स्थान पाक सेनाध्यक्ष याहिया खाँ ने ले लिया। इन्होंने चुनावों की घोषणा की और १९७० में चुनाव कराये। इन्होंने चुनाव में विजेता श्री मुजीबुर्रहमान को पाकिस्तान का प्रधानमन्त्री बनाने के बजाय पूर्वी बंगाल में कत्लेआम शुरू करा दिया और ३ दिसम्बर १९७१ को भारत पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण में यह पराजित हुए और १७ दिसम्बर १९७१ ई० को श्री भुट्टो को अपने स्थान पर राष्ट्रपति बनाकर गद्दी से अलग हो गये। नये राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने इन्हें नजरबन्द कर दिया। इस पुस्तक के छपने तक यह नजरबन्द हैं।

६ जुलाई १९७२ ई० को युद्ध-जाँच आयोग जो श्री भुट्टो ने गठित कराया था, इन्होंने अपनी गवाही दी। अपनी गवाही में याहिया खाँ ने कहा—श्री भुट्टो ने मुझे धोखा दिया। श्री मुजीब से समझौता न करने दिया और भारत के साथ युद्ध में अन्त तक मुझे यह यकीन दिलाते रहे कि अमेरिका और चीन जल्दी ही युद्ध में कूदने वाले हैं।

पाकिस्तान के वर्तमान राष्ट्रपति श्री जुल्फिकार अली भुट्टो के पिता जूनागढ़ रियासत के दीवान थे। वे नवम्बर १९४७ ई० पाकिस्तान चले गये; लेकिन उनके पाकिस्तान जाने से पहले ही ८ सितम्बर १९४७ को श्री भुट्टो भारतीय पासपोर्ट पर अमरीका चले गये। वे वहाँ कैलीफोर्निया विश्व विद्यालय में अध्ययन करना चाहते थे। वहां से लौटकर अपनी बम्बई की जायदाद के बारे में उन्होंने मुकदमा लड़ना शुरू किया।

३० जनवरी १९५६ को श्री भुट्टो ने भारतीय कस्टोडियन जनरल के समक्ष दर्खास्त दी कि मैं भारतीय नागरिक हूँ, केवल अस्थाई तौर पर कराची में रहता हूँ; वह भी एक भारतीय की हैसियत से। कस्टोडियन ने उनकी दर्खास्त जब नामंजूर कर दी। तब श्री भुट्टो ने कस्टोडियन के फैसले के विरुद्ध उच्च न्यायालय में अपील की, लेकिन ३ अप्रैल १९५८ को श्री भुट्टो ने उच्च न्यायालय को सूचित किया कि मैं अब कराची में आबाद हो गया हूँ और अब मेरा विचार अपनी अपील जारी रखने

का नहीं है। अतः उसे खारिज कर दिया जाय। उनके अपील दायरकरने के एक सप्ताह पहले पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने उन्हें पाकिस्तान का उद्योग मन्त्री नियुक्त कर दिया था। उसके बाद श्री भुट्टो पाकिस्तान के विदेशमन्त्री बने। तब तक भुट्टो का किसी प्रकार के राजनैतिक दल में प्रवेश नहीं हुआ था।

पाकिस्तान का विदेशमन्त्री बनने के बाद यह पेकिंग के पहले चक्कर में ही चीन के भक्त बन गये और पाकिस्तान के लिये चीन से पर्याप्त सहायता भी ली। १९६५ के भारत-पाक युद्ध में भी यह राष्ट्रसंघ में भी पाकिस्तानी दल के नेता के रूप में गये थे और तब इन्होंने एक गन्दे राजनैतिज्ञ की तरह कहा था—"भारतीय कुत्ते राष्ट्रसंघ से तो चले गये; लेकिन कश्मीर से नहीं।" उस मीटिंग से भारतीय प्रतिनिधिमण्डल वाकआउट कर गया था और उन्हें उठते देख कर श्री भुट्टो ने यह गन्दा वाक्य कहा था।

युद्ध के बाद इनका चीनपरस्त होना अमेरिका को अच्छा नहीं लगा। अतः उन्होंने राष्ट्रपति अय्यूब से कहकर भुट्टो को मन्त्री पद से हटवा दिया। मन्त्री पद से हटकर भुट्टो ने 'पिपुल्स पार्टी' नामक अपनी राजनैतिक पार्टी खड़ी की और अय्यूब खां का प्रबल विरोध शुरू कर दिया। भुट्टो के अय्यूब विरोधी आन्दोलन का लाभ पाकिस्तान के जनरल याहिया खाँ ने उठाया और अय्यूब से सत्ता लेकर स्वयं राष्ट्रपति बन गये, लेकिन भुट्टो ने १९७१ के भारत-पाक युद्ध में याहिया खाँ को भी राजनीति में पछाड़ दिया। और याहिया के सामने यह स्थिति पैदा कर दी कि उसने राष्ट्रसंघ से श्री भुट्टो को बुलाकर पाकिस्तान के राष्ट्रपति का पद ताज स्वेच्छा से ही श्री भुट्टो के सुपुर्द कर दिया।